

पर अगर किसी जाइज चीज से भी रोक दिया जाए जैसा कि एहराम की हालत में या हराम महीनों के बारे में हुक्म से वाजह होता है तो उसे भी निसंकोच मान ले। कोई चीज किसी दीनी हकीकत की अलामत बन जाए तो उसका एहतराम करे, क्योंकि ऐसी चीज का एहतराम खुद दीन का एहतराम है। और यह सब कुछ अल्लाह के खौफ से करे न कि किसी और जच्चे से।

आदमी आम हालात में अल्लाह के हुक्मों पर अमल करता है। मगर जब कोई गैर मामूली हालत पैदा होती है तो वह बदल कर दूसरा इंसान बन जाता है। अल्लाह से डरने वाला यकायक अल्लाह से बेखौफ इंसान बनकर खड़ा हो जाता है। यह मौका वह है जबकि किसी की कोई मुखालिफाना हरकत उसे उत्तेजित कर देती है। ऐसे मौके पर आदमी इंसाफ की हदों को भूल जाता है और यह चाहने लगता है कि जिस तरह भी हो अपने हरीफ (प्रतिपक्ष) को जलील और नाकाम करे। मगर इस किस्म की दुश्मनी भरी कार्रवाई खुदा के नजदीक जाइज नहीं, यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि मस्जिदे हराम की जियारत जैसे पाक काम से किसी ने दूसरे को रोका हो। कोई शख्स इस किस्म की जालिमाना कार्रवाई करने के लिए उठे और कुछ लोग उसका साथ देने लगे तो यह गुनाह की राह में किसी की मदद करना होगा। जबकि अल्लाह से डरने वालों का शेवह यह होना चाहिए कि वे सिर्फ नेकी के कामों में दूसरे की मदद करें। जो शख्स हक पर हो उसका साथ देना और जो नाहक पर हो उसका साथ न देना मौजूदा दुनिया का सबसे मुश्किल काम है। मगर इसी मुश्किल काम पर आदमी के उखरी अंजाम का फैसला होने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ
وَالْمُنْفَخَةُ وَالْمُوقَدَةُ وَالْمُنْتَرَبَةُ وَالطَّيْحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا
ذَكَيْتُمْ وَمَا ذَرَبَ عَلَى الْخُصْبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْكَرِ ذِكْرُكُمْ فَنُقْطِ
الْيَوْمَ يَسَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنَ
الْيَوْمَ أَكَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتَمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ
دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٥

तुम पर हराम किया गया मुर्दा और खून और सुअर का गोشت और वह जानवर जो खुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोटने से या चोट से या ऊँचे से गिर कर या सींग मारने से और वह जिसे दरिंदे ने खाया हो मगर जिसे तुमने जबह कर लिया और वह जो किसी थान पर जबह किया गया हो और यह कि तब्रसीम करो जुए के तीरों से। यह गुनाह का काम है। आज मुंकिर तुम्हारे दीन की तरफ से मायूस हो गए। पस तुम उनसे न डरो, सिर्फ मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया। पस जो भूख से मजबूर हो जाए लेकिन गुनाह पर मायल न हो तो अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (3)

कुछ जानवर अपने मेडिकल और अख्ताकी नुक्सानात की वजह से इस काबिल नहीं कि इंसान उन्हें अपनी खुराक बनाए। खिंजीर को अल्लाह तआला ने इसी सबब से हराम करार दिया। इसी तरह जानवर के जिस्म में गोश्त के अलावा कई दूसरी चीजें होती हैं जो इंसानी खुराक बनने के काबिल नहीं। इन्हीं में से खून भी है। चुनावे इस्लाम में जानवर को जबह करने की एक खास सूरत मुकरर की गई है ताकि जानवर के जिस्म का खून पूरी तरह बहकर निकल जाए। जबह के सिवा जानवर को मारने के जो तरीके हैं उनमें खून जानवर के गोश्त में जच्च होकर रह जाता है, वह पूरी तरह उससे अलग नहीं होता। इसी सबब से शरीअत में मुर्दार की तमाम किस्मों को भी हराम कर दिया गया। क्योंकि मुर्दार जानवर का खून फौरन ही उसके गोश्त में जच्च हो जाता है। इसी तरह ऐसा गोश्त भी हराम कर दिया गया जिसमें किसी तरह मुश्किकाना अकीदे की आमेजिश हो जाए। मसलन गैर अल्लाह का नाम लेकर जिह्म करना या गैर अल्लाह के तकरूब (आस्था) की खातिर जानवर को कुर्बान करना। ताहम अल्लाह ने अपनी खास रहमत से यह गुंजाइश दे दी कि किसी को भूख की ऐसी मजबूरी पेश आ जाए कि उसे मौत या हराम खुराक में से एक को लेना हो तो वह मौत के मुकाबले में हराम खुराक को इख्तियार करे।

‘आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया।’ यानी तुम्हें जो अहकाम दिए जाने थे वे सब दे दिए गए। तुम्हारे लिए जो कुछ भेजना मुकद्दर किया गया वह सब भेजा जा चुका। यहां अललइतलाक (लागू किए जाने के तौर पर) दीन के कामिल किए जाने का जिक्र नहीं है बल्कि उम्मेत मुहम्मदी पर जो कुरआन नाजिल होना शुरू हुआ था उसके पूरे होने का एलान है। यह जुल की तकमील का जिक्र है न कि दीन की तकमील का। इसलिए अल्फ़ज ये नहीं हैं कि ‘आज मैंने दीन को कामिल कर दिया।’ बल्कि यह फरमाया कि ‘आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया।’ हकीकत यह है कि खुदा का दीन हर जमाने में अपनी कामिल सूरत में इंसान को दिया गया है। खुदा ने कभी नाकिस दीन इंसान के पास नहीं भेजा।

कुरआन को मानने वाली उम्मत को खुदा ने इतनी मजबूत बुनियादों पर कायम कर दिया है कि वह अपनी इम्कानी कुव्वत के एतबार से हर बेरूनी (वाहय) खतरे की जद से बाहर जा चुकी है। अब अगर उसे कोई नुक्सान पहुंचेगा तो अंदरूनी कमजोरियों की वजह से न कि खारजी हमलों की वजह से। और अंदरूनी कमजोरियों से पाक रहने की सबसे बड़ी जमानत यह है कि उसके अफराद अल्लाह से डरने वाले हों।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِ
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ
وَاذْكُرُوا السَّمَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَرِيعٌ الْحَسَابِ ٥
الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ
حِلٌّ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا

الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْنَاهُمُ هُنَّ أِجُورُهُنَّ فَحُصْنَيْنِ غَيْرِ مُسَافِحِينَ وَلَا
مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي
الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ⑤

वे पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज हलाल की गई है। कहां कि तुम्हारे लिए सुथरी चीजें हलाल हैं। और शिकारी जानवरों में से जिन्हें तुमने सथाया है, तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया। पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें। और उन पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है। आज तुम्हारे लिए सब सुथरी चीजें हलाल कर दी गईं। और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और हलाल हैं तुम्हारे लिए पाक दामन औरतें मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई जब तुम उन्हें उनके महर दे दो इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न एलानिया बदकारी करो और न खुफिया आशनाई करो। और जो शख्स ईमान के साथ कुफ्र करेगा तो उसका अमल जाया हो जाएगा और वह आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में से होगा। (4-5)

वे तमाम चीजें जिन्हें फितरत की निगाह पाक और सुथरा महसूस करती है। और वे तमाम जानवर जो अपनी सरिशत (प्रकृति) के लिहाज से इंसान की सरिशत से मुनासिबत रखते हैं इंसान के लिए हलाल हैं। अलबत्ता यह शर्त है कि वाहय सबब से उनके अंदर कोई फसाद शरई या तिब्बी (मेडिकल) न पैदा हुआ हो। ताहम इस उसूल को इंसान महज अपनी अकल से पूरी तरह सुनिश्चित नहीं कर सकता इसलिए उसे सुनिश्चितता के साथ भी बयान कर दिया गया। सधाए हुए जानवर का शिकार भी इसीलिए हलाल है कि वह शिकार को अपने मालिक के लिए पकड़ कर रखता है। गोया उसने आदमी की प्रवृत्ति सीख ली। ऐसा जानवर गोया शिकार के मामले में खुद आदमी का कायम मकाम बन गया।

हलाल व हुराम का कानून चाहे कितनी ही तपसील से बता दिया जाए बिलआखिर आदमी का अपना इरादा ही है जो उसे किसी चीज से रोकता है और किसी चीज की तरफ ले जाता है। आदमी के ऊपर अस्त निगरां कानून की दफआत नहीं बल्कि वह खुद है। अगर आदमी खुद न चाहे तो कानून को मानते हुए वह उससे फरार की राहें तलाश कर लेगा। यह सिर्फ अल्लाह का ख़ैफ है जो आदमी को पाबंद करता है कि वह कानून को उसकी हकीकी रूह के साथ मलहूज रखे। इसलिए हुराम व हलाल का कानून बनाते हुए कहा गया : अल्लाह से डरो, अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

मुसलमान औरत के लिए किसी हाल में जाइज नहीं कि वह ग़ैर मुस्लिम मर्द से निकाह करे। मगर मुसलमान मर्दों को मख़सूस शराइत के तहत इजाजत दी गई है कि वह अहले किताब औरतों के साथ निकाह कर सकते हैं। इस गुंजाइश की हिक्मत यह है कि औरत फितरतन तअस्सुरपजीर (प्रभाव स्वीकार करने वाला) मिजाज रखती है। उससे यह उम्मीद की जा सकती है कि वह अमली जिंदगी में आने के बाद अपने मुस्लिम शौहर और मुस्लिम मुआशिर

का असर कबूल कर ले और इस तरह निकाह उसके लिए इस्लाम में दाखिले का जरिया बन जाए।

‘जो शख्स ईमान से इंकार करे तो उसका अमल जाया हो गया’ यानी ईमान के बग़ैर अमल की कोई हकीकत नहीं। अमल वही है जो ख़ालिस अल्लाह के लिए किया जाए। जो अमल अल्लाह के लिए न हो वह खुद अपने लिए होता है। फिर अपनी ख़ातिर किए हुए अमल की कीमत अल्लाह क्यों देगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّهُ مَأْيُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑥

ऐ ईमान वाले, जब तुम नमाज के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कोहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को टखनों तक धोओ और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो गुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई इस्तंजा से आए या तुमने औरत से सोहबत की हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले। बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपनी नेमत तमाम करे ताकि तुम शुक्रगुजर बनो। (6)

नमाज का मकसद आदमी को बुराइयों से पाक करना है। वुजू इसी की एक ख़ारजी (वाहय) तैयारी है। आदमी जब नमाज का इरादा करता है तो पहले वह पानी के पास जाता है। पानी बहुत बड़ी नेमत है जो आदमी के लिए हर किस्म की गंदगी को धोने का बेहतरीन जरिया है। इसी तरह नमाज भी एक रब्बानी चशमा (स्रोत) है जिसमें नहाकर आदमी अपने आपको बुरे जज्बात और गंदे ख़ालात से पाक करता है।

आदमी वुजू को शुरू करते हुए अपने हाथों पर पानी डालता है तो गोया अमल की जवान में यह दुआ करता है कि खुदाया मेरे इन हाथों को बुराई से बचा और इनके जरिये जो बुराइयां मुझसे हुई हैं उन्हें धोकर साफ कर दे। फिर वह अपने मुंह में पानी डालता है और अपने चेहरे को धोता है तो उसकी रूह जबाने हाल से कह उठती है कि खुदाया मैंने अपने मुंह में जो ग़लत खुराक डाली हो, मैंने अपनी जबान से जो ग़लत कलिमा निकाला हो, मेरी आंखों ने जो बुरी चीज

देखी हो उन सबको तू मुझसे दूर कर दे। फिर वह पानी लेकर अपने हाथों को सर के ऊपर फेरता है तो उसका वज्र सरपा इस दुआ में ढल जाता है कि खुदाया मेरे जेहन ने जो बुरी बातें सोची हों और जो गलत मंसूबे बनाए हों उनके असरात को मुझसे धो दे और मेरे जेहन को पाक साफ जेहन बना दे। फिर जब वह अपने पैरों को धोता है तो उसका अमल उसके लिए अपने रब के सामने यह दरखास्त बन जाता है कि वह उसके पैरों से बुराई की गर्द को धो दे और उसे ऐसा बना दे कि सच्चाई और इंसाफ के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर वह कभी न चले। इस तरह पूरा वज्र आदमी के लिए गोया इस दुआ की अमली सूरत बन जाता है कि : खुदाया मुझे गलती से पलटने वाला बना और मुझे बुराइयों से पाक रहने वाला बना।

आम हालात में पाकी का एहसास पैदा करने के लिए वज्र काफी है। मगर जनाबत की हालत एक गैर मामूली हालत है इसलिए इसमें पूरे जिस्म का धोना (गुस्ल) जरूरी करार दिया गया। वज्र अगर छोटा गुस्ल है तो गुस्ल बड़ा वज्र है। ताहम अल्लाह तआला को यह पसंद नहीं कि वह बंदों को गैर जरूरी मशक्कत में डाले। इसलिए माजरी की हालत में पाकी के एहसास को ताजा करने के लिए तयम्मूम को काफी करार दिया गया। वज्र और गुस्ल के सादा तरीके अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत हैं। इस तरह तहारते शरीर को तहारते तबई (भौतिक शुद्धता) के साथ जोड़ दिया गया है। माजरी (विवशता) की हालत में तयम्मूम की इजाजत मजिद नेमत है क्योंकि यह गुलू (अतिवाद) से बचाने वाली है जिसमें अधिकतर धर्म मुब्तिला हुए।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا ۗ اِعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْحَرِّ ۖ يَأْتِيهِمُ الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌ اٰن يَسْطُوۡنَ اِلَيْكُمْ اَيَّدِيَهُمْ فَلَتَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके उस अहद को याद करो जो उसने तुमसे लिया है। जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने माना। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह दिलों की बात तक जानता है। ऐ ईमान वाले, अल्लाह के लिए कायम रहने वाले और इंसाफ के साथ गवाही देने वाले बनो। और किसी गिरोह की दुस्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम इंसाफ न करो, इंसाफ करो। यही तक्वा

से ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को खबर है जो तुम करते हो। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख्शिश है और बड़ा अज्र है। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया ऐसे लोग दोजख वाले हैं। ऐ ईमान वाले, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब एक कौम ने इरादा किया कि तुम पर दस्तदराजी करे तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया। और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (7-11)

ईमान एक अहद है जो बंदे और खुदा के दर्मियान करार पाता है। बंदा यह वादा करता है कि वह दुनिया में अल्लाह से डरकर रहेगा और अल्लाह इसका जामिन होता है कि वह दुनिया व आखिरत में बंदे का कफील हो जाएगा। बंदे को अपने अहद में पूरा उतरने के लिए दो बातों का सुबूत देना है। एक यह कि वह कव्वामुल्लाह बन जाए। यानी वह खुदा की बातों पर खूब कायम रहने वाला हो। उसका वज्र हर मौके पर सहीतरीन जवाब पेश करे जो बंदे को अपने रब के लिए पेश करना चाहिए। वह जब कायनात को देखे तो उसका जेहन खुदा की कृदरतों और अज्मतों के तसव्वुर से सरशार हो जाए। वह जब अपने आपको देखे तो उसे अपनी किंगी सरपा फल और एहसान नजर आए। उसके जवाबत उमड़ें तो खुदा के लिए उमड़ें। उसकी तक्जोहात किसी चीज को अपना मर्कज बनाएं तो खुदा को बनाएं। उसकी मुहब्बत खुदा के लिए हो। उसके अदेशे खुदा से वाबस्ता हों। उसकी यादों में खुदा समाया हुआ हो। वह खुदा की इबादत व इताअत करे। वह खुदा के रास्ते में अपने असासे (पूँजी) को खर्च करे। वह अपने आपको खुदा के दीन के रास्ते में लगाकर खुश होता हो। अहद पर कायम रहने की दूसरी शर्त बंदों के साथ इंसाफ है। इंसाफ का मतलब यह है कि किसी शख्स के साथ कभी बेशी किए बगैर वह सुलूक करना जिसका वह ब-एतबारे वाक्या मुस्तहिक है। मामलात में हक को अपना न कि अपनी ख्वाहिशात को। इस मामले में बंदे को इतना ज्यादा पाबंद बनना है कि वह ऐसे मौकों पर भी अपने को इंसाफ से बांधे रहे जबकि वह दुश्मनों और बातिलपरस्तों से मामला कर रहा हो, जबकि शिकायतें और तलख यादें उसे इंसाफ के रास्ते से फेरने लगे।

दुनिया में खुदा निशानियों की सूरत में जाहिर होता है। यानी ऐसे दलाइल (तर्कों) की सूरत में जिसकी काट आदमी के पास मौजूद न हो। जब आदमी के सामने खुदा की दलील आए और वह उसे मानने के बजाए लफ्जी तकरार करने लगे तो उसने खुदा की निशानी को झुठलाया। ऐसे लोग खुदा के यहां सख्त सजा पाएंगे। और जिन लोगों ने उसे मान लिया वे खुदा के इनाम के मुस्तहिक होंगे।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمْهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ

سَيِّئَاتِكُمْ وَلَا دُخْلَكُمْ جَدَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۖ فَبِمَا نَقُضِهِمْ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ۖ فَاعْلَمْ عَنْهُمْ وَاصْفُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

और अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और हमने उनमें बारह सरदार मुकर्र किए। और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम नमाज कायम करोगे और जकात अदा करोगे और मेरे पैगम्बरों पर ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को कर्जे हसन दोगे तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाह जरूर दूर करूँगा और तुम्हें जरूर ऐसे बागों में दाखिल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। पस तुममें से जो शरू इसके बाद इंकार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। पस उनकी अहदशिकनी की बिना पर हमने उन पर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख्त कर दिया। वे कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं। और जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। और तुम बराबर उनकी किसी न किसी ख़ियानत से आगाह होते रहते हो सिवाए थोड़े लोगों के। उन्हें माफ करो और उनसे दरगुजर करो, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है। (12-13)

बनी इस्राईल से उनके पैगम्बर के माध्यम से खुदापरस्ताना ज़िंदगी गुजारने का अहद लिया गया और उनके बारह कबाइल से बारह सरदार उनकी निगरानी के लिए मुकर्र किए गए। बनी इस्राईल से जो अहद लिया गया वह यह था कि वे नमाज के जरिये अपने को अल्लाह वाला बनाएं। वे जकात की सूरत में बंदों के हुक्क अदा करें। पैगम्बरों का साथ देकर वे अपने को अल्लाह की पुकार की जानिब खड़ा करें और अल्लाह के दीन की जद्दोजहद में अपना असासा (पूँजी) खर्च करें। इन कामों की अदायगी और अपने दर्मियान इनकी निगरानी का इज्तिमाई निजाम कायम करने के बाद ही वे खुदा की नजर में इसके मुस्तहिक थे कि खुदा उनका साथी हो। वह उन्हें पाक साफ करके इस काबिल बनाए कि वे जन्नत की लतीफ फ़जाओं में दाखिल हो सकें। जन्नत किसी को अमल से मिलती है न कि किसी किस्म के नस्ली तअल्लुक से।

इस अहद में जिन आमाल का जिक्र है यही दीन के असासी (मूलभूत) आमाल हैं। यह वह शाहराह है जो तमाम इंसानों को खुदा और उसकी जन्नत की तरफ ले जाने वाली है। मगर जब आसमानी किताब की हामिल कौमों में बिगाड़ आता है तो वे इस शाहराह के दाएं बाएं मुड़ जाती हैं। अब यह होता है कि खुदसाख़्ता तशरीहात (व्याख्याओं) के जरिये दीन का तसव्वुर

बदल दिया जाता है। इबादत के नाम पर ग़ैर मुतअल्लिक बहसों शुरू हो जाती हैं। नजात के ऐसे रास्ते तलाश कर लिए जाते हैं जो बंदों के हुक्क अदा किए बग़ैर आदमी को मजिल तक पहुंचा दें। दावते हक के नाम पर उनके यहां बेमअना किस्म के दुनियावी हंगामें जारी हो जाते हैं। वे दुनियावी इख़राजात की बहुत सी मदें बनाते हैं और उन्हीं को दीन के लिए खर्च का नाम दे देते हैं। दूसरे शब्दों में वे अपने दुनियावी हितों के मुताबिक एक दीन गढ़ते हैं और उसी को खुदा का दीन कहने लगते हैं। जब कोई गिरोह बिगाड़ की इस नौबत तक पहुंचता है तो खुदा अपनी तवज्जोह उससे हटा लेता है। खुदा की तौफीक से महरूम होकर ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे सिर्फ अपनी ख्वाहिशों की जवान समझते हैं और इसी में मसरूफ रहते हैं। यहां तक कि मौत का फरिश्ता आ जाता है ताकि उन्हें पकड़ कर खुदा की अदालत में पहुंचा दे।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۖ فَآغَرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (ईसाई) हैं, उनसे हमने अहद लिया था। पस जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। फिर हमने कियामत तक के लिए उनके दर्मियान दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया। और आख़िर अल्लाह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे। (14)

आसमानी किताब की हामिल कौमों पर जब बिगाड़ आता है तो वे दीन के मोहकम हिस्से को छोड़ कर उसके ग़ैर मोहकम हिस्से पर दौड़ पड़ती हैं। इसका नतीजा दुनिया में इख़िलाफ की सूरत में जाहिर होता है और आख़िरत में रुस्वाई की सूरत में।

मसीह अलैहिस्सलाम बाप के बग़ैर एक पाकबाज ख़ातून के बल से पैदा हुए। पैदाइश के बाद उन्होंने अपनी जवान से अपना जो तआरुफ कराया वह यह था 'मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ अब हजरत मसीह के बारे में राय कायम करने की एक सूरत यह है कि आपने अपने बारे में जो वाज्हे अल्फ़ाज फरमाए हैं उन्हीं की पाबंदी की जाए और आपको वही समझा जाए जो इन अल्फ़ाज से बराहेरास्त तौर पर मालूम होता है। दूसरी सूरत यह है कि इस मामले में अपने कयास को दख़ल दिया जाए और कहा जाए कि 'इंसान वह है जो किसी बाप का बेटा हो। मसीह किसी बाप के बेटे न थे। इसलिए वह खुदा के बेटे थे' पहली राय की बुनियाद खुद मसीह का मोहकम और मुस्तनद कौल है इसलिए अगर उसे इख़्तियार किया जाए तो उसमें इख़िलाफ पैदा न होगा। जबकि दूसरी राय की बुनियाद महज इंसानी कयास पर है। इसलिए जब दूसरी राय को इख़्तियार किया जाएगा तो राय का इख़िलाफ शुरू हो जाएगा, जैसा कि मसीह के मानने वालों के साथ बाद के जमाने में हुआ।

आसमानी किताब की हामिल किसी कौम में जब बिगाड़ आता है तो उसके अंदर इसी किस्म की ख़राबियां शुरू हो जाती हैं। वे मोहकम दीन को छोड़कर कयासी दीन पर चल

पड़ती हैं। यहीं से इस्त्रिलाफ और फिस्काबदियों का दरवाज खुल जाता है। फिस्का और कलाम, रूहानियत और सियासत में खुदा व रसूल ने जो खुले हुए अहकाम दिए हैं लोग उनके सादा मफहूम पर कानेअ नहीं रहते बल्कि बतौर खुद नई-नई बहसें निकालते हैं। कभी जमाने के ख्यालालत से मुतअस्सिर होकर, कभी अपनी दुनियावी ख्वाहिशों को दीनी जवाज अता करने के लिए। कभी खुद से खुदा के नाक्स दीन को कामिल बनाने के लिए, अपनी तरफ से ऐसी बातें दीन में दाखिल कर दी जाती हैं जो हकीकत दीन का हिस्सा नहीं होतीं। इस तरह नए-नए दीनी एडीशन तैयार हो जाते हैं। कोई रूहानी एडीशन, कोई सियासी एडीशन, कोई और एडीशन। हर एक के गिर्द उसके मुताफिक् जौक रखने वाले लोग जमा होते रहते हैं। बिलआखिर उनका एक फिस्का बन जाता है। उनकी बाद की नस्लें इसे असलाफ (पूर्वजों) का वरसा समझकर उसकी हिफाजत शुरू कर देती हैं। यहां तक कि वह वक्त आ जाता है कि वह कियामत तक कभी खत्म न हो। क्योंकि इंसान माजी (अतीत) को हमेशा मुकद्दस (पवित्र) समझ लेता है और जो चीज मुकद्दस बन जाए वह कभी खत्म नहीं होती। मजहब के नाम पर फिस्काबंदी एक तरफ मुकद्दस होकर अबदी बन जाती है। दूसरी तरफ खुदा का हुक्म बनकर दूसरों के ख़िलाफ नफरत और जारिहियत (आक्रामकता) का इजाजतनामा भी।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ١٠ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَأُمُّهُ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يُخْلِقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है। वह किताबे इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिन्हें तुम छुपाते थे। और वह दरगुजर करता है बहुत सी चीजों से। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से एक रोशनी और एक जाहिर करने वाली किताब आ चुकी है। इसके जरिए से अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रिजा के तालिब हैं और अपनी तौफीक से उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ उनकी रहनुमाई करता है। बेशक उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि खुदा ही तो

मसीह इब्ने मरयम है। कहो फिर कौन इस्त्रित्यार रखता है अल्लाह के आगे अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह इब्ने मरयम को और उसकी मां को और जितने लोग जमीन में हैं सब को। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है। वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (15-17)

अहले किताब ने अपने दीन में दो किस्म की गलतियां कीं। एक यह कि कुछ तालीमात को तावील या तहरीफ (परिवर्तन) के जरिए दीन से ख़ारिज कर दिया। मसलन उन्होंने अपनी किताब में ऐसी तब्दीलियां कीं कि अब उन्हें अपनी नजात के लिए किसी और पैगम्बर को मानने की जरूरत न थी। अपने आबाई (पितृक) मजहब से वाबस्तगी उनकी नजात के लिए बिल्कुल काफी थी। दूसरे यह कि उन्होंने दीन के नाम पर ऐसी पाबंदियां अपने ऊपर डाल लीं जो खुदा ने उनके ऊपर न डाली थीं। मिसाल के तौर पर कुर्बानी की अदायगी के वे जुजई (अमौलिक) मसाइल जिनका हुक्म उनके नबियों ने उन्हें नहीं दिया था बल्कि उनके उलमा ने अपनी फिस्काबंदी (कुतर्की) से बतौर खुद उन्हें गड़ लिया।

कुरआन उनके लिए एक नेमत बनकर आया। इसने उनके लिए दीने खुदावंदी की 'तजदीद' (नवीनीकरण) की। कुरआन ने उन्हें उस अंधेरे से निकाला कि वे ऐसे रास्ते पर चलते रहें जिसके मुतअल्लिक वह इस खुशफहमी में हों कि वह जन्नत की तरफ जा रहा है, हालांकि वह उन्हें खुदा के ग़ज़ब की तरफ ले जा रहा हो। कुरआन ने एक तरफ उनकी खोई हुई तालीमात को उनकी असली सूरत में पेश किया। दूसरी तरफ कुरआन ने यह किया कि उन्होंने अपने आपको जिन ग़ैर जरूरी दीनी पाबंदियों में मुत्तला कर लिया था उससे उन्हें आजाद किया। अब जो लोग अपनी ख्वाहिशों की पैरवी करें वे बदस्तूर अंधेरों में भटकते रहेंगे। और जिन्हें अल्लाह की रिजा की तलाश हो वे हक की सीधी राह को पा लेंगे। वे अल्लाह की तौफीक से अपने आपको तारीकी से निकाल कर रोशनी में लाने में कामयाब हो जाएंगे। हक का हक होना और बातिल का बातिल होना अपनी कामिल सूरत में जाहिर किया जाता है। मगर वह हमेशा दलील की जवान में होता है। और दलील उन्हीं लोगों के जेहन का जुज बनती है जो उसके लिए अपने जेहन को खुला रखें।

खुदा को छोड़कर इंसानों ने जो खुदा बनाए हैं उनमें से हर एक का यह हाल है कि वे न कोई चीज बतौर खुद पैदा कर सकते हैं और न किसी चीज को बतौर खुद मिटा सकते हैं। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि एक खुदा के सिवा कोई खुदा नहीं। जो हस्तियां पैदाइश और मौत पर कादिर न हों वे खुदा किस तरह हो सकती हैं।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّثْلَ خَلْقٍ يُغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ يَا أَهْلَ

الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٦

और यहूद व नसारा कहते हैं कि हम खुदा के बेटे और उसके महबूब हैं। तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सजा क्यों देता है। नहीं बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई मख्लूक में से एक आदमी हो। वह जिसे चाहेगा बख्शेगा और जिसे चाहेगा अजाब देगा। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है और उसी की तरफ लौट कर जाना है। ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह तुम्हें साफ-साफ बता रहा है रसूलों के एक क़य्म के बाद। ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया। पस अब तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है। (18-19)

जो कौम किताब और पैग़म्बर की हामिल (धारक) बनाई जाए और वह उसे मानने का सबूत दे दे तो उस पर खुदा की बहुत सी नेमतें नाज़िल होती हैं। मुख़ालिफीन के मुक़ाबले में ख़ुसूसी नुसरत, ज़मीन पर इक्तेदार, मफ़िरत और ज़न्नत का वादा, व़ैरह। कौम के इब्तिदाई लोगों के लिए यह उनके अमल का बदला होता है। उन्होंने अपने आपको खुदा के हवाले किया इसलिए खुदा ने उन पर अपनी नेमतें बरसाई। मगर बाद की नस्लों में सूरतेहाल बदल जाती है अब उनके लिए सारा मामला कौमी मामला बन जाता है। अब्बलीन लोगों को जो चीज़ अमल के सबब से मिली थी, बाद के लोग कौमी और नस्ली तअल्लुक की बिना पर अपने को उसका मुस्तहिक समझ लेते हैं। वे यकीन कर लेते हैं कि वे खुदा के ख़ास लोग हैं और वे चाहे कुछ भी करें खुदा की नेमतें उन्हें मिलकर रहेंगी। हामिले किताब कौमों को इस ग़लतफहमी से निकालने की खातिर खुदा ने उनके लिए यह ख़ुसूसी कायदा मुक़र्रर किया है कि उनकी जज़ा का आज़ाज इसी दुनिया से शुरू हो जाता है। ऐसे लोग इसी मौजूदा दुनिया में देख सकते हैं कि आने वाली दुनिया में उनका खुदा उनके साथ क्या मामला करने वाला है। अगर वे दुनिया में अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ रहे हों तो वे खुदा के मकबूल गिरोह हैं और अगर उनके दुश्मन उन पर ग़लबा पा लें तो वे खुदा के नामकबूल गिरोह हैं। कोई हामिले किताब गिरोह तादाद की अधिकता के बावजूद अगर दुनिया में मख़्लूब और ज़लील हो रहा हो तो उसे हरगिज यह उम्मीद न रखना चाहिए कि आखिरत में वह सरखुन्द और बाइज़त्त रहेगा।

किसी कौम को बहैसियत कौम के खुदा का महबूब समझना सरासर बातिल ख़्याल है। खुदा के यहां फ़र्द-फ़र्द का हिसाब होना है न कि कौम-कौम का। हर आदमी जो कुछ करेगा उसी के मुताबिक वह खुदा के यहां बदला पाएगा। हर आदमी अल्लाह की नज़र में बस एक इंसान

है, चाहे वह इस कौम से तअल्लुक रखता हो या उस कौम से। हर आदमी के मुस्तक़बिल का फैसला इस बुनियाद पर किया जाएगा कि इस्तेहान की दुनिया में उसने किस किस की कारकर्दगी का सबूत दिया है। ज़न्नत किसी का कौमी वतन नहीं और जहन्नम किसी का कौमी जेलख़ाना नहीं। अल्लाह के फैसले का तरीका यह है कि वह अपनी तरफ से ऐसे अफ़राद उठाता है जो लोगों को ज़िंदगी की हकीकत से आगाह करते हैं। उन्हें जहन्नम से डराते हैं और ज़न्नत की खुशख़बरी देते हैं। खुदा के इसी वशीर व नज़ीर (खुशख़बरी देने और डराने वाला) का साथ देकर आदमी खुदा को पाता है न कि किसी और तरीके से।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِرُ ادْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَ لَكُم مِّلُّوگًا وَآتَاكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ٧
يُقَوْمِرُ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمَقْدَسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَآتُرْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ٨
قَالُوا يَمُوسَى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَارِينَ ٩
وَإِنَّا لَنَرُّكَ خُلُهَا حَتَّى يُخْرِجُوا مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَاخِلُونَ ١٠
قَالَ رَجُلٌ مِّنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَآتِكُمْ عَلَيْهِمْ غُلَبُونَ ١١
وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ١٢
قَالُوا يَمُوسَى إِنَّا لَنَرُّكَ خُلُهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ١٣

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए। और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो दुनिया में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरी कौम, इस पाक ज़मीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और अपनी पीठ की तरफ न लौटो वना नुस्सान में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा कि वहां एक जबरदस्त कौम है। हम हरगिज वहां न जाएंगे जब तक वे वहां से निकल न जाएं। अगर वे वहां से निकल जाएं तो हम दाख़िल होंगे। दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर अल्लाह ने इनाम किया था, उन्होंने कहा कि तुम उन पर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ। जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे तो तुम ही ग़ालिब होंगे और अल्लाह पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा हम कभी वहां दाख़िल न होंगे जब तक वे लोग वहां हैं। पस तुम और तुम्हारा खुदाबंद दोनों जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। (20-24)

अल्लाह का यह तरीका है कि वह अपने पैगाम को लोगों तक पहुंचाने के लिए किसी गिरोह को चुन लेता है। इस गिरोह के अंदर वह अपने पैगम्बर और अपनी किताब भेजता है और उसे नियुक्त करता है कि वह इस पैगाम को दूसरों तक पहुंचाए। जिस तरह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) एक खास शख्स पर उतरती है उसी तरह 'वही' का हमिल भी एक खास गिरोह को बनाया जाता है। कदीम (प्राचीन) जमाने में यह खास हैसियत बनी इस्राईल को हासिल थी और आखिरी नबी मुहम्मद (सल्ल०) के बाद उम्मत मुहम्मदी इस खुसूसी मंसब पर मामूर (नियुक्त) है।

अल्लाह को जिस तरह यह मल्लूब है कि कोई कौम उसके दीन की नुमाइंदगी करे। इसी तरह उसे यह भी मल्लूब है कि जो कौम उसके दीन की नुमाइंद हो वह दुनिया में बाइज्जत और सरबुलन्द हो ताकि लोगों पर यह बात स्पष्ट हो सके कि कियामत के बाद जो नया और अबदी आलम बनेगा उसमें हर क्रिम की सरफराजियाँ सिर्फ अहले हक को हासिल होंगी। बाकी लोग मसूख करके खुदा की रहमतों से दूर फेंक दिए जाएंगे। ताहम इस गिरोह को यह दुनियावी इनाम एकतरफा तौर पर नहीं दिया जाता इसके लिए उसे इस्तहकाक (पात्रता) के इस्तेहान में खड़ा होना पड़ता है। उसे अमली तौर पर यह साबित करना पड़ता है कि वह हर हाल में अल्लाह पर एतमाद करने वाला और सब्र की हद तक उसकी मर्जी पर कायम रहने वाला है।

बनी इस्राईल जब तक इस मेयार पर कायम रहे उन्हें खुदा ने उनकी हरीफ कौमों पर गालिब किया। यहां तक कि एक जमाने तक वे अपने वक्त की मुहज्जब दुनिया में सबसे ज्यादा सरबुलन्द हैसियत रखते थे। मगर हजरत मूसा तशरीफ लाए तो बनी इस्राईल पर जवाल आ चुका था। इस्तेहान के वक्त उनकी अक्सरियत अल्लाह पर एतमाद और सब्र का सुबूत देने के लिए तैयार न हुई। यहां तक कि उनका एक तबका अल्लाह और उसके रसूल के सामने गुस्ताखी करने लगा। उनके दिल में अल्लाह से भी ज्यादा दुनिया की ताकतवर कौमों का डर समाया हुआ था। जब खुदा का कोई नुमाइंद गिरोह खुदा के काम के लिए कुर्बानी न दे तो गोया वह चाहता है कि खुदा खुद जमीन पर उतरे और अपने दीन का काम खुद अंजाम दे, चाहे वह बनी इस्राईल के कुछ लोगों की तरह इस बात को जबान से कह दे या दूसरे लोगों की तरह जबान से न कहे बल्कि सिर्फ अपने अमल से उसे जाहिर करे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرِقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ۝ قَالَ فَإِنَّهَا مُكِدَّةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَكْتِهُونَ فِي
الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा इस्लितयार नहीं। पस तू हमारे और इस नाफरमान कौम के दर्मियान जुदाई कर दे। अल्लाह ने कहा : वह मुल्क उन पर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया। ये लोग जमीन में भटकते फिरे। पस तुम इस नाफरमान कौम पर अफसोस न करो। (25-26)

बनी इस्राईल जब हजरत मूसा की कयादत में मिन्न से निकल कर सीना रेगिस्तान में पहुँचे तो उस जमाने में शाम व फिलिस्तीन के इलाके में एक जलिम कैम (अमालिका) की हुकूमत थी। अल्लाह ने बनी इस्राईल से कहा कि ये जालिम लोग अपनी उम्र पूरी कर चुके हैं। तुम इनके मुल्क में दाखिल हो जाओ, तुम्हें खुदा की मदद हासिल होगी और तुम मामूली मुक़बले के बाद उनके ऊपर कब्जा पा लोगे। मगर बनी इस्राईल पर उस कैम की ऐसी हैबत तारी थी कि वे उनके मुल्क में दाखिल होने के लिए तैयार न हुए। इसका मतलब यह था कि वे अल्लाह से ज्यादा इंसानों से डरते थे। इसके बाद अल्लाह की नजर में उनकी कोई कीमत न रही। अल्लाह ने उनके बारे में फैसला कर दिया कि वे चालीस साल (1440-1400 ई०पू०) तक फारान और शर्क उदेन के दर्मियान सहारा में भटकते रहेंगे। यहां तक कि 20 साल से लेकर ऊपर की उम्र तक के सारे लोग ख़त्म हो जाएंगे। इस दौरान उनकी नई नस्ल नए हालात में परवरिश पाकर उठेगी। चुनांचे ऐसा ही हुआ। 40 साल की सहाराई जिंदगी में इनके तमाम बड़ी उम्र वाले मर कर ख़त्म हो गए। इसके बाद उनकी नई नस्ल ने योशअ बिन नून की कयादत में शाम व फिलिस्तीन को फतह किया। यह योशअ बिन नून उन दो सालेह इस्राईलियों में से एक हैं जिन्होंने अपनी कौम से कहा था कि तुम अल्लाह पर भरोसा करते हुए अमालिका के मुल्क में दाखिल हो जाओ।

बनी इस्राईल ने हजरत मूसा से कहा था कि अगर हम इस मुल्क पर हमला करें तो हमें शिकस्त होगी और इसके बाद 'हमारे बच्चे लूट का माल ठहरेंगे' मगर यही बच्चे बड़े होकर अमालिका के मुल्क में दाखिल हुए और उस पर कब्जा किया। बच्चों में यह ताकत इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने लम्बी मुद्दत तक सहाराई (रेगिस्तानी) जिंदगी की मशक्कों को बर्दाश्त किया था। बच्चों के बाप जिन पुरखतर हालात को अपने बच्चों के हक में मौत समझते थे उन्हीं पुरखतर हालात के अंदर दाखिल होने में उनके बच्चों की जिंदगी का राज छुपा हुआ था।

मुवाफिक हालात में जीना बजाहिर बहुत अच्छा मालूम होता है। मगर हकीकत यह है कि आदमी के अंदर तमाम बेहतरीन औसाफ उस वक्त पैदा होते हैं जबकि उसे हालात का मुक़बला करके जिंदा रहना पड़े। मिन्न में बनी इस्राईल सदियों तक सुरक्षित जिंदगी गुज़ारते रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि वे एक मुर्दा कौम बन गए। मगर विस्थापन के बाद उन्हें जो सहाराई जिंदगी हासिल हुई उसमें जिंदगी उनके लिए सरापा चैलेन्ज थी। इन हालात में जो लोग बचपन से जवानी की उम्र को पहुँचे वे कुदरती तौर पर बिल्कुल दूसरी क्रिम के लोग थे। सहाराई हालात ने उनके अंदर सादगी, हिम्मत, जफ़ाकशी और हकीकतपसंदी पैदा कर दी थी। और यही वे औसाफ हैं जो किसी कैम को जिंदा कैम बनाते हैं। कोई कैम अगर हालात के नतीजे में मुर्दा कौम बन जाए तो उसे दुबारा जिंदा कौम बनाने के लिए ग़ैर मामूली हालात में डाल दिया जाता है।

وَأَنذَرْنَا عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقْبِلُ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ۖ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ
لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبْوَءَ بِإِثْمِي
وَإِثْمَكَ فَتَكُونَ مِنَ الصَّاحِبِ ۚ قَالَ ذَلِكْ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۖ

और उन्हें आदम के दो बेटों का किस्सा हक के साथ सुनाओ। जबकि उन दोनों ने
कुर्बानी पेश की तो जम्मे से एक की कुर्बानी कुबूल हुई और दूसरे की कुर्बानी कुबूल
न हुई। उसने कहा मैं तुझे मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ
मुत्तकियों से कुबूल करता है। अगर तुम मुझे कत्ल करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं
तुम्हें कत्ल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मैं डरता हूँ अल्लाह से जो सारे
जहान का रब है। मैं चाहता हूँ की मेरा और अपना गुनाह तू ही ले ले फिर तू आग
वालों में शामिल हो जाए। और यही सजा है जुम्म करने वालों की। (27-29)

अल्लाह के लिए जो अमल किया जाए उसका अस्ल बदला तो आखिरत में मिलता है,
ताहम कभी-कभी दुनिया में भी ऐसे वाक्यात जाहिर होते हैं जो बताते हैं कि आदमी का
अमल खुदा के यहां मकबूल हुआ या नहीं। आदम के बेटों में से काबील और हावील के साथ
भी ऐसी ही सूरत पेश आई। काबील किसान था और हावील भेड़-बकरियों का काम करता
था, हावील ने अपनी महनत की कमाई अल्लाह के लिए दी। वह अल्लाह के यहां मकबूल
हुई और इसकी बरकत उसकी जिंदगी और उसके काम में जाहिर हुई। काबील ने भी अपनी
जराअत (कृषि) में से कुछ अल्लाह के लिए पेश किया मगर वह कुबूल न हुआ और वह खुदा
की बरकत पाने से महरूम रहा। यह देखकर काबील के दिल में अपने छोटे भाई हावील के
लिए हसद पैदा हो गया। यह हसद इतना बढ़ा कि उसने हावील से कहा कि मैं तुम्हें जान
से मार डालूंगा। हावील ने कहा कि तुम्हारी कुर्बानी कुबूल न होने का सबब यह है कि तुम्हारे
दिल में खुदा का खौफ नहीं। तुम्हें मेरे पीछे पड़ने के बजाए अपनी इस्लाह की फिक्क करनी
चाहिए। मगर हसद और बुज की आग जब किसी के अंदर भड़कती है तो वह उसे इस
काबिल नहीं रखती कि वह अपनी गलतियों का जायजा ले। वह बस एक ही बात जानता है
: यह कि जिस तरह भी हो अपने काल्पनिक प्रतिपक्षी का ख़ात्मा कर दे।

हावील ने काबील से कहा कि तुम चाहे मेरे कत्ल के लिए हाथ बढ़ाओ, मैं तुम्हारे कत्ल के
लिए हाथ नहीं बढ़ाऊंगा। इसकी वजह यह है कि मुसलमान और मुसलमान की बाहमी लड़ाई को
अल्लाह ने सरासर हराम करार दिया है। यहां तक कि अगर एक मुसलमान अपने दूसरे भाई के
कत्ल के दरपे हो जाए तो उस वक्त भी अजीमत (उच्चआचरण) यह है कि दूसरा भाई अपने

भाई के खून को अपने लिए हलाल न करे। वह अपनी तरफ से आक्रामक पहल न करके बाहमी
टकराव को पहले ही मरहले में खत्म कर देगा। इसके बरअक्स अगर वह भी जवाब में जारिहियत
करने लगे तो मुस्लिम मुआशिर के अंदर अमल और रद्देअमल का अंतहीन सिलसिला शुरू हो
जाएगा। लेकिन हमलाआवर अगर ग़ैर मुस्लिम हो तो उस वक्त ऐसा करना दुरुस्त नहीं। इसी
तरह जब दीनी दुश्मनों की तरफ से जारिहियत (आक्रामकता) की जाए तो मुस्लिम और ग़ैर
मुस्लिम का फर्क किए बग़ैर ऐसे लोगों से भरपूर मुकाबला किया जाएगा।

दो मुसलमान जब एक दूसरे की बर्बादी के दरपे हों तो गुनाह दोनों के दर्मियान तक्सीम
हो जाता है। लेकिन अगर ऐसा हो कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की बर्बादी की
कार्रवाईयां करे और दूसरा मुसलमान सब्र और दुआ में मशगूल हो तो पहला शख्स न सिर्फ
अपने गुनाह का बोझ उठाता है बल्कि दूसरे शख्स के उस मुमकिन गुनाह का बोझ भी उसके
ऊपर डाल दिया जाता है जो सब्र और दुआ के तरीके पर न चलने की सूरत में वह करता।

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ فَبَعَثَ اللَّهُ
غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْآتَةَ أَخِيهِ ۖ قَالَ يُوْنِلْنِي
أَعْبَرْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِي سَوْآتَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ
مِنَ الْخَسِرِينَ ۖ

फिर उसके नफ्स ने उसे अपने भाई के कत्ल पर राजी कर लिया और उसने उसे कत्ल कर
डाला। फिर वह नुक्सान उठाने वालों में शामिल हो गया। फिर खुदा ने एक कौवे को भेजा
जो जमीन में कुरेदता था ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश को किस
तरह छुपाए। उसने कहा कि अफसोस मेरी हालत पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका
कि अपने भाई की लाश को छुपा देता। पस वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। (30-31)

दुनिया में जो कुछ किसी को मिलता है खुदा की तरफ से मिलता है। इसलिए किसी को
अच्छे हाल में देख कर जलना और उसके नुक्सान के दरपे होना गया खुदा के मंसूबे को बातिल
करने की कोशिश करना है। ऐसा आदमी अगरचे मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में एक हद तक
अमल करने का मौक़ा पाता है। मगर खुदा की नजर में वह बदतरीन मुजरिम है। हावील ने अपने
बड़े भाई को इस हकीकत की तरफ तवज्जोह दिलाई। इसके बाद उसके दिल में झिझक पैदा हुई।
उसे महसूस हुआ कि वह वाकई बिना सबब अपने भाई को मार डालना चाहता है। मगर उसके
हसद का जब्बा छड़ा न हो सका। उसने अपने जेहन में ऐसे उज्जात (तर्क) गढ़ लिए जो उसके
लिए अपने भाई के कत्ल को जाइज साबित कर सकें। उसकी अंदरूनी कश्मकश ने अंततः
स्वनिर्मित तौजीहात में अपने लिए तस्कीन तलाश कर ली और उसने अपने भाई को मार डाला।
जमीर की आवाज खुदा की आवाज है। जमीर (अन्तरात्मा) के अंदर किसी अमल के बारे में
सवाल पैदा होना आदमी का इस्तेहान के मैदान में खड़ा होना है। अगर आदमी अपने जमीर की

आवाज पर लब्कै कहे तो वह कामयाब हुआ। और अगर उसने झूठे अल्फाज का सहारा लेकर जमीर की आवाज को दबा दिया तो वह नाकाम हो गया।

हदीस में है कि ज्यादाती और संबंध तोड़ना ऐसे गुनाह हैं कि उनकी सजा इसी मौजूदा दुनिया से शुरू हो जाती है। कबील ने अपने भाई के साथ जो नाहक जुर्म किया था उसकी सजा उसे न सिर्फ आखिरत में मिली बल्कि इसी दुनिया से उसका अंजाम शुरू हो गया। मुजाहिद और जुबैर ताबई (सहाबा के अनुयायी) से मंजूर है कि कत्ल के बाद कबील का यह हाल हुआ कि उसकी पिंडली उसकी रान से चिपक गई। वह असहाय जमीन पर पड़ा रहता, यहां तक कि इसी हाल में जिल्लत और तकलीफ के साथ मर गया। (इब्ने कसीर)

कबील को कौवे के जरिए यह तालीम दी गई कि वह लाश को जमीन के नीचे दफन कर दे। यह इस बात की तरफ इशारा था कि इंसान फितरत के रास्ते को जानने के मामले में जानवर से भी ज्यादा कम अकल है। इसके बावजूद वह अपने जच्चाब के पीछे चलता है तो उससे ज्यादा जलिम और कोई नहीं। साथ ही इसमें इस हकीकत की तरफ भी लतीफ इशारा है कि जुर्म से पहले अगर आदमी जुर्म के इरादे को अपने सीने के अंदर दफन कर दे तो उसे शर्मिन्दगी न उठाना पड़े। आदमी को चाहिए कि वह दिल के एहसास को दिल के अंदर दबाए, उसे दिल से बाहर आकर वाकया न बनने दे। बुरे एहसास को दिल के बाहर निकालने से पहले तो सिर्फ एहसास को दफन करना पड़ता है। लेकिन अगर उसने उसे बाहर निकाला तो फिर एक जिंदा इंसान की 'लाश' को दफन करने का मसला उसके लिए पैदा हो जाएगा। जो दफन होकर भी खुदा के यहां दफन नहीं होता।

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ
نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا
أَحْيَاهَا جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ
ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ٥ إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ جُزْءٌ فِي الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ٦ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْرَأُوا
عَلَيْهِمْ فَاغْلِبُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٧

इसी सबब से हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख्स किसी को कत्ल करे, बगैर इससे कि उसने किसी को कत्ल किया हो या जमीन में फसाद बरपा किया हो तो गोया उसने सारे आदमियों को कत्ल कर डाला और जिसने एक शख्स को बचाया

तो गोया उसने सारे आदमियों को बचा लिया। और हमारे पैगम्बर उनके पास खुले अहकाम लेकर आए। इसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग जमीन में ज्यादातियां करते हैं। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और जमीन में फसाद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सजा यही है कि उन्हें कत्ल किया जाए या वे सूली पर चढ़ाए जाएं या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशा से काटे जाएं या उन्हें मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए। यह उनकी रुस्वाई दुनिया में है और आखिरत में उनके लिए बड़ा अजाब है। मगर जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे काबू पाने से पहले तो जान लो कि अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (32-34)

कोई शख्स जब किसी शख्स को कत्ल करता है तो वह सिर्फ एक इंसान का कातिल नहीं होता बल्कि तमाम इंसानों का कातिल होता है। क्योंकि वह हुस्मत (मनाही) के उस कानून को तोड़ता है जिसमें तमाम इंसानों की जिंदगियां बंधी हुई हैं। इसी तरह जब कोई शख्स किसी को जालिम के जुर्म से नजात देता है तो वह सिर्फ एक शख्स को नजात देने वाला नहीं होता बल्कि तमाम इंसानों को नजात देने वाला होता है। क्योंकि उसने इस उसूल की हिफाजत की कि तमाम इंसानों की जान मोहतरम (सम्माननीय) है। किसी को किसी के ऊपर हाथ उठाने का हक नहीं। जब कोई शख्स किसी की इज्जत या उसके माल या उसकी जान पर हमला करे तो इसका मतलब यह है कि मुआशिरें के अंदर हंगामी हालत पैदा हो गई है। मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे किसी एक वाकये को भी इस नजर से देखें गोया सारे लोगों की जान और माल और आबरू खतरे में है। किसी मुआशिरें में एक दूसरे के एहताराम की रिवायात लम्बी तारीख के नतीजे में बनती हैं। और अगर एक बार ये रिवायतें टूट जाएं तो दुबारा लम्बी तारीख के बाद ही उन्हें मुआशिरें के अंदर कायम किया जा सकता है। जो लोग मुआशिरें के अंदर फसाद की रिवायात कायम करें वे मुआशिरें के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

खुदा ने अपनी दुनिया का निजाम जिस उसूल पर कायम किया है वह यह है कि हर एक अपने हिस्सा का फर्ज अंजाम दे। कोई शख्स दूसरे के दायरे में बेजा मुदाखलत (हस्तक्षेप) न करे। तमाम जमादात और हैवानात इसी फितरत पर अमल कर रहे हैं। इंसान को भी पैगम्बरों के जरिये ये हिदायतें वाजिह तौर पर बता दी गई हैं। मगर इंसान जो कि दीगर मखबूकात के बरअक्स वक्ती तौर पर आजाद रखा गया है, सरकशी करता है और इस तरह फितरत के निजाम में फसाद पैदा करता है। ऐसे लोग खुदा की नजर में सख्त मुजरिम हैं। और वे लोग और भी ज्यादा बड़े मुजरिम हैं जो खुदा और रसूल से जंग करें। यानी खुदा अपने बंदों के दर्मियान ऐसी दावत उठाए जो लोगों को मुफिसदाना तरीकों से बचने और फितरते खुदावंदी पर जिंदगी गुजारने की तरफ बुलाती हो तो वे उसका रास्ता रोकें और उसके खिलाफ तखरीबी कार्रवाईयां करें। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में इबरतनाक सजा है और आखिरत में भड़कती हुई आग।

मदीना में अंदरूनी तौर पर दो किस्म के लोग इस्लामी दावत की मुखातिफ़ कर रहे थे। एक मुनाफ़िक्कीन, दूसरे यहूद। मुनाफ़िक्कीन वे लोग थे जो जाहिरी और नुमाइशी इस्लाम को लिए हुए थे। सच्चे इस्लाम की दावत में उन्हें अपने स्वार्थों व मफ़ादात पर ज़द पड़ती हुई महसूस होती थी। यहूद वे लोग थे जो मजहब की नुमाइंदगी की गर्दियों पर बैठे हुए थे। उन्हें महसूस होता था कि इस्लामी दावत उन्हें उनके बरतरी के मक़ाम से नीचे उतार रही है। यह दोनों किस्म के लोग सच्चे इस्लाम की दावत को अपना मुश्तरक (साक्षी) दुश्मन समझते थे। इसलिए इस्लाम के खिलाफ़ मुहिम चलाने में दोनों एक हो गए। उनके 'बड़े' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आना अपनी शान के खिलाफ़ समझते थे। इसलिए वे खुद न आते। अलबत्ता उनके 'छोटे' इस पर लगे हुए थे कि वे आपकी बातों को सुनें और उन्हें अपने बड़ों तक पहुंचाएं। फिर ये लोग उसे उल्टे मअना पहनाते और आपको और आपकी तहरीक को बदनाम करते। उनकी सरकशी ने उन्हें ऐसा ढीठ बना दिया था कि वे अल्लाह के कलाम को उसके परिप्रेक्ष्य से हटा कर उससे अपना मुफ़ीदे मतलब मफ़हूम निकालने से भी न डरते।

ये वे लोग हैं जो अपने को खुदा व रसूल के ताबेअ नहीं करते। बल्कि उनका जेहन यह होता है कि जो बात अपने जैक के मुताबिक़ हो उसे ले लो और जो बात जैक के मुताबिक़ न हो उसे छोड़ दो। यह मिजाज किसी आदमी के लिए सख़्त फ़ितना है। जिन लोगों का यह हाल हो कि वे हक़ के मुकाबले में मफ़ाद और मस्लेहत को तरज़ीह दें, जो हर हाल में अपने को बड़ाई के मक़ाम पर देखना चाहें, जो हक़ को ज़ेर (परास्त) करने के लिए उसके खिलाफ़ तख़रीबी साजिशें करें, यहां तक कि अपने अमल को जाइज साबित करने के लिए खुदा के कलाम को बदल डालें, ऐसे लोगों की नपिस्यात बिलआख़िर यह हो जाती है कि वे हक़ को कुबूल करने की सलाह से महरूम हो जाते हैं। उन्होंने खुदा का साथ छोड़ा, इसलिए खुदा ने भी उनका साथ छोड़ दिया। ऐसे लोग खुदा की तौफीक़ से महरूम होकर बातिल मशग़लों में लगे रहते हैं, यहां तक कि आग की दुनिया में पहुंच जाते हैं।

अल्लाह का जो बंदा अल्लाह के सच्चे दीन का पैग़ाम लेकर उठा हो उसे मुखातिफ़तों की वजह से बेहिम्मत नहीं होना चाहिए। ऐसे लोगों की सरगर्मियां हकीकत न दाओ (आह्वानकती) के खिलाफ़ नहीं बल्कि खुदा के खिलाफ़ हैं। इसलिए वह कभी कामयाब नहीं हो सकती। दावती अमल से अल्लाह को जो चीज़ मल्लूब है वह सिर्फ़ यह कि अस्ल बात से बख़ूबी तौर पर लोगों को आगाह कर दिया जाए। और यह काम अल्लाह की मदद से लाजिमन अपनी तक्मील तक पहुंच कर रहता है।

سَمْعُونَ لَكَاذِبٌ أَكْثَرُونَ لِلْسُّحْرِ وَإِنْ جَاءُوكَ فَأَحْكُم بَيْنَهُمْ وَإِغْرَضْ عَنْهُمْ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا وَإِنْ حَكَمْتَ فَأَحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ٥ وَكَيْفَ يُحْكُمُونَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ٦

वे झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं। अगर वे तुम्हारे पास आए तो चाहे उनके दर्मियान फैसला करो या उन्हें ढाल दो। अगर तुम उन्हें ढाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अगर तुम फैसला करो तो उनके दर्मियान इंसाफ़ के मुताबिक़ फैसला करो। अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को पसंद करता है। और वे कैसे तुम्हें हक़म (मध्यस्थ) बनाते हैं हालांकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है। और फिर वे उससे मुंह मोड़ रहे हैं। और ये लोग हरगिज़ ईमान वाले नहीं हैं। (42-43)

हराम (सुहत) से मुराद रिश्वत है। रिश्वत की एक आम शक़ल वह है जो बराहेरास्त इसी नाम पर ली जाती है। चुनावों के यहूदी उलमा (विद्वानों) में ऐसे लोग थे जो रिश्वत लेकर ग़लत मसाले बताया करते थे। ताहम रिश्वत की एक और सूरत वह है जिसमें बराहेरास्त लेन देन नहीं होता मगर वह तमाम रिश्वतों में ज्यादा बड़ी और ज्यादा कबीह (निकृष्ट) रिश्वत होती है। यह है दीन को अवामी पसंद के मुताबिक़ बनाकर पेश करना ताकि अवाम के दर्मियान मकबूलियत हो, लोगों का एज़ाज व इकराम मिले, लोगों के चन्दे और नज़राने वसूल होते रहें।

दीन को उसकी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में पेश करना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अवाम के अंदर नामकबूल हो जाए। इसके बरअक्स दीन को अगर ऐसी सूरत में पेश किया जाए कि जिंदगी में कोई हकीकी तब्दीली भी न करना पड़े और आदमी को दीन भी हासिल रहे तो ऐसे दीन के गिर्द बहुत जल्द भीड़ की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। वह दीन जिसमें अपनी दुनियापरस्ताना जिंदगी को बदले बग़ैर कुछ सस्ते आमाल के जरिए जन्नत मिल रही हो। वह दीन जो कौमी और माददी (भौतिक) हंगामाआराइयों को दीनी जवाज (औचित्य) अता करता हो। वह दीन जिसमें यह मौका हो कि आदमी अपनी जाहपसंदी (मायामोह) के लिए सरगर्म हो, फिर भी वह जो कुछ करे सब दीन के खाने में लिखा जाता रहे। जो लोग इस किस्म का दीन पेश करें वे बहुत जल्द अवाम के अंदर महबूबियत का मक़ाम हासिल कर लेते हैं।

यहूद के कायदीन (धार्मिक नायक) इसी किस्म का दीन चला कर अवाम के आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। वे अवाम को उनका पसंदीदा दीन पेश कर रहे थे और अवाम इसके मुआवजे में उन्हें माली सहयोग से लेकर एज़ाज व इकराम तक हर चीज़ निसार कर रहे थे। ऐसी हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चे दीन की आवाज बुलन्द करना उन्हें नाक़ाबिले बदशत मालूम हुआ। क्योंकि यह उनके मफ़ादात (हितों) के ढांचे को तोड़ने के हममअना (समान) था, आपसे उन्हें इतनी ज़िद हो गई कि आपके मुतअल्लिक किसी अच्छी ख़बर से उन्हें कोई दिलचस्पी न रही। अलबत्ता अगर वे आपके बारे में कोई बुरी ख़बर सुनते तो उसमें ख़ूब दिलचस्पी लेते और उसमें इजाफ़ा करके उसे फैलाते। जिन लोगों में इस किस्म का बिगाड़ आ जाए उनका हाल यह हो जाता है कि अगर वे दीनी फैसला लेने की तरफ़ रुजूअ भी होते हैं तो इस उम्मीद में कि फैसला अपनी ख़्बाहिश के मुताबिक़ होगा। अगर ऐसा न हो तो यह जानते हुए कि यह खुदा और रसूल का फैसला है उसे मानने से इंकार कर देते हैं। वे भूल जाते हैं कि ऐसा करना महज एक फैसले को न मानना नहीं है बल्कि खुद ईमान व इस्लाम का इंकार करना है।

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا
لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّكَابِئِينَ وَالْأَحْبَارَ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا
عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۖ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوُا اللَّهَ وَلَا تَتَّبِعُوا بِأَلْفٍ ثَمَنًا
قَلِيلًا ۖ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ④
وَكُتِبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنْ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ
بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ۖ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ⑤ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا
لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ⑥ وَلِيَحْكُمَ
أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۖ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ⑦

वेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक खुदा के फरमांवरदार अबिया यहूदी लोगों का फैसला करते थे और उनके दुर्वेश और उलमा (विद्वान) भी। इसलिए कि वे खुदा की किताब पर निगहबान ठहराए गए थे। और वे उसके गवाह थे। पस तुम इसानों से न डरो मुझसे डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्यों के ऐवज न बेचो। और जो कोई उसके मुवाफिक हुक्म न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग मुंकिर हैं। और हमने उस किताब में उन पर लिख दिया कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़र्माँ का बदला उनके बराबर। फिर जिसने उसे माफ कर दिया तो वह उसके लिए कफ़र (प्रायश्चित) है। और जो शरस उसके मुवाफिक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग जालिम हैं। और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम को भेजा तस्दीक (पुष्टि) करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और वह तस्दीक करने वाली थी अपने से अगली किताब तौरात की और हिदायत और नसीहत डरने वालों के लिए। और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुवाफिक फैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो कोई उसके मुवाफिक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग

नाफरमान हैं। (44-47)

खुदा की किताब इसलिए आती है कि वह लोगों को उनकी अबदी फलाह की राह दिखाए। ख्वाहिशपरस्ती के अंधेरे से निकाल कर उन्हें हकपरस्ती की रोशनी में लाए। जो खुदा से डरने वाले हैं वे खुदा की किताब को खुदा और बंदे के दर्मियान मुकद्दस अहद समझते हैं जिसमें अपनी तरफ से कमी या ज्यादाती जाइज़ न हो। वे उसकी तामील इस तरह करते हैं जिस तरह किसी के पास कोई अमानत हो और वह ठीक-ठीक उसकी अदायगी करे। अल्लाह की किताब बंदों के हक में अल्लाह का फैसला होता है। जरूरत होती है कि जिंदगी के मामलात में उसी की हिदायत पर चला जाए और आपसी विवादों में उसी के अहकाम के मुताबिक फैसला किया जाए। खुदा की किताब को अगर यह हाकिमाना हैसियत न दी जाए बल्कि अपने मामलात और विवादों को अपनी दुनियावी मस्लेहतों के ताबेअ रखा जाए जो यह खुदा की किताब से इंकार के हममअना होगा, चाहे तबरक के तौर पर उसका कितना ही ज्यादा जाहिरी एहताराम किया जाता हो। जो लोग अपने को मुस्लिम कहें मगर उनका हाल यह हो कि वे इख्तियार और आजादी रखते हुए भी अपने मामलात का फैसला अल्लाह की किताब के मुताबिक न करें बल्कि ख्वाहिशों की शरीअत पर चलें वे अल्लाह की नजर में मुंकिर और जालिम और फासिक (उद्दंड) हैं। वे खुदा की हाकिमाना हैसियत का इंकार करने वाले हैं, वे हक के तल्फ करने वाले हैं, वे इताअते खुदावंदी के अहद से निकल जाने वाले हैं। शरीअत के हुक्म को जान बूझकर नजरअंदाज करने के बाद आदमी की कोई हैसियत खुदा के यहां बाकी नहीं रहती।

फिर (समान दंड) के सिलसिले में शरीअत का तकाज़ा है कि किसी की हैसियत की परवाह किए बगैर उसका निफाज किया जाए। ताहम कभी-कभी आदमी की जारिहियत (आक्रामकता) उसकी शरपसंदी का नतीजा नहीं होती बल्कि वक्ती जज्बे के तहत हो जाती है। ऐसी हालत में अगर मजरूह (पीड़ित) जारह को माफ कर दे तो यह उसकी तरफ से जारह (अत्याचारी) के लिए एक सदक्क होगा और समाज में कुरअते जर्फ (उच्चादश) की फौब करने का जरिया।

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ
وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ هُمْ عَمَّا
جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرْعَةً وَمِنْهَا جَاوِزُونَ ۚ شَاءَ اللَّهُ
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَقْبُوا خَيْرَاتِ اللَّهِ إِلَى اللَّهِ
مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ⑧

और हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी हक के साथ, तस्दीक (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मजामीन पर निगहबान। पस तुम उनके दर्मियान फैसला करो उसके मुताबिक जो अल्लाह ने उतारा। और जो हक तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर

उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करो। हमने तुममें से हर एक लिए एक शरीअत और एक तरीका ठहराया। और अगर खुदा चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता। मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी आजमाइश करे। पस तुम भलाइयों की तरफ दौड़ो। आखिरकार तुम सबको खुदा की तरफ फलटकर जाना है। फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा उस चीज से जिसमें तुम इस्तिलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे थे। (48)

यहां 'किताब' से मुराद दीन की असली और असासी (मौलिक) तालीमात हैं। अल्लाह की यह किताब एक ही किताब है और वही एक किताब, जबान और तर्तीब के फर्क के साथ, तमाम नबियों की तरफ उतारी गई है। ताहम दीन की हकीकत जिस जाहिरी ढांचे में निरूपित होती है उसमें विभिन्न अबिया के दर्मियान फर्क पाया जाता है। इस फर्क की वजह यह नहीं कि दीन के उतारने में कोई इरतक़ाई (चरणबद्ध) तर्तीब है। यानी पहले कम तरक्कीयाफ़ता और फिर कामिल दीन उतारा गया और इसके बाद ज्यादा तरक्कीयाफ़ता और ज्यादा कामिल दीन उतरा। इस फर्क की वजह खुदा की हिक्मते इब्तिला (आज़माइश) है न कि हिक्मते इरतक़ा। कुरआन के मुताबिक ऐसा सिर्फ इसलिए हुआ कि लोगों को आजमाया जाए। जमाना गुजरने के बाद ऐसा होता है कि दीन की अंदरूनी हकीकत गुम हो जाती है और रीति-रिवाज मुकद्दस होकर अस्ल बन जाते हैं। लोग इबादत इसे समझ लेते हैं कि एक ख़ास ढांचे को जाहिरी शराइत के साथ दोहरा लिया जाए। इसलिए जाहिरी ढांचे में बार-बार तब्दीलियां की गईं ताकि ढांचे की मक्सूदियत का जेहन ख़त्म हो और खुदा के सिवा कोई और चीज तवज्जोह का मर्कज न बनने पाए। इसकी एक मिसाल किबले की तब्दीली है। बनी इम्राईल को हुक्म था कि वे बैतुलमक्दिस की तरफ रुख करके इबादत करें। यह हुक्म सिर्फ रुखबंदी के लिए था। मगर धीरे-धीरे उनका जेहन यह बन गया कि बैतुलमक्दिस की तरफ रुख करने का नाम ही इबादत है। उस वक़्त पहले हुक्म को बदल कर काबे का किबला बना दिया गया। अब कुछ लोग पहले की रिवायत से लिपटे रहे और कुछ लोगों ने खुदा की हिदायत को पा लिया। इस तरह तब्दीली किबले से यह खुल गया कि कौन दरोदीवार को पूजने वाला था और कौन खुदा को पूजने वाला। (सूरा बकरह, 143)

अब इस किस्म की तब्दीली का कोई इम्कान नहीं। क्योंकि ढांचे को नबी बदलता है और नबी अब आने वाला नहीं। ताहम जहां तक अस्ल मक्सूद का तअल्लुक है वह बदस्तूर बाकी है। अब भी खुदा के यहां उसका सच्चा परस्तार वही शुमार होगा जो जाहिरी ढांचे की पाबंदी के बावजूद जाहिरी ढांचे को मक्सूदियत का दर्जा न दे, जो जवाहिर से जेहन को आजाद करके खुदा की इबादत करे। पहले यह मक्सद जाहिरी ढांचे को तोड़ कर हासिल होता था अब उसे जेहनी शिकस्त व पराभाव के जरिए हासिल करना होगा।

जवाहिर के नाम पर दीन में जो झगड़े हैं वह सिर्फ इसलिए हैं कि लोगों की गफ़लत ने उन्हें अस्ल हकीकत से बेख़बर कर दिया है। अगर हकीकत को वे इस तरह पा लें जिस तरह वह आखिरत में दिखाई देगी तो तमाम झगड़े अभी ख़त्म हो जाएंगे।

وَأَنِ احْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ وَإِنْ كَثُرَ الْإِثْمُ فَسُقُوتُكُمْ أَفْكُمُ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ٤٩

और उनके दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करो और उन लोगों से बचो कि कहीं वह तुम्हें फिसला दें तुम्हारे ऊपर अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से। पस अगर वे फिर जाएं तो जान लो कि अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों की सजा देना चाहता है। और यकीनन लोगों में से ज्यादा आदमी नाफ़रमान हैं। क्या ये लोग जहिलियत का फैसला चाहते हैं। और अल्लाह से बढ़कर किसका फैसला हो सकता है उन लोगों के लिए जो यकीन करना चाहें। (49-50)

कुरआन और दूसरे आसमानी सहीफे अलग-अलग किताबें नहीं हैं। ये सब एक ही किताबे इलाही के मुख़लिफ़ एडिशन हैं जिसे यहां 'अलकिताब' कहा गया है। खुदा की तरफ से जितनी किताबें आईं, चाहे वे जिस दौर में और जिस जबान में आई हों, सबका मुश्तरक मजमून एक ही था। ताहम पिछली किताबों के हामिलीन बाद के जमाने में उन्हें उनकी असली सूरत में महफूज न रख सके। इसलिए खुदा ने एक किताबे मुहमीन (कुरआन) उतारा। यह खुदा की तरफ से उसकी किताब का मुस्तनद एडिशन है और इस आधार पर वह एक कसौटी है जिस पर जांच कर मालूम किया जाए कि बाकी किताबों का कौन सा हिस्सा असली हालत में है और कौन सा वह है जो बदला जा चुका है।

यहूद खुदा के सच्चे दीन के साथ अपनी बातों को मिलाकर एक खुदसाख़्ता दीन बनाए हुए थे। इस खुदसाख़्ता दीन से उनकी अकीदतें भी वाबस्ता थीं और उनके मफ़ादात भी। इसलिए वह किसी तरह तैयार न थे कि उसे छोड़कर पैग़म्बर के लाए हुए बेआमेज (विशुद्ध) दीन को मान लें। उन्होंने हक के आगे झुकने के बजाए अपने लिए यह तरीका पसंद किया कि वे हक के अलमबरदार को इतना ज्यादा परेशान करें कि वह खुद उनके आगे झुक जाए, वह खुदा के सच्चे दीन को छोड़कर उनके अपने बनाए हुए दीन को इख़्तियार कर ले। खुदा अगर चाहता तो पहले ही मरहले में इन जालिमों का हाथ रोक देता और वे हक के दाओ को सताने में कामयाब न होते। मगर अल्लाह ने उन्हें छूट दी कि वे अपने नापाक मंसूबों को बरूपकार ला सकें। ऐसा इसलिए हुआ ताकि यह बात पूरी तरह खुल जाए कि दीनदारी के ये दावेदार सबसे ज्यादा बेदीन लोग हैं। वे खुदा के परस्तार नहीं हैं बल्कि खुद अपनी जात के परस्तार हैं। अल्लाह की यह सुन्नत अगरचे हक के दाअियों के लिए बड़ा सख़्त इम्तेहान है। मगर यही वह अमल है जिसके जरिए यह फैसला होता है कि कौन जन्नत का मुस्तहिक

है और कौन जहन्नम का।

इंसान की यह कमजोरी है कि वह अपनी ख्वाहिशों के पीछे चलना चाहता है, अल्लाह के हुक्म का पाबंद बनकर रहना उसे गवारा नहीं होता। यहां तक कि दीने खुदावंदी की खुदसाखा तशरीह करके वह उसे भी अपनी ख्वाहिशों के सांचे में ढाल लेता है। ऐसी हालत में बेआमेज (विशुद्ध) दीन को वही लोग कुबूल करेंगे जो चीजों को ख्वाहिश की सतह पर न देखते हों बल्कि इससे ऊपर उठकर अपनी राय कायम करते हों। अल्लाह की बात बिलाशुबह सहीतरीन बात है। मगर मौजूदा आजमाइशी दुनिया में हर सच्चाई पर एक शुबह का पर्दा डाल दिया गया है। आदमी का इस्तेहान यह है कि वह इस पर्दे का फाड़कर उस पर यकीन करे, वह गैब (अप्रकट) को शुहद (प्रकट रूप) में देख ले। जो शख्स जाहिरी शुब्हात में अटक जाए वह नाकाम हो गया और जो शख्स जाहिरी शुब्हात के गुबार को पार करके सच्चाई को पा ले वह कामयाब रहा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّ لَهُمْ مِنْهُمُ أَنَّ اللَّهَ لَا يُهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝
فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِنْ عِنْدِهِ فَيُضْبِحُوا عَلَىٰ مَا أَسْرَوْا فِي الْأَنْفُسِمْ نِدْمِينَ ۝ وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ أَنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتِ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ। वे एक दूसरे के दोस्त हैं। और तुममें से जो शख्स उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है वे उन्हीं की तरफ दौड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि हमें यह अदेशा है कि हम किसी मुसीबत में न फंस जाएं। तो मुमकिन है कि अल्लाह फतह दे दे या अपनी तरफ से कोई खास बात जाहिर करे तो ये लोग उस चीज पर जिसे ये अपने दिलों में छुपाए हुए हैं नादिम होंगे। और उस वक्त अहले ईमान कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो जोर शोर से अल्लाह की कसमें खाकर यकीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके सारे आमाल जाए (नष्ट) हो गए और वे घाटे में रहे। (51-53)

अरब में मुसलमान अभी एक नई ताकत की हैसियत रखते थे। साथ ही यह कि उनके मुखालिफीन उन्हें उखाड़ने की कोशिश में रात दिन लगे हुए थे। दूसरी तरफ मुल्क के यहूदी और ईसाई कबीलों का यह हाल था कि मुल्क के अधिकतर आर्थिक साधनों पर उनका कब्जा था। सदियों की तारीख ने उनकी अज्मत लोगों के दिलों पर बिठा रखी थी। लोगों को यकीन नहीं था कि ऐसी ताकत को मुल्क से ख़्त किया जा सकता है। चुनांचे मुसलमानों की जमाअत में जो

कमजोर लोग थे वे चाहते थे कि इस्लाम की जद्दोजहद में इस तरह शरीक न हों कि यहूद व नसारा को अपना दुश्मन बना लें। ताकि यह कश्मकश अगर मुसलमानों की शिकस्त पर ख़्त हो तो यहूद व नसारा की तरफ से उन्हें किसी इत्तिकामी कार्रवाई का सामना न करना पड़े। ये लोग मुत्तकबिल के संभावी ख़तरे से बचने के लिए अपने को वक्त के यकीनी ख़तरे में मुत्तला कर रहे थे, और वह उनकी दोहरी वफ़ादारी थी। जो शख्स हानिरहित मामलात में हक़परस्त बने और हानि का अदेशा हो तो बतिलपरस्तों का साथ देने लगे, उसका अंजाम खुदा के यहां उन्हीं लोगों में होगा जिनका उसने ख़तरे के मौकों पर साथ दिया।

किसी की जिंगी में वह वक्त बड़ नाजुक होता है जबकि इस्लाम पर कायम रहने के लिए उसे किसी क्रिम की कुर्बानी देनी पड़े। ऐसे मौके आदमी के इस्लाम की तस्दीक या तरदीद करने के लिए आते हैं। खुदा चाहता है कि आदमी जिस इस्लाम का सुबूत बे-ख़तर हालात में दे रहा था उसी इस्लाम का सुबूत वह उस वक्त भी दे जबकि जख़ात को दबा कर या जान व माल का ख़तरा मोल लेकर आदमी अपने इस्लाम का सुबूत पेश करता है। इस इस्तेहान में पूरा उतरने के बाद ही आदमी इस काबिल बनता है कि उसका खुदा उसे अपने वफ़ादार बंदों में लिख ले। इन मौकों पर इस्लामियत का सुबूत देना ही किसी आदमी के पिछले आमाल को बा-क़ीमत बनाता है। और अगर वह ऐसे मौकों पर इस्लामियत का सुबूत न दे सके तो इसका मतलब यह है कि उसने अपने पिछले तमाम आमाल को बे-क़ीमत कर लिया।

दुनिया का हर इस्तेहान इरादे का इस्तेहान है। आदमी को सिर्फ यह करना है कि वह ख़तरात को नजरअंदाज करके इरादे का सुबूत दे दे, वह अल्लाह की तरफ अपना पहला कदम उठा दे। उसके बाद फौरन खुदा की मदद उसका सहारा बन जाती है। मगर जो शख्स इरादे का सुबूत न दे, जो खुदा की तरफ अपना पहला कदम न उठाए वह अल्लाह की नजर में जालिम है। ऐसे लोगों को खुदा एकतरफा तौर पर अपनी मदद का सहारा नहीं भेजता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ۖ إِذْ لَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِعْزَاقٌ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुममें से जो शख्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उन्हें महबूब होगा। वे मुसलमानों के लिए नर्म और मुकिरों के ऊपर सख़्त होंगे। वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और

किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फल है। वह जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह वुस्अत वाला और इल्म वाला है। तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमान वाले हैं जो नमाज कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही ग़ालिब रहने वाली है। (54-56)

ईमान लाने के बाद जो शख्स ईमान के तक़जे पूरे न करे वह अल्लाह की नज़र में दीन को कुबूल करने के बाद दीन से फिर गया। अल्लाह की नज़र में सच्चे ईमान वाले लोग वे हैं जिनके अंदर ईमान इस तरह दाखिल हो कि उन्हें मुहब्बत की सतह पर अल्लाह से तअल्लुक पैदा हो जाए, उन्हें इस्लामी मक़ासिद की तक़मील इतनी अजीज हो कि जो लोग इस्लाम की राह में उनके भाई बनें उनके लिए उनके दिल में नर्मी और हमदर्दी के सिवा कोई चीज बाकी न रहे। वे मुसलमानों के लिए इस दर्जे शफ़ीक़ बन जाएं कि उनकी ताक़त और उनकी सलाहियत कभी मुसलमानों के मुक़ाबले में इस्तेमाल न हो। वे दीन के मामले में इतने पुख़्ता हों कि ग़ैर इस्लामी लोगों के अफ़कार (विचार) व आमाल से कोई असर कुबूल न करें। उनके ज़्वाअत इस दर्जे उसूल के ताबेअ हो जाएं कि मुसलमानों के लिए वे फूल से ज्यादा नाजुक साबित हों मगर नामुसलमानों के लिए वे पत्थर से ज्यादा सख़्त बन जाएं। कोई नामुसलमान कभी उन्हें अपने मक़ासिद के लिए इस्तेमाल न कर सके।

इस्लामी ज़िद्दी एक बामक़सद ज़िद्दी है और इसी लिए वह ज़द्दोज़हद की ज़िद्दी है। मुसलमान का मिशन यह है कि वह अल्लाह के दीन को अल्लाह के तमाम बंदों तक पहुंचाए। जहन्नम की तरफ़ जाती हुई दुनिया को जन्नत के रास्ते पर लाने की कोशिश करे। इस काम के फ़ित्री तक़जे के तौर पर आदमी के सामने तरह-तरह की मुश्किलें और तरह-तरह की मलामतें पेश आती हैं। यहां तक़ कि दो अलग-अलग ग़िरोह बन जाते हैं। एक दुनियापरस्तों का और दूसरा आख़िरत के मुसाफ़िरों का। उनके दर्मियान एक मुस्तक़िल कशमक़श शुरू हो जाती है। आदमी का इम्तेहान यह है कि इन सारे मौकों पर वह उस इंसान का सुबूत दे जो अल्लाह के भरोसे पर चल रहा है और अल्लाह के सिवा किसी की परवाह किए बग़ैर अपना इस्लामी सफ़र जारी रखता है। यहां तक़ की मौत के दरवाजे में दाख़िल होकर खुदा के पास पहुंच जाता है।

इस तरह के लोग किसी मक़ाम पर जब क़बिले लिहाज तादाद में पैदा हो जाएं तो ज़मीन का ग़लबा भी उन्हीं के लिए मुक़द्दर कर दिया जाता है। ये वे लोग हैं जो नमाज कायम करते हैं। यानी उनका मक़ज़े तवज़्जोह तमामतर अल्लाह बन जाता है। वे ज़कात अदा करते हैं। यानी उनके बाहमी तअल्लुकात एक दूसरे की ख़ैरख़्वाही पर कायम होते हैं, वे अल्लाह के आगे झुकने वाले होते हैं। यानी दुनिया के मामलात में कोई भी चीज उन्हें अनानियत (अंहकार) पर आमादा नहीं करती बल्कि वे हर मौके पर वही करते हैं जो अल्लाह चाहे। वह तवाज्जोअ (विनम्रता) इख़्तियार करने वाले होते हैं न कि सरकशी करने वाले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُم مِّنْ مِّنِيْنَ
وَإِذَا دُعِيتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَخُذُوا هُزُؤًا وَلَعِبًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ
قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَتَّقُونَ فَإِنِ لَا تَقُونَ إِلَّا أَن أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا
أُنْزِلَ مِن قَبْلُ وَإِنِ أَكْثَرُكُمْ فَسِقُونَ قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذَلِكَ
مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ
وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَكِ الطَّاغُوتِ ۚ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

ऐ ईमान वाले, उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मज़ाक और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और न मुंकिरों को। और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे मज़ाक और खेल बना लेते हैं। इसकी वज़ह यह है कि वे अक्ल नहीं रखते। कहो कि ऐ अहले किताब, तुम हमसे सिर्फ इसलिए ज़िद रखते हो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतरा। और तुम में से अक्सर लोग नाफरमान हैं। कहो क्या मैं तुम्हें बताऊं वह जो अल्लाह के यहां अंजाम के एतबार से इससे भी ज्यादा बुरा है। वह जिस पर खुदा ने लानत की और जिस पर उसका ग़ज़ब हुआ। और जिनमें से बन्दर और सुअर बना दिए और उन्होंने शैतान की परस्तिश की। ऐसे लोग मक़ाम के एतबार से बदतर और राहेरास्त से बहुत दूर हैं। (57-60)

वे लोग जो खुदसाख़्ता दीन की बुनियाद पर खुदापरस्ती के इजारेदार बने हुए हों उनके दर्मियान जब सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत उठती है तो उसके खिलाफ़ वे इतनी शदीद नफरत में मुब्तिला होते हैं कि अपनी माकूलियत तक खो बैठते हैं। यहां तक़ कि ऐसी चीज़ें जो बिला इख़िलाफ़ क़बिले एहतशाम हैं उनका भी मज़ाक उड़ने लगते हैं। यही मदीना के यहू का हाल था। चुनांचे वे मुसलमानों की अज़ान का मज़ाक उड़ाने से भी नहीं रुकते थे। जो लोग इतने बेहिस और इतने ग़ैर संजीदा हो जाएं उनसे एक मुसलमान का तअल्लुक दावत (आह्वान) का तो हो सकता है मगर दोस्ती का नहीं हो सकता।

उन लोगों की खुदा से बेख़ौफी का यह नतीजा होता है कि वे सच्चे मुसलमानों को मुजरिम समझते हैं और अपने तमाम ज़राइम के बावजूद अपने मुतअल्लिक यह यक़ीन रखते हैं कि उनका मामला खुदा के यहां बिल्कुल दुरुस्त है। जब वे अपनी इस कैफ़ियत की इस्लाह नहीं करते तो बिलआख़िर उनकी बेहिंसी उन्हें इस नौबत तक पहुंचाती है कि उनकी अक्ल

हक व बातिल के मामले में कुंद हो जाती है। वे शकल के एतबार से इंसान मगर बातिल के एतबार से बदतरीन जानवर बन जाते हैं। वे लतीफ एहसासात जो आदमी के अंदर खुदा के चौकीदार की तरह काम करते हैं, जो उसे बुराइयों से रोकते हैं वे उनके अंदर ख़त्म हो जाते हैं। मसलन हया, शरफत, कुअतेर्जफ़ पाक़ीज तरीक़ोंको पसंद करना, बौह। इस गिरावट का आखिरी दर्जा यह है कि आदमी की पूरी ज़िंदगी शैतानी रास्तों पर चल पड़े। जब कोई गिरोह इस नौबत को पहुंचता है तो वह लानत का मुस्तहिक बन जाता है, वह खुदा की रहमत से आखिरी हद तक दूर हो जाता है। उसकी इंसानियत मिट जाती है वह फितरत के सीधे रास्ते से भटक कर जानवरों की तरह जीने लगता है।

इंसान को अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलने से जो चीज रोकती है वह अक्ल है। मगर जब आदमी पर ज़िद और अदावत का ग़लबा होता है तो उसकी अक्ल उसकी ख़्वाहिश के नीचे दबकर रह जाती है। अब वह जाहिर में इंसान मगर बातिल में हैवान होता है। यहां तक कि साहिबे बसीरत आदमी उसे देखकर जान लेता है कि उसके जाहिरी इंसानी ढांचे में अंदर कौन सा हैवान छुपा हुआ है।

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا امْكُثُوا وَابْكُفُوا وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ۖ وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَآكِلِهِمُ السُّحْتَ ۖ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّائِيُّونَ
وَالْأَحْبَابُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَآكِلِهِمُ السُّحْتَ ۖ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۖ

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि वे मुंकिर आए थे और मुंकिर ही चले गए। और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज को जिसे वे छुपा रहे हैं। और तुम उनमें से अक्सर को देखोगे कि वे गुनाह और जुल्म और हराम खाने पर दौड़ते हैं। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। उनके मशाइख़ (संत) और उलमा (विद्वान) उन्हें क्यों नहीं रोकते गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। (61-63)

मदीना के यहूदियों में कुछ लोग थे जो इस्लाम से जेहनी तौर पर मरऊब थे। साथ ही इस्लाम का बढ़ता हुआ ग़लबा देखकर खुल्लम खुल्ला उसका हरीफ़ (प्रतिपक्षी) बनना भी नहीं चाहते थे। ये लोग अगरचे अंदर से अपने आबाई दीन पर जमे हुए थे मगर अल्फ़ाज बोलकर जाहिर करते थे कि वे भी मोमिन हैं। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि अस्ल मामला किसी इंसान से नहीं बल्कि खुदा से है। और खुदा वह है जो दिलों तक का हाल जानता है। वह किसी से जो मामला करेगा हकीकत के एतबार से करेगा न कि उन अल्फ़ाज की बिना पर जो उसने मस्तेहत के तौर पर अपने मुंह से निकाला था।

यहूद के ख़्वास (विशिष्ट जनों) में दो किस्म के लोग थे। एक रिब्बी जिन्हें मशाइख़ (धर्म गुरु) कहा जा सकता है। दूसरे अहबार जो उनके उलमा (विद्वानों) और फ़ुक्हा (आचार

शास्त्री) के मानिन्द थे। दोनों किस्म के लोग अगरचे दीन ही को अपना सुबह व शाम का मशगला बनाए हुए थे। दीन के नाम पर उनकी कयादत (नेतृत्व) कायम थी और दीन ही के नाम पर उन्हें बड़ी-बड़ी रकमें मिलती थीं। मगर उनकी कयादत व मक़बूलियत का राज अवामपसंद दीन की नुमाइंदगी थी न कि खुदापसंद दीन की नुमाइंदगी। उनका बोलना और उनका चलना बजाहिर दीन के लिए था। मगर हकीकतन वह एक किस्म की दुनियादारी थी जो दीन के नाम पर जारी थी। वे दीन के नाम पर लोगों को वही चीज दे रहे थे जिसे वे दीन के बग़ैर अपने लिए पसंद किए हुए थे।

खुदा का पसंदीदा दीन तकवे का दीन है। यानी यह कि आदमी लोगों के दर्मियान इस तरह रहे कि उसकी जबान गुनाह के कलिमात न बोले, वह अपनी सरगर्मियों में हराम तरीकों से पूरी तरह बचता हो। जिन लोगों से उसका मामला पेश आए उनके साथ वह इंसाफ़ करने वाला हो न कि जुल्म करने वाला। मगर आदमी का नपस हमेशा उसे दुनियापरस्ती के रास्ते पर डाल देता है। वह ऐसी ज़िंदगी गुजारना चाहता है जिसमें उसे सही और ग़लत न देखना हो बल्कि सिर्फ़ अपने फ़ायदों और मस्तेहतों को देखना हो। यहूद के अवाम इसी हालत पर थे। अब उनके ख़्वास का काम यह था कि वे उन्हें इससे रोकते। मगर उन्होंने अवाम से एक ख़ामोश मुफ़ाहमत कर ली। वे अवाम के दर्मियान ऐसा दीन तक्सीम करने लगे जिसमें अपनी हकीकी ज़िंदगी को बदले बग़ैर नज़ात की ज़मानत हो और बड़े-बड़े दरजात तै हेते हों। ये ख़्वास अपने अवाम की हकीकी ज़िंदगियों को न छेड़ते अलबत्ता उन्हें मिलते यहूद की फ़जीलत के झूठे किस्से सुनाते। उनके कौमी हंगामों को दीन के रंग में बयान करते। रस्सी किस्म के आमाल दोहरा देने पर यह बशारत देते कि इनके जरिए से उनके लिए जन्नत के महल तामीर हो रहे हैं। अल्लाह के नजदीक यह बहुत बुरा काम है कि लोगों के दर्मियान ऐसा दीन तक्सीम किया जाए जिसमें हकीकी अमली ज़िंदगी को बदलना न हो, अलबत्ता कुछ नुमाइशी चीजों का एहतिमाम करके जन्नत की ज़मानत मिल जाए।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا ۖ بَلْ يَدُهُ
مَبْسُوطَةٌ ۖ يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَلَئِنْ يَدُنْكَ كَاشِرَةٌ ۖ مِنْهُمْ مَّا أَنْزَلَ إِلَيْكَ
مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ وَالْقِيَامَ بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۚ
كُلُّكُمْ أَوْقَدُوا نَارًا لِلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ۚ
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۚ

और यहूद कहते हैं कि खुदा के हाथ बंधे हुए हैं। ज़र्ही के हाथ बंध जाएं और लानत हो उन्हें इस कहने पर। बल्कि खुदा के दोनों हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से जो कुछ उतरा है वह उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और इंकार को बढ़ा रहा है। और हमने उनके दर्मियान

दुश्मनी और कीना कियामत तक के लिए डाल दिया है। जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे जमीन में फसाद फैलाने में सरगर्म हैं। हालांकि अल्लाह फसाद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता। (64)

कुरआन में जब अल्लाह की राह में खर्च करने पर जोर दिया गया और कहा गया कि अल्लाह को कर्जहसन दो तो यहूद ने इसे मजाक का विषय बना लिया। वे कहते कि अल्लाह फकीर है और उसके बंदे अमीर हैं। अल्लाह के हाथ आजकल तंग हो रहे हैं। उनकी इस किस्म की बातों का रूख़ खुदा की तरफ नहीं बल्कि रसूल और कुरआन की तरफ होता था। वे जानते थे कि खुदा इससे बरतर है कि उसके यहां किसी चीज की कमी हो। इस तरह की बातें वे दरअसल यह जाहिर करने के लिए कहते थे कि रसूल सच्चा रसूल नहीं। और कुरआन खुदा की किताब नहीं। अगर यह कुरआन खुदा की तरफ से होता तो (नऊजुबिल्लाह) ऐसी मजहकाखेज बातें इसमें न होतीं। मगर जो लोग इस किस्म की बातें करें वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि वे हकीकी दीनी जच्चे से खाली हैं, वे बेहिसी की सतह पर जी रहे हैं।

मौजूदा इस्तेहानी दुनिया में इंसान को अमल की आजादी है। यहां एक शख्स यह भी कह सकता है कि 'कुरआन खुदा की किताब है' और अगर कोई शख्स यह कहना चाहे कि 'कुरआन एक बनावटी किताब है' तो उसे भी अपनी बात कहने के लिए अल्फाज मिल जाएंगे। यही वजह है कि यहां आदमी एक वाक्ये से हिदायत पकड़ सकता है और उसी वाक्ये से दूसरा आदमी सरकशी की गिजा भी ले सकता है।

यहूद ने जब कुरआन की हिदायत को मानने से इंकार किया तो वह सादा मअनों में महज इंकार न था बल्कि इसके पीछे उनका यह जोम शामिल था कि हम तो नजातयाफता लोग हैं, हमें किसी और हिदायत को मानने की क्या जरूरत। जो लोग इस किस्म की पुफख़ नफिसयात में मुक्तला हों उनके अंदर शदीदतरीन किस्म की अनानियत जन्म लेती है। रोजमरह की जिंदगी में जब उनका मामला दूसरों से पड़ता है तो वहां भी वे अपनी 'मैं' को छोड़ने पर राजी नहीं होते। नतीजा यह होता है कि पूरा मुआशिरा आपस के इख़्तेलाफ और एनाद (द्वेष) का शिकार होकर रह जाता है।

पैगम्बर की दावत यह होती है कि आदमी भी उसी इताअते खुदावंदी के दीन को अपना ले जिसे कायनात की तमाम चीजें अपनाए हुए हैं। यही जमीन की इस्लाह है। अब जो लोग पैगम्बराना दावत की राह में रुकावट डालें वे खुदा की जमीन में फसाद पैदा करने का काम कर रहे हैं। ताहम इंसान को सिर्फ इतनी ही आजादी हासिल है कि वह अपने अंदर के फसाद को बाहर लाए, दूसरों की किस्मत का मालिक बनने की आजादी किसी को नहीं।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ سَبِيلًا ۖ وَلَا تَدْخُلُهُمْ
جَدَّتِ التَّوْبَةُ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْبَةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ
إِلَيْهِمْ مِنْ رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۖ مِنْهُمْ أُمَّةٌ

مُقْتَصِدَةً ۚ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ

और अगर अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम जरूर उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत के बागों में दाखिल करते। और अगर वे तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी जो उन पर उनके ख की तरफ से उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने कदमों के नीचे से। कुछ लोग उनमें सीधी राह पर हैं। लेकिन ज्यादा उनमें ऐसे हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं। (65-66)

तमाम गुमराहियों का अस्ल सबब आदमी का ढीठ हो जाना है। अगर आदमी अल्लाह से डरे तो उसे यह समझने में देर नहीं लग सकती कि कौन सी बात खुदा की तरफ से आई हुई बात है। डर की नफिसयात उसके अंदर से दूसरे तमाम मुहरिकात को खत्म कर देगी और आदमी खुदा की बात को फौरन पहचान कर उसे मान लेगा। जब आदमी इस हद तक अपने आपको खुदा की तरफ मुतवज्जह कर दे तो इसके बाद वह भी खुदा की तवज्जोह का मुस्तहिक हो जाता है। खुदा उसकी बशरी (ईसानी) कमजोरियों को उससे धो देता है और मरने के बाद उसे जन्नत के नेमत भरे बागों में जगह देता है। आदमी की बुराइयां, बअल्फाजे दीगर उसकी नफिसयाती कमजोरियां वे चीजें हैं जो उसे जन्नत के रास्ते पर बढ़ने नहीं देती। खुदा की तौमीक से जो शख्स अपनी नफिसयाती कमजोरियों पर कबू पा लेता है वही जन्नत की मजिल तक पहुंचता है।

जब भी हक की दावत उठती है तो वे लोग इससे भयभीत हो जाते हैं जो साबिक निजाम के तहत सरदारी का मकाम हासिल किए हुए हों। उन्हें अदिशा होता है कि इसको कुबूल करते ही उनके मआशी (आर्थिक) मफ़दात और उनकी कायदाना अम्में ख़त्म हो जाएंगी। मगर यह सिर्फ तंमनज़री है। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जिस चीज को वह वदहत की नजर से देख रहे हैं वह सिर्फ उनकी अहलियत को जांचने के लिए जाहिर हुई है। आइंदा वे खुदा के इनामात के मुस्तहिक हों या न हों इसका फैसला उनकी अपनी तहफुज़ती (संरक्षण) तदवीरों पर नहीं होगा बल्कि इस पर होगा कि दावते हक के साथ वे क्या रवैया इख़्तियार करते हैं। गोया दावते हक के इंकार के जरिए वे अपनी जिस बड़ाई को बचाना चाहते हैं वही इंकार वह चीज है जो खुदा के नजदीक उनके इस्तेहक़क (पात्रता) को ख़त्म कर रहा है।

आसमानी किताब की हामिल कौमों में हमेशा ऐसा होता है कि अस्ल खुदाई तालीताम में इफ़रात या तफ़रीत (बढ़ाकर या घटाकर) वे एक खुदसाख़्ता दीन बना लेती हैं और लम्बी मुद्दत गुजरने के बाद उसके अफ़राद उससे इस क़द मानूस हो जाते हैं कि उसी को अस्ल खुदाई मजहब समझने लगते हैं। ऐसी हालत में जब खुदा का सीधा और सच्चा दीन उनके सामने आता है तो वे उसे अपने लिए ग़ैर मानूस पाकर भयभीत होते हैं। यहूद व नसारा का यही हाल था। चुनांचे उनकी बहुत बड़ी अक्सरियत इस्लाम की सदाक़त को पाने से कासर रही। सिर्फ चन्द लोग (मसलन नजाशी शाहे हबश, अब्दुल्लाह बिन सलाम वग़ैरह) जो एतदाल की राह पर बाकी थे, उन्हें इस्लाम की सदाक़त को समझने में देर नहीं लगी। उन्होंने बढ़कर इस्लाम को इस तरह

अपना लिया जैसे वह पहले से इसी रास्ते पर चल रहे हों और अपने सफर के तसलसुल को जारी रखने के लिए मुसलमानों की जमाअत में शामिल हो गए हों।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ⑥

ऐ पैगम्बर, जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है उसे पहुंचा दो। और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के पैगाम को नहीं पहुंचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। अल्लाह यकीनन मुंकिर लोगों को राह नहीं देता। (67)

पैगम्बर इस्लाम मुहम्मद (सल्ल०) जब अरब में आए तो ऐसा न था कि वहां दीन का नाम लेने वाला कोई न हो। बल्कि उनका सारा समाज दीन ही के नाम पर कायम था। दीन के नाम पर बहुत से लोग पेशवाई और कयादत का मकाम हासिल किए हुए थे। दीन के नाम पर लोगों को बड़ी-बड़ी रकमें मिलती थीं। दीनी मंसबों का हमिल होना समाज में इज्जत और फख्र की अलामत बना हुआ था। इसके बावजूद आपको अरब के लोगों की तरफ से सख्ततरीन मुखालिफत का सामना करना पड़ा। इसकी वजह यह थी कि दीने खुदावंदी के नाम पर उनके यहां एक खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन राज हो गया था। सदियों की रिवायतों के नतीजे में इस दीन के नाम पर गर्दियां बन गई थीं और मफादात की बहुत सी सूतें कायम हो गई थीं। ऐसे माहौल में जब पैगम्बर इस्लाम ने बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत पेश की तो लोगों को नजर आया कि वह उनकी दीनी हैसियत को बेएतबार साबित कर रही है। उन्हें अंदेशा हुआ कि अगर यह दीन फैला तो उनका वह मजहबी ढांचा ढह जाएगा जिसमें उन्हें बड़ाई का मकाम मिला हुआ है।

यह सूरतेहाल दाजी के लिए बहुत सख्त होती है। अपने दावती काम को खुले तौर पर अंजाम देना वक्त की मजहबी ताकतों से लड़ने के समान बन जाता है। उसे दिखाई देता है कि अगर मैं किसी मुसालेहत के बगैर सच्चे दीन की तबलीग करूं तो मुझे सख्ततरीन रद्देअमल (प्रतिक्रिया) का सामना करना पड़ेगा। मेरा मजाक उड़या जाएगा। मुझे बेइज्जत किया जाएगा। मेरी मआशियात तबाह की जाएगी। मेरे खिलाफ जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाईयां होंगी। मैं साथियों सहयोगियों से महरूम हो जाऊंगा।

अब उसके सामने दो रास्ते होते हैं। दावती जिम्मेदारियों को अदा करने में दुनियावी मस्लेहतों (हितों) के सिरे हाथ से छूटते हैं। और अगर दुनियावी मस्लेहतों का लिहाज किया जाए तो दावती अमल की पूरी अंजामदेही नामुमकिन नजर आती है। यहां खुदा का वादा दाजी को यकसू करता है। खुदा का वादा है कि दाजी अगर अपने आपको खुदा के पैगाम की पैगामरसानी में लगा दे तो लोगों की तरफ से डाली जाने वाली मुश्किलात में खुदा उसके लिए काफी हो जाएगा। दाजी को चाहिए कि वह सिर्फ दावत के तक्कों की तकमील में लग जाए और मदऊ (संबोधित) कौम की तरफ से डाले जाने वाले मसाइब में वह खुदा पर भरोसा करे।

मुखातबीन का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) एक फितरी चीज है और दाजी को बहरहाल उससे साबिका पेश आता है। मगर उसका असर उसी दायरे तक महदूद रहता है जितना खुदा के कानूने आजमाइश का तक्कज है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि मुखालिफीन इस हद तक कबूआफता हो जाएं कि वह दावती मुहिम को रोक दें या उसे तकमील तक पहुंचने न दें। एक सच्ची दावत का अपने दावती निशाने तक पहुंचना एक खुदाई मंसूबा होता है इसलिए वह लाजिमन पूरा होकर रहता है। इसके बाद मदऊ (संबोधित) गिरोह का मानना उसकी अपनी जिम्मेदारी है जो उसी के बकद्वर नतीजाखेज होती है जितना मदऊ खुद चाहता है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا أَفَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ⑦ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَى مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑧

कह दो, ऐ अहले किताब तुम किसी चीज पर नहीं जब तक तुम कायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ से। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा गया है वह यकीनन उनमें से अक्सर की सरकशी और इंकार को बढ़ाएगा। पस तुम इंकार करने वालों के ऊपर अफसोस न करो। बेशक जो लोग ईमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी, जो शरस भी ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत (परलोक) के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे गमगीन होंगे। (68-69)

यहूद का यह हाल था कि उनके अफराद अमलन खुदा के दीन पर कायम न थे। उन्होंने अपने नफस को और अपनी जिंदगी के मामलात को खुदा के ताबेअ नहीं किया था। अलबत्ता खुशगुमानियों के तहत उन्होंने यह अकीदा बना लिया था कि खुदा के यहां उनकी नजात यकीनी है। वे अपनी कैमी फजिलत के अफसानों और अपने कुतूबों के तक्कस की दास्तानों में जी रहे थे। मगर अल्लाह के यहां इस किस्म की खुशखालियों की कोई कीमत नहीं। अल्लाह के यहां जो कुछ कीमत है वह सिर्फ इस बात की है कि आदमी अल्लाह के अहकाम का पाबंद बने और अपनी हकीमी जिंगी को खुदा के दीन पर कायम करे।

जो लोग झूठी आरजुओं में जी रहे हों उनके सामने जब यह दावत आती है कि अल्लाह के यहां अमल की कीमत है न कि आरजुओं और तमन्नओं की तो ऐसी दावत के खिलाफ वे शदीद रद्देअमल का इज्हार करते हैं। ऐसी दावत में उन्हें अपनी खुशखालियों का महल गिरता हुआ नजर आता है। यह सूरतेहाल उनके लिए आजमाइश बन जाती है। वे ऐसी दावत के सख्त मुखालिफ हो जाते हैं। नुमाइशी खुदापरस्ती के अंदर छुपी हुई उनकी खुदपरस्ती

बेपर्दा होकर सामने आ जाती है। जिस दावत से उन्हें रबानी गिजा लेना चाहिए था उससे वे सिर्फ इंकार और सरकशी की गिजा लेने लगते हैं।

कदीम जमाने में जो पैगम्बर आए उनके मानने वालों की नस्लें धीरे-धीरे मुस्तकिल कौम की सूरत इख्तियार कर लेती हैं। अब पैगम्बरों के नमूने पर अमल तो बाकी नहीं रहता। अलबत्ता अपनी अज्मत और फजीलत के कसीदे क्रिस्ते कहानियों की सूत में खूब फैल जाते हैं। हर गिरोह समझने लगता है कि हम सबसे अफजल हैं। हमारी नजात यकीनी है। अल्लाह के यहां हमारा दर्जा सबसे बड़ा हुआ है। मगर इस क्रिम के गिरोही मजाहिब (धर्मों) की खुदा की नजदीक कोई कीमत नहीं। अल्लाह के यहां हर शख्स का मुकदमा इफरादी हैसियत में पेश होगा और उसके मुस्तकबिल की बाबत जो कुछ फैसला होगा वह तमामतर उसके अपने अमल की बुनियाद पर होगा न कि किसी और बुनियाद पर।

खुदा की किताब को कायम करना नाम है अल्लाह पर यकीन करने का, आखिरत की पकड़ के अंदेश को अपने ऊपर तारी करने का और इसानों के दर्मियान सालेह किरदार के साथ जिंदगी गुजरने का। यही अस्त दीन है और हर फर्द को यही अपनी जिंदगी में इख्तियार करना है। आसमानी किताब की हामिल कौम की कीमत दुनिया में उसी वक्त है जबकि उसके अफराद उस दीने खुदावंदी पर कायम हों। इससे हटने के बाद वे खुदा की नजर में बिल्कुल बेकीमत हो जाते हैं, यहां तक कि खुले हुए मुकियों और मुशिकों से भी ज्यादा बेकीमत।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَارْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رَسُولًا كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ ﴿٧٠﴾ وَحَسَبُوا أَنَّهُم مُّسْتَكْبِرُونَ فَغَمَّوْا وَصَوَّرْنَا لَهُم مَّا قَدَرْنَا عَلَىٰ آلَائِكُمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ ﴿٧١﴾ وَفِيهِمْ ۖ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧٢﴾

हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और उनकी तरफ बहुत से रसूल भेजे। जब कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होंने झुठलाया और कुछ को कत्ल कर दिया। और ख्याल किया कि कुछ खराबी न होगी। पस वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उन पर तक्जोह की। फिर उनमें से बहुत से अंधे और बहरे बन गए। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (70-71)

यहूद से अल्लाह ने हजरत मूसा के जरिए ईमान व इताअत का अहद लिया था। वे कुछ दिन उस पर कायम रहे। इसके बाद उनमें बिगाड़ शुरू हो गया। अब अल्लाह ने उनके दर्मियान अपने सुधारक उठाए जो उन्हें अपने अहद की याददहानी कराएं। मगर यहूद की बेराही और सरकशी बढ़ती ही चली गई। उन्होंने खुद नसीहत करने वालों की जबान बन्द करने की कोशिश की। यहां तक कि कितने लोगों को कत्ल कर दिया। जब उनकी सरकशी हद को पहुंच गई तो अल्लाह ने बाबिल व नैनवा (इराक) के बादशाह बनू खज़ नस्र को उनके

ऊपर मुसल्लत कर दिया जिसने 586 ई०पू० में यरोशलम पर हमला करके यहूद के मुकददस शहर को ढा दिया और यहूदियों को गिरफ्तार करके अपने मुल्क ले गया ताकि उनसे बेगार ले। इस वाक्ये के बाद यहूद के दिल नर्म हो गए। उन्होंने अल्लाह से माफी मांगी। अब अल्लाह ने साइरस (शाह ईरान) के जरिए उनकी मदद की। साइरस ने 539 ई०पू० में कल्दानियों के ऊपर हमला किया और उन्हें शिकस्त देकर उनके मुल्क पर कब्जा कर लिया। इसके बाद उसने यहूद को जलावतनी (देश निकाला) से नजात दिलाकर उन्हें उनके वतन जाने और वहां दुबारा बसने की इजाजत दे दी।

अब यहूद को नई जिंदगी मिली और उन्हें काफी फरोस हासिल हुआ। मगर कुछ दिनों के बाद वे दुबारा गफलत और सरकशी में मुक्तला हुए। अब फिर नबियों और मुस्लिहीन के जरिए अल्लाह ने उन्हें सचेत किया। मगर वे होश में न आए, यहां तक कि उन्होंने हजरत यहया को कत्ल कर दिया और (अपनी हद तक) हजरत मसीह को भी। अब अल्लाह का ग़जब उन पर भड़का और 70 ई० में रूमी शहंशाह टाइटस को उन पर मुसल्लत कर दिया गया। जिसने उनके मुल्क पर हमला करके उन्हें वीरान कर दिया। इसके बाद यहूद कभी अपनी जाती बुनियादों पर खड़े न हो सके।

आसमानी किताब की हामिल कौमों की नफिसयात बाद के जमाने में यह बन जाती है कि वे खुदा के ख़ास लोग हैं। वे जो कुछ भी करें उस पर उनकी पकड़ नहीं होगी। खुदा की तालीमात में इस अकीदे के खिलाफ खुले खुले बयानात होते हैं। मगर वे उनके बारे में अंधे और बहरे बन जाते हैं। वे अपने गिर्द खुदसाखा (स्वनिर्मित) अकीदों और फर्जी क्रिस्ते कहानियां का ऐसा हाला बना लेते हैं कि खुदा की तंबीहात उन्हें दिखाई और सुनाई नहीं देतीं। यहूद की यह तारीख बताती है कि जब भी एक हामिले किताब कौम को उसके दुश्मनों के कब्जे में दे दिया जाए तो यह उसके लिए खुदा की तरफ से आजमाइश का वक्त होता है। इसका मतलब यह होता है कि हल्की सजा देकर कौम को जगाया जाए। अगर इसके नतीजे में कौम के अफराद में खुदापरस्ताना जज्वात जाग उठें तो उसके ऊपर से सजा उठा ली जाती है। और अगर ऐसा न हो तो खुदा उसे रद्द करके फेंक देता है और फिर कभी उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं होता।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنَىٰ
إِسْرَءِيلَ ۖ اْعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ إِنَّكَ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ
عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۚ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن نَّصَارٍ ۚ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ
قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ ۚ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهٌ وَاحِدٌ ۚ وَإِن لَّمْ يَكْفُرُوا عَمَّا
يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابُ الْكَيِّمِ ۚ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ
وَيَسْتَغْفِرُونَ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٣﴾ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمِّيَّةٌ صِدِّيقَةٌ كَأَنَّا يَأْكُلِنِ الطَّعَامَ أَنْظُرْ كَيْفَ بُيِّنَ لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ إِلَىٰ يَوْمِ فَكُورٍ ۚ قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

यकीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि खुदा ही तो मसीह इन्ने मरयम है। हालांकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। जो शख्स अल्लाह का शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उस पर जन्मत और उसका ठिकाना आग है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। यकीनन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि खुदा तीन में का तीसरा है। हालांकि कोई माबूद (पूज्य) नहीं सिवाए एक माबूद के। और अगर वे बाज़ न आए उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ्र पर कायम रहने वालों को एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। ये लोग अल्लाह के आगे तौबा क्यों नहीं करते और उससे माफी क्यों नहीं चाहते। और अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। मसीह इन्ने मरयम तो सिर्फ एक रसूल हैं। उनसे पहले भी बहुत रसूल गुजर चुके हैं। और उनकी मां एक रास्तबाज (नेक) ख़ातून थी। दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस तरह उनके सामने दलीलें बयान कर रहे हैं। फिर देखो वे किधर उल्टे चले जा रहे हैं। कहो क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का इस्ति़यार रखती है और न नफ़ा का। और सुनने वाला और जानने वाला सिर्फ अल्लाह ही है। (72-76)

हजरत मसीह को अल्लाह तआला ने रैर मामूली मुअजिजे (चमत्कार) दिए। ये मुअजिजे इसलिए थे कि लोग आपके पैगम्बर होने को पहचानें और आप पर ईमान लाएं। मगर मामला बरअक्स हुआ। ईसाइयों ने आपके मुअजिजात को देखकर यह अक़ीदा कायम किया कि आप खुदा हैं। आपके अंदर खुदा हुलूल किए हुए है। यहूद ने यह कहकर आपको नजरअंदाज कर दिया कि यह एक शोअबदाबाज और जादूगर हैं। हजरत मसीह अल्लाह की तरफ से लोगों की हिदायत के लिए आए थे। मगर एक गिरोह ने आपसे शिर्क की गिजा ली और दूसरे गिरोह ने इंकार की।

माबूद (पूज्य) वही हो सकता है जो खुद बेएहतियाज (निरपेक्ष) हो और दूसरों को नफा नुक़सान पहुंचाने की कुदरत रखे। खाना आदमी के मोहताज होने की आखिरी अलामत है। जो खाने का मोहताज है वह हर चीज का मोहताज है। जो शख्स खाना खाता हो वह मुकम्मल तौर पर एक मोहताज हस्ती है। ऐसी हस्ती खुदा किस तरह हो सकती है। यही मामला नफा नुक़सान का है। किसी को नफ़ा मिलना या किसी को नुक़सान पहुंचाना ऐसे वाक़ेयात हैं जिनके जहूर में आने के लिए पूरी कायनात की मदद दरकार होती है। कोई भी शख्स इस किस्म के कायनाती असबाब फराहम करने पर कादिर नहीं। इसलिए इंसानों में से किसी इंसान का यह दर्जा भी नहीं हो सकता कि उसे माबूद मान लिया जाए।

जब भी आदमी खुदा के सिवा किसी और को अपनी अकीदत (आस्था) व मुहब्बत का

मर्कज बनाता है तो उसके पीछे यह छुपा हुआ जज्बा होता है कि उसे खुदा की दुनिया में कोई बड़ा दर्जा हासिल है। वह खुदा के यहां उसका मददगार बन सकता है। मगर इस किस्म की तमाम उम्मीदें महज झूठी उम्मीदें हैं। मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में खुदा के सिवा दूसरी चीजों का बेबस होना खुला हुआ नहीं है। इसलिए यहां आदमी ग़लतफहमी में पड़ा हुआ है। मगर आखिरत में तमाम हकाइक खोल दिए जाएंगे तो आदमी देखेगा कि खुदा के सिवा जिन सहारों पर वह भरोसा किए हुए था वह किस कदर बेकीमत थे।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

कहो, ऐ अहले किताब अपने दिन में नाहक गुलू (अति) न करो और उन लोगों के ख़्यालात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हुए और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया। और वे सीधी राह से भटक गए। (77)

हजरत मसीह के इत्तिदाई शागिर्दों के नजदीक मसीह 'एक इंसान था जो खुदा की तरफ से था।' वे आपको इंसान और अल्लाह का रसूल समझते थे। मगर आपका दिन जब शाम के इलाके से बाहर निकला तो उसे मिश्र व यूनान के फलसफे से साबिक पेश आया। मसीहियत कुकूल करके ऐसे लोग मसीहियत में दाखिल हुए जो वक्त के फलसफियाना अपकार से मुतास्सिर थे। इस तरह अंदरूनी असबाब और बाहरी प्रेरकों के तहत मसीहियत में एक नया दौर शुरू हुआ जबकि मसीहियत को वक्त के ग़ालिब फलसफियाना उस्तूब में बयान करने की कोशिश शुरू हुई।

उस ज़माने की सभ्य दुनिया में मिश्र व यूनान के फलसफियों का ज़ेरा था। वक्त के ज़हीन लोग आम तौर पर उन्हीं के अपकार (विचारों) की रेशनी में सोचते थे। यूनानी फलसफियों ने अपने कयासात के ज़रिए आत्म की एक ख़ाली तस्वीर बना रखी थी। वे हकीकत की ताबीर तीन अक्नूमों (Hypostases) की सूरत में करते थे। जुजूद, हयात और इल्म। मसीही उलमा जो खुद भी इन अपकार से मरऊब थे साथ ही वक्त के ज़हीन तबकेको मसीहियत की तरफ मायल करना चाहते थे, उन्होंने अपने मजहब को वक्त के ग़ालिब फि़क्र पर ढालने की कोशिश की। उन्होंने मसीहियत की ऐसी ताबीर की जिसमें खुदा का दिन भी इसी 'तीन' के जामे में ढल जाए और लोग उसे अपने ज़हन के मुताबिक पाकर उसे कुकूल कर लें। उन्होंने कहा कि मजहबी हकीकत भी एक तस्लीस (तीन खुदा) की सूरतगरी है। अक्नूमे जुजूद बाप है। अक्नूमे हयात बेदा है और अक्नूमे इल्म रुहूल कुदूस है। इस कलामी मजहब को मुकम्मल करने के लिए और बहुत से ख़ालात उसमें दाखिल किए गए। मसलन यह कि हजरत मसीह 'कलाम' का जसदी ज़हूर (भौतिक रूप) हैं। आदम के ज़मीन पर उतरने के बाद हर इंसान गुनाहगार हो चुका है और इंसान की नजात (मुक्ति) के लिए खुदा के बेटे को सूली पर चढ़कर इसका कफ़फ़ारा (प्रायश्चित्त) देना पड़ा, वगैरह। इस तरह चौथी सदी ईसवी में मिस्री, यूनानी और रूमी विचारों में ढलकर वह चीज तैयार हुई जिसे मौजूदा मसीहियत कहा जाता है।

खुदा के सीधे रास्ते से भटकने की वजह अक्सर यह होती है कि लोग गुमराह कौमों के ख्यालात से मरऊब होकर दीन को उनके ख्यालात के सांचे में ढालने लगते हैं। खुदा के दीन को मानते हुए उसकी ताबीर इस ढंग से करते हैं कि वह ग़ालिब अफ़्कार के मुताबिक नज़र आने लगे। वे खुदा के दीन के नाम पर ग़ैर खुदा के दीन को अपना लेते हैं। नसारा ने अपने दीन को अपने ज़माने की मुश्किल कौमों के अफ़्कार में ढाल लिया और उसी को खुदा का मक़बूल दीन कहने लगे। यही चीज़ कभी इस तरह पेश आती है कि दीन को खुद अपने कौमी अजाइम (महत्वाकांक्षाओं) के सांचे में ढाल लिया जाता है। इस दूसरी तहरीफ (परिवर्तन) की मिसाल यहूद हैं। उन्होंने खुदा के दीन की ऐसी ताबीर की कि वह उनकी दुनियावी ज़िंदगी की तस्दीक करने वाला बन जाए। मुसलमानों के लिए किताबे इलाही के मल में इस किस्म की ताबीरात दाख़िल करने का मौका नहीं है। ताहम मल (मूल पाठ) के बाहर उन्हें वह सब कुछ करने की आज्ञा दी है जो पिछली कौमों ने किया।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ تَرَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ مَا اخْتَدَوْهُمْ أُولَئِكَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ़र किया उन पर लानत की गई दाऊद और ईसा इब्ने मरयम की जवान से। इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से आगे बढ़ जाते थे। वे एक दूसरे को मना नहीं करते थे बुराई से जो वे करते थे। निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे थे। तुम उनमें बहुत आदमी देखोगे कि कुफ़र करने वालों से दोस्ती रखते हैं। कैसी बुरी चीज़ है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि खुदा का ग़ज़ब हुआ उन पर और वे हमेशा अज़ाब में पड़े रहेंगे। अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर और उस पर जो उसकी तरफ उतरा तो वे मुंकिरों को दोस्त न बनाते। मगर उनमें अक्सर नाफरमान हैं। (78-81)

ईमान आदमी को जुल्म और बुराई के बारे में हस्सास (संवेदनशील) बना देता है। वह किसी को जुल्म और बुराई करते देखता है तो तड़प उठता है और चाहता है कि फौरन उसे रोक दे। बुरे लोगों से उसका तल्लुक जुदाई का होता है न कि दोस्ती का। मगर जब ईमानी ज़ब्बा कमज़ोर पड़ जाए तो आदमी सिर्फ अपनी जात के बारे में हस्सास होकर रह जाता है। अब उसे सिर्फ वह बुराई बुराई मालूम होती है जिसकी जद उसके अपने ऊपर पड़े। जिस बुराई का रुख़ दूसरों की तरफ हो उसके बारे में वह ग़ैर जानिबदार हो जाता है।

बनी इस्राईल जो इस जवाल का शिकार हुए इसका मतलब यह न था कि उन्होंने अपनी जवान से अच्छी बात बोलना छोड़ दिया था। उनके ख़्वास अब भी ख़ूबसूरत तकरीरें करते थे मगर इस मामले में वे इतने संजीदा न थे कि जब किसी को जुल्म और बुराई करते देखें तो वहां कूद पड़ें और उसे रोकने की कोशिश करें। हज़रत दाऊद अपने ज़माने के यहूद के बारे में फरमाते हैं कि उनमें कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं (14)। मगर इसी के साथ आपके कलाम से इसकी तस्दीक होती है कि यहूद अपने हमसायों से सुलह की बातें करते थे जबकि उनके दिलों में बदी होती थी (28)। वे खुदा के आईन (विधान) को बयान करते और खुदा के अहद को जवान पर लाते (50)। हज़रत मसीह अपने ज़माने के यहूदियों के बारे में फरमाते हैं : ऐ रियाकार फकीहो तुम पर अफ़सोस, तुम बेवाओं के घरों को दबा बैठे हो और दिखावे के लिए नमाज़ को लंबा करते हो। तुम पैदीना और सौफ और जीर पर तो ज़ोर देते हो पर तुमने शरीअत की ज्यादा भारी बातों यानी इंसाफ, रहम और ईमान को छोड़ दिया है। ऐ अंधे राह बताने वाले मच्छर को छानते हो और ऊंट को निगल जाते हो। ऐ रियाकार फकीहो तुम जाहिर में तो लोगों को रास्तबाज़ (नेक) दिखाई देते हो मगर अंदर से रियाकारी और बेदीनी से भरे हुए हो। (मत्ता 23)

यहूद खुदा का आईन (विधान) बयान करते थे। वे लम्बी नमाज़ें पढ़ते और फस्तों में दसवां हिस्सा निकालते। मगर उनकी बातें सिर्फ कहने के लिए होती थीं। वह हानि रहित अहकाम पर नुमाइशी एहतमाम के साथ अमल करते मगर जब साहिबे मामला से इंसाफ करने का सवाल होता, जब एक कमज़ोर पर रहम का तकाज़ा होता, जब अपने नफ़स को कुचल कर अल्लाह के हुक्म को मानने की ज़रूरत होती तो वे फिसल जाते। यहां तक कि अगर कोई खुदा का बंदा उनकी ग़लतियों को बताता तो वे उसके दुश्मन हो जाते। यही चीज़ थी जिसने उन्हें लानत और ग़ज़ब का मुस्तहक बना दिया।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ۚ ذَلِكَ يَأْتِيهِمْ مِنْهُمْ قَبِيلٌ ۚ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

وَإِذْ أَسْمِعُوا مَا أَنْزَلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَى أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَمَا كُنَّا لَا نَدْعُو مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝ فَكَانَ لَهُمْ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَدَّتْ تَجَرُّ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

ईमान वालों के साथ दुश्मनी में तुम सबसे बढ़कर यहूद और मुश्किनी को पाओगे। और ईमान वालों के साथ दोस्ती में तुम सबसे ज्यादा उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं। यह इसलिए कि उनमें आलिम और राहिब हैं। और इसलिए कि वे तकबुर (घमंड) नहीं करते। और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुम देखोगे कि उनकी आंखों से आंसू जारी हैं इस सबब से कि उन्होंने हक को पहचान लिया। वे पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए। पस तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और हम क्यों न ईमान लाएं अल्लाह पर और उस हक पर जो हमें पहुंचा है जबकि हम यह आरजू रखते हैं कि हमारा रब हमें सालेह (नेक) लोगों में शामिल करे। पस अल्लाह उन्हें इस कौल के बदले में ऐसे बाग देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यही बदला है नेक अमल करने वालों का। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख वाले हैं। (82-86)

इस आयत में जन्नत को 'कैल' (कथन) का बदला करार दिया गया है। मगर वह कैल क्या था जिसने उसके कहने वालों को अबदी (चिरस्थायी) जन्नत का मुस्तहिक बना दिया। वह कैल उनकी पूरी हस्ती का नुमाइंदा था। वह उनकी शख्सियत की फटन की आवाज था। उन्होंने अल्लाह के कलाम को इस तरह सुना कि उसके अंदर जो हक था उसे वह पूरी तरह पा गए। वह उनके दिल व दिमाग में उतर गया। इसने उनके अंदर ऐसा इकिलाब बरपा किया कि उनके हौसलों और तमन्नाओं का मर्कज बदल गया। तअस्सुब और मस्लेहत की तमाम दीवारें ढह पड़ीं। उन्होंने हक के साथ अपने आपको इस तरह शामिल किया कि उससे अलग उनकी कोई हस्ती बाकी न रही। वे इसके गवाह बन गए, और गवाह बनना एक हकीकत का इंसान की सूरत में मुजस्सम होना है। कुरआन अब उनके लिए महज एक किताब न रहा बल्कि मालिके कायनात की जिंदा निशानी बन गया। यह रब्बानी तजर्बा जो उन पर गुजरा बज़हिर इसफ़ा इश्हार आग़ेयलफ़ोंकी सूत में हुआ था मगर उन्हें ये अस्फ़ज अस्फ़ज न थे बल्कि वह एक जलजला था जिसने उनके पूरे वजूद को हिला दिया। यहां तक कि उनकी आंखों से आंसू बह पड़े।

कैल अपनी हकीकत के एतबार से किसी किस्म के ज़बानी तलफ़ुज़ (उच्चारण) का नाम नहीं। वह आदमी के अमल को मअनवियत (सार्थकता) का रूप देने की आलातरीन सूरत है जिसका इस्तिहार मालूम कायनात में सिर्फ़ इंसान को हासिल है। एक हकीकी कैल सबसे ज्यादा लतीफ़ और सबसे ज्यादा बामअना वाक़्या है। कैल आदमी की हस्ती का सबसे बड़ा इश्हार है। कैल बोलने का अमल है। इसलिए जब कोई शख्स कैल की सतह पर अपनी अबदियत (बंदा होने) का सुबूत दे दे तो वह जन्नत का यकीनी इस्तहकाक (पात्रता) हासिल कर लेता है।

हक को न मानने की सबसे बड़ी वजह हमेशा किब्र होता है। जिनके दिलों में किब्र छुपा हुआ हो वे हक की दावत के फुन्नबले में सबसे ज्यादा सज़ा रद्देअमल का इश्हार करते हैं। और जिन लोगों के अंदर किब्र न हो, चाहे वे दूसरी किसी गुमराही में मुब्तिला हों, वे हक की

मुख़ालिफ़त में कभी इतना आगे नहीं जा सकते कि उसके जानी दुश्मन बन जाएं। और किसी हाल में उसे कुबूल न करें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْمِلُوا وِثْرَ اللَّهِ وَلَا تَعْتَدُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِن مَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤْخَذُ كُفْرُ اللَّهِ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤْخَذُ كُفْرُكُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْإِيمَانَ ۚ فَكُفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَلِكَ كُفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, उन सुथरी चीजों को हराम न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और हद से न बढ़ो। अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता, और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल चीजें दी हैं उनमें से खाओ। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। अल्लाह तुमसे तुम्हारी बेमअना कसमों पर गिरफ्त नहीं करता। मगर जिन कसमों को तुमने मजबूत बांधा उन पर वह ज़रूर तुम्हारी गिरफ्त करेगा। ऐसी कसम का कफ़रा है दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या कपड़ा पहना देना या एक गर्दन आजाद करना। और जिसे मयस्सर न हो वह तीन दिन के रेजे रखे। यह कफ़रा (प्रयश्चित) है तुम्हारी कसमों का जबकि तुम कसम खा बैठो। और अपनी कसमों की हिफ़ज़त करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र अदा करो। (87-89)

बंद और खुदा का तअल्लुक एक जिंदा तअल्लुक है जो नफ़िसयात की सतह पर कायम होता है। यह तमामतर एक अंदरूनी मामला है। मगर मजहब के जवाल (पतन) के जमाने में जब यह अंदरूनी तअल्लुक कमजोर पड़ता है तो लोगों में यह ज़ेहन उभरता है कि इसे वाक़्य साधनों से हासिल करने की कोशिश की जाए। इन्हीं में से दुनियावी लज्जतों को छोड़ना भी है जिसे रहबानियत (सन्ध्यास) कहा जाता है। यह ख़्याल कर लिया जाता है कि मादूदी (सांसारिक) चीजों से दूरी आदमी को खुदा से करीब करने का ज़रिया बनेगी। सहाबा में से कुछ अफ़राद इस किस्म के रहबानी ख़्यालात से मुतअस्सिर हुए। उन्होंने इरादा किया कि वे गोश्त न खाएं। रातों को न सोएं। अपने आपको ख़सी करा लें। और घरों को छोड़कर दुर्वेशी की ज़िंदगी इस्तिहार कर लें। यहां तक कि कुछ ने इसकी कसमें भी खा लीं। इस पर उन्हें मना किया गया और कहा गया कि हलाल को हराम करने से कोई शख्स खुदा की कुरबत हासिल

नहीं कर सकता। आदमी जो कुछ हासिल करता है फितरत की हदों में रहकर हासिल करता है न कि उससे आजाद होकर।

इस्लाम के मुताबिक अस्ल 'हबानियत' तकवा और शुक्र है। तकवा यह है कि आदमी खुदा की मना की हुई चीजों से बचे। उसके अंदर यह ख्वाहिश उभरती है कि एक हaram चीज से लज्जत हासिल करे मगर वह खुदा के डर से रुक जाता है। किसी के ऊपर गुस्सा आ जाता है और वह चाहने लगता है कि उसे तहस नहस कर दे मगर खुदा का डर उसे अपने भाई के खिलाफ तख्खीबी कार्रवाई से रोक देता है। उसका दिल कहता है कि बेकैद जिंदगी गुजारे मगर खुदा की पकड़ का अदेशा उसे मजबूर करता है कि वह अपने को खुदा की मुकर्रर की हुई हदों का पाबंद बना ले। यही मामला शुक्र का है। आदमी को कोई दुनियावी चीज हासिल होती है। सेहत, दौलत, ओहदा, साजोसामान, मकबूलियत का कोई हिस्सा उसको मिलता है। मगर वह खुदपसंदी और घमंड में मुब्तिला नहीं होता बल्कि हर चीज को खुदा की देन समझ कर उसके एहसान का एतराफ करता है। वह तवाजोअ (विनम्रता) और ममनूनियत (सुशीलता) के जच्चात में ढल जाता है। यही वे चीजे हैं जो आदमी को खुदा से जोड़ती हैं। खुदा से डरने और उसका शुक्र अदा करने से आदमी उसकी क़ुवत (समीपता) हासिल करता है। मादूदी (भौतिक) चीजों से दूरी यकीनन मल्लूब है। मगर वह जेहनी व कल्बी (दिली) दूरी है न कि जिस्मानी दूरी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَمْزَلُ رَجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَكُنْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ۚ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَوْنَا أَعْلَمُ عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۚ لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, शराब और जुआ और देव-स्थान और पांसे सब गंदे काम हैं शैतान के। पस तुम इनसे बचो ताकि तुम फलाह (कल्याण) पाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के जरिए तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और बुज (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे। तो क्या तुम इनसे बाज आओगे। और इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और बचो। अगर तुम ऐराज (उपेक्षा) करोगे तो जान लो कि हमारे रसूल के जिम्मे सिर्फ खोल कर पहुंचा देना है। जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन पर उस चीज में कोई गुनाह नहीं जो वे खा चुके। जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किया। फिर डरे और ईमान लाए

फिर डरे और नेक काम किया। और अल्लाह नेक काम करने वालों के साथ मुहब्बत रखता है। (90-93)

शराब और जुआ और वे आस्ताने जो खुदा के सिवा किसी दूसरे को पूजने या किसी और के नाम पर नज़ और कुर्बानी चढ़ाने के लिए हैं और पांसा यानी फलंगीरी और कुरआअंदाजी (अनुमान एवं संयोग) के वे तरीके जिनमें ग़ैर-अल्लाह से इस्तआनत (मदद) का अक्कीदा शामिल हो, ये सब गंदे शैतानी काम हैं। इसकी वजह यह है कि ये चीजें इंसान को जेहनी व अमली परस्ती की तरफ ले जाती हैं। शराब आदमी के अंदर लतीफ इंसानी एहसासात को ख़त्म कर देती है और जुआ बेग़र्जी की नफ़िसयात के लिए क़तिल है। इसी तरह थान व पॉसे वे चीजें हैं जिनकी बुनियाद या तो सतही जच्चात पर कायम होती है या अंधविश्वास पर।

इस्लाम यह चाहता है कि इंसान अल्लाह की याद करने वाला और उसकी इबादत करने वाला बन जाए। वह खुदा की और उसके पैग़म्बर की इताअत में अपने को डाल दे। इन कामों के लिए आदमी का संजीदा होना ज़रूरी है। मगर मज्बूरी चीजें आदमी के अंदर से सबसे ज्यादा जो चीज ख़त्म करती हैं वह संजीदगी ही हैं। इस्लाम वह इंसान बनाना चाहता है जो हकीकतों का इदराक (ज्ञान) करे, जबकि शराब आदमी को हकीकतों से ग़ाफ़िल कर देने वाली चीज है। इस्लाम का मल्लूब इंसान वह है जो मादिदयत (भौतिकवाद) से बुलन्द होकर जाए, जबकि जुआ आदमी को मुजरिमाना हद तक मादिदयत की तरफ मायल कर देता है। इस्लाम वह इंसान बनाना चाहता है जो वाक़ेआत की बुनियाद पर अपने को खड़ा करे, जबकि आस्ताने और पांसे इंसान को तवह्हुमात (अंधविश्वासों) की वादियों में गुम कर देते हैं।

शराब बढ़ी हुई बेहिसी पैदा करती है और जुआ बढ़ी हुई खुदगर्जी। और ये दोनों चीजें बाहमी फ़साद की जड़ हैं। जो लोग बेहिस हो जाएं वे दूसरे की इज्जत को इज्जत और दूसरे की चीज को चीज नहीं समझते। ऐसे लोग जुम, बेइसाफी, दूसरे को नाहक सताने में आखिरी हद तक जरी हो जाते हैं। इसी तरह जुआ इस्तहसाल (शोषण) और खुदगर्जी की बदतरीन सूरत है जबकि एक आदमी यह कोशिश करता है कि वह बहुत से लोगों को लूटकर अपने लिए एक बड़ी कामयाबी हासिल करे। शराबी आदमी दूसरों के दुख दर्द को महसूस करने में असमर्थ होता है और जुएबाज के लिए दूसरा आदमी सिर्फ शोषण की वस्तु होता है, इन खुसूसियात के लोग जिस समाज में जमा हो जाएं वहां आपस की बेएतमादी, एक दूसरे से शिकायतें, बाहमी टकराव और दुश्मनी के सिवा और क्या चीज परवरिश पाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّبْرِ تَالَهُ آيَاتُكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَخَافُ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ مِّنْ قَتْلِهِ مِنْكُمْ مِّمَّا تَعْتَدُونَ ۚ فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلْتُم مِّنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَذِهِ بَلِغَةُ الْكُفْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكَ صِيَائًا لِّبَدْوٍ وَبِالْأَمْرِ

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لَأَكْفُرَنَّ عَنْكَ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ٩٥

ऐ ईमान वालो, अल्लाह तुम्हें उस शिकार के जरिए से आजमाइश में डालेगा जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और तुम्हारे नेजों की जद में होगा ताकि अल्लाह जाने की कौन शख्स उससे बिना देखे डरता है। फिर जिसने इसके बाद ज्यादाती की तो उसके लिए दर्दनाक अजाब है। ऐ ईमान वालो, शिकार को न मारो जबकि तुम हालते एहराम में हो। और तुममें से जो शख्स उसे जान बूझकर मारे तो इसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है जिसका फैसला तुममें से दो आदिल आदमी करेंगे और यह नजराना काबा पहुंचाया जाए। या इसके कफ़ारे (प्रायश्चित्त) में कुछ मोहताजों को खाना खिलाना होगा। या इसके बराबर रोजे रखने होंगे, ताकि वह अपने किए की सजा चखे। अल्लाह ने माफ किया जो कुछ हो चुका। और जो शख्स फिरेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह जबरदस्त है बदला लेने वाला है। (94-95)

हज या उमरे के लिए यह काबा पहुंचने से पहले मुकर्ररह मक़ामात से एहराम बांध लिया जाता है। इसके बाद काबा तक के सफर में जानवर या चिड़ियां सामने आती हैं जिन्हें बाआसानी शिकार किया जा सकता हो। मगर ऐसे शिकार को हराम करार दिया गया है। आदमी चाहे खुद शिकार करे या दूसरे को शिकार करने में मदद दे, दोनों चीजें एहराम की हालत में नाजाइज हैं। रिवायात के मुताबिक यह आयत हुदैबिया के सफर में उतरी जबकि मुसलमानों ने उमरे के इरादे से एहराम बांध रखा था। उस वक्त चिड़ियां और जानवर कसीर तादाद में इतने करीब फिर रहे थे कि बाआसानी उन्हें तीर या नेजे से मारा जा सकता था। मुसलमान उस वक्त अपनी आदत और जरूरत के तहत चाहते भी थे कि उनका शिकार करें। मगर हुक्म उतरते ही हर एक ने अपना हाथ रोक लिया। यह हुक्म जो एहराम की हालत में जानवरों के बारे में दिया गया है वही रोज़मरह की ज़िंदगी में आम इंसानों के साथ मल्लुब है।

इस हुक्म का अस्ल मक़सद यह है कि 'अल्लाह जान ले कि कौन है जो अल्लाह को देखे बग़ैर अल्लाह से डरता है।' दुनिया में इंसान को रख कर खुदा उसकी नजरों से ओझल हो गया है। अब वह देखना चाहता है कि लोगों में कौन इतना हकीकत शनास है कि बजाहिर खुदा को न देखते हुए भी इस तरह रहता है जैसे कि वह उसे उसकी तमाम ताकतों के साथ देख रहा है और कौन इतना ग़ाफ़िल है कि खुदा को अपने सामने न पाकर बेख़ौफ हो जाता है और मनमानी कार्रवाइयां करने लगता है। इसका तजर्बा हज के सफर में चन्द दिन और इंसानी तअल्लुफ़ात में रोजाना होता है। एक आदमी किसी की जद में इस तरह आता है कि उसके लिए बिल्कुल मुमकिन हो जाता है कि वह उसकी जान पर हमला करे। वह उसे माली नुक़सान पहुंचाए। वह उसके बारे में ऐसी बात कहे जिससे उसकी रुस्वाई होती हो। अब एक शख्स वह है जो इस तरह काबू पाने के बावजूद खुदा के डर से अपनी जबान और अपने हाथ को उसके मामले में रोक लेता है। दूसरा शख्स वह है जो किसी पर काबू पाते ही उसे जलील करता है और उसे अपनी

ताक़त का निशाना बनाता है। इनमें से पहले शख्स ने यह साबित किया कि वह देखे बग़ैर अल्लाह से डरता है और दूसरे ने अपने बारे में इसके बरअक्स हालत का सुबूत दिया। पहले के लिए खुदा के यहां बेहिसाब इनामात हैं और दूसरे के लिए दर्दनाक अजाब।

أَحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِلسَّيَارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ٩٦ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ذَلِكَ لِيَتَذَكَّرُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ٩٧ اْعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ٩٨ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ٩٩ قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيثِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ١٠٠

तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना जाइज किया गया, तुम्हारे फ़ायदे के लिए और काफ़िलों के लिए। और जब तक तुम एहराम में हो खुश्की का शिकार तुम्हारे ऊपर हराम किया गया। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम हाज़िर किए जाओगे। अल्लाह ने काबा, हुरमत वाले घर, को लोगों के लिए कयाम का ज़रिया बनाया। और हुरमत वाले महीनों को और कुबानी के जानवरों को और गले में पट्टा पड़े हुए जानवरों को भी, यह इसलिए कि तुम जानो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज से वाकिफ़ है। जान लो कि अल्लाह का अजाब सख़्त है और वेशक़ अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। रसूल पर सिर्फ़ पहुंचा देने की जिम्मेदारी है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। कहो कि नापाक और पाक बराबर नहीं हो सकते, अगरचे नापाक की अधिकता तुम्हें भली लगे। पस अल्लाह से डरो ऐ अक्ल वाले, ताकि तुम फलाह पाओ। (96-100)

हालते एहराम में शिकार हराम है। मगर जो लोग दरिया या समुद्र से बैतुल्लाह (काबा) का सफर कर रहे हों उनके लिए जाइज है कि वे पानी में शिकार करें और उसे खाएं। इसकी वजह यह है कि शिकार की यह मनाही इसके अंदर किसी जाती हुरमत (मनाही) की वजह से न थी बल्कि महज 'आजमाइश' के लिए थी। इंसान को आजमाने के लिए अल्लाह ने अलामती तौर पर कुछ चीजें मुकर्रर कर दीं। इसलिए जहां शारअ (ईश्वरीय विधान) ने महसूस किया कि जो चीज आजमाइश के लिए थी वह कंदों के लिए और जल्दी मशक़त का सबब बन जाएगी वहां कानून में नर्मी कर दी गई। क्योंकि समुद्र के सफर में अगर जादेराह

(यात्रा सामग्री) न रहे तो आदमी के लिए अपनी जिंदगी को बाकी रखने की इसके सिवा और सूरत नहीं रहती कि वह आबी जानवरों को अपनी खुराक बनाए।

काबा इस्लाम और मिल्लते इस्लाम का दायमी मर्कज है। काबा की तरफ रुख करने को नमाज की शर्त ठहरा कर अल्लाह ने दुनिया के एक-एक मुसलमान को काबा की मर्कजियत के साथ जोड़ दिया। फिर हज की सूरत में इसे इस्लाम का अन्तर्राष्ट्रीय इज्तिमागाह बना दिया। जियारते काबा के अन्तर्गत में जो शआइर (प्रतीक) मुकर्रर किए गए हैं उनके एहतुराम की वजह उनका कोई जाती तकद्दुस (पवित्रता) नहीं है। इसकी वजह यह है कि वह आदमी के इस्तेहान की अलामत हैं। बंदा जब इन शआइर के बारे में अल्लाह के हुक्म को पूरा करता है तो वह अपने जेहन में इस हकीकत को ताजा करता है कि अल्लाह अगरचे बजहिर दिखाई नहीं देता मगर वह जिंदा मौजूद है। वह हुक्म देता है, वह बंदों की निगरानी करता है। वह हमारी तमाम हरकतों से बाखबर है। ये एहसासात आदमी के अंदर अल्लाह का डर पैदा करते हैं और उसे इस काबिल बनाते हैं कि वह जिंदगी के मुजल्लिफ मौक़ों पर अल्लाह का सच्चा बंदा बनकर रह सके।

इंसान की यह कमजोरी है कि जिस तरफ धीड़ हो, जिधर जाहिरी साजोसामान की कसरत (बहुलता) हो उसी को अहम समझ लेता है। मगर खुदा के नजदीक सारी अहमियत सिर्फ कैफियत की है। मिक्दार (मात्रा) की उसके यहां कोई कीमत नहीं। जो लोग 'कसरत' की तरफ दौड़ें और 'किरलत' (कमी) को नजदअंदाज कर दें वे अपने ख्याल से बड़ी होशियारी कर रहे हैं। मगर हकीकत के एतबार से वे इतिहाई नादान हैं। कामयाब वह है जो खुदा के डर के तहत अपना रवैया मुतअय्यन करे न कि भौतिक हितों या दुनियावी अदेशों के तहत।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءٍ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسْأَلُونَ وَإِنْ تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنْزَلُ الْقُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ وَعَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿٣٠﴾ قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كَافِرِينَ ﴿٣١﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَثُرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٣٢﴾ وَلَئِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَلَوْ كَانُوا هُمُ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿٣٣﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا تَعْذِرْكُمْ مَن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَىٰ ثُمَّ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٤﴾

ऐ ईमान वालो, ऐसी बातों के मुतअल्लिक सवाल न करो कि अगर वे तुम पर जाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें गिरां गुजें। और अगर तुम उनके मुतअल्लिक सवाल करोगे ऐसे वक्त

में जबकि कुरआन उतर रहा है तो वे तुम पर जाहिर कर दी जाएंगी। अल्लाह ने उनसे दस्तगुजर किया। और अल्लाह बख्शने वाला, तहम्मूल (उदारता) वाला है। ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक जमाअत ने पूछीं। फिर वे उनके मुकिर होकर रह गए। अल्लाह ने बहीरा और साएबा और वसीला और हाम (बुत्तों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) मुकर्रर नहीं किए। मगर जिन लोगों ने कुफ्र किया वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अक्सर अक्ल से काम नहीं लेते। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ आओ और रसूल की तरफ आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफी है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों। ऐ ईमान वालो, तुम अपनी फिक्र रखो। कोई गुमराह हो तो इससे तुम्हारा कुछ नुस्सान नहीं अगर तुम हिदायत पर हो। तुम सबको अल्लाह के पास लौटकर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। (101-105)

रिवायतों में आता है कि जब हज का हुक्म आया तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खूबा देते हुए फरमाया : ऐ लोगो तुम पर हज फर्ज किया गया है। यह सुनकर कबीला बनी असद का एक शख्स उठा और कहा : ऐ खुदा के रसूल क्या हर साल के लिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सुनकर सख्ता गजबनाक हुए और फरमाया : उस जात की कसम जिसके कब्जेमें मेरी जान है अगर मैं कह देता हूं तो हर साल के लिए फर्ज हो जाता और जब फर्ज हो जाता तो तुम लोग हर साल इसे कर न पाते और फिर तुम कुफ्र करते। पस जो मैं छोड़ूं उसे तुम भी छोड़ दो। जब मैं किसी चीज का हुक्म दूं तो उसे करो और जब मैं किसी चीज से रोकूं तो उससे रुक जाओ। (तप्सीर इब्ने कसीर)

ग़ैर जरूरी सवालात में पड़ने की मनाही जो नुक्से कुरआन के वक्त थी वही आज भी मल्लूब है। आज भी सही तरीका यह है कि जो हुक्म जिस तरह दिया गया है उसे उसी तरह रहने दिया जाए। ग़ैर जरूरी सवालात कायम करके उसकी हदों व नियमों को बढ़ाने की कोशिश न की जाए। जो हुक्म मुज्मल (संक्षिप्त) सूरत में है उसे मुफस्सल (विस्तृत) बनाना, जो मुतलक है उसे सशर्त करना और जो चीज अनिश्चित है उसे निश्चित करने के दरपे होना दीन में ऐसा इजाफ़ है जिससे अल्लाह और रसूल ने मना फरमाया है।

किसी कैम के जो गुजरे हुए बुर्ज़ा हों हैं ज़माना गुजरने के बाद वे मुकद्दस हैसियत हासिल कर लेते हैं। अक्सर गुमराहियां इन्हीं गुजरे हुए लोगों के नाम पर होती हैं। यहां तक कि अगर वे बकरी और ऊंट की ताजीम का रिवाज कायम कर गए हों तो उसे भी बाद के लोग सोचे समझे बग़ैर दोहराते रहते हैं। जिस बिगाड़ की रिवायात माजी (अतीत) के तकद्दुस (पवित्रता) पर कायम हों उसकी जड़ें इतनी गहरी जमी हुई होती हैं कि उससे लोगों की हड्डाना सख्ता दुश्वार होता है। इस किर्रम की नफ़िसयाती पेचीदगियों से ऊपर उठना उसी वक्त मुमकिन होता है जबकि आदमी के अंदर वाकई अर्थों में यह यकीन पैदा हो जाए कि बिलआखिर उसे खुदा के सामने हाजिर होना है। ऐसा शख्स आज ही उस हकीकत को मान लेता है जिसे मौत के बाद हर आदमी मानने पर मजबूर होगा मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنَكُمْ إِذَا أَحْضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتَ حِينَ الْوَصِيَّةِ إِثْنَانِ
ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِّنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَاصْلَبْتُمْ
مُصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْسِبُوهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمِينَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَبْتُمْ
لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَلَا تَكُنْتُمْ شَهِادَةً لِلَّهِ إِنَّا إِذَا لَمِينٌ
الَّذِينَ ۖ فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومُونَ مَقَامَهُمَا مِنَ
الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوَّلِينَ فَيُقْسِمِينَ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا
وَمَا عَصَيْنَا ۗ إِنَّا إِذَا لَمِينٌ الظَّالِمِينَ ۖ ذَٰلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ
وُجْهِهَا أَوْ يَخَافُونَ أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ آيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ٥

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे दर्मियान गवाही वसीयत के वक्त, जबकि तुममें से किसी की मौत का वक्त आ जाए, इस तरह है कि दो मोतबर (विश्वसनीय) आदमी तुममें से गवाह हों। या अगर तुम सफर की हालत में हो और वहां मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे गैरों में से दो गवाह ले लिए जाएं। फिर अगर तुम्हें शुबह हो जाए तो दोनों गवाहों को नमाज के बाद रोक लो और वे दोनों खुदा की कसम खाकर कहें कि हम किसी कीमत के ऐवज इसे न बेचेंगे चाहे कोई संबंधी ही क्यों न हो। और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे। अगर हम ऐसा करें तो बेशक हम गुनाहगार होंगे। फिर अगर पता चले कि उन दोनों ने कोई हक्कतल्फी की है तो उनकी जगह दो और शख्स उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था। वे खुदा की कसम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज्यादा बरहक है और हमने कोई ज्यादाती नहीं की है। अगर हम ऐसा करें तो हम जालिमों में से होंगे। यह करीबतरीन तरीका है कि लोग गवाही ठीक दें। या इससे डें कि हमारी कसम उनकी कसम के बाद उल्टी पड़ेगी। और अल्लाह से डरो और सुनो। अल्लाह नाफरमानों को सीधी राह नहीं चलाता। (106-108)

एक आदमी सफर करता है और उसके साथ माल है। रास्ते में उसकी मौत का वक्त आ जाता है। अब अगर वह अपने करीब दो मुसलमान पाए तो उन्हें अपना माल दे दे और उसके बारे में उन्हें वसीयत कर दे। अगर दो मुसलमान बरवक्त न मिलें तो गैर मुस्लिमों में से दो आदमियों के साथ यही मामला करे। ये दो साहिबान माल लाकर उसे वारिसों के हवाले करें। इस वक्त वारिसों को अगर उनके बयान के बारे में शुबह हो जाए तो किसी

नमाज के बाद मस्जिद में इन गवाहों को रोक लिया जाए। यह दोनों शख्स आम मुसलमानों के सामने कसम खाएं कि उन्होंने मरने वाले की तरफ से जो कुछ कहा सही कहा। अगर वारिस उसके हल्फिया बयान पर मुतमइन न हों तो वारिसों में से दो आदमी अपनी बात के हक में कसम खाएं और फिर उनकी कसम के मुताबिक पैसला कर दिया जाए। वारिसों को यह हक देना गोया एक ऐसी रोक कायम करना है कि कोई खियानत करने वाला खियानत करने की जुरत न कर सके।

शरीअत में एक मस्तेहत यह मल्हूज रखी गई है कि रोज मरह के मामलात में ऐसे अहकाम दिए जाएं जो आदमी की वसीअत ज़िंदगी के लिए सबक हों। किसी शख्स के मरने के बाद उसके माल का हकदारों तक पहुंचना एक खानदानी और मआशी (आर्थिक) मामला है। मगर इसे दो अहम बातों की तर्बियत का जरिया बना दिया गया। एक यह कि लोगों में यह मिजाज बने कि मामलात में वे तअल्लुक और रिश्तेदारी का लिहाज न करें बल्कि सिर्फ हक का लिहाज करें। ये वह देखें कि हक क्या है न यह कि बात किसके मुवाफिक जा रही है और किसके खिलाफ। दूसरे यह की हर बात को खुदा की गवाही समझना। कोई बात जो आदमी के पास है वह खुदा की एक अमानत है। क्योंकि आदमी ने उसे खुदा की दी हुई आंख से देखा और खुदा के दिए हुए हाफिजे में उसे महफूज रखा। और अब खुदा की दी हुई ज्वान से वह उसके मुतअल्लिक एलान कर रहा है। ऐसी हालत में यह अमानत में खियानत होगी कि आदमी बात को उस तरह बयान न करे जैसा कि उसने देखा और जिस तरह उसके हाफिजे ने उसे महफूज रखा।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ ۖ إِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ادْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ
إِذْ آتَيْنَاكَ بِرُوحٍ الْقُدُسِ تَكْلِمُ الْكَاسِ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَإِذْ عَلَّمْنَاكَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ
بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتَدْرِي الْأَكْبَةَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ
وَإِذْ تُصَوِّرُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي وَإِذْ لَقَعْتَ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جُئْتَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٠٩

जिस दिन अल्लाह पैगम्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था। वह कहेंगे हमें कुछ इल्म नहीं, छुपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है। जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा इब्ने मरयम, मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी मां पर किया जबकि मैंने रुहे पाक से तुम्हारी मदद की। तुम लोगों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी। और जब मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और

इंजील की तालीम दी। और जब तुम मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से बनाते थे फिर उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी। और तुम अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे। और जब मैंने बनी इस्राईल को तुमसे रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो उनके मुंकिरों ने कहा यह तो बस एक खुला हुआ जादू है। (109-110)

पैगम्बरों पर जो लोग ईमान लाए, बाद के जमाने में सबके अंदर बिगाड़ पैदा हुआ। उन्होंने अपने तौर पर एक दिन बनाया और उसे अपने पैगम्बर की तरफ मंसूब कर दिया। इसके बावजूद हर गिरोह अपने आपको अपने पैगम्बर की उम्मत शुमार करता रहा। हालांकि पैगम्बर की अख्त तालीमात से हटने के बाद उसका पैगम्बर से कोई तअल्लुक बाकी न रहा था। यहूदी अपने को हजरत मूसा की तरफ मंसूब करते हैं और ईसाई अपने को हजरत ईसा की तरफ। हालांकि उनके प्रचलित दीन का खुदा के इन पैगम्बरों से कोई तअल्लुक नहीं। यह हकीकत मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में छुपी हुई है। मगर कियामत के दिन वह खेल दी जाएगी। उस दिन खुदा तमाम पैगम्बरों को और इसी के साथ उनकी उम्मतों को जमा करेगा। उस वक्त उम्मतों के सामने उनके पैगम्बरों से पूछा जाएगा कि तुमने अपनी उम्मतों को क्या तालीम दी और उम्मतों ने तुम्हारी तालीमात को किस तरह अपनाया। इस तरह हर उम्मत पर उसके पैगम्बर की मौजूदगी में वाजेह किया जाएगा कि उसने खुदा के दीन के मामले में अपने पैगम्बर की क्या-क्या ख़िलाफ़वर्जी की है और किस तरह खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को उनकी तरफ मंसूब किया है।

इन्हीं पैगम्बरों में से एक मिसाल हजरत ईसा की है जो ख़ातमुन्निबियीन (अंतिम नबी) और आप से पहले के नबीयों की दर्मियानी कड़ी हैं। हजरत ईसा को इतिहाई खुसूसी मौजिजे (चमत्कार) दिए गए। आप पर ईमान लाने वाले बहुत कम थे और आपके मुख़ालिफ़ीन (यहूद) को हर तरह का दुनियावी जोर हासिल था। इसके बावजूद वे हजरत ईसा का कुछ नुस्सान न कर सके और न आपके साथियों को ख़त्म करने में कामयाब हुए। इन मौजिजात का नतीजा यह होना चाहिए था कि लोग आपके लिए हुए दीन को मान लेते। मगर अमलन यह हुआ कि आपके मुख़ालिफ़ीन ने यह कह कर आपको नजरअंदाज कर दिया कि वह जो मौजिजे दिखा रहे हैं वह सब जादू का करिश्मा है। और जो लोग आप पर ईमान लाए उन्होंने बाद के जमाने में आपको खुदाई का दर्जा दे दिया। कियामत के दिन आपकी पैरवी का दावा करने वालों के सामने यह हकीकत खोल दी जाएगी कि हजरत ईसा ने जो कमालात दिखाए वे सब खुदा के हुक्म से थे। आपके दुश्मनों ने आपको जिन ख़तरात में डाला उनसे भी अल्लाह ही ने आपको बचाया। जब सूरतेहाल यह थी और हजरत ईसा खुद सामने खड़े होकर इसकी तस्दीक कर रहे हैं तो अब उनके उम्मती बताएं कि उन्होंने आपकी तरफ जो दीन मंसूब किया वह किसने उन्हें दिया था।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ امْنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا الْمَنَا وَالشَّهَد
بِأَكْنَا مُسْلِمُونَ ۖ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ
رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ
قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا
وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ۖ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا
مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ وَارْزُقْنَا
وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۖ قَالَ اللَّهُ إِنَّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ
فَإِنِّي أَعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और तू गवाह रह कि हम फरमांवरदार हैं। जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम, क्या तुम्हारा रब यह कर सकता है कि हम पर आसमान से एक ख़ान (भोजन भरा थाल) उतारे। ईसा ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिल मुतमइन (संमुष्ट) हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाही देने वाले बन जाएं। ईसा इब्ने मरयम ने दुआ कि ऐ अल्लाह, हमारे रब, तू आसमान से हम पर एक ख़ान उतार जो हमारे लिए एक ईद बन जाए, हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए और तेरी तरफ से एक निशानी हो। और हमें अता कर, तू ही बेहतरीन अता करने वाला है। अल्लाह ने कहा मैं यह ख़ान जरूर तुम पर उतारूंगा। फिर इसके बाद तुममें से जो शख्स मुंकिर होगा उसे मैं ऐसी सजा दूंगा जो दुनिया में किसी को न दी होगी। (111-115)

लोगों को हक की तरफ पुकारने का काम अगरचे दाओ (आह्वानकर्ता) अंजाम देता है मगर पुकार पर लब्बक कहना हमेशा खुदा की तौफ़ीक से होता है। दावत की सदाकत को दलीलों से जान लेने के बाद भी बहुत सी रुकावटें बाकी रहती हैं जो आदमी को उसकी तरफ बढ़ने नहीं देतीं। दाओ का एक आम इंसान की सूरत में दिखाई देना, यह अंदेशा कि दावत (आह्वान) कुबूल करने के बाद जिंदगी का बना बनाया ढांचा टूट जाएगा, यह सवाल कि अगर यह सच्चाई है तो फलां-फलां बड़े लोग क्या सच्चाई से महरूम थे, वगैरह। यह एक इतिहाई नाजुक मोड़ होता है जहां आदमी फैसले के किनारे पहुंच कर भी फैसला नहीं कर पाता। यही वह मकाम है जहां खुदा उसकी मदद करता है। जिस शख्स के अंदर वह कुछ खैर

(भलाई) देखता है उसका हाथ पकड़ कर उसे शुबह की सरहद पार करा देता है और उसे यकीन के दायरे में दाखिल कर देता है।

खुदा की तरफ से हर वक्त इंसान को रिज्क फ़राहम किया जा रहा है। यहाँ तक कि पूरी ज़मीन इंसान के लिए रिज्क का दस्तरख़ान बनी हुई है। मगर मोमिनीने मसीह ने आसमान से खाना उतारने का मुतालबा किया तो उन्हें सख़्त तंबीह की गई। इसकी वजह यह है कि आम हालात में हमें जो रिज्क मिलता है वह असबाब के पर्दे में मिल रहा है। जबकि मोमिनीने मसीह का मुतालबा यह था कि असबाब का पर्दा हटा कर उनका रिज्क उन्हें दिया जाए। यह चीज अल्लाह की सुन्नत के खिलाफ़ है। क्योंकि अगर असबाब का जाहिरी पर्दा हटा दिया जाए तो इस्तेहान किस बात का होगा।

हकीकत यह है कि खेत से लहलहाती हुई फ़सल का पैदा होना या मिट्टी के अंदर से एक शादाब दरख़्त का निकल कर खड़ा हो जाना भी इसी तरह मोजिजा (चमत्कार) है जिस तरह बादलों में होकर किसी ख़ान का हमारी तरफ़ आना। मगर इन वाक़ेयात का मोजिजा होना हमें इसलिए नज़र नहीं आता कि वे पर्दे में होकर जाहिर हो रहे हैं। आदमी का इस्तेहान यह है कि वह पर्दे को फाड़कर हकीकत को देख सके। वह 'ज़मीन' से निकलने वाले रिज्क को 'आसमान' से उतरने वाले रिज्क के रूप में पा ले। अगर कोई शख्स यह मुतालबा करे कि मैं देख कर मानूंगा तो गोया वह कह रहा है कि इस्तेहान से गुज़रे बग़ैर मैं खुदा की रहमत में दाख़िल हूँगा। हालाँकि खुदा की सुन्नत के मुताबिक़ ऐसा होना मुमकिन नहीं।

وَاذْكُرْ أَنَّ اللَّهَ يُعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ۖ أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأَهْلِي الْهَيْمِينَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالَ سُبْحَنَكَ مَا كُنْتُ لِي بِمُحِقٍّ ۚ أَنْ كُنْتُ قُلْتُهُ
فَقَدْ عَلِمْتُمْ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي ۖ وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ ۖ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ
عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۖ أَتَادُمُّتُمْ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبُ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۚ إِنَّ تُعَذِّبُهُمْ فَلَهُمْ عَذَابُكَ وَإِنَّ تَغْفِرَ لَهُمْ فَاِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ وَهُوَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ को खुदा के सिवा माबूद (पूज्य) बनालो। वह जवाब देंगे कि तू पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई हक़ नहीं। अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझे जरूर मालूम होगा। तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है। बेशक तू ही है छुपी बातों का जानने वाला। मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था। यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा भी। और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो उन पर तू ही निगरां था और तू हर चीज़ पर गवाह है। अगर तू उन्हें सज़ा दे तो वे तेरे बदे हैं और अगर तू उन्हें माफ़ कर दे तो तू ही जबरदस्त है हिकमत वाला है। अल्लाह कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चाँ को उनका सच काम आएगा। उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही है बड़ी कामयाबी। आसमानों और ज़मीन में और जो कुछ उनमें है सबकी बादशाही अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (116-120)

क़ियामत जब आएगी तो हकीकतें इस तरह खुल जाएंगी कि आदमी बग़ैर बताए हुए यह जान लेगा कि सच क्या है और ग़लत क्या। लोग अपनी आंखों से देख रहे होंगे कि सारी ताकतें सिर्फ़ एक अल्लाह को हासिल हैं। ख़ालिक और मालिक, माबूद और मलबूद होने में कोई भी उसका शरीक नहीं। उसके सिवा किसी को न कोई ताकत हासिल है और न उसके सिवा कोई इस काबिल है कि उसकी इबादत व इताअत की जाए। ऐसी हालत में जब खुदा अपने पैग़म्बरों से पूछेगा कि मैंने तुम्हें क्या पैग़ाम देकर दुनिया में भेजा था तो यह एक ऐसी बात का पूछना होगा जो पहले ही लोगों के लिए मालूम बन चुकी होगी। इस सवाल का जवाब उस वक्त इतना खुला हुआ होगा कि किसी के बोले बग़ैर क़ियामत का पूरा माहौल इसका जवाब पुकार रहा होगा। यह सवाल व जवाब महज़ लोगों की रुस्वाई में इजाफ़ा करने के लिए होगा। वह इसलिए होगा कि पैग़म्बरों के सामने खड़ा करके लोगों पर वाज़ेह किया जाएगा कि पैग़म्बरों के नाम पर जो दीन तुमने बना रखा था वह उनकी हकीकी तालीमात से कोई तअल्लुक नहीं रखता था।

यह दुनिया इस्तेहान के लिए बनाई गई है। इसलिए यहां हर एक को आजादी है। यहां आदमी खुदा व रसूल की तरफ़ ऐसा दीन मंसूब करके भी फल फूल सकता है जिसका खुदा व रसूल से कोई तअल्लुक न हो। यहां फ़र्जी उम्मीदों और झूठी आरज़ुओं पर भी जन्मत को अपना हक़ साबित किया जा सकता है। यहां यह मुमकिन है कि आदमी अपनी क़यादत (नेतृत्व) के हंगामे खड़े करे और यह साबित करे कि जो कुछ वह कर रहा है वही ऐन खुदा का दीन है। मगर क़ियामत में इस क़िस्म की कोई चीज़ काम आने वाली नहीं। क़ियामत में जो चीज़ काम आएगी वह सिर्फ़ यह कि आदमी खुदा की नज़र में सच्चा साबित हो। आसमानी किताब की हामिल कौमों का इस्तेहान यह नहीं है कि वे ईमान की दावेदार बनती हैं या नहीं। उनका इस्तेहान यह है कि वे अपने ईमान के दावे को सच्चा साबित करती हैं या नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۚ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلًا
وَإِلَىٰ مُسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُونَ ۚ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ
وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَهَجْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ۝

आयतें 165

सूरह-6. अल-अनआम

रुकूअ 20

(मक्का में नाज़िल हुआ)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।
तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया और तारीकियों
और रोशनी को बनाया। फिर भी मुंकिर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते
हैं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर एक मुद्दत मुकर्रर की और मुकर्ररह
मुद्दत उसी के इल्म में है। फिर भी तुम शक करते हो। और वही अल्लाह आसमानों
में है और वही जमीन में। वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है और वह जानता है
जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

आसमान और जमीन का निजाम अपनी सारी वस्तुओं (व्यापकताओं) के बावजूद इतना
मरबूत (सुगठित) और इतना बहदानी (एकीय) है कि वह पुकार रहा है कि उसका खालिक
और मुंतजिम एक खुदा के सिवा कोई और नहीं हो सकता। फिर जमीन व आसमान की यह
कायनात अपने फैलाव और अपनी हिक्मत व सार्थकता के एतबार से नाकाबिले कयास हद
तक अजीम है। सूरज के रोशन ग्रह के गिर्द खला (अंतरिक्ष) में जमीन की हद दर्जा मुन्जजम
गर्दिश और उससे जमीन की सतह पर रोशनी और तारीकी और दिन और रात का पैदा होना
इंसान के तमाम कयास व गुमान से कहीं ज्यादा बड़ा वाक्या है। अब जो खुदा इतने बड़े
कायनाती कारखाने को इतने बाकमाल तरीके पर चला रहा है उसकी जात में वह कौन सी
कमी हो सकती है जिसकी तलाफ़ी के लिए वह किसी को अपना शरीक ठहराए। हकीकत यह
है कि हमारी दुनिया और उसके अंदर कायमशुदा हैरतनाक निजाम खुद ही इस बात का सबूत
है कि इसका खुदा सिर्फ एक है और यही निजाम इस बात का भी सबूत है कि यह खुदा इतना
अजीमुश्शन है कि उसे अपनी तस्वीक और इंतजाम में किसी मददगार की जरूरत नहीं।

मौजूदा दुनिया की उम्र महदूद है। यहां दुख से ख़ाली जिंदगी मुमकिन नहीं। यहां हर
खुशगवारी के साथ नाखुशगवारी का पहलू लगा हुआ है। यहां शर को ख़ैर से और ख़ैर को
शर से जुदा नहीं किया जा सकता। ऐसी हालत में आदमी की समझ में नहीं आता कि आखिरत
की अवदी दुनिया जो हर किस्म के दुख-तकलीफ (फ़ातिर 34) से ख़ाली होगी कैसे बन जाएगी।

अगर किसी और मादूदे से आखिरत की दुनिया बनने वाली हो तो इंसान उससे वाकिफ नहीं
और अगर इसी दुनिया के मादूदे से वह दूसरी दुनिया बनने वाली है तो इस दुनिया के अंदर
उस किस्म की एक कामिल दुनिया को वजूद में लाने की सलाहियत नहीं।

मगर सवाल करने वाले का खुद अपना वजूद ही इस सवाल का जवाब देने के लिए
काफी है इंसान का जिस पूरा का पूरा मिट्टी (जमीनी अज्जा) से बना है, मगर उसके अंदर
ऐसी मुंफरिद (विशिष्ट) सलाहियतें हैं जिनमें से कोई सलाहियत भी मिट्टी के अंदर नहीं।
आदमी सुनता है, वह बोलता है, वह सोचता है, वह तरह-तरह के हैरतनाक अमल अंजाम देता
है। हालांकि वह जिस मिट्टी से बना है वह इस किस्म का कोई भी अमल अंजाम नहीं दे
सकती। जमीनी अज्जा से हैरतअंज तौर पर एक ग़ैर जमीनी मख़्बूक बन कर खड़ी हो गई
है। यह एक ऐसा तजर्बा है जो हर रोज आदमी के सामने आ रहा है। ऐसी हालत में कैसी
अजीब बात है कि आदमी आखिरत के वाक़ेअ (घटित) होने पर शक करे। अगर मिट्टी से
जीता जागता इंसान निकल सकता है। अगर मिट्टी से खुशबूदार फूल और जायकेदार फल
बराबद हो सकते हैं तो हमारी मौजूदा दुनिया से एक और ज्यादा कामिल और ज्यादा मेयारी
दुनिया क्यों जाहिर नहीं हो सकती।

وَمَا أَنبِئُكُمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوعًا مَّعْرُضِينَ ۚ فَكَذَّبُوا
بِالْحَقِّ لَنَجَاءٍ لَهُمْ فَسُوفَ يَأْتِيهِمُ الْآيَاتُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۚ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ
أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّهِمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ يُمَكِّنْ لَكُمْ ۚ وَأَرْسَلْنَا
السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا ۖ وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ
بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝

और उनके रब की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है वे उससे
एराज(उपेक्षा) करते हैं। चुनांचे जो हक उनके पास आया है उसे भी उन्होंने झुठला दिया।
पस अनक़रीब उनके पास उस चीज की ख़बरे आएंगी जिसका वह मजक उड़ते थे।
क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी कौमों को हलाक कर दिया। उन्हें
हमने जमीन में जमा दिया था जितना तुम्हें नहीं जमाया। और हमने उन पर आसमान
से ख़ूब बारिश बरसाई और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने
उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला। और उनके बाद हमने दूसरी कौमों को
उठाया। (4-6)

खुदा और आखिरत की दावत जो खुदा की बराहेरास्त ताईद से उठी हो उसके साथ
वाजेह अलामतें होती हैं जो इस बात का एलान कर रही होती हैं कि यह एक सच्ची दावत
है और खुदा की तरफ से है। उसका उस फितरत के अंदाज पर होना जिस पर खुदा की अवदी
दुनिया का निजाम कायम है। उसका ऐसी दलीलों की बुनियाद पर उठना जिसका तोड़ किसी

के लिए मुमकिन न हो। उसकी पुश्त पर ऐसे दाओ (आह्वानकर्ता) का होना जिसकी संजीदगी और इखलास पर शुबह न किया जा सकता हो। उसके साथ ऐसे ताईदी वाकेआत का वाबस्ता होना कि मुखालिफीन अपनी बरतर कुव्वत के बावजूद इसके खिलाफ अपने तखीबी (विध्वंसक) मंसूबों में कामयाब न हुए हों। इस तरह के वाजेह कराइन हैं जो उसके बरहक होने की तरफ खुला इशारा कर रहे होते हैं। इसके बावजूद ईसान उस पर यकीन नहीं करता और उसका साथ देने पर आमादा नहीं होता। इसकी वजह यह है कि ये तमाम ताईदी कराइन अपनी सारी वजाहत के बावजूद हमेशा असबाब के पर्दे में जाहिर होते हैं। आदमी के सामने जब ये कराइन आते हैं तो वह उन्हें मखसूस असबाब की तरफ मंसूब करके उन्हें नजरअंदाज कर देता है, उसका जेहन एतराफ के रूख पर चलने के लिए आमादा नहीं होता। वह कहता है कि यह दावत अगर खुदा की तरफ से होती तो खुदा और फरिश्ते साक्षात रूप में इसके साथ मौजूद होते। हालांकि यह ख्याल सरासर बातिल है। क्योंकि खुदा और फरिश्ते जब साक्षात रूप में सामने आ जाएंगे तो वह फैसले का वक्त होता है न कि दावत और तब्लीग (आह्वान एवं प्रचार) का।

जिन लोगों को जमीन में जमाव हासिल हो, जिन्होंने अपने लिए मआशी (आर्थिक) साजेसामान जमा कर लिया हो, जिन्हें अपने आस पास अजमत और मकबूलियत के मजहिर दिखाई देते हों वे हमेशा गलतफहमी में पड़ जाते हैं। वे अपने गिर्द जमाशुदा चीजों के मुकाबले में उन चीजों को हकीर समझ लेते हैं जो हक के दाओ के गिर्द खुदा ने जमा की हैं। उनकी यह खुद एतमादी इतना बढ़ती है कि वे खुदा की तरफ से भी बेखैफ हो जाते हैं। वे हक के दाओ की उस तंबीह का मजाक उड़ाने लगते हैं कि तुम्हारी सरकशी जारी रही तो तुम्हारी मादूदी तरकियां तुम्हें खुदा की पकड़ से न बचा सकेंगी। हक के दाओ को नाचीज समझना उनकी नजर में दाओ की तंबीहात (चेतावनियों) को भी नाचीज बना देता है। माजी के वे तारीखी वाकेआत भी उन्हें सबक देने के लिए काफी साबित नहीं होते जबकि बड़े-बड़े मादूदी इस्तहकाम के बावजूद खुदा ने लोगों को इस तरह मिटा दिया जैसे उनकी कोई कीमत ही न थी। जमीन में बार-बार एक कैम का गिरना और दूसरी कैम का उभरना जाहिर करता है कि यहां उल्थान-पतन का क़नून नाफिज़ है। मगर आदमी सबक नहीं लेता। पिछले लोग दुबारा उसी अमल को दोहराते हैं जिसकी वजह से अगले लोग बर्बाद हो गए।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قُرْطَانٍ فَلَسَوْدُ يَأْتِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكَ فَقَضَى الْأَمْرَ ثُمَّ لَا يَنْظُرُونَ ۝ وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكَ لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَكِنَّا عَلَيْنَاهُمْ تَابًا يَلْسُونُ ۝ وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ۝

और अगर हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो कागज में लिखी हुई होती और वे उसे अपने हाथों से छू भी लेते तब भी इंकार करने वाले यह कहते कि यह तो एक खुला हुआ जादू है। और वे कहते हैं कि इस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया। और अगर हम कोई फरिश्ता उतारते तो मामले का फैसला हो जाता फिर उन्हें कोई मोहलत न मिलती। और अगर हम किसी फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते तो उसे भी आदमी बनाते और उन्हें उसी शुबह में डाल देते जिसमें वे अब पड़े हुए हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़या गया तो उनमें से जिन लोगों ने मजाक उड़या उन्हें उस चीज ने आ घेरा जिसका वे मजाक उड़ते थे। कहे, जमीन में चलो फिरो और देखो कि झुटलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। (7-11)

दुनिया में आदमी की गुमराही का सबब यह है कि यहां उसे हक के इंकार की पूरी आजादी मिली हुई है। यहां तक कि उसे यह मौका भी हासिल है कि वह अपने अपकार की खूबसूरत तौजीह कर सके। इस्तेहान की इस दुनिया में इतनी वुस्अत है कि यहां अल्फाज हर उस मफहूम में ढल जाते हैं जिसमें ईसान उन्हें ढालना चाहे। दाओ अगर एक आम ईसान के रूप में जाहिर हो तो आदमी उसे यह कह कर नजरअंदाज कर सकता है कि यह एक शख्स का कयादती (नेतृत्वपरक) हौसला है न कि कोई हक व सदाकत का मामला। इसी तरह अगर आसमान से कोई लिखी लिखाई किताब उतर आए तो उसे रद्द करने के लिए भी वह ये अल्फाज पा लेगा कि यह तो एक जादू है।

मक्का के लोग कहते थे कि पैगम्बर अगर खुदा की तरफ से उसकी पैगम्बरी के लिए मूर्स किया गया है तो उसके साथ खुदा के फरिश्ते क्यों नहीं जो उसकी तस्दीक करें। इस किस्म की बातें आदमी इसलिए कहता है कि वह दावत (आह्वान) के मामले में संजीदा नहीं होता। अगर वह संजीदा हो तो उसे फौरन मालूम हो जाए कि यह दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। इस्तेहान उसी वक्त हो सकता है जबकि गैबी हकीकतों पर पर्दा पड़ा हुआ हो। अगर गैबी हकीकतें खुल जाएं और खुदा और उसके फरिश्ते सामने आ जाएं तो फिर पैगम्बरी और दावतरसानी का कोई सवाल ही नहीं होगा। क्योंकि इसके बाद किसी को यह जुरत ही न होगी कि वह हकीकतों का इंकार कर सके। मौजूदा दुनिया में लोग अपनी जाहिरपरस्ती की वजह से खुदा के दाओ को उसकी बातों की अजमत में नहीं देख पाते, वे उसका अंदाजा सिर्फ उसके जाहिरी पहलू के एतबार से करते हैं और जाहिरी एतबार से गैर अहम पाकर उसका इंकार कर देते हैं। यहां तक कि वे उसका मजाक उड़ाने लगते हैं। खुदा के दाओ का मामला उन्हें ऐसा मालूम होता है जैसे एक मामूली आदमी अचानक उठकर बहुत बड़ी हैसियत का दावा करने लगे।

इस दुनिया में दावतरसानी का सारा मामला खुदा के समरूपता के नियम के तहत होता है। यहां हक के ऊपर शुबह का एक पहलू रखा गया है ताकि आदमी इकार के तर्कों के साथ कुछ इंकार के कारण भी पा सकता हो। आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि वह इस शुबह के पर्दे को फाड़कर अपने को यकीन के मकाम पर पहुंचाए। वह शुबह के पहलुओं को मिटाकर यकीन के पहलुओं को ले ले। आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि वह देखे बगैर माने। जब हकीकत को दिखा दिया जाए तो फिर मानने की कोई कीमत नहीं।

قُلْ لِّمَن نَّافِيَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ لِلَّهِ كُتِبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ لِيَجْمَعَ إِلَيْكُمْ
 إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَرِيبَ فِيهِ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ١٠ وَلَهُ
 مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ١١ قُلْ أَغْنِيَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَلِيًّا
 فَأَطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يَطْعَمُ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ
 مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ١٢ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ
 رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ١٣ مَنْ يُصِرْ عَنْهُ يُؤْمِدِ فَقَدْ رَجَعَهُ
 وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ١٤

पूछो कि किसका है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कहो सब कुछ अल्लाह का है। उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। वह जरूर तुम्हें जमा करेगा कियामत के दिन, इसमें कोई शक नहीं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वही हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ दिन में। और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊं जो बनाने वाला है आसमानों और जमीन का। और वह सबको खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता। कहो मुझे हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूं और तुम हरगिज मुशिरकों में से न बनो। कहो अगर मैं अपने ख की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। जिस शस्त्र से वह उस रोज हटा लिया गया उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम फरमाया और यही खली कामयाबी है। (12-16)

इंसान खुले हुए हक का इंकार करता है। वह ताकत पाकर दूसरों को जलील करता है। एक इंसान दूसरे इंसान को अपने जुल्म का निशाना बनाता है। ऐसा क्यों है। क्या इंसान को इस दुनिया में भुलक इस्तेमाल (निरंकुश सत्ता) हासिल है। क्या यहां उसका कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं। क्या खुदा के यहां तजाद (अन्तर्विरोध) है कि उसने बाकी दुनिया को रहमत व मअनवियत (सार्धकता) से भर रखा है और इंसान की दुनिया को जुल्म और बेइसाफी से। ऐसा नहीं है। जो खुदा जमीन व आसमान का मालिक है वही खुदा उस मख्बूक का मालिक भी है जो दिन को मुतहर्रिक (गतिवान) होती है और रातों को करार पकड़ती है। खुदा जिस तरह बाकी कायनात के लिए सरापा रहमत है उसी तरह वह इंसानों के लिए भी सरापा रहमत है। फर्क यह है कि बाकी दुनिया में खुदा की रहमतों का जूह अव्वल दिन से है और इंसान की दुनिया में उसकी रहमतों का कामिल जूह कियामत के दिन होगा।

इंसान इरादी मख़्लूक है और उससे इरादी इबादत मत्लूब है। इसी से यह बात निकलती है कि जो लोग अपने इरादे का सही इस्तेमाल न करें वे इस काबिल नहीं कि उन्हें ख़ुदा की

रहमतों में हिस्सेदार बनाया जाए। क्योंकि उन्होंने अपने मकसदे तख्लीक को पूरा न किया। आजमाइशी मुदत पूरी होने के बाद सारे लोग एक नई दुनिया में जमा किए जाएंगे। उस दिन खुदा उसी तरह दुनिया का निजाम अपने हाथ में लेगा जिस तरह आज वह बाकी कायनात का इतिजाम अपने हाथ में लिए हुए है। उस रोज खुदा के इंसाफ का तराजू खड़ा होगा। उस दिन वेला सफाज (लाभावित) हों जिन्हें हकीकते वाक्या का एतराफ करके अपने को खुदाई इलाअत में दे दिया। और वे लोग घाटे में रहें जिन्हें हकीकते वाक्या का एतराफ नहीं किया और खुदा की दुनिया में सरकशी और हठधर्मी के तरीके पर चलते रहे।

इंसान जब भी सरकशी करता है किसी बरते (आधार) पर करता है। मगर जिन चीजों के बरते पर इंसान सरकशी करता है उनकी इस कायनात में कोई हकीकत नहीं। यहां हर चीज बेजोर है, जो वाला सिर्फ एक खुदा है। सब उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं। इसलिए पैसले के दिन वही शख्स बामुराद होगा जिसने हकीकी सहारे को अपना सहारा बनाया होगा, जिसने हकीकी दीन को अपनी जिंदगी के दीन की हैसियत से इस्तिाया किया होगा।

وَإِنْ يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٠ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ١١ قُلْ أَيْ شَيْءٌ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلْ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ١٢ أَيْتَكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهَةً أُخْرَى قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ١٣

और अगर अल्लाह तुझे कोई दुख पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर अल्लाह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वह हर चीज पर कादिर है। और उसी का जोर है अपने बंदों पर। और वह हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला सबकी ख़बर रखने वाला है, तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है। कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह है और मुझ पर यह कुरआन उतरा है ताकि मैं तुम्हें इससे ख़बरदार कर दूं और उसे जिसे यह पहुंचे। क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि खुदा के साथ कुछ और माबूद भी हैं। कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता। कहो, वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूं तुम्हारे शिर्क से। (17-19)

हमारे सामने जो अजीम कायनात फैली हुई है उसके मुखलिफ अज्जा आपस में इतने ज्यादा मरबूत (सुब्यवस्थित) हैं कि यहां किसी एक वाक्यो को जुहूर में लाने के लिए भी पूरी कायनात की कार्य-प्रणाली जरूरी है। इस कारण कोई भी इंसान किसी वाक्यो को जुहूर में लाने पर कादिर नहीं। क्योंकि कोई भी इंसान कायनात के ऊपर काबूयाप्ता नहीं। यहां एक छोटी सी चीज भी उस वक्त वजुद में आती है जबकि बेशमार आलमी असबाब उसकी पश्त

पर जमा हो गए हों। और खुदा के सिवा कोई नहीं जो इन असबाब पर हुक्मरां हो। कायनाती असबाब के दर्मियान आदमी सिर्फ एक हकीर इरादे का मालिक है। हकीकत यह है कि इस दुनिया में किसी को कोई सुख मिले या किसी को कोई दुख पहुंचे, दोनों ही बराबरास्त खुदा की इजाजत के तहत होते हैं। ऐसी हालत में किसी का यह सोचना भी हिमाकत है कि वह किसी को आबाद या बर्बाद कर सकता है। और यह बात भी हास्यास्पद हद तक निरर्थक है कि खुदा के सिवा भी कोई है जिससे आदमी डरे या खुदा के सिवा कोई है जिससे वह अपनी उम्मीदें वाबस्ता करे।

दुनिया में अहले हक और अहले बातिल के दर्मियान जो कशमकश जारी है इसमें पैसलाकून चीज सिर्फ खुदा की किताब है। खुदा के सिवा किसी को हक्मशक (यथाथी) का इल्म नहीं, और खुदा के सिवा किसी को किसी किस्म का जोर हासिल नहीं। इसलिए खुदा ही वह हस्ती है जो इस झगड़े में वाहिद सालिस (मध्यस्थ) है। और खुदा ने कुरआन की सूरत में यह सालिस लोगों के दर्मियान रख दिया है अब आदमी के सामने दो ही रास्ते हैं। अगर वह कुरआन की सदाकत से बेखबर है तो वह तहकीक करके जाने कि क्या वाकई वह खुदा की किताब है। और जब वह जान ले कि वह वास्तव में खुदा की किताब है तो उसे लाजिमन उसके पैसले पर राजी हो जाना चाहिए। जो आदमी कुरआन के पैसले पर राजी न हो वह यह खतरा मोल ले रहा है कि आखिरत में रुस्वाई और अजाब की कीमत पर उसे इसके पैसले पर राजी होना पड़े।

कुरआन इसलिए उतारा गया है कि पैसले का वक्त आने से पहले लोगों को आने वाले वक्त से होशियार कर दिया जाए। रसूल ने यही काम अपने जमाने में किया और आपकी उम्मत को यही काम आपके बाद कियामत तक अंजाम देना है। कुरआन इस बात की पेशगी इत्तला है कि आखिरत की अबदी दुनिया में लोगों का खुदा लोगों के साथ क्या मामला करने वाला है। पहुंचाने वाले उस वक्त अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं जबकि वह उसे पूरी तरह लोगों तक पहुंचा दें मगर सुनने वाले खुदा के यहां उस वक्त मुक्त होंगे जबकि वे उसे मानें और उसे अपनी अमली जिदगी में इस्तिआर करें। दाओ की जिम्मेदारी 'तब्लीग' (प्रचार) पर खत्म होती है और मदऊ (संबोधित व्यक्ति) की जिम्मेदारी 'इताअत' (आज्ञापालन) पर।

الَّذِينَ اتَّبَعُهمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ الَّذِينَ خَسِرُوا
نَفْسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُغْنِيهِ الظَّالِمُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ
أَسْرَكُوا آيَاتِنَا إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ ۝ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فَتَبْتَهِمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا
وَاللَّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ۝ أَنْظِرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَصَلَٰ عَنَهُم
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उसे पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वे उसे नहीं मानते। और उस शख्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुठलाए। यकीनन जालिमों को फलाह (कल्साण) नहीं मिलती। और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम कहेंगे उन शरीक ठहराने वालों से कि तुम्हारे वे शरीक कहां हैं जिनका तुम्हें दावा था। फिर उनके पास कोई फरेब न रहेगा मगर ये कि वे कहेंगे कि अल्लाह अपने रब की कसम, हम शिर्क करने वाले न थे। देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गई उनसे वे बातें जो वे बनाया करते थे। (20-24)

हकीकत आदमी के लिए जानी पहचानी चीज है। क्योंकि वह आदमी की फितरत में पेवस्त है और कायनात में हर तरफ खामोश जवान में बोल रही है। यहूद व नसारा का मामला इस बाब में और भी ज्यादा आगे था। क्योंकि उनके अबिया और उनके सहीफे (दिव्यग्रंथ) उन्हें कुरआन और पैगम्बर आखिरुज्मां मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में साफ लफ्जों में पेशगी खबर दे चुके थे, यहां तक कि उनके लिए इसे जानना ऐसा ही था जैसा अपने बेटों को जानना।

इस कद्र खुला हुआ होने के बावजूद ईसान क्यों हकीकत को तस्लीम नहीं करता। इसकी वजह वक्ती नुस्तान का अंश है। हकीकत को मानना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अपने को बड़ाई के मकाम से उतारे, वह तकलीदी (अनुसरणपरक) दांचे से बाहर आए, वह मिले हुए फायदों को छोड़ दे। आदमी यह कुर्बानी देने के लिए तैयार नहीं होता इसलिए वह हक को भी कुबूल नहीं करता। वक्ती फायदे की खातिर वह अपने को अबदी घाटे में डाल देता है।

अपने इस मौक़िफ पर मुतमइन रहने के लिए यह बात भी उसे धोखे में डालती है कि वह इम्तेहान की इस दुनिया में हमेशा अपने अनुकूल तौजीहात पाने में कामयाब हो जाता है। वह सच्चाई के हक में जाहिर होने वाले दलाइल को रद्द करने के लिए झूठे अल्फ़ज पा लेता है। यहां तक कि यहां उसे यह आजादी भी हासिल है कि हकीकत की खुदसाख्ता ताबीर करके यह कह सके कि सच्चाई ऐन वही है जिस पर मैं कायम हूं।

जब भी आदमी खुदा को छोड़कर दूसरी चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाता है तो धीरे-धीरे इन चीजों के गिर्द ताईदी बातों का तिलिस्म तैयार हो जाता है। वह ख्याली आरजुओं और झूठी तमन्नाओं का एक खुदसाख्ता हाला बना लेता है जो उसे इस फरेब में मुब्तिला रखते हैं कि उसने बड़े मजबूत सहारे को पकड़ रखा है। मगर कियामत में जब तमाम पर्दे फट जाएंगे और आदमी देखेगा कि खुदा के सिवा तमाम सहारे बिल्कुल झूठे थे तो उसके सामने इसके सिवा कोई राह न होगी कि वह खुद अपनी कही हुई बातों की तरदीद (खंडन) करने लगे। गोया इस किस्म के लोग उस वक्त खुद अपने खिलाफ झूठे गवाह बन जाएंगे। दुनिया में वे जिन चीजों के हामी बने रहे और जिनसे मंसूब होने को अपने लिए बाइसे फख्र समझते रहे, आखिरत में खुद उनके मुँक़िर हो जाएंगे। उन्होंने अकाइद और तौजीहात का जो झूठा किला खड़ा किया था वह इस तरह ढह जाएगा जैसे उसका कोई वजूद ही न था।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي
أَذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يُرَوْا كُلُّ آيَةٍ لَا يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّى إِذَا جَاءُوكَ يُجَادِلُونَكَ
يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَهُمْ يَهْتَوُونَ عَنْهُ وَ
يَتَوَنَّنَ عَنْهُ ۚ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقَفُوا
عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نَكْذِبُ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
بَلْ بَدَأَهُمْ فَكَانُوا يُمِخُّونَ مِنْ قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا
عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें। और उनके कानों में बोझ है। अगर वे तमाम निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएंगे। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते हैं तो वे मुँक़िर कहते हैं कि यह तो बस पहले लोगों की कहानियां हैं। वे लोगों को रोकते हैं और खुद भी उससे अलग रहते हैं। वे खुद अपने को हलाक कर रहे हैं मगर वे नहीं समझते। और अगर तुम उन्हें उस वक़्त देखो जब वे आग पर खड़े किए जाएंगे और कहेंगे कि काश हम फिर भेज दिए जाएं तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाएं और हम ईमान वालों में से हो जाएं। अब उन पर वह चीज खुल गई जिसे वे इससे पहले छुपाते थे। और अगर वे वापस भेज दिए जाएं तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे। और बेशक वे झूठे हैं। (25-28)

मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में आदमी को यह मौका हासिल है कि वह हर बात की मुफ़ीदे मतलब तौजीह कर सके। इसलिए जो लोग तअस्सुब का ज़ेहन लेकर बात को सुनते हैं उनका हाल ऐसा होता है जैसे उनके कान बंद हों और उनके दिलों पर पर्दे पड़े हुए हों। वे सुनकर भी नहीं सुनते और बताने के बाद भी नहीं समझते। दलाइल (तर्क) अपनी सारी वजाहत के बावजूद उन्हें मुतमइन करने में नाकाम रहते हैं। क्योंकि वे जो कुछ सुनते हैं झगड़े के ज़ेहन से सुनते हैं न कि नसीहत के ज़ेहन से। उनके अंदर बात को सुनने और समझने का कोई इरादा नहीं होता। इसका नतीजा यह होता है कि किसी बात का अस्त पहलू उनके ज़ेहन की गिरफ्त में नहीं आता। इसके बरअक्स हर बात को उल्टी शकल देने के लिए उन्हें कोई न कोई चीज मिल जाती है। दलाइल उनके ज़ेहन का जुज नहीं बनते। अपने मुख़ालिफ़ाना ज़ेहन की वजह से वे हर बात में कोई ऐसा पहलू निकाल लेते हैं जिसे ग़लत मअना देकर वे अपने आपको बदस्तूर मुतमइन रखें कि वे हक पर हैं।

जो लोग यह मिजाज रखते हों उनके लिए तमाम दलाइल बेकार हैं। क्योंकि इस्तेहान की इस दुनिया में कोई भी दलील ऐसी नहीं जो आदमी को इससे रोक दे कि वह इसके रद्द के

लिए कुछ खुदसाख़्ता अल्फ़ाज न आए। अगर कोई दलील न मिल रही हो तब भी वह हकारत के साथ यह कह कर उसे नजरअंदाज कर देगा 'यह कौन सी नई बात है। यह तो वही पुरानी बात है जो हम बहुत पहले से सुनते चले आ रहे हैं।' इस तरह आदमी उसकी सदाक़त को मान कर भी उसे रद्द करने का एक बहाना पा लेगा। ऐसे लोग खुदा के नजदीक दोहरे मुजरिम हैं। क्योंकि वे न सिर्फ़ खुद हक से रुकते हैं बल्कि एक खुदाई दलील को ग़लत मअना पहना कर आम लोगों को नजर में भी उसे मशकूक (संदिग्ध) बनाते हैं जो इतनी समझ नहीं रखते कि बातों का गहराई के साथ तज़िया (विश्लेषण) कर सकें।

दुनिया की ज़िंदगी में इस किस्म के लोग ख़ूब बढ़ बढ़कर बातें करते हैं। दुनिया में हक का इंकार करके आदमी का कुछ नहीं बिगड़ता। इसलिए वह ग़लतफहमी में पड़ा रहता है। मगर क़ियामत में जब उसे आग के ऊपर खड़ा करके पूछा जाएगा तो उन पर सारी हकीकतें खुल जाएंगी। अचानक वह उन तमाम बातों का इकरार करने लगेगा जिन्हें वह दुनिया में ठुकरा दिया करता था।

وَقَالُوا لَنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِبَعُوثِينَ ۝ وَلَوْ تَرَى إِذْ وَقَفُوا
عَلَى رَبِّهِمْ قَالَ أَكَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَى وَرَبِّنَا قَالَ فَذُقُوا الْعَذَابَ بِمَا
كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۚ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ حَتَّى إِذَا جَاءَهُمْ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوا لَيْسَ رَبُّنَا عَلَى مَا فَكَّرْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَى ظُهُورِهِمْ إِلَّا سَاءَ
مَا يَزِرُّونَ ۝ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَلَكِنَّ الْأُخْرَى خَيْرٌ لِلَّذِينَ
يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

और कहते हैं कि ज़िंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है। और हम फिर उठाए जाने वाले नहीं। और अगर तुम उस वक़्त देखते जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह उनसे पूछेगा : क्या यह हकीकत नहीं है, वे जवाब देंगे हां, हमारे रब की क़स्म, यह हकीकत है। सुदा फरमाएगा। अच्छा तो अब चखो उस इंकार के बदले जो तुम करते थे। यकीनन वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया। यहां तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आएगी तो वे कहेंगे हाय अफसोस, इस बाब में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसे वे उठाएंगे और दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल तमाशा है और आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिए जो तकवा (ईश-भय) रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते। (29-32)

जब भी कोई आदमी हक का इंकार करता है या नपस की ख़ाहिशात पर चलता है तो ऐसा इस वजह से होता है कि वह यह समझ कर दुनिया में नहीं रहता कि मरने के बाद वह दुबारा उठाया जाएगा और मालिके कायनात के सामने हिसाब किताब के लिए खड़ा किया

जाएगा। दुनिया में आदमी को इख्तियार मिला हुआ है जिसे वह बेरोक टोक इस्तेमाल करता है। उसे माल व दौलत और दोस्त और साथी हासिल हैं जिन पर वह भरोसा कर सकता है। उसे अक्ल मिली हुई है जिससे वह सरकशी की बातें सोचे और अपने जालिमाना अमल की खूबसूरत तौजीह कर सके। यह चीजें उसे धोखे में डालती हैं। वह खुदा के सिवा दूसरी चीजों पर झूठा भरोसा कर लेता है। वह समझने लगता है कि जैसा मैं आज हूँ वैसा ही मैं हमेशा रहूँगा। वह भूल जाता है कि दुनिया में उसे जो कुछ मिला हुआ है वह बतौर इस्तेहान है न कि बतौर इस्तहकक (पात्रता)।

इस क्रिम की जिंदगी चाहे वह आखिरत का इंकार करके हो या इंकार के अल्फज बोले बगैर हो, आदमी का सबसे बड़ा जुर्म है। जिन दुनियावी चीजों को आदमी अपना सब कुछ समझ कर उन पर टूटता है। आखिर किस हक की बिना पर वह ऐसा कर रहा है। आदमी जिस रोशनी में चलता है और जिस हवा में सांस लेता है उसका कोई मुआवजा उसने अदा नहीं किया है। वह जिस जमीन से अपना रिक निकालता है उसका कोई भी जुज उसका बनाया हुआ नहीं है। वह तमाम पसंदीदा चीजें जिन्हें हासिल करने के लिए आदमी दौड़ता है उनमें से कोई चीज नहीं जो उसकी अपनी हो। जब ये चीजें इंसान की अपनी पैदा की हुई नहीं हैं तो जो इन तमाम चीजों का मालिक है क्या उसका आदमी के ऊपर कोई हक नहीं। हकीकत यह है कि आदमी का मौजूदा दुनिया को इस्तेमाल करना ही लाजिम कर देता है कि वह एक रोज उसके मालिक के सामने हिसाब के लिए खड़ा किया जाए।

जो लोग दुनिया को खुदा की दुनिया समझ कर जिंदगी गुजरें उनकी जिंदगी तक्वा की जिंदगी होती है। और जो लोग उसे खुदा की दुनिया न समझें उनकी जिंदगी उन्मुक्त जिंदगी होती है। उन्मुक्त जिंदगी चन्द रोज का तमाशा है जो मरने के साथ खत्म हो जाएगा। और तक्वा की जिंदगी खुदा के अबदी उसूलों पर कायम है इसलिए वह अबदी तौर पर आदमी का सहारा बनेगी। मौजूदा दुनिया में आदमी इन हकीकतों का इंकार करता है मगर इस्तेहान की आजादी खत्म होते ही वह उसका इकरार करने पर मजबूर होगा अगरचे उस वक्त का इकरार उसके कुछ काम न आएगा।

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزَنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لَا يَكَدُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۖ وَلَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَىٰ مَا كَذَّبُوا وَآوَدُوا ۖ حَتَّىٰ آتَاهُمْ نَصْرُنَا وَلَا مَبْدَلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ؕ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَبَائِي الْمُرْسَلِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلْبًا فِي السَّمَاءِ فَاتَّبِعْهُمْ رَايَةً ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونُ مِنَ الْإِجْهَلِينَ ۝ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۖ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝

हमें मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं उससे तुम्हें रंज होता है। ये लोग तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह जालिम दरअस्त अल्लाह की निशानियों का इंकार कर रहे हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ पहुंचाने पर सब्र किया यहां तक कि उन्हें हमारी मदद पहुंच गई। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और पैगम्बरों की कुछ खबरें तुम्हें पहुंच ही चुकी हैं। और अगर उनकी बेरुखी तुम पर गिरा गुजर रही है तो अगर तुममें कुछ जोर है तो जमीन में कोई सुरंग ढूँढो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ। और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता। पस तुम नादानों में से न बनो। कुबूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसकी तरफ लौटाए जाएंगे। (33-36)

अबू जहल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : 'ऐ मुहम्मद, खुदा की कसम हम तुम्हें नहीं झुठलाते। यकीनन तुम हमारे दर्मियान एक सच्चे आदमी हो। मगर हम उस चीज को झुठलाते हैं जिसे तुम लाए हो।' मक्का के लोग जो ईमान नहीं लाए वे आपको एक अच्छा इंसान मानते थे। मगर किसी के मुतअल्लिक यह मानना कि उसकी जवान पर हक जारी हुआ है उसे बहुत बड़ा ऐज़ाज देना है और इतना बड़ा ऐज़ाज देने के लिए वे तैयार न थे। आपको जब वे 'सच्चा' या 'ईमानदार' कहते तो उन्हें यह नफिसयाती तस्कीन हासिल रहती कि आप हमारी ही सतह के एक इंसान हैं। मगर इस बात का इकरार कि आपकी जवान पर खुदा का कलाम जारी हुआ है आपको अपने से ऊंचा दर्जा देने के हममअना था। और इस क्रिम का एतराफ आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है।

मौजूदा दुनिया में खुदा अपनी बराहेरास्त सूरत में सामने नहीं आता, वह दलाइल (तर्कों) और निशानियों की सूरत में इंसान के सामने जाहिर होता है। इसलिए हक के दलाइल को न मानना या उसके हक में जाहिर होने वाली निशानियों की तरफ से आंखें बन्द कर लेना गोया खुदा को न मानना और खुदा के चेहरे की तरफ से आंखें फेर लेना है। ताहम ऐसा नहीं हो सकता कि खुदा मजबूरकुन मोजिजात (चमत्कारों) के साथ सामने आए। मजबूरकुन मोजिजात के साथ खुदा की दावत पेश की जाए तो फिर इख्तियार की आजादी खत्म हो जाएगी और इस्तेहान के लिए आजादाना इख्तियार का माहौल होना जरूरी है। दाजी को इस बात का गम न करना चाहिए कि उसके साथ सिर्फ दलाइल (तर्कों) का वजन है, गैर मामूली क्रिम की तस्वीरी (वर्चस्वपरक) कुव्वतें उसके पास मौजूद नहीं। दाजी को इस फिक्र में पड़ने के बजाए सब्र करना चाहिए। हक की दावत की जद्दोजहद एक तरफ दाजी के सब्र का इस्तेहान होती है और दूसरी तरफ मुखातबीन के लिए इस बात का इस्तेहान कि वे अपने जैसे एक इंसान में खुदा का नुमाईदा होने की झलक देखें। वे इंसान के मुंह से निकले हुए कलाम में खुदाई कलाम की अज्मतों को पा लें, वे माद्दी (भौतिक) जोर से खाली दलाइल (तर्कों) के आगे इस तरह झुक जाएं जिस तरह वे जोरआवर खुदा के आगे झुकेंगे। जिंदा लोगों के लिए सारी कायनात निशानियों से भरी हुई है। और जिन्होंने अपने एहसासात को मुर्दा कर लिया हो वे क्रियामत के जलजले के सिवा किसी और चीज से सबक नहीं ले सकते।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً
وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَيْرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ
إِلَّا أَمَرْنَا مِثْلَهَا فَوَقَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۝
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمُّوهُمْ وَبُكُّوا فِي الظُّلُمَاتِ مِنْ يَسَاءِ اللَّهِ يُضْلِلُهُ وَمَنْ
يَشَأْ يُعْطِلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी उसके रब की तरफ से क्यों नहीं उतरी।
कहो अल्लाह वेशक कादिर है कि कोई निशानी उतारे मगर अक्सर लोग नहीं जानते।
और जो भी जानवर जमीन पर चलता है और जो भी पंखों पर उड़ता है वे सब तुम्हारी ही तरह के समूह हैं। हमने लिखने में कोई चीज नहीं छोड़ी है। फिर
सब अपने रब के पास इकट्ठा किए जाएंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को
झुठलाया वे बहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहता है भटका
देता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है। (37-39)

इन आयात के इख्तिसार (सार) को खोल दिया जाए तो पूरा मज्मून इस तरह होगा वे
कहते हैं कि पैगम्बर के साथ गैर मामूली निशानी क्यों नहीं जो उसके पैगाम के बरहक होने
का सुबूत हो। तो अल्लाह हर किस्म की निशानी उतारने पर कादिर है। मगर अस्त सवाल
निशानी का नहीं बल्कि लोगों की बेइल्मी का है। निशानियां तो बेशुमार तादाद में हर तरफ बिखरी
हुई हैं जब लोग इन मौजूद निशानियों से सबक नहीं ले रहे हैं तो कोई नई निशानी उतारने से
वे क्या फायदा उठा सकेंगे। तरह-तरह के चलने वाले जानवर और मख्लूक किस्म की उड़ने
वाली चिड़ियां जो जमीन में और फज्ज में मौजूद हैं वे तुम्हारे लिए निशानियां ही तो हैं। इन तमाम
जिंदा मख्लूक़ात से भी अल्लाह को वही कुछ मलूब है जो तुमसे मलूब है। और हर एक से
जो कुछ मलूब है वह खुदा ने उसके लिए लिख दिया है, इंसान को शरई तौर पर और दूसरी
मख्लूक़ात को ज़िबिल्ली (स्वभावगत) तौर पर। चिड़ियों और जानवरों जैसी मख्लूक़ात खुदा के
लिखे पर पूरा-पूरा अमल कर रही हैं। मगर इंसान खुदा के लिखे को मानने के लिए तैयार नहीं।
इसलिए यह मामला निशानी का नहीं बल्कि अंधेपन का है, बाकी तमाम मख्लूक़ात जो दीन
इख्तियार किए हुए हैं, इंसान के लिए उसके सिवा कोई दीन इख्तियार करने का जवाज
(औचित्य) क्या है। हकीकत यह है कि जिन्हें अमल करना है वे निशानी का मुतालबा किए बग़ैर
अमल कर रहे हैं और जिन्हें अमल करना नहीं है वे निशानियों के हुजूम में रहकर निशानियां
मांग रहे हैं। ऐसे लोगों का अंजाम यही है कि कियामत में सबको जमा करके दिखा दिया जाए
कि हर किस्म के हैवानात किस तरह हकीकतपसंदी का तरीक़ा इख्तियार करके खुदा के रास्ते
पर चल रहे थे। यह सिर्फ इंसान था जो इससे भटकता रहा।

जानवरों की दुनिया मुकम्मल तौर पर मुताबिके फितरत दुनिया है। उनके यहां रिज्क की
तलाश है मगर लूट और जुल्म नहीं। उनके यहां जरूरत है मगर हिर्स और खुदगर्जी नहीं। उनके

यहां आपसी तअल्लूकात हैं मगर एक दूसरे की काट नहीं। उनके यहां ऊंच-नीच है मगर हसद
और गुस्सा नहीं। उनके यहां एक को दूसरे से तकलीफ पहुंचती है मगर बुज्ज व अदावत नहीं।
उनके यहां काम हो रहे हैं मगर क्रेडिट लेने का शौक नहीं। मगर इंसान सरकशी करता है। वह
खुदाई नक्शे का पाबंद बनने के लिए तैयार नहीं होता। इंसान से जिस चीज का मुतालबा है
वह ठीक वही है जिस पर दूसरे हैवानात कायम हैं। फिर इसके लिए मोजिजे (चमत्कार) मांगने
की क्या जरूरत। हैवानात की सूरत में चलती फिरती निशानियां क्या आदमी के सबक के लिए
काफी नहीं हैं जो खुदाई तरीके अमल का जिंदा नमूना पेश कर रही हैं और इस तरह पैगम्बर
की तालीमात के बरहक होने की अमली तस्दीक करती हैं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ إِلَٰهَهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ
وَتَتَّسُونَ مِمَّا شَرَكْتُمْ ۝

कहो, यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आए या कियामत आ जाए
तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे। बताओ अगर तुम सच्चे हो,
बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए
तुम उसे पुकारते हो। अगर वह चाहता है। और तुम भूल जाते हो उन्हें जिन्हें तुम शरीक
ठहराते हो। (40-41)

अबू जहल के लड़के इकरिमा इस्लाम के सख्त दुश्मन थे। वह फतहे मक्का तक इस्लाम
के मुखालिफ बने रहे। फतह मक्का के दिन भी उन्होंने एक मुसलमान को तीर मारकर हलाक
कर दिया था। इकरिमा उन लोगों में से थे जिनके मुतअल्लिक फतहे मक्का के दिन रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह हुक्म दिया था कि जहां मिलें कल कर दिए जाएं।

मक्का जब फतह हो गया तो इकरिमा मक्का छोड़कर जद्दा की तरफ भागे। उन्होंने
चाहा कि कश्ती के जरीए बहरे कुलजुम (लाल सागर) पार करके हबश पहुंच जाएं। मगर वह
कश्ती में सवार होकर समुद्र में पहुंचे थे कि तुन्द हवाओं ने कश्ती को घेर लिया। कश्ती खतरे
में पड़ गई। कश्ती के मुसाफिर सब मुशिरक लोग थे। उन्होंने लात और उज्जा वगैरह अपने
बुत्तों को मदद के लिए पुकारना शुरू किया। मगर तूफान की शिद्दत बढ़ती रही। यहां तक
कि मुसाफिरों को यकीन हो गया कि अब कश्ती डूब जाएगी। अब कश्ती वालों ने कहा कि
इस वक्त लात व उज्जा कुछ काम न दें। अब सिर्फ एक खुदा को पुकारो, वही तुम्हें बचा
सकता है। चुनांचे सब एक खुदा को पुकारने लगे। अब तूफान थम गया और कश्ती वापस
अपने साहिल पर आ गई। इकरिमा पर इस वाक्य का बहुत असर हुआ। उन्होंने कहा : खुदा
की कसम, दरिया में अगर कोई चीज खुदा के सिवा काम नहीं आ सकती तो यकीनन खुस्की
में भी खुदा के सिवा कोई दूसरी चीज काम नहीं आ सकती। खुदाया मैं तुझसे वादा करता हूँ
कि अगर तूने मुझे इससे नजात दे दी जिसमें इस वक्त मैं फंसा हुआ हूँ तो मैं जरूर मुहम्मद
के यहां जाऊंगा और अपना हाथ उनके हाथ में दे दूंगा और मुझे यकीन है कि मैं उन्हें माफ

करने वाला, दरगुजर करने वाला और और महरबान पाऊंगा। (अबूदाऊद, नसई)

सारी तारीख का यह मुशाहिदा है कि इंसान नाजुक लम्हात में खुदा को पुकारने लगता है। यहां तक कि वह शख्स भी जो आम जिंदगी में खुदा के सिवा दूसरों पर भरोसा किए हो या सिर से खुदा को मानता न हो। यह खुदा के वजूद और उसके कादिर मुतलक होने की फ़ित्री शहदत है। ग़ैर मामूली हालात में जब जाहिरी पर्दे हट जाते हैं और आदमी तमाम मस्तूई (कृत्रिम) ख्यालात को भूल चुका होता है उस वक़्त आदमी को खुदा के सिवा कोई चीज़ याद नहीं आती। बअल्फ़जे दीगर, मजबूरी के नुक़्ते पर पहुंच कर हर आदमी खुदा का इक्कार कर लेता है, कुरआन का मुतालबा यह है कि यही इक्कार और इताअत (आज्ञापालन) आदमी उस वक़्त करने लगे जबकि बजाहिर मजबूर करने वाली कोई चीज़ उसके सामने मौजूद न हो।

बाक़ी हैवानात अपनी ज़िबिल्लत (प्राकृतिक स्वभाव) के तहत हक्कीक़तपसंदाना जिंदगी गुज़ार रहे हैं। मगर इंसान को जो चीज़ हक्कीक़तपसंदी और एतराफ़ की सतह पर लाती है वह ख़ौफ़ की नपिसयात है। हैवानात की दुनिया में जो काम ज़िबिल्लत करती है, इंसान की दुनिया में वही काम तक्वा अंजाम देता है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَآخَذْنَا مِنْهُمُ بِالْبِاسِ ۖ وَأَلْهَيْنَاهُمُ الْأَعْيُنَ ۖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٠﴾
فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١﴾ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً ۖ فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ﴿١٢﴾ فَقَطَّعْنَا دَائِرَ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٣﴾

और तुमसे पहले बहुत सी कौमों की तरफ हमने रसूल भेजे। फिर हमने उन्हें पकड़ सख़्ती में और तकलीफ में ताकि वे गिड़गिड़ाएं। पस जब हमारी तरफ से उन पर सख़्ती आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाएं। बल्कि उनके दिल सख़्त हो गए। और शैतान उनके अमल को उनकी नजर में खुशनुमा करके दिखाता रहा। फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये। यहां तक की जब वे उस चीज़ पर खुश हो गए जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया। उस वक़्त वे नाउम्मीद होकर रह गए। पस उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने जुल्म किया था और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, तमाम जहानों का रब। (42-45)

आदमी के सामने एक हक़ आता है और वह उसे नहीं मानता तो अल्लाह उसे फौरन नहीं पकड़ता। बल्कि उसे माली नुक़सान और जिस्मानी तकलीफ की सूरत में कुछ झटके देता है ताकि उसकी सोचने की सलाहियत बेदार हो और वह अपने रवैये के बारे में नज़रसानी करे, जिंदगी के हादसे महज हादसे नहीं हैं, वे खुदा के भेजे हुए महसूस पैगामात हैं जो इसलिए आते हैं ताकि

ग़फलत में सोए हुए इंसान को जगाएं। मगर आदमी अक्सर इन चीज़ों से नसीहत नहीं लेता। वह यह कहकर अपने को मुतमइन कर लेता है कि ये तो उतार चढ़ाव के वाक़ेयात हैं और इस किस्म के उतार चढ़ाव जिंदगी में आते ही रहते हैं। इस तरह हर मौके पर शैतान कोई खुशनुमा तौजीह पेश करके आदमी के ज़ेहन को नसीहत की बजाए ग़फलत की तरफ फेर देता है। आदमी जब बार-बार ऐसा करता है तो हक़ व बातिल और सही व ग़लत के बारे में उसके दिल की हस्सासियत ख़त्म हो जाती है। वह कसावत (बेहिसी) का शिकार होकर रह जाता है।

जब आदमी खुदा की तरफ से आई हुई तंबीहात को नज़रअंदाज कर दे तो इसके बाद उसके बारे में खुदा का अंदाज बदल जाता है। अब उसके लिए खुदा का फैसला यह होता है कि उस पर आसानियों और कामयाबियों के दरवाज़े खोले जाएं। उस पर खुशहाली की बारिश की जाए। उसकी इम्त व मक़ूलियत में इज़म किया जाए। यह दहक्कीक़त एक सज़ा है जो इसलिए होती है ताकि उसका अंदरून और ज्यादा बाहर आ जाए। इसका मक़सद यह होता है कि आदमी मुतमइन होकर अपनी बेहिसी को और बढ़ ले, वह हक़ को नज़रअंदाज करने में और ज्यादा ढीठ हो जाए और इस तरह खुदा की सज़ा का इस्तह्क़ाक़ (पात्रता) उसके लिए पूरी तरह साबित हो जाए। जब यह मक़सद हासिल हो जाए तो उसके बाद अचानक उस पर खुदा का अज़ाब टूट पड़ता है। उसे दुनियावी जिंदगी से महरूम करके आख़िरत की अदालत में हाज़िर कर दिया जाता है ताकि उसकी सरक़शी की सज़ा में इसके लिए जहन्नम का फैसला हो।

यह दुनिया खुदा की दुनिया है। यहां हर किस्म की बड़ई और तारीफ़ का हक़ सिर्फ़ एक जात के लिए है। इसलिए जब कोई शख्स खुदा की तरफ से आए हुए हक़ को नज़रअंदाज कर देता है तो वह दरअसल खुदा की नाक़्द्री करता है। वह खुदा की अज्मतों की दुनिया में अपनी अज्मत क़ायम करना चाहता है। वह ऐसा जुल्म करता है जिससे बड़ कोई जुल्म नहीं। वह उस खुदा के सामने गुस्ताख़ी करता है जिसके सामने इज्ज (विनय) के सिवा कोई और रवैया किसी इंसान के लिए दुरुस्त नहीं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَابْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمْ بِهِ ۚ أَنْظَرُ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْذِقُونَ ﴿١٤﴾
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمُونَ ﴿١٥﴾ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ فَمَنْ أَمِنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُفِّرْهُمْ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يُفْسِقُونَ ﴿١٧﴾ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ۚ إِن تَبِعُوا إِلَّا مَا يَأْتِيوَنِي إِلَىٰ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۗ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿١٨﴾

कहो, यह बताओ कि अल्लाह अगर छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो उसे वापस लाए। देखो हम क्योंकर तरह-तरह से निशानियां बयान करते हैं फिर भी वे एराज (उपेक्षा) करते हैं। कहो, यह बताओ अगर अल्लाह का अजाब तुम्हारे ऊपर अचानक या एलानिया आ जाए तो जालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा। और रसूलों को हम सिर्फ खुशखबरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और अपनी इस्लाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उन्हें अजाब पकड़ लेगा इसलिए कि वे नाफरमानी करते थे। कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ। मैं तो बस उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आती है। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (46-50)

आदमी को कान और आंख और दिल जैसी सलाहियतें देना जाहिर करता है कि उसका ख़ालिक उससे क्या चाहता है। ख़ालिक यह चाहता है कि आदमी बात को सुने और देखे, वह अकली दलील से उसे मान ले। अगर आदमी अपनी इन खुदादाद (ईश प्रदत्त) सलाहियतों से वह काम न ले जो उससे मक्सूद है तो गोया वह अपने को इस ख़तरे में डाल रहा है कि उसे नाअहल करार देकर ये नेमतें उससे छीन ली जाएं। किस कद्र महरूम है वह शख्स जिसे अंधा और बहरा और बेअकल बना दिया जाए। क्योंकि ऐसा आदमी दुनिया में बिल्कुल जलील और बेकीमत होकर रह जाता है। फिर इससे भी बड़ी महरूमी यह है कि आदमी के पास बजाहिर कान हों मगर वे हक को सुनने के लिए बहरे हो जाएं। बजाहिर आंख हो मगर वह हक को देखने के लिए अंधी हो। सीने में दिल मौजूद हो मगर वह हक को समझने की इस्तेदाद (सामर्थ्य) से ख़ाली हो जाए। छीनने की यह क्रिम पहली क्रिम से कहीं ज्यादा संगीन है। क्योंकि वह आदमी को आखिरत के एतबार से जलील और बेकीमत बना देती है जिससे बड़ी महरूमी कोई दूसरी नहीं।

आदमी को हक के इंकार के अंजाम से डराया जाए तो ठीठ आदमी बेख़ौफी का जवाब देता है। दुनिया में अपने मामलात को दुरुस्त देख कर वह समझता है कि खुदा की पकड़ का अदिशा उसके अपने लिए नहीं है। यहां तक कि जो ज्यादा ठीठ हैं वे हक के दाओ से कहते हैं कि तुम अगर सच्चे हो तो अजाब को लाकर दिखाओ। वे नहीं समझते कि खुदा का अजाब आया तो वह खुद उन्हीं के ऊपर पड़ेगा न कि किसी दूसरे के ऊपर।

अल्लाह का दाओ आगाह करने वाला और खुशख़बरी देने वाला बनकर आता है। दूसरे शब्दों में, आदमी का इम्तेहान खुदा के यहां जिस बुनियाद पर हो रहा है वह यह है कि आदमी आगाही (विवेक) की जवान में हक को पहचाने और अपनी इस्लाह (सुधार) कर ले। अगर उसने आगाही की जवान में हक को न पहचाना और उसे मानने के लिए रहस्यमयी चीज़ों का मुतालबा किया तो गोया वह अंधेपन का सुबूत दे रहा है और अंधों के लिए खुदा की इस दुनिया में भटकने और बर्बाद होने के सिवा कोई अंजाम नहीं।

وَإِنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّنْ دُونِهِ
وَالِئِيْكَ لَا شَافِعِيْنَ لَهُمْ يَتَّقُونَ ۖ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوَةِ
وَالْعَصْوَىٰ يُزِيدُونَ وَجْهَهُ نَارًا عَلَيْهِمْ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ
حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم
بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِن بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ
بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝

और तुम इस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से डराओ उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएंगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें। और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी खुशनूदी चाहते हुए। उनके हिसाब में से किसी चीज का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज का बोझ उन पर नहीं कि तुम उन्हें अपने से दूर करके बेइसाफों में से हो जाओ। और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे से आजमाया है ताकि वे कहें कि क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे दर्मियान अल्लाह का फल हुआ है। क्या अल्लाह शुक़रुग़नो से खूब वाकिफ़ नहीं। (51-53)

नसीहत हमेशा उन लोगों के लिए कारगर होती है जो अंदेशे की नफिसयात में जीते हों। जिसे किसी चीज का खटका लगा हुआ हो उसी को उसके ख़तरे से आगाह किया जा सकता है। इसके बरअक्स जो लोग बेख़ौफी की नफिसयात में जी रहे हों वे कभी नसीहत के बारे में संजीदा नहीं होते, इसलिए वे नसीहत को कुबूल करने के लिए भी तैयार नहीं होते।

बेख़ौफी की नफिसयात पैदा होने का सबब आमतौर पर दो चीजें होती हैं। एक दुनियापरस्ती, दूसरे अकाबिरपरस्ती (व्यक्ति पूजा)। जो लोग दुनिया की चीजों में गुम हों या दुनिया की कोई कामयाबी पाकर उस पर मुतमइन हो गए हों, यहां तक कि उन्हें यह भी याद न रहता हो कि एक रोज उन्हें मर कर ख़ालिक व मालिक के सामने हाजिर होना है, ऐसे लोग आखिरत को कोई क़बिले लिहाज चीज नहीं समझते, इसलिए आखिरत की याददहानी उनके जेहन में अपनी जगह हासिल नहीं करती। उनका मिजाज ऐसी बातों को ग़ैर अहम समझ कर नज़अंदाज कर देता है।

दूसरी क्रिम के लोग वे हैं जो आखिरत के मामले को सिफारिश का मामला समझ लेते हैं। वे फर्ज कर लेते हैं कि जिन बड़ों के साथ उन्होंने अपने को वाबस्ता कर रखा है वे आखिरत में उनके मददगार और सिफारिशों बन जाएंगे और किसी भी नामुवाफ़िक़ (प्रतिकूल) सूतेहाल में उनकी तरफ से काफ़ी साबित होंगे। ऐसे लोग इस भरोसे पर जी रहे होते हैं कि उन्होंने मुक़द्दस

हस्तियों का दामन थाम रखा है, वे खुदा के महबूब व मकबूल गिरोह के साथ शामिल हैं इसलिए अब उनका कोई मामला बिगड़ने वाला नहीं है। यह नफिसयात उन्हें आखिरत के बारे में निडर बना देती है, वे किसी ऐसी बात पर संजीदगी के साथ गौर करने के लिए तैयार नहीं होते जो आखिरत में उनकी हैसियत को मुश्तबह (संदिग्ध) करने वाली हो।

जो लोग मस्तेहतों की रियायत करके दौलत व मकबूलियत हासिल किए हुए हों वे कभी हक की बेआमेज (विशुद्ध) दावत का साथ नहीं देते। क्योंकि हक का साथ देना उनके लिए यह मअना रखता है कि अपनी मस्तेहतों के बने बनाए ढांचे को तोड़ दिया जाए। फिर जब वे यह देखते हैं कि हक के गिर्द मामूली हैसियत के लोग जमा हैं तो यह सूरतेहाल उनके लिए और ज्यादा फितना बन जाती है। उन्हें महसूस होता है कि इसका साथ देकर वे अपनी हैसियत को गिरा लेंगे। वे हक को हक की कसौटी पर न देख कर अपनी कसौटी पर देखते हैं और जब हक उनकी अपनी कसौटी पर पूरा नहीं उतरता तो वे उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

وَإِذْ جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلِّمُوا عَلَيْنَا كَمَا كُنْتُمْ عَلَى
نَفْسِكُمُ الرَّحْمَةِ إِنَّكُمْ مِنْ عِندِ اللَّهِ بِئْسَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝
وَاصْلُوا فَانْظُرُوا غَوْرًا رَحِيمًا ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ
سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝

और जब तुम्हारे पास वे लोग आए जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। बेशक तुममें से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे फिर इसके बाद वह तौबा करे और इस्लाह (सुधार) कर ले तो वह बख्शने वाला महरबान है। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोल कर बयान करते हैं, और ताकि मुजरिमों का तरीका जाहिर हो जाए। (54-55)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में एक किस्म के लोग वे थे जो आपकी सदाकत पर मोजिजे (चमत्कार) तलब कर रहे। दूसरे लोग वे थे जो कुरआनी आयतों को सुनकर आपके मोमिन बन गए। यही इस्तेहान हर जमाने में इंसान के साथ जारी है। मौजूदा दुनिया में खुदा खुद सामने नहीं आता, वह दाओ (आह्वानकर्ता) की जवान से अपने दलाइल (तर्क) का एलान कराता है, वह अपनी सदाकत को लफ्जों के रूप में ढाल कर इंसान के सामने लाता है। अब जिसकी फितरत जिंदा है वह इन्हीं दलाइल में खुदा का जलवा देख लेता है और उसका इकरार करके उसके आगे झुक जाता है। इसके बरअक्स जिन्होंने अपनी फितरत पर मसनूई पर्दे ढाल रखे हैं वे 'अल्फाज' के रूप में खुदा को पाने में नाकाम रहते हैं। वे खुदा को उसकी इस्तदाली (तार्किक) सूरत में देख नहीं पाते इसलिए चाहते हैं कि खुदा अपनी मुशाहिदाती सूरत (प्रकट रूप) में उनके सामने आए। मगर मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। यहां वही शख्स खुदा को पाएगा जो खुदा को हालते गैब

(अप्रकट) में पा ले, जो शख्स खुदा को हालते शुहूद (साक्षात रूप) में देखने पर इसरार करे, उसका अंजाम खुदा की इस दुनिया में महरूमी के सिवा और कुछ नहीं।

जो लोग अपनी कजी की वजह से हक से दूर रहते हैं वे हक को कुबूल करने वालों पर तरह-तरह के इल्जाम लगाते हैं ताकि उनके मुकाबले में अपने को बेहतर साबित कर सकें। उन्हें अपने जराइम नजर नहीं आते, अलबत्ता हकपरस्तों से अगर कभी कोई गलती हो गई तो उसे खूब बढ़ाकर बयान करते हैं ताकि यह जाहिर हो कि जो लोग इस दावत के गिर्द जमा हैं वे काबिले एतबार लोग नहीं हैं। हालांकि अस्ल सूरतेहाल इसके बरअक्स है। जिन लोगों ने नाहक को छोड़कर हक को कुबूल किया है उन्होंने अपने इस अमल से ईमान व इस्लाह (सुधार) के रास्ते पर चलने का सुबूत दिया है। इस तरह वे खुदा के कानून के मुताबिक इसके मुस्तहिक हो गए कि उन्हें इस्लाह हाल की तौफीक मिले और वे खुदा की रहमतों में अपना हिस्सा पाएं। इसके बरअक्स जो लोग हक से दूर पड़े हुए हैं वे अपने अमल से साबित कर रहे हैं कि वे ईमान व इस्लाह का तरीका इख्तियार करने से कोई दिलचस्पी नहीं रखते। ऐसे लोग खुदा की तौफीक से महरूम (वंचित) रहते हैं। उनकी डिठाई कभी खत्म नहीं होती और डिठाई ही खुदा की इस दुनिया में किसी का सबसे बड़ा जुर्म है।

खुदा 'निशानियों' की जवान में बोलता है। निशानियां उस शख्स के लिए कारआमद होती हैं जो उन्हें पढ़ना चाहे। इसी तरह हिदायत उसी को मिलेगी जो उसका तालिब हो। जो शख्स हिदायत की तलब न रखता हो उसके लिए खुदा की इस दुनिया में भटकने के सिवा कोई दूसरा अंजाम नहीं।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا آتِيَهُمْ أَهْوَاءُكُمْ
قَدْ ضَلَكْتُ إِذْ أَوْ مَا أَنَا مِنَ الْهَاطِدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي
وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۝ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقْضِي الْحَقَّ
وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ ۝ قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ
بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ
وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا سُفِّطُ مِنْ ذَرْوَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٌ فِي
ظُلْمٍ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٌ وَلَا يَأْسُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी ख्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता। अगर मैं ऐसा करूं तो मैं बेराह हो जाऊंगा और मैं राह पाने वालों में से न रहूंगा। कहो मैं अपने रब की तरफ से एक रोशन दलील पर हूं और तुमने उसे झुटला दिया है। वह चीज मेरे पास

नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। फैसले का इस्तिहार सिर्फ अल्लाह को है। वही हक को बयान करता है और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। कहे, अगर वह चीज मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान मामले का फैसला हो चुका होता, और अल्लाह खूब जानता है जालिमों को। और उसी के पास ग़ैब (अप्रकट) की कुजियाँ हैं, उसके सिवा उसे कोई नहीं जानता। अल्लाह जानता है जो कुछ खुशकी और समुद्र में है। और दरख्त से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसे इल्म न हो और जमीन की तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई तर और खुशक चीज मगर सब एक खुली किताब में दर्ज है। (56-59)

खुदा के सिवा जिस चीज को आदमी माबूद (पूज्य) का दर्जा देता है वह उसकी एक ख्वाहिश होती है जिसे वह वाकया (सच) मान लेता है। कभी अपनी बेअमली के अंजाम से बचने के लिए वह किसी को खुदा का मुकर्रब यकीन कर लेता है जो खुदा के यहां उसका मददगार और सिफारशी बन जाए। कभी वह एक शख्सियत के हक में तिलिस्माती अज्मत का तसखुर कायम कर लेता है ताकि अपने को उससे मंसूब करके अपने छोटपन की तलाफ़ी कर सके। कभी अपनी सहल (आसान) पसंदी की वजह से वह ऐसा खुदा गढ़ लेता है जो सस्ती कीमत पर मिल जाए और मामूली-मामूली चीजों से जिसे खुश किया जा सके।

मगर इस क्रिम की तमाम चीजें मजहमफ़रूजत (कल्पनाएँ) हैं और मफ़रूजत क़िस्ती

को हकीकत तक नहीं पहुंचा सकते। ताहम आदमी अपनी सस्ती तलब में कभी इतना अंधा हो जाता है कि वह खुद उन लोगों को चैलेंज करने लगता है जिन्होंने कायनात के हकीकी मालिक की तरफ अपने को खड़ा कर रखा है। वह कहता है कि सारी बड़ाई अगर उसी एक खुदा के लिए है जिसके तुम नुमाइदे हो तो हम जैसे नाफरमानों पर उसका एताब नाजिल करके दिखाओ। यह जुरअत उन्हें इसलिए होती है कि वे देखते हैं कि तौहीद के दाअियों के मुक़ाबले में उनके अपने गिर्द ज्यादा दुनियावी रैनकें जमा हैं। वे भूल जाते हैं कि ये माद्दी चीजें उन्हें दुनियादारी और मस्लेहतपरस्ती की बिना पर मिली हैं और तौहीद के दाअी जो इन चीजों से ख़ाली हैं वे इसलिए ख़ाली हैं कि उनकी आखिरतपसंदी ने उन्हें मस्लेहतपरस्ती की सतह पर आने से रोके रखा।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। इसलिए यहां देखने की चीज यह नहीं है कि आदमी के माद्दी हालात क्या हैं। बल्कि यह कि वह हकीकी दलील पर खड़ा हुआ है या मफ़रूजात (कल्पनाओं) और खुशगुमानियों पर। बिलआखिर वही शख्स कामयाब होगा जो वाकई दलील पर खड़ा होगा। जो लोग मफ़रूजात पर खड़े हुए हैं उनका आखिरी अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं कि वे खुदा की इस दुनिया में बिल्कुल बेसहारा होकर रह जाएं। जिस दुनिया का सारा निजाम मोहकम (सुदृढ़) कानूनों पर चल रहा हो उसका आखिरी अंजाम खुशख़बालियों के ताबेअ क्योंकर हो जाएगा।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ يُرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ ۚ ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۖ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۝

और वही है जो रात में तुम्हें वफात देता है और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। फिर तुम्हें उठा देता है उसमें ताकि मुकर्रर मुददत पूरी हो जाए। फिर उसी की तरफ तुम्हारी वापसी है। फिर वह तुम्हें बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो। और वह ग़ालिब (वर्यस्वमान) है अपने बंदों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर निगरां (निरीक्षक) भेजता है। यहां तक कि जब तुममें से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फरिश्ते उसकी रूह कब्ज कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते। फिर सब अल्लाह, अपने मालिके हकीकी की तरफ वापस लाए जाएंगे। सुन लो, हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (60-62)

खुदा ने यह दुनिया इस तरह बनाई है कि वह उन हकीकतों की अमली तस्दीक बन गई है जिनकी तरफ इंसान को दावत दी जा रही है। अगर आदमी अपनी आंखों को बंद न करे और अपनी अक्ल पर मस्तुई (बनावटी) पर्दे न डाले तो पूरी कायनात उसे कुआन की फिक्री दावत (वैचारिक आह्वान) का अमली मुजाहिरा दिखाई देगी।

दरख्त के तने में शाख निकलती है और शाख में पत्ते। मगर दोनों के जोड़ों में फर्क होता है। गोया कि बनाने वाले को मालूम है कि शाख को अपने तने से जुड़ा रहना है और पत्ते को अलग होकर गिर जाना है। अगर शाख की जड़ के मुकाबले में पत्ते की जड़ में यह इफ़िदादी खुसूसियत न हो तो पत्ता शाख से जुदा न हो और दरख्त को हर साल नई जिंदगी देने का निजाम अबतर (बाधित) हो जाए। इसी तरह जब एक दाना जमीन में डाला जाता है तो जमीन में पहले से उसके लिए वह तमाम जरूरी ख़ुराक मौजूद होती है जिससे रिख़ पाकर वह बढ़ता है और बिलआखिर पूरा दरख्त बनता है। अब कैसे मुमकिन है कि जो खुदा पत्ता और दाना तक के अहवाल से बाख़बर हो वह इंसानों के अहवाल से बेख़बर हो जाए।

हमारी जमीन सारी कायनात में एक अनोखा वाकया है। यहां का निजाम विलक्षण रूप से इंसान जैसी एक मख़्लूक के अनूकूल बनाया गया है। जमीन के अंदर का एक बड़ा हिस्सा आग है मगर वह फट नहीं पड़ता। सूरज इतिहाई सही हिसाबी फासले पर है, वह उससे न दूर जाता है और न करीब होता। आदमी को हर वक़्त हवा और पानी की जरूरत है। चुनांचे हवा को गैस की शक़ल में हर जगह फैला दिया गया है और पानी को तरल रूप में जमीन ने नीचे रख

दिया गया है। इस किस्म के बेशुमार इतिजामात हैं जिन्हें जमीन पर मुसलसल बरक़ार रखा जाता है। अगर इन्हें मालूली फर्क आ जाए तो इंसान के लिए जमीन पर जिहगी गुजरना नामुमकिन हो जाए।

नींद बड़ी अजीब चीज है। आदमी चलता फिरता है। वह देखता और बोलता है। मगर जब वह सोता है तो उसके तमाम हवास इस तरह मुअत्तल हो जाते हैं जैसे जिंदगी उससे निकल गई हो। इसके बाद जब वह नींद पूरी करके उठता है तो वह फिर वैसा ही इंसान होता है जैसा कि वह पहले था। यह गोया जिंदगी और मौत की तमसील है। यह मामला हमारे लिए इस बात को काबिले फहम बना देता है कि आदमी किस तरह मरेगा और किस तरह वह दुबारा जिंदा होकर खड़ा हो जाएगा। ये वाक़ेआत साबित करते हैं कि सारे इंसान खुदा के इख़्तियार में हैं और जल्द वह वक़्त आने वाला है जबकि खुदा अपने इख़्तियार के मुताबिक़ उनका फैसला करे।

قُلْ مَنْ يُنْجِيكُمْ مِنْ ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّيْنٍ
الْجُنَّاتِ مِنْ هَذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ يُنْجِيكُمْ مِنْهَا وَمَنْ لِكُلِّ
كَرْبٍ ثُمَّ أَنْتُمْ تَشْكُرُونَ ۝ قُلْ هُوَ الْغَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ
فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَكْسِلُكُمْ سُيُوعًا وَيُزَيِّقُ بَعْضَكُمْ بَأْسَ
بَعْضٍ أُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۝ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ
وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ لِكُلِّ نَبَأٍ مُّسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

कहो, कौन तुम्हें नजात देता है खुशकी और समुद्र की तारीकियों से, तुम उसे पुकारते हो आजिजी से और चुपके-चुपके कि अगर खुदा ने हमें नजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुजार बंदों में से बन जाएंगे। कहो, खुदा ही तुम्हें नजात देता है उससे और हर तकलीफ से, फिर भी तुम शिर्क (साझीदार ठहराना) करने लगते हो। कहो, खुदा कादिर है इस पर कि तुम पर कोई अजाब भेज दे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुम्हें गिरोह-गिरोह करके एक को दूसरे की ताकत का मजा चखा दे। देखो, हम किस तरह दलाइल (तर्क) मुख़्तलिफ पहलुओं से बयान करते हैं ताकि वे समझें। और तुम्हारी कौम ने उसे झुठला दिया है हालांकि वह हक़ है। कहो, मैं तुम्हारे ऊपर दारोगा नहीं हूँ। हर ख़बर के लिए एक वक़्त मुकर्रर है और तुम जल्द ही जान लोगे। (63-67)

इंसान को इस दुनिया में जितनी मुसीबतें पेश आती हैं उतनी किसी भी दूसरे जानदार को पेश नहीं आती। ऐसा इसलिए होता है ताकि आदमी पर ऐसे हालात तारी किए जाएं जबकि उसके अंदर से तमाम मसूई (कृत्रिम) ख्यालात ख़त्म हो जाएं और आदमी अपनी

असली फितरत को देख सके। चुनांचे जब भी आदमी पर कोई कड़ी मुसीबत पड़ती है तो वह एकसू होकर खुदा को पुकारने लगता है। उस वक़्त उसके जेहन से तमाम बनावटी पर्दे हट जाते हैं। वह जान लेता है कि इस दुनिया में इंसान तमामतर आजिज (निर्बल) है और सारी कुदरत सिर्फ़ खुदा को हासिल है। मगर जैसे ही मुसीबत के हालात ख़त्म होते हैं वह बदस्तूर ग़फलत का शिकार होकर वैसा ही बन जाता है जैसा कि वह पहले था।

शिरक़ की असली हकीक़त अल्लाह के सिवा किसी दूसरी चीज पर एतमाद करना है और तौहीद यह है कि आदमी का सारा एतमाद अल्लाह पर हो जाए। शिरक़ की एक सूत्र यह है जो बुतों और दूसरे पूज्यों की पूजा के रूप में पेश आती है। मगर शुक्र के बजाए नाशुकी का रवैया इख़्तियार करना भी शिरक़ है। शिरक़ की ज्यादा आम सूत्र यह है कि आदमी खुद अपने को बुत बना ले, वह अपने आप पर एतमाद करने लगे। आदमी जब अकड़ कर चलता है तो गोया वह अपने जिस्म व जान पर एतमाद कर रहा है। आदमी जब अपनी कमाई को अपनी कमाई समझता है तो गोया वह अपनी काबलियत पर भरोसा कर रहा है। आदमी जब एक हक़ को नजरअंदाज करता है तो गोया वह समझता है कि मैं जो भी करूँ, कोई मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। आदमी जब किसी के ऊपर जुल्म करने में जरी होता है तो उस वक़्त उसकी नफ़िसयात यह होती है कि मैं इसके ऊपर इख़्तियार रखता हूँ, उसके हक़ में अपनी मनमानी करने से मुझे कोई रोकने वाला नहीं। यह सारी सूत्रें घमंड की सूत्रें हैं और घमंड खुदा के नजदीक सबसे बड़ा शिरक़ है। क्योंकि यह अपने आपको खुदा के मक़ाम पर रखना है।

आदमी अगर अपने हाल पर सोचे तो वह घमंड न करे। वह ऐसी हवाओं से घिरा हुआ है जो किसी भी वक़्त तूफ़ान की सूत्र इख़्तियार करके उसकी जिंदगी को तहस नहस कर सकती हैं, वह ऐसी जमीन पर खड़ा हुआ है जो किसी भी लम्हे जलजले की सूत्र में फट सकती है। वह जिस समाज में रहता है उसमें हर वक़्त इतनी अदावतें मौजूद रहती हैं कि एक चिंगारी पूरे समाज को ख़ाक व खून के हवाले करने के लिए काफी है।

وَلَا ذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَكِنْ ذِكْرُ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَذُرْ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ أَعْبَاءً وَهُمْ لَهَا غُرَاهُ ۚ وَالْحَيَاةُ الدُّنْيَا
وَذِكْرُهَا أَنْ تَبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۚ
وَأَنْ تَعْدِلَ كُلُّ أَعْدَلٍ ۚ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝
شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ यहां तक कि वे किसी और बात में लग जाएं। और अगर कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ऐसे बेइसाफ लोगों के पास न बैठो। और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज की जिम्मेदारी नहीं। अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें। उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में डाल रखा है। और कुरआन के जरिए नसीहत करते रहो ताकि कोई शख्स अपने किए में गिरफ्तार न हो जाए, इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सफारिशी उसके लिए न हो। अगर वह दुनिया भर का मुआवजा दे तब भी कुबूल न किया जाए। यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ्तार हो गए। उनके लिए खोलता पानी पीने के लिए होगा और दर्दनाक सजा होगी इसलिए कि वे कुफ्र करते थे। (68-70)

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने फरमाया कि अल्लाह ने हर उम्मत के लिए एक ईद का दिन मुकर्रर किया ताकि उस दिन वे अल्लाह की बड़ाई करें और उसकी इबादत करें और अल्लाह की याद से उसे मामूर करें। मगर बाद के लोगों ने अपनी ईद (मजहबी तय्यार) को खेल तमाशा बना लिया। (तफसीर कबीर)

हर दीनी अमल का एक मक्सद होता है और एक इसका जाहिरी पहलू होता है। ईद का मक्सद अल्लाह की बड़ाई और उसकी याद का इज्तिमाई मुजाहिदा है। मगर ईद की अदायगी के कुछ जाहिरी पहलू भी हैं। मसलन कपड़ा पहनना या इज्तिमाअ का सामान करना वगैरह। अब ईद को खेल तमाशा बनाना यह है कि उसके अस्त मक्सद पर तवज्जोह न दी जाए अलबत्ता उसके जाहिरी और माददी पहलुओं की खूब धूम मचाई जाए। मसलन कपड़ों और सामानों की नुमाइश, खरीद व फरोख्त के हंगामे, तफरीहात का एहतिमाम, अपनी हैसियत और शान व शौकत के मुजाहिदे वगैरह।

उम्मतों के बिगाड़ के जमाने में यही मामला तमाम दीनी आमाल के साथ पेश आता है। लोग दीनी अमल की अस्ल हकीकत को अलग करके उसके जाहिरी पहलू को ले लेते हैं। अब जो लोग इस नौबत को पहुंच जाएं कि वे दीन के मक्सदी पहलू को भुला कर उसे अपने दुनियावी तमाशों का उन्वान (विषय) बना लें वे अपने इस अमल से साबित कर रहे हैं कि वे दीन के मामले में संजीदा नहीं हैं और जो लोग किसी मामले में संजीदा न हों उन्हें उस मामले की कोई ऐसी बात समझाई नहीं जा सकती जो उनके मिजाज के खिलाफ हो। मजीद यह कि माददी (भौतिक) चीजों का मालिक होना उन्हें इस गलतफहमी में मुब्तिला कर देता है कि सच्चाई के मालिक भी वही हैं। वे देखते हैं कि यहां उनकी जरूरतें बफरागत पूरी हो रही हैं। हर जगह वे रैनके महफिल बने हुए हैं। उनकी जिंदगी में कहीं कोई कमी नहीं। इसलिए वे समझ लेते हैं कि आखिरत में भी वही कामयाब रहेंगे। ऐसे लोग ऐन अपनी नफिसयात (मानसिकता) की बिना पर आखिरत की बातों के बारे में संजीदा नहीं होते। मगर वे जान लें कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह यूं ही खत्म हो जाने वाला नहीं। उनका अमल उन्हें घेरे में ले रहा है। अनकरीब वे अपनी सरकशी में फंसकर रह जाएंगे और किसी हाल में उससे छुटकारा न पा सकेंगे।

قُلْ اَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَاوَلَا يَضُرُّنَاوَنُرِدُّ عَلَىٰٓ اَعْقَابِنَاۚ بَعْدَ اِذْ هَدٰنَا اللَّهُ ۚ كَالَّذِي سَمَوْهُ الشَّيْطٰنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرٰنًا ۚ لَهٗ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَكَ اِلَى الْهُدٰى اَتَيْنَا قُلْ اِنَّ هٰدِيَ اللَّهُ هُوَ الْهُدٰى وَاٰمُرُنَا لِلْاِسْلٰمِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ وَاَنْ اَقِمُّو الصَّلٰوةَ وَآتُوْهُ وَهُوَ الَّذِى الْبَيْهٖ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِى خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝ قَوْلُ الْحَقِّ وَاِنَّ الْمَلٰٓئِكَةَ يُنْفِخُوْنَ فِي الصُّوْرِ عَلٰمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ ۝ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْحَمِيْدُ ۝

कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें जो न हमें नफा दे सकते और न हमें नुकसान पहुंचा सकते। और क्या हम उल्टे पांव फिर जाएं, बाद इसके कि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख्स की मानिंद जिसे शैतानों ने बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसे सीधे रास्ते की तरफ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ। कहो कि रहनुमाई तो सिर्फ अल्लाह की रहनुमाई है और हमें हुक्म मिला है कि हम अपने आपको संसार के रब के हवाले कर दें। और यह कि नमाज कायम करो और अल्लाह से डरो वही है जिसकी तरफ तुम समेटे जाओगे। और वही है जिसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगा। उसकी बात हक है और उसी की हुक्मत होगी उस रोज जब सूर फूटका जाएगा। वह ग़ायब और जाहिर का आलिम और हकीम (तत्त्वदर्शी) व ख़बीर (सर्वज्ञाता) है। (71-74)

जो लोग खुदा के सिवा दूसरे सहारों पर अपनी जिंदगी कायम करें उनकी मिसाल उस मुसाफिर की सी होती है जो बेनिशान सहारा में भटक रहा हो। सहारा में भटकने वाला मुसाफिर फौरन जान लेता है कि उसने अपना रास्ता खो दिया है। रास्ता दिखाई देते ही वह फौरन उसकी तरफ दौड़ पड़ता है। मगर जो लोग खुदा के बजाए दूसरे सहारों पर जीते हैं उन्हें अपने बेराह होने की खबर नहीं होती। उनके आस पास पुकारने वाले पुकारते हैं कि अस्ल रास्ता यह है, इधर आ जाओ मगर वे इस क्रिम की आवाजों पर ध्यान नहीं देते। इस फर्क की वजह यह है कि पहले मामले में आदमी की अकल खुली हुई होती है, सही रास्ते को देखने में उसके लिए कोई रुकावट नहीं होती। जबकि दूसरी सूरत में आदमी की अकल शैतान के जेरेअसर आ जाती है। उसकी सोच अपने फितरी ढंग पर काम नहीं करती। इसका नतीजा यह होता है कि वह सुनकर भी नहीं सुनता और देखकर भी नहीं देखता।

खुदा के सिवा दूसरी चीजों का तालिब (इच्छुक) बनना ऐसी चीजों का तालिब बनना है

जो इस दुनिया में फायदा व नुकसान की ताकत नहीं रखती। जमीन व आसमान अपने पूरे निजाम के साथ इंकार कर रहे हैं कि यहां एक हस्ती के सिवा किसी और हस्ती को कोई ताकत हासिल हो। इसी तरह जिन दुनियावी रैनकों को आदमी अपना मक्सूद बनाता है और उन्हें पाने की कोशिश में सच्चाई व ईसाफ के तमाम तकाजों को रैंद डालता है, वह भी सरासर बातिल है। क्योंकि इंसानी जिंदगी अगर इसी जालिमाना हालत पर तमाम हो जाए तो यह दुनिया बिल्कुल बेमअना करार पाती है। इसका मतलब यह है कि यह दुनिया खुदगर्ज और अनानियतपसंद (अहंकारी) लोगों की तमाशागाह है। हालांकि कायनात का निजाम जिस वाकमाल खुदा की तजल्लियां (आलोक) दिखा रहा है उससे इतिहाई बईद (पर) है कि वह इस तरह की कोई बेमक्सद तमाशागाह खड़ी करे।

दुनिया की मौजूदा सूरतेहाल बिल्कुल आरजी है। खुदा किसी भी दिन अपना नया हुक्म जारी करके इस निजाम को तोड़ देगा। इसके बाद इंसान की मौजूदा आजादी खत्म हो जाएगी और खुदा का इक्तेदार इंसानों पर भी उसी तरह कायम हो जाएगा जिस तरह आज वह बाकी कायनात पर कायम है। उस वक्त कामयाब वे होंगे जिन्होंने इस्तेहान के जमाने में अपने को खुदा के हवाले किया था, जो किसी दबाव के बगैर अल्लाह से डरने वाले और उसके आगे हमहतन झुक जाने वाले थे।

وَلِذَٰلِكَ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ إِسْمَاعِيلَ إِنِّي أَخَافُ الْكَافِرِينَ ۖ وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونُ مِنَ الْمُوقِنِينَ ۝
فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى الْكُوكُبَاتِ قَالَ هَٰذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِذْلِينَ ۝
فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَٰذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْنَ لَمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۝ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسُ بَازِعَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّي هَٰذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ
قَالَ يَقُومِرَانِي بُرَىٰ ۖ وَمِمَّا تَشْرِكُونَ ۝ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

और जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर से कहा कि क्या तुम वुर्तों को खुदा मानते हो। मैं तुम्हें और तुम्हारी कौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं। और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और जमीन की हुकूमत, और ताकि उसे यकीन आ जाए। फिर जब रात ने उस पर अंधेरा कर लिया उसने एक तारे को देखा। कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा मैं डूब जाने वालों को दोस्त नहीं रखता। फिर जब उसने चांद को चमकते हुए देखा तो कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा अगर मेरा रब मुझे हिदायत न करे तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊं। फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह डूब गया तो उसने

अपनी कौम से कहा कि ऐ लोगो, मैं उस शिर्क (साझीदार ठहराना) से बरी हूं जो तुम करते हो। मैंने अपना रूख़ एकसू होकर उसकी तरफ कर लिया जिसने आसमानों और जमीन को पैदा कर लिया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। (75-80)

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कहानी जो जहां बयान हुई है वह हक की तलाश की कहानी नहीं है बल्कि हक के मुशाहिदे (अवलोकन) की कहानी है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम चार हजार साल पहले इराक में ऐसे माहौल में पैदा हुए जहां सूरज, चांद और तारों की परस्तिश होती थी। ताहम फितरत की रहनुमाई और अल्लाह की खुसूसी मदद ने आपको शिर्क से महफूज रखा। आप की बेदार निगाहें कायनात के फैले हुए शवाहिद (साक्षातरूप) में तौहीद (एक खुदा) के खुले हुए दलाइल देखतीं। कायनात के आइने में हर तरफ आपको एक खुदा का चेहरा नजर आता था। आप कौम की हालत पर अपसोस करते और लोगों को बताते कि खुले हुए हक्काइक के बावजूद क्यों तुम लोग अंधे बने हुए हो।

रात का वक्त है। इब्राहीम आसमान में खुदाए वाहिद की निशानियां देख रहे हैं। उसी आलम में सय्यारा जोहरा (शुक्र ग्रह) चमकता हुआ उनके सामने आता है जिसे उनकी कौम माबूद समझ कर पूजती थी। उनके दिल में बतौर सवाल नहीं बल्कि बतौर इस्तेजाब (आश्चर्य) यह ख्याल आता है कि क्या यही वह चीज है जो मेरा रब हो, यही वह माबूद (पूज्य) है जिसकी हमें परस्तिश करनी चाहिए। यहां तक कि जब वह उसे अपने सामने डूबता हुआ देखते हैं तो उसका डूबना उनके लिए अपने अकीदे के सही होने की एक मुशाहिदाती (अवलोकनीय) दलील बन जाती है। वह कह उठते हैं कि जो चीज एक लम्हे के लिए चमके और फिर गायब हो जाए वह कैसे इस काबिल हो सकती है कि उसे पूजा जाए। बिल्कुल यही तजर्बा उन्हें चांद और सूरज के साथ भी गुजरता है। हर एक चमक कर थोड़ी देर के लिए इस्तेजाब (आश्चर्य) पैदा करता है और फिर डूब जाता है। यह फत्कियाती मुशाहिदात (आकाशीय अवलोकन) जो उनके अपने लिए तौहीद की खुली हुई तस्दीक थे। इसी को वह कौम के सामने अपनी तब्लीग में बतौर इस्तदलाल (तर्क) पेश करते हैं और अंदाजे कलाम वह इख्तियार करते हैं जिसे इस्तलाह (शब्दावली) में हुज्जते इल्जामी कहा जाता है। यानी मुखातिब के अल्फज को देहराकर फिर उसे कायल करना। हुज्जते इल्जामी का यह तरीका कुरआन में दूसरे मकामात पर भी मजकूर हुआ है। मसलन 'और तू अपने माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बड़ा एकाग्र रहता है।' (ता० हा० 97)

कायनात में खुदा की जो तख्लीकी निशानियां फैली हुई हैं वे किसी बंदे के लिए ईमान के इज़ाफे का जरिया भी हैं और इन्हीं से दावते हक के लिए मजबूत दलाइल भी हासिल होते हैं।

وَحَاجَّةَ قَوْمِهِ ۖ قَالَ أَتُخَاجُّونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ ۖ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ ۚ
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝ وَكَيْفَ أَخَافُ
مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تُخَافُونَ أَنَا ۚ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنْزَلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ
فَأَمَّا الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا

और हमने इब्राहीम को इस्हाक और याकूब अता किए, हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी इससे पहले। और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को भी। और हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं। और जकरिया और यहया और ईसा और इलियास को भी, इनमें से हर एक सालेह (नेक) था। और इस्माईल और अलतयसअ और यूनुस और लूत को भी और इम्रों से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) अता की। और उनके बाप दादों और उनकी औलाद और उनके भाइयों में से भी, और उन्हें हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ उनकी रहनुमाई की। यह अल्लाह की हिदायत है, वह इससे सरफराज करता है अपने बंदों में से जिसे चाहता है। और अगर वे शिर्क करते तो जाया हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था। ये लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हिकमत और नुबुव्वत अता की। पस अगर ये मक्का वाले इसका इंकार कर दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग मुकर्र कर दिए हैं जो इसके मुंकिर नहीं हैं। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख्शी, पस तुम भी उनके तरीके पर चलो। कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई मुआवजा नहीं मांगता। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। (85-91)

‘फजिलत’ किसी का नस्ली या क़ैमी लक़ब नहीं, यह अल्लाह का एक अतिया (देन) है जिसका तहक्क़ूक़ (अधिकार) सिर्फ़ उन अफ़्फ़ाद के लिए होता है जो खुदा की ह्दयत के मुताबिक अपने को सालेह बनाएं, शिर्क की तमाम किस्मों से अपने आपको बचाएं। और ‘बिला मुआवज़ा नसीहत’ के दावती मंसूबे में अपने को हमहतन शामिल करें। ये वे लोग हैं जो खुदा की किताब को अपने हकीकी रहनुमा बनाते हैं। वे इसके साथ अपने वजूद को इतना ज्यादा शामिल कर देते हैं कि उन पर इस राह के वे भेद खुलने लगते हैं जिन्हें हिक्मत कहा जाता है। यही वे लोग हैं जिन्हें खुदा चुन लेता है और उनमें से जिन्हें चाहता है अपने दीन की पैगामरसानी की तौफ़ीक़ देता है, दौरे नुबुव्वत में अल्लाह के खुसूसी पैग़म्बर की हैसियत से और ख़त्मे नुबुव्वत के बाद अल्लाह के आम दाआ की हैसियत से। अल्लाह का इनाम चाहे वह पैग़म्बरों के लिए हो या आम इंसानों के लिए, तमामतर नेक अमली की बुनियाद पर मिलता है न कि किसी और बुनियाद पर।

दावते हक़ का काम सिर्फ़ वे लोग करते हैं जो उसकी ख़ातिर इतना ज्यादा यक़सू और बेनपस हो चुके हों कि वे मदऊ (संबोधित व्यक्ति) से किसी किस्म की माददी उम्मीद न रखें। जिस शख़्स या गिरोह तक आप आख़िरत का पैग़ाम पहुंचा रहे हों उसी से आप अपने दुनियावी हुक्क़ के लिए एहतेजाज (प्रेटेस्ट) और मुतालबात की मुहिम नहीं चला सकते। दाआ को ऐसा करना सिर्फ़ इस कीमत पर होगा कि उसकी दावत मदऊ की नज़र में हास्यास्पद बन कर रह जाए और माहौल के अंदर कभी उसे संजीदा मुहिम की हैसियत हासिल न हो।

मक्का में कुछ लोग आप पर ईमान लाए। मगर बहैसियत ‘कौम’ मक्का वालों ने आपका इंकार कर दिया। इसके बाद अल्लाह तआला ने मदीने वालों के दिल आपकी दावत के पक्ष में नर्म कर दिए और वे बहैसियत कौम आपके मोमिन बन गए। यहां तक कि आपके लिए यह मुमकिन हो गया कि आप मक्का से मदीना जाकर वहां इस्लाम का मर्कज़ कायम कर सकें। अल्लाह तआला की यह मदद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कामिल दर्जे में हासिल हुई। ताहम आपकी उम्मत में उठने वाले दाआियों को भी अल्लाह यह मदद दे सकता है और अपनी मस्लेहत के मुताबिक देता रहा है।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ يُبَدُّوْنَهَا وَتُخْفَوْنَ كَثِيرًا وَعَلَّمْتُمْ الْقَامِرَ تَعْلَمُونَ أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ۖ وَهَذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبْرَكًا مُّصَدِّقًا لِّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝

और उन्होंने अल्लाह का बहुत ग़लत अंदाज़ा लगाया जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज़ नहीं उतारी। कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे, वह रोशनी थी और रहनुमाई थी लोगों के वास्ते, जिसे तुमने वरक़-वरक़ कर रखा है। कुछ को जाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा जाते हो। और तुम्हें वे बातें सिखाईं जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप दादा। कहो कि अल्लाह ने उतारी। फिर उन्हें छोड़ दो कि अपनी कजबहसियों (कुसंवाद) में खेलते रहें। और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली है, तस्दीक करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं। और ताकि तू डराए मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को। और जो आख़िरत पर यकीन रखते हैं वही उस पर ईमान लाएंगे। और वे अपनी नमाज़ की हिम्मत करने वाले हैं। (92-93)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत मक्का वालों के सामने आई तो उनके कुछ लोगों ने कुछ यहूद से पूछा कि तुम्हारा इस बारे में क्या ख़याल है। क्या मुहम्मद पर वाकई खुदा का कलाम नाज़िल हुआ है। यहूद ने जवाब दिया ‘खुदा ने किसी बशर पर कुछ नाज़िल नहीं किया है।’ बजाहिर यह बात बड़ी अजीब है। क्योंकि यहूद तो खुद नबियों को मानने वाले थे। और इस तरह गोया वे इक्कार कर रहे थे कि बशर पर खुदा का कलाम उतरता है। मगर जब आदमी मुख़ालिफ़त में अंधा हो जाए तो वह मुख़ालिफ़ की तरदीद (रद्द) के जोश में कभी यहां तक पहुंच जाता है कि अपनी मानी हुई बातों की तरदीद करने लगे।

यहूद के अंदर यह ढिठाई इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने खुदा की किताब को वरक़-वरक़ कर दिया था। वे खुदा की तालीमात के कुछ किस्से को सामने लाते और बाकी को किताब में बंद रखते। मसलन वे इनाम वाली आयतों को ख़ूब सुनते सुनाते और उन आयतों को छोड़ देते जिनमें वे आमाल बताए गए हैं जिनके करने से किसी को मज्ज़ा इनाम मिलता है। वे ऐसी आयतों का खुसूसी तज्किरा करते जिनसे उनकी शोर व गुल की सियासत की ताईद निकलती हो और उन आयतों को नज़रअंदाज़ कर देते जिनमें ख़ामोश इस्लाह के अहक़ाम दिए गए हों। वे ऐसी आयतों के दर्स में बड़ा एहतिमाम करते जिनमें उनके लिए लम्बे-लम्बे (कुतर्की) का कमाल दिखाने का मौका हो मगर उन आयतों से सरसरी गुजर जाते जिनमें दीन के अबदी हक़ाइक़ बयान किए गए हैं। वे ऐसी आयतों का ख़ूब चर्चा करते जिनसे अपनी फ़जिलत निकलती हो और उन आयतों से बेतवज्ज़ोही बरतते हैं जिनसे उनकी जिम्मेदारियां मालूम होती हैं। जो लोग खुदा की किताब को इस तरह ‘वरक़-वरक़’ करें उनके अंदर फ़ितरी तौर पर ढिठाई आ जाती है। वे तैर संजीदा बहस करते हैं, परस्पर विरोधी बयानात देते हैं। उनसे किसी हकीकी तआवुन की उम्मीद नहीं

की जा सकती। जो लोग खुदा की किताब के साथ इंसाफ न करें वे इंसानों के साथ मामला करने में कैसे इंसाफ कर सकते हैं।

दीन की दावत अस्लन लोगों को होशियार करने की दावत है। इस किसम की दावत चाहे कितने ही कामिल इंसान की तरफ से पेश की जाए वह सुनने वाले के दिल में उस वक्त जगह करेगी जबकि वह अपने सीने में एक अंदेशानाक दिल रखता हो और आखिरत के मामले को एक संजीदा मामला समझता हो। सुनने वाले में अगर यह इब्तदाई माददा मौजूद न हो तो सुनाने वाला उसे कोई फायदा नहीं पहुंचा सकता।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ
وَمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ
وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا
كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ٩٤ وَلَقَدْ
جِئْتُمُونَا فِرَادَىٰ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ ۖ وَمَا
نَرَىٰ مَعَكُمْ شُفَعَاءَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ ۚ لَقَدْ تَقَطَّعَ بَيْنَكُمْ
وَصَلَّ عَنْكُمْ فَاكُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ٩٥

और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बांधे या कहे कि मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है हालांकि उस पर कोई 'वही' नाजिल नहीं की गई हो। और कहे कि जैसा कलाम खुदा ने उतारा है मैं भी उतारूंगा। और काश तुम उस वक्त देखो जबकि ये जालिम मौत की सज़ियों में होंगे और फरिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें जिल्लत का अजाब दिया जाएगा इस सबब से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे। और तुम अल्लाह की निशानियों से तकबुर (घमंड) करते थे। और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए जैसा कि हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया था। और जो कुछ असबाब हमने तुम्हें दिया था सब तुम पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ उन सिफारिश वालों को भी नहीं देखते जिनके मुत्तअल्लिक तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है। तुम्हारा रिश्ता टूट गया और तुमसे जाते रहे वे दावे जो तुम करते थे। (94-95)

अल्लाह जब अपने किसी बंदे को अपनी पुकार बुलन्द करने के लिए खड़ा करता है तो इसी के साथ उसे खुसूसी तौफ़ीक भी अता करता है। उसके किरदार में आखिरत के ख़ौफ की झलक होती है। उसकी बातों में खुदाई इस्तदलाल (तर्कों) की ताकत नजर आती है।

बेपनाह मुखालिफतों के बावजूद वह अपने पैगामरसानी के अमल को आलातरीन शक्ल में जारी रखने में कामयाब होता है। वह अपने पूरे वजूद के साथ खुदा की जमीन पर खुदा की निशानी होता है। मगर जिनकी निगाहें दुनियावी अज्मत की चीजों में गुम हों वे आखिरत के दाबी की अज्मत को समझ नहीं पाते। यहां तक कि उनके माददी पैमाने में उनकी अपनी जात बरतर और अल्लाह के दाबी की जात कमतर दिखाई देती है। यह चीज उन्हें तकबुर (घमंड) में मुब्तिला कर देती है और जो लोग तकबुर की नफिसयात में मुब्तिला हो जाएं उनसे कोई भी नामाकूल रवैया दूर नहीं रहता। यहां तक कि वह इस ग़लतफहमी में मुब्तिला हो सकते हैं कि वे भी वैसा ही कलाम तख़्कीक कर सकते हैं जैसा कलाम खुदा की तरफ से किसी बंदे पर उतरता है। वे खुदा को तिलिस्माती निशानियों में देखना चाहते हैं इसलिए वे बशरी निशानियों में जाहिर होने वाले खुदा को पहचान नहीं पाते।

यह तकबुर जो किसी आदमी के अंदर पैदा होता है वह उस दुनियावी हैसियत और माददी सामान की बुनियाद पर होता है जो उसे दुनिया में मिला हुआ है। वह भूल जाता है कि दुनिया में जो कुछ उसे हासिल है वह महज आजमाइश के लिए और निर्धारित मुद्दत के लिए है। मौत का वक्त आते ही अचानक ये तमाम चीजें छिन जाएंगी। इसके बाद आदमी उसी तरह महज एक तंहा वजूद होगा जिस तरह वह इब्तदाई पैदाइश के वक्त एक तंहा वजूद था। मौत के फौरन बाद हर आदमी अपनी जिंदगी के इस मरहले में पहुंच जाता है जहां न उसकी दौलत होगी और न उसकी हैसियत, जहां न उसके साथी होंगे और न उसके सिफारिशी। वह होगा और उसका खुदा होगा। दुनिया में उसे जिन चीजों पर नाज था उनमें से कोई चीज भी उस दिन उसे खुदा की पकड़ से बचाने के लिए मौजूद न होगी।

दुनिया में हर आदमी अल्फाज के तिलिस्म में जीता है। हर आदमी अपने हस्वेहाल ऐसे अल्फाज तलाश कर लेता है जिसमें उसका वजूद बिल्कुल बरहक दिखाई दे, उसका रास्ता सीधा मंजिल की तरफ जाता हुआ नजर आए। मगर आखिरत का इंकलाब जब हकीकतों के पर्दे फाड़ देगा तो लोगों के ये अल्फाज इस कदर बेमअना हो जाएंगे जैसा कि उनका कोई वजूद ही न था।

إِنَّ اللَّهَ فَلَقَ الْحَبَّ وَالنَّوَىٰ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
ذِكْرُ اللَّهِ فَإِنَّهُ يُؤْفَكُونَ ٩٦ فَالِقَ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ حُسْبَانًا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ٩٧ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ
لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٩٨

बेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है। वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से निकालने वाला है। वही तुम्हारा अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। वही बरामद करने वाला है सुबह का और

उसने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चांद को हिसाब से रखा है। यह ठहराया हुआ है बड़े ग़लबे (वर्चस्व) वाले का, बड़े इल्म वाले का। और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके जरिए से खुशकी और तरी के अंधेरों में राह पाओ। बेशक हमने दलाइल (तर्क) खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (96-98)

इंसान को जब एक मोटरकार या और कोई चीज बनाना होता है तो वह उसके हर जुज को अलग-अलग बनाता है। और फिर उसके अज्जा को जोड़ कर मल्लूबा चीज तैयार करता है, मगर जब खुदा एक दरख्त उगाता है या एक इंसान पैदा करता है तो उसकी नौइयत बिल्कुल दूसरी होती है। वह किसी चीज को उसके पूरे मज्मूअे के साथ एक वक्त में बरामद कर देता है। खुदाई कारखाने में पूरा का पूरा दरख्त या पूरा का पूरा इंसान एक ही बीज या एक ही बूंद से क्रमशः निकल कर खड़ा हो जाता है। यह इतिहाई अनोखी तकनीक है जिस पर किसी भी इंसान को काबू नहीं। इससे साबित होता है कि यहां इंसान से बढ़कर एक हस्ती मौजूद है जिसका मंसूबा तमाम मंसूबों से बुलन्द है।

सूरज की जसामत जमीन से बारह लाख गुनाह ज्यादा है। और जमीन चांद से चौगुना ज्यादा बड़ी है। ये सब अज्राम (रचनाएं) मुसलसल हरकत में हैं। चांद जमीन से तकरीबन ढाई लाख मील दूर रह कर जमीन के गिर्द चक्कर लगा रहा है और जमीन सूरज से तकरीबन साढ़े नौ करोड़ मील के फासले पर रहते हुए सूरज के गिर्द दो तरीके से घूम रही है, एक अपने महवर (धुरी) पर और दूसरे सूरज के मदार (कक्ष) पर। इसी तरह सितारों की गर्दिश का मामला है जो दहशतनाक हद तक असीम फासलों पर हद दर्जा बाकायदगी के साथ मुतहर्रिक (गतिमान) हैं। इसी कायनाती तंजीम से दिन और रात पैदा होते हैं। इसी से औकात (समयों) का नक्शा मुक्कर होता है। इसी से खुशकी और तरी में इंसान के लिए अपनी जिंदगी की तर्तीब कायम करना मुमकिन होता है। यह इतना बड़ा निजाम इतनी सेहत के साथ चल रहा है कि हजारों साल में भी इसके अंदर कोई फर्क नहीं आता। इससे साबित होता है कि यहां एक ऐसी हस्ती है कि जिसकी ताकतें लामहदूद (असीमित) हद तक ज्यादा हैं।

खुदा की ये निशानियां बहुत बड़े पैमाने पर बता रही हैं कि इस कारखाने का बनाने वाला बहुत बड़े इल्म वाला है। कोई बेइल्म हस्ती इतना बड़ा ढांचा कायम नहीं कर सकती। वह बहुत ग़लबे वाला है, उसके बग़ैर इतने बड़े कारखाने का इस तरह चलना मुमकिन नहीं हो सकता। उसकी मंसूबाबंदी इतिहाई हद तक कामिल है। अगर ऐसा न हो तो इतनी बड़ी कायनात में इस कद्र मअनवियन (सार्थकता) और हमआहंगी (सामंजस्य) का वजूद नामुमकिन हो जाए।

खुदा की दुनिया खुदा के दलाइल से भरी हुई है। मगर दलील एक नजरी माकूलियत का नाम है न कि किसी हथोड़े का। इसलिए दलील को मानना किसी के लिए सिर्फ उस वक्त मुमकिन होता है जबकि वह वाकई संजीदा हो, वह शुऊरी तौर पर इसके लिए तैयार हो कि वह दलील को मान लेगा चाहे वह उसकी मुवाफ़िक्त में जारी हो या उसके खिलाफ।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَضَّلْنَا الْآلِيَّاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ۚ وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّومَانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ انظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

और वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से, फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सोंपे जाने की जगह। हमने दलाइल खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो समझें। और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज। फिर हमने उससे सरसब्ज शाख निकाली जिससे हम तह-ब-तह दाने पैदा कर देते हैं। और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग अंगूर के और जैतून के और अनार के, आपस में मिलते जुलते और जुदा जुदा भी। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को देखो जब वह पकता है। बेशक इनके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं। (99-100)

इंसानी कारखाने इस पर कादिर नहीं कि वे एक ऐसी मशीन बना दें कि उसके बल से उसी किस्म की बेशुमार मशीनें खुद बखुद निकलती चली जाएं। हमारे कारखानों को हर मशीन अलग-अलग बनानी पड़ती है। मगर खुदा के कारखाने में यह वाक्या हर रोज हो रहा है। दरख्त का एक बीज बो दिया जाता है। फिर इस बीज से बेशुमार दरख्त निकलते चले जाते हैं। यही मामला इंसान का है। एक मर्द और एक औरत से शुरू होकर खरब हा खरब इंसान पैदा होते जा रहे हैं और इनका सिलसिला ख़त्म नहीं होता। यह मुशाहिदा बताता है कि जिस खुदा ने कायनात को पैदा किया है उसकी कुदरत बेहद वसीअ है। वह इस नादिर (दुर्लभ) तख्खीक पर कादिर है कि एक इब्तिदाई चीज वजूद में लाए और फिर उसके अंदर से बेहिसाब गुना ज्यादा बड़ी-बड़ी चीजें मुसलसल निकलती चली जाएं। इसी तरह खुदा मौजूदा दुनिया से एक ज्यादा शानदार और ज्यादा मेयारी दुनिया निकाल सकता है। आखिरत का अक्कीदा कोई दूर का अक्कीदा नहीं बल्कि जिस इम्कान को हम हर रोज देख रहे हैं उसी इम्कान को मुस्तक़बिल के एक वाक्ये की हैसियत से तस्लीम करना है।

मिट्टी बजाहिर एक मुर्दा और जामिद (जड़) चीज है। फिर उसके ऊपर बारिश होती है। पानी पाते ही मिट्टी के अंदर से एक नई सरसब्ज दुनिया निकल आती है। उसके अंदर से तरह-तरह की फलें और क्रिम क्रिम के फलदार दरख्त वजूद में आ जाते हैं। यह वाक्या भी मौजूदा दुनिया के बाद आने वाली दुनिया की एक तमसील है। मिट्टी पर पानी पड़ने से

जमीन के ऊपर रंग और खुशबू और जायके का एक सरसब्ज व शादाब चमन खिल उठना उस इम्कान को बताता है जो दुनिया के खालिक ने यहां रख दिया है। आज की दुनिया में इंसान जो नेक अमल करता है वह इसी किस्म का एक इम्कान है। जब खुदा की रहमतों की बारिश होगी तो यह इम्कान हरा भरा होकर आखिरत की लहलहाती हुई फसल की सूरत में तब्दील हो जाएगा।

इंसान अब्बलन मां के बल के सुपुर्द होता है फिर मौजूदा दुनिया में आता है। कब्र भी गोया इसी किस्म का एक 'बल' है। आदमी कब्र के सुपुर्द किया जाता है और इसके बाद वह अगली दुनिया में आंख खोलता है ताकि अपने अमल के मुताबिक जन्नत या जहन्नम में दाखिल कर दिया जाए। इंसान से शैब की जिस दुनिया को मानने का मुतालबा किया जा रहा है उसकी झलकियां और उसके दलाइल मौजूदा महसूस कायनात में पूरी तरह मौजूद हैं। मगर मानता वही है जो पहले से मानने के लिए तैयार हो। 'ईमान' की राह में आदमी जब आधा सफर तै कर चुका होता है इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि ईमान की दावत उसके जेहन का जुज बने और वह उसे कुबूल कर ले। जो शख्स ईमान के उल्टे रुख पर सफर कर रहा हो उसे ईमान की दावत कभी नफा नहीं पहुंचा सकती।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ۚ بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَتَى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُن لَّهُ لَه صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَا تَدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝

और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक करार दिया। हालांकि उसी ने उन्हें पैदा किया है। और वे जाने बूझे उसके लिए बेटियां और बेटे तराशीं। पाक और बरतर है वह उन बातों से जो ये बयान करते हैं। वह आसमानों और जमीन का मूजिद (उत्पत्तिकर्ता) है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया है और वह हर चीज से बाख़बर है। यह है अल्लाह तुम्हारा रब। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही हर चीज का खालिक है, पस तुम उसी की इबादत करो। और वह हर चीज का कारसाज है। उसे निगाहें नहीं पारती। मगर वह निगाहों को पा लेता है। वह बड़ा बारीकबी और बड़ा बाख़बर है। अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरत की रोशनियां आ चुकी हैं। पस जो बीनाई से काम लेगा वह अपने ही लिए, और जो अंधा बनेगा वह खुद नुक्सान उठाएगा। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरां नहीं हूँ। (101-105)

कदीमतरनी जमाने से इंसान की यह कमजोरी रही है कि जिस चीज में भी कोई इस्तियाज या कोई पुरअसरारियत (रहस्य) देखता है उसे वह खुदा का शरीक समझ लेता है। और उससे मदद लेने और उसकी आफतों से बचने के लिए उसे पूजने लगता है। इसी जेहन के तहत बहुत से लोगों ने फरिश्तों और सितारों और जिन्नात को पूजना शुरू कर दिया। हालांकि इन चीजों के खुदा न होने का खुला हुआ सुबूत यह है कि उनके अंदर 'खल्क' की सिफत नहीं। उन्होंने न अपने आपको पैदा किया और न वे दूसरी किसी चीज को पैदा करने पर कादिर हैं। उन्हें खुद किसी दूसरी हस्ती ने तख़लीक किया है। फिर जो खालिक है वह खुदा होगा या जो मख़्लूक है वह खुदा बन जाएगा।

एक दरख़्त को समुचित रूप से वे तमाम चीजें पहुंचती हैं जो उसकी बका के लिए जरूरी हैं। इसी तरह कायनात की तमाम चीजों का हाल है। जब यह हकीकत है कि इन चीजों को जो कुछ मिलता है किसी देने वाले के दिए से मिलता है तो यकीनन देने वाला हर जुज व कुल से बाख़बर होगा। अगर वह इनसे बाख़बर न हो तो हर चीज की उसकी ऐन जरूरत के मुताबिक कारसाजी किस तरह करे। अब जो खुदा इतनी कामिल सिफ़त का मालिक हो वह आखिर किस जरूरत के लिए किसी को अपनी खुदाई में शरीक करेगा।

इंसान खुदा को महसूस सूरत में देखना चाहता है। और जब वह उसे महसूस सूरत में नजर नहीं आता तो वह दूसरी महसूस चीजों को खुदा फर्ज करके अपनी जाहिरपरस्ती की तस्कीन कर लेता है। मगर यह खुदा की हस्ती का बहुत कमतर अंदाजा है। आखिर जो खुदा ऐसा अजीम हो कि इतनी बड़ी कायनात पैदा करे और इतिहाई नज्म के साथ उसे मुसलसल चलाता रहे, वह इतना मामूली कैसे हो सकता है कि एक कमजोर मख़्लूक उसे अपनी आंखों से देखे और अपने हाथों से छुए। अलबत्ता इंसान दिल की राह से खुदा को पाता है और यकीन की आंख से उसे देखता है। जो शख्स बसीरत (सूझबूझ) की आंख से देखकर मानने पर राजी हो वही खुदा को पाएगा। जो बसारत (निगाह) से देखने पर इसरार करे वह खुदा को पाने से उसी तरह महरूम रहेगा जिस तरह वह शख्स फूल की खुशबू को जानने से महरूम रहता है जो उसे कीमयाई (रासायनिक) मेयारों पर परख कर जानना चाहे।

وَكَذَلِكَ نَصْرِفُ الْأَيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّمَا أَوْحَى إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ۝ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝ وَلَا تَسْأَلُوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَسْأَلُوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ كَذَلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ

بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और इस तरह हम अपनी दलीलें मुक़्तलिफ़ तरीकों से बयान करते हैं और ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। तुम बस उस चीज की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुशिरकों से एराज (उपेक्षा) करो। और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते। और हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां (संरक्षक) नहीं बनाया है और न तुम उन पर मुख़्तार (साधिकार) हो। और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं उन्हें ग़ाली न दो वनां ये लोग हद से गुजर कर जहालत की बुनियाद पर अल्लाह को गालियां देने लगेंगे। इसी तरह हमने हर गिरोह की नजर में उसके अमल को खुशनुमा बना दिया है। फिर उन सबको अपने रब की तरफ पलटना है। उस वक़्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे। (106-109)

एक शख्स वह है जिसके अंदर तलब की नपिसयात हो, जो सच्चाई की तलाश में रहता हो। दूसरे लोग वे हैं जो दौलत या इक्तेदार (सत्ता) का कोई हिस्सा पाकर यह समझने लगते हैं कि वे पाए हुए लोग हैं। उनके अंदर कोई कमी नहीं है जो कोई शख्स आकर पूरी करे। हक की दावत जब उठती है तो उसे कुबूल करने वाले ज्यादातर पहली किस्म के लोग होते हैं। इसके बराबर जो दूसरी किस्म के लोग हैं वे उसे कोई काबिले लिहाज चीज नहीं समझते। वे कभी संजीदगी के साथ उस पर गौर नहीं करते। इसलिए उसकी अहमियत भी उन पर वाजेह नहीं होती। ऐसे हालात में हक की दावत के मक़सद दो होते हैं। जो सच्चे तालिब हैं उनकी तलब का जवाब फ़राहम करना। और जो लोग तालिब नहीं हैं उन पर हुज्जत कायम करना। पहली किस्म के लोगों के लिए दावत का निशाना यह होता है कि वे उसके मानने वाले बन जाएं। और दूसरी किस्म के लोगों के लिए यह कि वे कह उठें कि 'तुमने बता दिया, तुमने बात हम तक पहुंचा दी।'

जो लोग दावत का इंकार करते हैं वे अपने इंकार को बरहक साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें निकालते हैं। ऐसे मौके पर दाजी के दिल में यह ख़याल आने लगता है कि वह दावत के अंदाज में ऐसी तब्दीली कर दे जिससे वह मदऊ के लिए काबिले कुबूल बन जाए। मगर इस किस्म का इहिराफ़ (भटकाव) दुरुस्त नहीं। दाजी को हमेशा उसी उस्तूब पर कायम रहना चाहिए जो बराहेरास्त खुदा की तरफ से तल्कीन किया गया है। क्योंकि अस्ल मक़सद इंसान को खुदा से जोड़ना है न कि किसी न किसी तरह लोगों को अपने हलके में शामिल करना। दूसरी तरफ यह बात भी ग़लत है कि मदऊ के रवैये से उत्तेजित होकर ऐसी बातों की जाएं कि उसकी गुमराही जाहिलाना बदक़लामी तक जा पहुंचे।

आदमी जिन ख़ास रिवायात में पैदा होता है और जिन अपकार (विचारों) से वह मानूस (अंतरंग) हो जाता है, उनके हक में उसके अंदर एक तरह की अस्बियत पैदा हो जाती है। उसके मुताबिक उसका एक फ़िन्नी ढांचा बन जाता है जिसके तहत वह सोचता है। यही फ़िन्नी (वैचारिक) ढांचा हक को कुबूल करने की राह में सबसे बड़ी रुकावट है। जब तक आदमी इस फ़िन्नी ढांचे को न तोड़े उसके ज़ेहन में वह दरवाज़ा नहीं खुलता जिसके जरिये हक की आवाज़ उसके अंदर दाख़िल हो।

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۖ قُلْ إِنَّمَا الْآيَةُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعُرُكُمْ أَنُّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَهُمُ الْمَلِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ يَجْهَلُونَ ۝

और ये लोग अल्लाह की कसम बड़े जोर से खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे जरूर उस पर इमान ले आएंगे। कह दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियां आ जाएं तब भी ये इमान नहीं लाएंगे। और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग उसके ऊपर पहली बार इमान नहीं लाए। और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे। और अगर हम उन पर फ़रिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बातें करते और हम सारी चीजें उनके सामने इकट्ठा कर देते तब भी ये लोग इमान लाने वाले न थे इल्ला यह कि अल्लाह चाहे मगर उनमें से अक्सर लोग नादानी की बातें करते हैं। (110-112)

हक एक शख्स के सामने दलाइल (तर्कों) के साथ आता है और वह उसका इंकार कर देता है तो इसकी वजह हमेशा एक होती है। बात को उसके सही रुख से देखने के बजाए उल्टे रुख से देखना। कोई बात चाहे कितनी ही तार्किक हो, आदमी अगर उसे मानना न चाहे तो वह उसे रद्द करने के लिए कुछ न कुछ अल्फ़ाज़ पा लेगा। मसलन दाजी (आह्वानकर्ता) के दलाइल को दलाइल की हैसियत से देखने के बजाए वह यह बहस छेड़ देगा कि तुम्हारे सिवा जो दूसरे बुजुर्ग हैं क्या वे सब हक से महरूम थे। और इसी तरह दूसरी बातें।

जिस आदमी के अंदर इस किस्म का मिजाज हो उसका राहेरास्त (सन्मार्ग) पर आना इतिहाई मुश्किल है। वह हर बात को ग़लत रुख देकर उसके इंकार का एक बहाना तलाश कर सकता है। नजरी दलाइल को रद्द करने के लिए अगर उसे ये अल्फ़ाज़ मिल रहे थे कि यह अस्लाफ़ (पूर्वजों) के मस्लक के ख़िलाफ़ है तो महसूस मुशाहिदे को रद्द करने के लिए वह ये अल्फ़ाज़ पा लेगा कि यह नज़र का धेखा है इसकी हकीकत एक फ़र्ज़ तिलिस्म के सिवा और कुछ नहीं। जो मिजाज नजरी दलील को मानने में रुकावट बना था वही मिजाज महसूस दलील को मानने में भी रुकावट बन जाएगा। आदमी अब भी इसी तरह महरूम (वंचित) रहेगा जैसे वह पहले महरूम था।

इस किस्म के लोग अपनी नफिसयात के एतबार से सरकश होते हैं। वे हर हाल में अपने को ऊंचा देखना चाहते हैं। एक दाजी जब उनके सामने हक का पैगाम ले आता है तो अक्सर ऐसा होता है कि वह माहिल में अजनबी होता है, वह वक्त की अज्मतों से खाली होता है। उसके साथ अपने को मंसूब करना अपनी हैसियत को नीचा गिराने के समान होता है। इसलिए बरतरी की नफिसयात रखने वाले लोग उसे कुबूल नहीं कर पाते। वे तरह-तरह की तौजीहात पेश करके उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

दानाई यह है कि आदमी खुदा के नक्शे को माने और उसके मुताबिक अपने जेहन को चलाने के लिए तैयार हो। इसके बरअक्स नादानी यह है कि आदमी खुदा के नक्शे के बजाए खुदसाज़्जा मेयार कायम करे और कहे कि जो चीज मुझे इस मेयार पर मिलेगी मैं उसे मानूंगा और जो चीज इस मेयार पर नहीं मिलेगी उसे नहीं मानूंगा। ऐसे आदमी के लिए इस दुनिया में सिर्फ भटकना है। खुदा की इस दुनिया में आदमी खुदा के मुकर्रर किए हुए तरीकों की पैरवी करके मजिल तक पहुंच सकता है न कि उसके मुकर्ररह तरीके को छोड़कर।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيْطَانِ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٣﴾ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفِيدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ مُقْتَرِفُونَ ﴿١١٤﴾

और इसी तरह हमने शरीर (दुष्ट) आदमियों और शरीर जिनों को हर नबी का दुश्मन बना दिया। वे एक दूसरे को पुरफरेब बातें सिखाते हैं धोखा देने के लिए। और अगर तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। पस तुम उन्हें छोड़ दो कि वे झूठ बांधते रहें। और ऐसा इसलिए है कि उसकी तरफ उन लोगों के दिल मायल हों जो आखिरत (परलोक) पर यकीन नहीं रखते। और ताकि वे उसे पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें। (113-114)

इब्ने जरीर ने हजरत अबूजर से नकल किया है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में शरीक हुआ। यह एक लम्बी मज्लिस थी। आपने फरमाया ऐ अबूजर, क्या तुमने नमाज पढ़ ली। मैंने कहा नहीं ऐ खुदा के रसूल। आपने फरमाया : उठो और दो रकअत नमाज पढ़ो। वह नमाज पढ़कर दुबारा मज्लिस में आकर बैठे तो आपने फरमाया : ऐ अबूजर क्या तुमने जिन व इन्स के शैतानों के मुकाबले में अल्लाह से पनाह मांगी। मैंने कहा नहीं ऐ खुदा के रसूल, क्या इंसानों में भी शैतान होते हैं। आपने फरमाया हां, वे शयातीने जिन से भी ज्यादा बुरे होते हैं। (तफसीर इब्ने कसीर)

यहां शयातीने इन्स से मुराद वे लोग हैं जो दावते हक को बेएतबार साबित करने के लिए

कायदाना किरदार अदा करते हैं। ये वे लोग हैं जो खुदसाज़्जा मजहब की बुनियाद पर इज्जत व मकबूलियत का मकम हासिल किए हुए होते हैं। जब हक की दावत अपनी बेअमेज शकल में उठती है तो उन्हें महसूस होता है कि वह उन्हें बरहना (नंगा) कर रही है। ऐसे लोगों के लिए सीधा रास्ता तो यह था कि वे हक की वजाहत के बाद उसे मान लें मगर हक के मामले में अपना मकम उन्हें ज्यादा अजीज होता है। अपनी हैसियत को बचाने के लिए वे खुद दाजी और उसकी दावत को मुश्तबह (संदिग्ध) साबित करने में लग जाते हैं। इस मकसद के लिए वे खुशनुमा अल्फाज का सहारा लेते हैं। वे दाजी और उसकी दावत में ऐसे शोशे निकालते हैं जो अगरचे बजातेखुद बेहकीकत होते हैं मगर बहुत से लोग उनसे मुतअस्सिर होकर उनके बारे में शुबह में पड़ जाते हैं।

मौजूदा दुनिया में जो इम्तेहानी हालात पैदा किए गए हैं उनमें से एक यह है कि यहां सही बात कहने वाले को भी अल्फाज मिल जाते हैं और ग़लत बात कहने वाले को भी। हक का दाजी अगर हक को दलाइल की जवान में बयान कर सकता है तो इसी के साथ बातिलपरस्तों को भी यह मैद्य हासिल है कि वे हक के खिलाफ कुछ ऐसे खुशनुमा अल्फाज बोल सकें जो लोगों को दलील मालूम हों और वे उनसे मुतअस्सिर होकर हक का साथ देना छोड़ दें। यह सूतेहाल इम्तेहान की गरज से है इसलिए वह लाजिमन कियामत तक बाकी रहेगी। इस दुनिया में बहरहाल आदमी को इस इम्तेहान में खड़ा होना है कि वह सच्चे दलाइल और बेबुनियाद बातों के दर्मियान फर्क करे और बेबुनियाद बातों को रद्द करके सच्चे दलाइल को कुबूल कर ले।

शयातीने इन्स (इंसानी शैतान) अपनी जहानत से हक के खिलाफ जो पुरफरेब शोशे निकालते हैं वे उन्हीं लोगों को मुतास्सिर करते हैं जो आखिरत (परलोक) की फिक्र से खाली हों। आखिरत का अंदेशा आदमी को इतिहाई संजीदा बना देता है और जो शर्र्स संजीदा हो उससे बातों की हकीकत कभी छुपी नहीं रह सकती। मगर जो लोग आखिरत के अंदेशे से खाली हों वे हक के मामले में संजीदा नहीं होते, इसीलिए वे शोशे और दलील का फर्क भी समझ नहीं पाते।

أَفَعَيِّرَ اللَّهُ ابْتِغَىٰ حُكْمًا ۖ وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا ۖ وَالَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِّنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ ۖ فَلَا يَكُونُونَ مِنَ الْمُنْتَرِينَ ﴿١١٥﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدًا ۚ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٦﴾ وَإِن تُلْحِظْ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ يَضِلُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٧﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٨﴾

क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मुंसिफ बनाऊं। हालांकि उसने तुम्हारी तरफ वाजेह किताब उतारी है। और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी वे जानते हैं कि यह तेरे खब की तरफ से उतारी गई है हक के साथ। पस तुम न हो शक करने वालों में। और तुम्हारे खब की बात पूरी सच्ची है और इंसाफ की, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात को और वह सुनने वाला, जानने वाला है। और अगर तुम लोगों की अक्सरियत के कहने पर चलो जो जमीन में हैं तो वे तुम्हें खुदा के रास्ते से भटका देंगे। वे महज गुमान की पैरवी करते हैं और कयास आराइयां (अटकल बातें) करते हैं। बेशक तुम्हारा खब खूब जानता है उन्हें जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं और खूब जानता है उन्हें जो राह पाए हुए हैं। (115-118)

कुरआन में जबीहा के अहकाम उतरे और यह कहा गया कि मुर्दा जानवर न खाओ, जबह किया हुआ खाओ तो कुछ लोगों ने कहा : मुसलमानों का मजहब भी अजीब है। वे अपने हाथ का मारा हुआ जानवर हलाल समझते हैं और जिसे अल्लाह ने मारा हो उसे हराम बताते हैं। इस जुमले में लफ्जी तुकबंदी के सिवा और कोई दलील नहीं है। मगर बहुत से लोग उसे सुनकर धोखे में आ गए और इस्लाम को शुबह की नजर से देखने लगे। ऐसा ही हमेशा होता है। हर जमाने में ऐसे लोग कम होते हैं जो बातों को उनकी असली हकीकत के एतबार से समझते हों। बेशतर लोग अल्फाज के गोरखधंधे में गुम रहते हैं। वह ख्याली बातों को हकीकी समझ लेते हैं सिर्फ इसलिए कि उन्हें खूबसूरत अल्फाज में बयान कर दिया गया है।

मगर यह दुनिया ऐसी दुनिया है जहां तमाम बुनियादी हकीकतों के बारे में खुदा के वाजेह बयानात आ चुके हैं। इसलिए यहां किसी के लिए इस किस्म की बेराही में पड़ना काबिले माफी नहीं हो सकता। खुदा का कलाम एक खुली हुई कसौटी है जिस पर जांच कर हर आदमी मालूम कर सकता है कि उसकी बात महज एक लफ्जी शोबदा (शब्द जाल) है या कोई वाकई हकीकत है। खुदा ने माजि, हल और मुक्तखिल की तमाम ज़रूरी चीजों के बारे में सच्चा बयान दे दिया है। उसने इंसानी ताल्लुकात के तमाम पहलुओं के बारे में कामिल इंसाफ की राह बता दी है। आदमी अगर वाकई संजीदा हो तो उसके लिए यह जानना कुछ भी मुश्किल नहीं कि हक क्या और नाहक क्या। अब इसके बाद शुबह में वही पड़ेगा जिसका हाल यह हो कि उसकी सोच खुदा के कलाम के सिवा दूसरी चीजों के जेरेअसर काम करती हो। जो शख्स अपनी सोच को खुदाई हकीकतों के मुवाफिक बना ले उसके लिए यहां फिक्री बेराहरवी (वैचारिक भटकाव) का कोई इम्कान नहीं।

इस खुदाई वजाहत के बाद भी अगर आदमी भटकता है तो खुदा को उसका हाल अच्छी तरह मालूम है। वह खूब जानता है कि वह कौन है जिसने अपनी बड़ाई कायम रखने की खातिर अपने से बाहर जाहिर होने वाली सच्चाई को कोई अहमियत न दी। कौन है जिसके तअस्सुब ने उसे इस काबिल न रखा कि वह बात को समझ सके। किस ने सस्ती नुमाइश में अपनी रगबत की वजह से सच्चाई की आवाज पर ध्यान नहीं दिया। कौन है जो हसद की नपिसयात में मुब्तिला होने की वजह से हक से नाआशना रहा।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ سَمُّ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا لَكُمْ إَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ سَمُّ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَحَرَّمَ عَلَيْهِمْ إِلَّا مَا اضْطُرُّتُمْ إِلَيْهِ وَإِنْ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنْ رَبُّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ۝ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْأَشْمِ وَبَاطِنَهُ إِنْ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْأَشْمَ سَيَجْزُونَ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ سَمُّ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُؤْخَذَ إِلَىٰ أُولِيهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ۝

पस खाओ उस जानवर में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो। और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है, हालांकि खुदा ने तफ्सील से बयान कर दी हैं वे चीजें जिन्हें उसने तुम पर हराम किया है। सिवा इसके कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ। और यकीनन बहुत से लोग अपनी ख्वाहिशात की बिना पर गुमराह करते हैं बगैर किसी इल्म के। बेशक तुम्हारा खब खूब जानता है हद से निकल जाने वालों को। और तुम गुनाह के जाहिर को भी छोड़ दो और उसके बातिन को भी। जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें जल्द बदला मिल जाएगा उसका जो वे कर रहे थे। और तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। यकीनन यह बेहुक्मी है और शयातीन इल्का (संग्रहित) कर रहे हैं अपने साथियों को ताकि वे तुमसे झगड़ें। और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुशिरक (बहुदेववादी) हो जाओगे। (119-122)

दुनिया में जो कुछ है वह सब हमारे लिए 'माले गैर' है। क्योंकि सबका सब खुदा का है। उसे अपने लिए जाइज करने की वाहिद सूरत यह है कि उसे खुदा के बताए हुए तरीके से हासिल किया जाए और उसे खुदा के बताए हुए तरीके से इस्तेमाल किया जाए। यही मामला जानवरों का भी है।

जानवर हमारे लिए कीमती खुराक हैं। मगर सवाल यह है कि उन्हें खुराक बनाने का हक हमें कैसे मिला। जानवर को खुदा बनाता है और वही उसे परवरिश करके तैयार करता है। फिर हमारे लिए कैसे जाइज हुआ कि हम उसे अपनी खुराक बनाएं। जबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना इसी सवाल का जवाब है। अल्लाह का नाम लेना कोई लफ्जी रस्म नहीं। यह दरअसल जानवर के ऊपर खुदा की मालिकाना हैसियत को तस्तीम करना और उसके अतिये (दिन) पर खुदा का शुक्र अदा करना है। जबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना इसी एतराफ

व शुक्र की एक अलामत है और यही एतराफ व शुक्र वह 'क्रीमत' है जिसे अदा करने से मालिक के नजदीक उसका एक जानवर हमारे लिए हलाल हो जाता है। ताहम जिसे इत्तफाकी मजबूरी पेश आ जाए उसे इस पाबंदी से आजाद कर दिया गया है।

जब आदमी हराम व हलाल और जाइज व नाजाइज में खुदा का हुक्म छोड़ता है तो इसके बाद तवह्मुमात (अंधविश्वास) इसकी जगह ले लेते हैं। लोग तवह्मुमाती ख्यालात के आधार पर चीजों के बारे में तरह-तरह की राय कायम कर लेते हैं। इन तवह्मुमात के पीछे कुछ खुदसाख्ता फलसफे होते हैं और उनकी बुनियाद पर उनके कुछ जवाहिर (प्रकट दृश्य) कायम होते हैं। जो लोग अल्लाह के फरमांबरदार बनना चाहें उनके लिए जरूरी होता है कि इन तवह्मुमात को फिक्री (वैचारिक) और अमली दोनों एतबार से मुकम्मल तौर पर छोड़ दें।

खाने पीने और दूसरे उमूर में हर कौम का एक रवाजी दीन बन जाता है। इस रवाजी दीन के बारे में लोगों के जबाब बहुत शदीद होते हैं। क्योंकि इसके हक में अस्लाफ और बुजुर्गों की तस्दीकात शामिल रहती हैं। इससे हटना बुजुर्गों के दीन से हटने के समान बन जाता है। इसलिए जब हक की दावत इस रवाजी दीन से टकराती है तो हक की दावत के खिलाफ तरह-तरह के एतराजात किए जाते हैं। वक्त के बड़े ऐसी खुशकुन बातें निकालते हैं जिनसे वे अपने अवाम को मुतमइन कर सकें कि तुम्हारा रवाजी दीन सही है और यह 'नया दीन' बिल्कुल बातिल है। मगर अल्लाह हर चीज से बाखबर है। क्रियामत में जब वह हकीकतों को खोलेंगा तो हर आदमी देख लेगा कि वह हकीकत की जमीन पर खड़ा था या तवह्मुमात की जमीन पर।

اَوَمَنْ كَانَ مِيتًا فَاحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَاهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٥٠﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ اَكْبَرُ فَجْرٍ مِمَّنَّا لِيُتَكْرَفُ فِيهَا وَا مَا يَكْفُرُونَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٥١﴾ وَاِذَا جَاءَ نَصْرُكَ فَكُنْ تَوَّابًا ﴿٥٢﴾ حَتَّى تَوْتِيَ مَثَلُ مَا اَوْتَى رُسُلُ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ ۚ سَيُصِيبُ الَّذِيْنَ اَجْرُمُوْا صَغَارًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿٥٣﴾

क्या वह शख्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िंदगी दी और हमने उसे एक रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है वह उस शख्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में पड़ा है, इससे निकलने वाला नहीं। इस तरह मुंकिरों की नजर में उनके आमाल खुशनुमा बना दिए गए हैं। और इस तरह हर बस्ती में हमने गुनाहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहां हीले (चालें) करें। हालांकि वे जो हीला करते हैं अपने ही खिलाफ

करते हैं मगर वे उसे नहीं समझते। और जब उनके पास कोई निशान आता है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज न मानेंगे जब तक हमें भी वही न दिया जाए जो खुदा के पैगम्बरों को दिया गया। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे अपनी पैगम्बरी किसे बख्शे। जो लोग मुजरिम हैं जरूर उन्हें अल्लाह के यहां जिल्लत नसीब होगी और सज़ा अजाब भी, इस वजह से कि वे मक़ (चालबाजी) करते थे। (123-125)

अल्लाह की नजर में वह शख्स जिंदा है जिसके सामने हिदायत की रोशनी आई और उसने उसे अपने रास्ते की रोशनी बना लिया। इसके मुकाबले में मुर्दा वह है जो हिदायत की रोशनी से महरूम होकर बातिल के अंधेरों में भटक रहा हो।

मुर्दा आदमी ओहाम (भ्रमों) व तअस्सुबात (विद्वेषों) के जाल में इतना फंसा हुआ होता है कि सीधे और सच्चे हक़ाईक उसके ज़ेहन की गिरफ्त में नहीं आते। वह चीजों की माहियत (स्वरूप) से इतना बेखबर होता है कि लफ्ज़ी बहस और हकीकी कलाम में फर्क नहीं कर पाता। वह अपनी बड़ाई के तसव्वुर में इतना डूबा हुआ होता है कि किसी दूसरे की तरफ से आई हुई सच्चाई का एतराफ करना उसके लिए मुमकिन नहीं होता। उसके ज़ेहन पर रवाजी ख्यालात का इतना ग़लबा होता है कि उनसे हट कर किसी और मेयार पर वह चीजों को जांच नहीं पाता। अपनी इन कमजोरियों की बिना पर वह अंधेरे में भटकता रहता है, बजाहिर जिंदा होते हुए भी वह एक मुर्दा इंसान बन जाता है।

इसके बरअक्स (विपरीत) जो शख्स हिदायत के लिए अपना सीना खोल देता है वह हर क़िस्म की नपिसयाती गिरहों से आजाद हो जाता है। सच्चाई को पहचानने में उसे जरा भी देर नहीं लगती। अल्फ़ाज के पर्दे कभी उसके लिए हकीकत का चेहरा देखने में रुकावट नहीं बनते। जौक और आदत के मसाइल उसकी ज़िंदगी में कभी यह मक़ाम हासिल नहीं करते कि उसके और हक के दर्मियान हायल हो जाएं। सच्चाई उसके लिए एक ऐसी रोशन हकीकत बन जाती है जिसे देखने में उसकी नजर कभी न चूके और जिसे पाने के लिए वह कभी सुस्त साबित न हो। वह खुद भी हक की रोशनी में चलता है और दूसरों को भी उसमें चलाने की कोशिश करता है।

वे लोग जो खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) चीजों को खुदा का मजहब बताकर अवाम का आकर्षण केन्द्र बने हुए होते हैं वे हर ऐसी आवाज के दुश्मन बन जाते हैं जो लोगों को सच्चे दीन की तरफ पुकारे। ऐसी हर आवाज उन्हें अपने खिलाफ बेएतमादी की तहरीक दिखाई देती है। ये वक्त के बड़े लोग हक की दावत में ऐसे शोशे निकालते हैं जिससे वे अवाम को उससे मुतअस्सिर होने से रोक सकें। वे हक के दलाइल को ग़लत रुख देकर अवाम को शबहात में मुक्ताला करते हैं। यहां तक कि बेबुनियाद बातों के जरिये दाओ (आह्वानकता) की जात को बदनाम करने की कोशिश करते हैं। मगर इस क़िस्म की कोशिशें सिर्फ उनके जुर्म को बढ़ाती हैं, वह दाओ और दावत को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकतीं। हक़परस्त वह है जो हक को उस वक्त देख ले जबकि उसके साथ दुनियावी अज़्मतें शामिल न हुई हों। दुनियावी अज़्मत वाले हक को मानना दरअस्तल दुनियावी अज़्मतों को मानना है न कि खुदा की तरफ से आए हुए हक को।

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَثَمًا يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَهَذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذْكُرُونَ ۖ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٠﴾

अल्लाह जिसे चाहता है कि हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे चाहता है कि गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो। इस तरह अल्लाह गन्दगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते। और यही तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है। हमने वाजेह कर दी हैं निशानियाँ और करने वालों के लिए। उन्हीं के लिए सलामती का घर है उनके रब के पास। और वह उनका मददगार है उस अमल के सबब से जो वे करते रहे। (126-128)

हक अपनी जात में इतना वाजेह है कि उसका समझना कभी किसी आदमी के लिए मुश्किल न हो। फिर भी हर जमाने में बेधुमार लोग हक की वजाहत के बावजूद हक को कुबूल नहीं करते। इसकी वजह उनके अंदर की वे रूकावटें हैं जो वे अपनी नफिसयात में पैदा कर लेते हैं। कोई अपने आपको मुकद्दस हस्तियों से इतना ज्यादा वाबस्ता कर लेता है कि उन्हें छोड़ते हुए उसे महसूस होता है कि वह बिल्कुल बर्बाद हो जाएगा। किसी का हाल यह होता है कि अपनी मस्लेहतों का निजाम टूटने का अदेशा उसके ऊपर इतना ज्यादा छा जाता है कि उसके लिए हक की तरफ इक्दाम करना मुमकिन नहीं रहता। किसी को नजर आता है कि हक को मानना अपनी बड़ाई के मीनार को अपने हाथ से ढा देना है। किसी को महसूस होता है कि माहौल के रवाज के खिलाफ एक बात को अगर मैंने मान लिया तो मैं सारे माहौल में अजनबी बन कर रह जाऊंगा। इस तरह के ख्यालात आदमी के ऊपर इतने मुसल्लत हो जाते हैं कि हक को मानना उसे एक बेहद मुश्किल बुलन्दी पर चढ़ाई के समान नजर आने लगता है जिसे देखकर ही आदमी का दिल तंग होने लगता हो।

इसके बरअक्स मामला उन लोगों का है जो नफिसयाति पेचीदगियों में मुब्तला नहीं होते, जो हक को हर दूसरी चीज से आला समझते हैं। वे पहले से सच्चे मुतलाशी बने हुए होते हैं। इसलिए जब हक उनके सामने आता है तो बिला ताखीर (अविलंब) वे उसे पहचान लेते हैं और तमाम उजरात (विवशताओं) और अदेशों को नजरअंदाज करके उसे कुबूल कर लेते हैं।

खुदा अपने हक को निशानियों (इशाराती हकीकतों) की सूरत में लोगों के सामने लाता है। अब जो लोग अपने दिलों में कमजोरियाँ लिए हुए हैं, वे इन इशारात की खुदसाखा तावील करके अपने लिए इसे न मानने का जवाज बना लेते हैं। और जिन लोगों के सीने खुले हुए हैं वे

इशारात को उनकी अस्त गहराइयों के साथ पा लेते हैं और उन्हें अपने जेहन की गिजा बना लेते हैं। उनकी जिंदगी फौरन उस सीधे रास्ते पर चल पड़ती है जो खुदा की बराहारास्त रहनुमाई में तै होता है और बिलआखिर आदमी को अबदी कामयाबी के मकाम पर पहुंचा देता है।

खुदा के यहां जो कुछ कीमत है वह अमल की है न कि किसी और चीज की। जो शख्स अमली तौर पर खुदा की फरमांबरदारी इख्तियार करेगा वही इस कबिल ठहरेगा कि खुदा उसकी दस्तगीरी करे और उसे अपने सलामती के घर तक पहुंचा दे। यह सलामती का घर खुदा की जन्नत है जहां आदमी हर किस्म के दुख और आफत से महफूज रहकर अबदी (चिरस्थायी) सुकून की जिंदगी गुजारेगा। खुदा की यह मदद अफराद को उनके अमल के मुताबिक मौत के बाद आने वाली जिंदगी में मिलेगी। लेकिन अगर अफराद की कबिले लिहाज तादाद दुनिया में खुदा की फरमांबरदार बन जाए तो ऐसी जमाअत को दुनिया में भी उसका एक हिस्सा दे दिया जाता है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ۚ يَمْعَشِرُ الْإِنِّ قَدْ اسْتَكْبَرْتُمْ مِنَ الْإِنِّ ۚ وَقَالَ أَوْلِيَهُمْ مِنَ الْإِنِّ رَبَّنَا اسْمِئْتَنَا بَعْضًا لِبَعْضٍ وَبَافِنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَلْتَنَا قَالَ الثَّالِثُ مَثُوكُمْ خُلِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۖ وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ يَمْعَشِرُ الْإِنِّ ۚ وَالْإِنِّ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۖ ذَٰلِكَ أَنْ لَّمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ﴿١٦١﴾

और जिस दिन अल्लाह उन सबको जमा करेगा, ऐ जिन्यों के गिरोह तुमने बहुत से ले लिए इंसानों में से। और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे ऐ हमारे रब, हमने एक दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुंच गए अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए मुकरर किया था। खुदा कहेगा अब तुम्हारा ठिकाना आग है, हमेशा उसमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनाहगारों को एक दूसरे से, उन आमांल के सबब जो वे करते थे। ऐ जिन्यों और इंसानों के गिरोह क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैगम्बर नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें इस दिन के पेश आने से डराते थे। वे कहेंगे हम खुद अपने खिलाफ गवाह हैं। और उन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में रखा। और वे अपने खिलाफ खुद गवाही देंगे कि बेशक हम मुकिर थे। यह इस वजह से कि तुम्हारा

रब बस्तियों को उनके जुल्म पर इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि वहां के लोग बेखबर हों। (129-132)

किसी के गुमराह करने से जब कोई शख्स गुमराह होता है तो यह एकतरफा मामला नहीं होता। दोनों अपनी-अपनी जगह यही समझते हैं कि वे अपना मकसद पूरा कर रहे हैं। शैतान जब आदमी को सब्ज बाग दिखा कर अपनी तरफ ले जाता है तो वह अपने उस चैलेंज को सही साबित करना चाहता है जो उसने आगजितख़्कीक (उत्पत्ति काल) में खुदा को दिया था कि मैं तेरी मख़्कूक के बड़े हिस्से को अपना हमनवा बना लूंगा (बनी इस्राईल 61)। दूसरी तरफ जो लोग अपने आपको शैतान के हवाले करते हैं उनके सामने भी वाजेह मफ़दात (स्वार्थ) होते हैं। कुछ लोग जिन्नों के नाम पर अपने सहर (जादू) के कारोबार को फरोग देते हैं या अपनी शायरी और कहानत का रिश्ता किसी जिन्नी उस्ताद से जोड़ कर अवाम के ऊपर अपनी बरतरी कायम करते हैं। इसी तरह वे तमाम तहरीकें जो शैतानी तरीबात (प्रेरण) के तहत उठती हैं, उनका साथ देने वाले भी इसीलिए उनका साथ देते हैं कि उन्हें उम्मीद होती है कि इस तरह अवाम के ऊपर आसानी के साथ वे अपनी कयादत (नेतृत्व) काम कर सकते हैं। क्योंकि खुदाई पुकार के मुकाबले में शैतानी नारे हमेशा अवाम की भीड़ के लिए ज्यादा पुरकशिश साबित होते हैं।

कियामत में जब हक्कीकतों से पर्दा उठया जाएगा तो यह बात खुल जाएगी कि जो लोग बेराह हुए या जिन्होंने दूसरों को बेराह किया उन्होंने किसी गलतफहमी की बिना पर ऐसा नहीं किया। इसकी वजह हक को नजरअंदाज करना था न कि हक से बेखबर रहना। वे दुनियावी तमाशों से ऊपर न उठ सके, वे वक्ती फ़ायदों को कुर्बान न कर सके। वरना खुदा ने अपने ख़ास बंदों के जरिए जो हिदायत खोली थी वह इतनी वाजेह थी कि कोई शख्स हक्कीकते हाल से बेखबर नहीं रह सकता था। मगर उनकी दुनियापरस्ती उनकी आंखों का पर्दा बन गई। जानने के बावजूद उन्होंने न जाना। सुनने के बावजूद उन्होंने न सुना।

आख़िरत (परलोक) में वे बनावटी सहारे उनसे छिन जाएंगे जिनके बल पर वे हक्कीकत से बेपरवाह बने हुए थे। उस वक्त उन्हें नजर आएगा कि किस तरह ऐसा हुआ कि हक उनके सामने आया मगर उन्होंने झूठे अल्फ़ाज बोलकर उसे रद्द कर दिया। किस तरह उनकी गलती उन पर वाजेह की गई मगर ख़ुबसूरत तावील करके उन्होंने समझा कि अपने आपको हक पर साबित करने में वे कामयाब हो गए हैं।

وَلِكُلِّ دَرَجَتٍ مِّنْ أَعْمَالِهِمْ مَّا رُبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾ وَرَبُّكَ الْغَفُورُ
ذُو الرَّحْمَةِ إِنَّ يَشَاءُ يُزِيلُ هَبْطَكُمْ وَيَسْتَلْفِتُ مِنْ بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنشَأَكُمْ
مِّنْ ذُرِّيَّةٍ قَوْمٍ آخَرِينَ ﴿٦١﴾ إِنَّ مَا تَعْدُونَ لَأَتِ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٦٢﴾ قُلْ
يَقَوْمِ أَعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مِّنْ تَكُونُ لَهُ
عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ الظَّالِمُونَ ﴿٦٣﴾

और हर शख्स का दर्जा है उसके अमल के लिहाज से और तुम्हारा रब लोगों के आमाल से बेखबर नहीं। और तुम्हारा रब बेनियाज (निस्पृह), रहमत वाला है। अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें पैदा किया दूसरों की नस्ल से। जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह आकर रहेगी और तुम खुदा को आजिज नहीं कर सकते। कहे, ऐ लोगो तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर, मैं भी अमल कर रहा हूं। तुम जल्द ही जान लोगे कि अंजामकार किसके हक में बेहतर होता है। यकीनन जल्लिम कभी फ़लाह (कल्याण) नहीं पा सकते। (133-136)

दुनिया की जिंदगी में हम देखते हैं कि एक शख्स और दूसरे शख्स के मर्तबे में फर्क होता है। यह फर्क ठीक उस तनासुब से होता है जो एक आदमी और दूसरे आदमी की जद्दोजहद में पाया जाता है। किसी आदमी की दानिशमंदी, उसकी मेहनत, मस्लेहतों के साथ उसकी रियायत जिस दर्जे की होती है उसी दर्जे की कामयाबी उसे यहां हासिल होती है।

ऐसा ही मामला आख़िरत (परलोक) का भी है। आख़िरत में दर्जात और मकामात की तकसीम ठीक उसी तनासुब से होगी जिस तनासुब से किसी आदमी ने दुनिया में उसके लिए अमल किया है। आख़िरत के लिए भी आदमी को उसी तरह माल और वक्त खर्च करना है जिस तरह वह दुनिया के लिए अपने वक्त और माल को खर्च करता है। आख़िरत के मामले में भी उसे उसी तरह होशियारी दिखानी है जिस तरह वह दुनिया के मामले में होशियारी दिखाता है। आख़िरत की बातों में भी उसे मस्लेहतों और नजाकतों की उसी तरह रियायत करना है जिस तरह वह दुनिया की बातों में मस्लेहतों और नजाकतों की रियायत करता है। जिस खुदा के हाथ में आख़िरत का फैसला है वह एक-एक शख्स के अहवाल से पूरी तरह बाख़बर है। उसके लिए कुछ भी मुश्किल न होगा कि वह हर एक को वही दे जो उसके इस्तेमाल (पात्रता) के बक्दर उसे मिलना चाहिए।

खुदा ने इम्तेहान और अमल की यह जो दुनिया बनाई है इसके जरिए उसने इंसान के लिए एक कीमती इम्कान खोला है। वह चन्द दिन की जिंदगी में अच्छे अमल का सुबूत देकर अबदी जिंदगी में उसका अंजाम पा सकता है। इस निजाम को कायम करने से खुदा का अपना कोई फ़ायदा नहीं। मौजूदा लोग अगर उसके तख़्कीकी मंसूबे को कुबूल न करें तो खुदा को इसकी परवाह नहीं। वह उनकी जगह दूसरों को उठा सकता है जो उसके तख़्कीकी मंसूबे को मानें और अपने आपको उसके साथ शामिल करें। यहां तक कि वह रेगिस्तान के जरों और दरख़्तों के पत्तों को अपने वफ़ादार बंदों की हैसियत से खड़ा कर सकता है।

एक ऐसी दुनिया जो सरासर हक और इंसाफ पर कायम हो वहां जल्लिमों और सरकशों को छूट मिलना खुद ही बता रहा है कि यह छूट कोई इनाम नहीं है बल्कि वह उन्हें उनके आख़िरी अंजाम तक पहुंचाने के लिए है। जो शख्स हक को मानने से इंकार करता है और इसके बावजूद बजाहिर उसका कुछ नहीं बिगड़ता उसे इस सूरतेहाल पर खुश नहीं होना चाहिए। यह हालत सरासर वक्ती है। बहुत जल्द वह वक्त आने वाला है जबकि आदमी से वह सब कुछ छीन लिया जाए जिसके बल पर वह सरकशी कर रहा है और उसे हमेशा के लिए

एक ऐसी बर्बादी में डाल दिया जाए जहां से कभी उसे निकलना न हो। जहां न दुबारा अमल का मौका हो और न अपने अमल के अंजाम से अपने को बचाने का।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ بِرْغَبِهِمْ
وَهَذَا لِلشُّرَكَائِ قَبْلاً كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ
فَهُوَ يَصِلُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٦﴾ وَكَذَلِكَ زَيْنَ لَكثيرٍ مِنَ
المُشْرِكِينَ قَتَلَ أَوْلَادَهُمْ شُرَكَائُهُمْ لِيُرَدُّوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿٧﴾

और खुदा ने जो खेती और चौपाए पैदा किए उसमें से उन्होंने खुदा का कुछ हिस्सा मुकर्र किया है। पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनके गुमान के मुताबिक, और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है। फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह उनके शरीकों को पहुंच जाता है। कैसा बुरा फैसला है जो ये लोग करते हैं। और इस तरह बहुत से मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की नजर में उनके शरीकों ने अपनी औलाद के कत्ल को खुशनुमा बना दिया है ताकि उन्हें बर्बाद करें और उन पर उनके दीन को मुशतबह (संदिग्ध) बना दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। पस उन्हें छोड़ दो कि अपनी इफ्तारा (झूठ गढ़ने) में लगे रहें। (137-138)

मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में यह रवाज था कि वे फसल और मवेशी में से अल्लाह का और बुतों का हिस्सा निकालते। अगर वे देखते कि खुदा के हिस्से का जानवर या गल्ला अच्छा है तो उसे बदल कर बुतों की तरफ दे देते। मगर बुतों का अच्छा होता तो उसे खुदा की तरफ न करते। पैदावार की तक्सीम के वक्त बुतों के नाम का कुछ हिस्सा इत्फाकन अल्लाह के हिस्से में मिल जाता तो उसे अलग करके बुतों की तरफ लौटा देते। और अल्लाह के नाम का कुछ हिस्सा बुतों की तरफ चला जाता तो उसे न लौटाते। इसी तरह अगर कभी नज्र व नियाज का गल्ला खुद इस्तेमाल करने की जरूरत पेश आ जाती तो खुदा का हिस्सा ले लेते मगर बुतों के हिस्से को न छूते। वे डरते थे कि कहीं कोई बला नाजिल हो जाए। कहने के लिए वे खुदा को मानते थे मगर उनका अस्ल यकीन अपने बुतों के ऊपर था। हकीकत यह है कि आदमी महसूस बुतों को इसीलिए गढ़ता है कि उसे गैर महसूस खुदा पर पूरा भरोसा नहीं होता।

यही हाल हर उस शख्स का होता है जो जबान से तो अल्लाह को मानता हो मगर उसका दिल अल्लाह के सिवा कहीं और अटका हुआ हो। जो लोग किसी जिंदा या मुर्दा हस्ती को अपनी अकीदतों का मकज (आस्था केन्द्र) बना लें उनका हाल भी यही होता है कि जो वक्त उनके यहां खुदा की याद का है उसमें तो वे अपने 'शरीक' की याद को शामिल कर लेते हैं। मगर जो वक्त उनके नजदीक अपने शरीक की याद का है उसमें खुदा का तक्किरा उन्हें गवारा

नहीं होता। शेफ्तगी और वारुप्तगी (मुहब्बत और शौक) का जो हिस्सा खुदा के लिए होना चाहिए उसका कोई जुज वे बाआसानी अपने शरीकों को दे देंगे। मगर अपने शरीक के लिए वे जिस शेफ्तगी और वारुप्तगी को जरूरी समझते हैं उसका कोई हिस्सा कभी खुदा को नहीं पहुंचेगा। जो मज्लिस खुदा की अजमत व किब्रियाई बयान करने के लिए आयोजित की जाए उसमें उनके शरीकों की अजमत व किब्रियाई का बयान तो किसी न किसी तरह दाखिल हो जाएगा। मगर जो मज्लिस अपने शरीकों की अजमत व किब्रियाई का चर्चा करने के लिए हो वहां खुदा की अजमत व किब्रियाई का कोई गुजर न होगा।

उन शरीकों की अहमियत कभी जेहन पर इतना ज्यादा गालिब आती है कि आदमी अपनी औलाद तक को उनके लिए निसार कर देता है। अपनी औलाद को खुदा के लिए पेश करना हो तो वह पेश नहीं करेगा मगर अपने शरीकों की खिदमत में उन्हें देना हो तो वह बखुशी इसके लिए आमदा हो जाता है।

इस किस्म की तमाम चीजें खुदा के दीन के नाम पर की जाती हैं मगर हकीकतन वे गढ़े हुए झूठ हैं। क्योंकि यह एक ऐसी चीज को खुदा की तरफ मंसूब करना है जिसे खुदा ने कभी तालीम नहीं किया।

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ شَاءَ بِرْغَبِهِمْ وَأَنْعَامٌ
حَرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ أَسْمَاءَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءٌ عَلَيْهِ
سَيَجْزِيهِمْ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨﴾ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ
لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَى أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ
سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ
سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٠﴾

और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती मना है, इन्हें कोई नहीं खा सकता सिवा उसके जिसे हम चाहें, अपने गुमान के मुताबिक। और फलां चौपाए हैं कि उनकी पीठ हराम कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिन पर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। अल्लाह जल्द उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा। और कहते हैं कि जो फलां किस्म के जानवरों के पेट में है वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हराम है। अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं। अल्लाह जल्द उन्हें इस कहने की सजा देगा। बेशक अल्लाह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को कत्ल किया नादानी से बग़ैर किसी इल्म के। और उन्होंने उस रिक्क को हराम कर लिया जो अल्लाह

ने उन्हें दिया था, अल्लाह पर बोहतान बांधते हुए। वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले न बने। (139-141)

कदीम अरब के लोग अपने मजहब को हज्जत इब्रहीम और हज्जत इस्माईल की तरफ मंसूब करते थे। मगर अमलन उनके यहां जो मजहब था वह एक खुदसाख्ता मजहब था जो उनके पेशवाओं ने गढ़कर उनके दर्मियान राइज कर दिया था। पैदावार और चौपायों की जो नर्ज़ें (अर्पित वस्तुएं) खुदा या उसके शरीकों के नाम पर पेश होतीं उनके लिए उनके यहां बहुत सी कड़ी पाबंदियां थीं। मसलन बहीरा या सायबा (जानवरों) को अगर जबह किया और उसके पेट से जिंदा बच्चा निकला तो उसका गोश्त सिर्फ मर्द खाएं, औरतें न खाएं। और अगर बच्चा मुर्दा हालत में हो तो उसे मर्द और औरत दोनों खा सकते हैं। इसी तरह कुछ जानवरों की पीठ पर सवार होना या उनके ऊपर बोझ लादना उनके नजदीक हाराम था। कुछ जानवरों के बारे में उनका अक़ीदा था कि उन पर सवार होते वक्त या उन्हें जबह करते वक्त या उनका दूध निकालते वक्त खुदा का नाम नहीं लेना चाहिए।

ऐसे लोग दीन के अस्त तक्जजे (अल्लाह से तअल्लुक और आख़िरत की फ़िक्र) से इतिहाई हद तक दूर होते हैं। वे रोजाना अल्लाह की हुदूद को तोड़ते रहते हैं। अलबत्ता कुछ ग़ैर मुत्तअल्लिक जाहिरी चीजें में तश्दुद की हद तक क्वाइद व ज्वाबित (नियमों) का एहतेमाम करते हैं। यह शैतान की निहायत गहरी चाल है। वह लोगों को अस्त दीन से दूर करके कुछ दूसरी चीजों को दीन के नाम पर उनके दर्मियान जारी कर देता है और उनमें शिद्दत (अति) की नपिसयात पैदा करके आदमी को इस गलतफ़हमी में मुब्तिला कर देता है कि वे कमाले एहतियात की हद तक खुदा के दीन पर कायम हैं। इबादत की जवाहिर में तश्दुद (अतिवाद) भी इसी खास नपिसयात की पैदावार है। आदमी खुशूअ और खुलूस (निष्ठा भाव) से खाली होता है और कुछ जाहिरी आदाब का शदीद इल्तजाम करके समझता है कि उसने कमाल अदायगी की हद तक इबादत का फ़ैअल (कृत्य) अंजाम दे दिया है।

इस किस्म के लोगों की गुमराही इससे वाजेह है कि उनमें से बहुत से लोगों ने औलाद के कल्ल जैसे वहशियाना फ़ैअल को दुस्त समझ लिया। वे खुदा के पाकीज (पावन) रिज्क से लोगों को महरूम कर देते हैं। वे मामूली मसाइल पर लड़ते हैं और उन बड़ी चीजों को नजरअंदाज कर देते हैं जिनकी अहमियत को अक्ले आम के जरिए समझा जा सकता है।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أَكْثُلُهُ
وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا
حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿١٣٩﴾ وَمِنَ الْأَنْعَامِ
حَمُولَةٌ وَفَرَسَاتٌ كُلُوا مِن رِّزْقِكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ
لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿١٤٠﴾

और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते। और खजूर के दरख्त और खेती कि उसके खाने की चीजें मुज्तलिफ होती हैं और जैतून और अनार आपस में मिलते जुलते भी और एक दूसरे से मुज्तलिफ भी। खाओ उनकी पैदावार जबकि वे फलें और अल्लाह का हक अदा करो उसके काटने के दिन। और इसराफ (हद से आगे बढ़ना) न करो, बेशक अल्लाह इसराफ करने वालों को पसंद नहीं करता। और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किए और जमीन से लगे हुए भी। खाओ उन चीजों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं। और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (142-143)

खुदा ने इंसान के लिए तरह-तरह की गिजाएं पैदा की हैं। कुछ चीजें वे हैं जो जमीन में फैलती हैं। मसलन खरबूजे, सब्जियां वगैरह। कुछ चीजें वे हैं जो टट्टियों पर चढ़ाई जाती हैं मसलन अंगूर वगैरह। कुछ चीजें ऐसी हैं जो अपने तने पर खड़ी रहती हैं। मसलन खजूर, आम वगैरह। इसी तरह आदमी की जरूरत के लिए मुज्तलिफ किस्म के छोटे-बड़े जानवर पैदा किए। मसलन ऊंट, घोड़े और भेड़ बकरियां।

आदमी एक अलेहिदा मख़्लूक है और बाकी चीजें अलेहिदा मख़्लूक। दोनों एक दूसरे से अलग-अलग पैदा हुए हैं। मगर इंसान देखता है कि दोनों में जबरदस्त हमआहंगी (अंतरंगता) है। आदमी के जिस्म को अगर गिजाइयत दरकार है तो उसके बाहर हरे भरे दरख्तों में हस्तअोज किस्म के गिजाईफ़ैट लटक रहे हैं। अगर उसकी ज़बान में मजेका एहसास पाया जाता है तो फलों के अंदर इसकी तस्कीन का आला सामान मौजूद है। अगर उसकी आंखों में हुस्ने नजर का ज़ैक है तो कुदरत का पूरा कारख़ाना हुस्न और दिलकशी का मुक़म्म (पुंज) बना हुआ है। अगर उसे सवारी और बारबरदारी (यातायात) के जराए दरकार हैं तो यहां ऐसे जानवर मौजूद हैं जो उसके लिए यातायात का जरिया भी बनें और इसी के साथ उसके लिए कीमती गिजा भी फ़्राहम करें। इस तरह कायनात अपने पूरे वजूद के साथ तौहीद (एकेशवावाद) का एलान बन गई है। क्योंकि कायनात के मुज्तलिफ मजाहिर में यह वहदत (एकत्व) इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि उसका खालिक व मालिक एक हो।

आदमी जब देखता है कि इतना अजीम कायनाती एहतियाम उसके किसी जाती इस्लाम (पात्रता) के बग़ैर हो रहा है तो इस एकतरफा इनाम पर उसका दिल शुक्र के जच्चे से भर जाता है। फिर इसी के साथ यह सारा मामला आदमी के लिए तकवा की गिजा बन जाता है। इंसानी फ़ितरत का यह तक्जज है कि हर इनायत (Privilege) के साथ जिम्मेदारी (Responsibility) हो। यह चीज आदमी को जजा व सजा की याद दिलाती है और उसे आमादा करती है कि वह दुनिया में इस एहसास के साथ रहे कि एक दिन उसे खुदा के सामने हिसाब के लिए खड़ा होना है। ये एहसासात अगर हकीकी तौर पर आदमी के अंदर जाग उठें तो लाजिमी तौर पर उसके अंदर दो बातें पैदा होंगी। एक यह कि उसे जो कुछ मिलेगा उसमें वह अपने मालिक का हक भी समझेगा। दूसरे यह कि वह सिर्फ वाकई जरूरत के बक्द खर्च करेगा न कि फुज़ूल और बेमौका खर्च करने लगे। मगर शैतान यह करता है कि अस्त रुख से आदमी का जेहन मोड़कर उसे दूसरी ग़ैर मुत्तअल्लिक बातों में उलझा देता है।

ثَمِينَةً أَرْوَاجٍ مِنَ الضَّالِّينَ وَمِنَ الْمَعْرِثِينَ قُلْ أَلَمْ يَكُنْ حَرَمٌ
أَمِ الْأَنْثَيْنِ أَمَّا اشْتَمَكْتُ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَيْنِ يَسْئُرُنِي يَعْلَمُونَ كُنْتُمْ
صَدِيقِينَ ۖ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ أَلَمْ يَكُنْ
حَرَمٌ أَمِ الْأَنْثَيْنِ أَمَّا اشْتَمَكْتُ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَيْنِ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ
إِذْ وَصَّيْتُكُمْ اللَّهُ بِهَذَا فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ
بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۖ قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوْحَىٰ إِلَيَّ
حَرَمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خَنْزِيرٍ
فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ
رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किए। दो भेड़ की किस्म से और दो बकरी की किस्म से।
पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हARAM किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो भेड़ों और
बकरियों के पेट में हों। मुझे दलील के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो। और इसी तरह
दो ऊंट की किस्म से हैं और दो गाय की किस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हARAM
किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस
क़त्त हजिर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था। फिर उससे ज्यादा जालिम
कौन है जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे ताकि वह लोगों को बहका दे बग़ैर इल्म के।
बेशक अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। कहो, मुझ पर जो 'वही' (ईश्वरीय
वाणी) आई है उसमें तो मैं कोई चीज नहीं पाता जो हARAM हो किसी खाने वाले पर सिवा
इसके कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ खून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह नापाक
है। या नाजाइज जबीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम पुकारा गया
हो। लेकिन जो शख्स भूख से बेइस्तियार हो जाए, न नाफरमानी करे और न ज्यादाती
करे, तो तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (144-146)

अरबों में गोश्त और दूध वगैरह के लिए जो जानवर पाले जाते थे उनमें से चार ज्यादा
मशहूर थे। भेड़ बकरी और ऊंट गाय। इनके बारे में उन्होंने तरह-तरह के तहरीमी (निषिद्धता के)
कायदे बनाए थे। मगर इन तहरीमी कायदों के पीछे अपने मुश्किलाना रवाजों के सिवा कोई दलील
उनके पास न थी। भेड़ और बकरी और ऊंट और गाय, चाहे न हों या मादा, अक्ली तौर पर
कोई हुरमत (मनाही) का सबब इनके अंदर मौजूद नहीं है, इनका तमाम का तमाम गोश्त इंसान
की बेहतरीन रिज़ा है। इनमें कोई ऐसी नापाक आदत भी नहीं जो इनके बारे में इंसानी तबीअत
में कराहियत पैदा करती हो। आसमान से उतरे हुए इल्म में भी इनकी हुरमत का जिक्र नहीं।

फिर क्यों ऐसा होता है कि इन हैवानात के बारे में लोगों के अंदर तरह-तरह के तहरीमी
(निषिद्धता के) कायदे बन जाते हैं। इसकी वजह शैतानी तर्ज़ीबात हैं। इंसान के अंदर फितरी
तौर पर खुदा का शुक्र और हARAM व हलाल का एहसास मौजूद है। आदमी अपने अंदरूनी
तक़जे के तहत किसी हस्ती को अपना खुदा बनाना चाहता है और चीजों में जाइज नाजाइज
का फर्क करना चाहता है। शैतान इस हकीकत को खूब जानता है। वह समझता है कि इंसान
को अगर सादा हालात में अमल करने का मौका मिला तो वह फितरत के सही रास्ते को पकड़
लेगा। इसलिए वह फितरत से इंसानी को कुंद करने के लिए तरह-तरह के ग़लत रवाज कायम
करता है। वह खुदा के नाम पर कुछ फर्जी खुदा गढ़ता है। वह हARAM व हलाल के नाम पर
कुछ बेबुनियाद मुहरमात (अवैध) वजअ करता है। इस तरह शैतान यह कोशिश करता है कि
आदमी इन्हीं फर्जी चीजों में उलझ कर रह जाए और असली सच्चाई तक न पहुंचे। वह सीधे
रास्ते से भटक चुका हो। मगर बजाहिर अपने को चलता हुआ देखकर यह समझे कि मैं
'रास्ते' पर हूँ। हालाँकि वह एक टेढ़ी लकीर हो न कि सीधा और सच्चा रास्ता।
जो लोग इस तरह शैतानी बहकावे का शिकार हों वे खुदा की नज़र में जालिम हैं। उन्हें
खुदा ने समझ दी थी जिससे वे हक व बातिल में तमीज कर सकते थे। मगर उनके तअस्सुबात
उनके लिए पर्दा बन गए। समझने की सलाहियत रखने के बावजूद समझने से दूर रहे।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَمًا
عَلَيْهِمْ شَحُومُهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ
ذَلِكَ جَزَاءُ بَعْضِهِمْ بِبَعْضٍ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ
وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ۝

और यहूद पर हमने सारे नाखून वाले जानवर हARAM किए थे और गाय और बकरी की
चरबी हARAM की सिवा उसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी
से मिली हुई हो। यह सजा दी थी हमने उन्हें उनकी सरकशी पर और यकीनन हम सच्चे
हैं। पस अगर वे तुम्हें झुटलाएं तो कह दो कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ (व्यापक) रहमत
वाला है। और उसका अजाब मुजरिम लोगों से टल नहीं सकता। (147-148)

शरीअते खुदावंदी में अस्ल मुहरमात (अवैध) हमेशा वही रहे हैं जो ऊपर की आयत में
बयान हुए। यानी मुर्दार, बहाया हुआ खून, सुअर का गोश्त और वे जानवर जिसे ग़ैर अल्लाह
के नाम पर जबह किया गया हो। इसके सिवा अगर कुछ चीजें हARAM हैं तो वे इन्हीं की तशरीह
व तफ़सील हैं।

मगर इसी के साथ अल्लाह की एक सुन्नते तहरीम (निषिद्धता) और है। वह यह कि जब
कोई किताब की हामिल कौम इताअत के बजाए सरकशी का तरीका इस्तियार करती है तो
उसकी सरकशी की सजा के तौर पर उसे नई-नई मुश्किलतात में डाल दिया जाता है। उस पर
ऐसी चीजें हARAM कर दी जाती हैं जो असलन शरीअते खुदावंदी में हARAM न थीं।

ख्वाहिश से ऊपर उठ नहीं पाता। वह बातिल को हक कहने के लिए खड़ा हो जाता है ताकि अपने अमल को जाइज साबित कर सके। उसकी ढिठाई उसे यहां तक ले जाती है कि वह खुदा की निशानियों को नजरअंदाज कर दे। वह इस बात से बेपरवाह हो जाता है कि खुदा उसे बिलआखिर पकड़ने वाला है। वह दूसरी-दूसरी चीजों को वह अहमियत दे देता है जो अहमियत सिर्फ खुदा को देना चाहिए।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّيَ عَلَيَّ إِلَّا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ ۚ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنٌ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ بِهَ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

कहो, आओ मैं सुनाऊं वे चीजें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हारम की हैं। यह कि तुम उसके साथ किसी चीज को शरीक न करो और मां बाप के साथ नेक सुलूक करो और अपनी औलाद को मुफ्तसी के डर से कत्ल न करो। हम तुम्हें भी रोजी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई के काम के पास न जाओ चाहे वह जाहिर हो या पोशीदा। और जिस जान को अल्लाह ने हारम ठहराया उसे न मारो मगर हक पर। ये बातें हैं जिनकी खुदा ने तुम्हें हिदायत फरमाई है ताकि तुम अक्ल से काम लो। (152)

खुदाई पाबंदी के नाम पर लोग तरह-तरह की रस्मी और जाहिरी पाबंदियां बना लेते हैं और उनका खुसूसी एहतिमाम करके मुतमइन हो जाते हैं कि उन्होंने खुदाई पाबंदियों का हक अदा कर दिया। मगर खुदा इंसान से जिन पाबंदियों का एहतिमाम चाहता है वे हकीकी पाबंदियां हैं न कि किसी क्रिस्म के रस्मी मजाहिर।

सबसे पहली चीज यह है कि आदमी एक खुदा को अपना खुदा बनाए। उसके सिवा किसी की बड़ाई का ग़लबा उसके जेहन पर न हो। उसके सिवा किसी को वह काबिले भरोसा न समझता हो। उसके सिवा किसी से वह उम्मीदें कायम न करे। उसके सिवा किसी से वह न डरे और न उसके सिवा किसी की शदीद मुहब्बत में मुक्ता हो।

वालिदेन अक्सर हालात में कमजोर और मोहताज होते हैं और औलाद ताकतवर। उनसे हुस्ने सुलूक का प्रेरक मफ़द (स्वार्थ) नहीं होता बल्कि सिर्फ हक़शनासी (दायित्व बोध) होता है। इस तरह वालिदेन के हुक्कू अदा करने का मामला आदमी के लिए एक बात का सबसे पहला इम्तेहान बन जाता है कि उसने खुदा के दीन को कौल की सतह पर इख़्तियार किया है या अमल की सतह पर। अगर वह वालिदेन की कमजोरी की बजाए उनके हक को अहमियत दे, अगर अपने दोस्तों और अपने बीवी बच्चों की मुहब्बत उसे वालिदेन से दूर न करे तो गोया उसने इस बात का पहला सुबूल दे दिया कि उसका अख़्लाक उसूलपसंदी और हक़शनासी के ताबेअ (अनुरूप) होगा न कि मफ़दात और मस्लेहत (हितों, स्वार्थों) के ताबेअ।

इंसान अपने हिर्स और जुम् की वजह से खुदा के पैदा किए हुए रिज्क को तमाम बंदों तक मुसिफाना तौर पर पहुंचने नहीं देता। और जब इसकी वजह से किल्लत के मसनूई (कृत्रिम) मसाइल पैदा होते हैं तो वह कहता है कि खाने वालों को कत्ल कर दो या पैदा होने वालों को पैदा न होने दो। इस क्रिस्म की बातें खुदा के रिज्क के निजाम पर बेहतान के हममअना हैं।

बहुत सी बुराइयां ऐसी हैं जो अपनी हैयत में इतनी फोहश (अश्लील) होती हैं कि इनकी बुराई को जानने के लिए किसी बड़े इल्म की जरूरत नहीं होती। इंसानी फितरत और उसका जमीर ही यह बताने के लिए काफी है कि यह काम इंसान के करने के काबिल नहीं। ऐसी हालत में जो शख्स किसी फह्शाशी या बेहयाई के काम में मुक्त्तिला हो वह गोया साबित कर रहा है कि वह उस इब्तिदाई इंसानियत के दर्जे से भी महरूम है जहां से किसी इंसान के इंसान होने का आगाज होता है।

हर इंसान की जान मोहतरम (सम्माननीय) है। किसी इंसान को हलाक करना किसी के लिए जाइज नहीं जब तक ख़लिक के क़ानून के मुताबिक वह कोई ऐसा जुर्म न करे जिसमें उसकी जान लेना मख़सूस शर्तों के साथ मुवाह (वैध) हो गया हो। ये बातें इतनी वाजेह हैं कि अक्ल से काम लेने वाला इनकी सदाक़त (सत्यता) जानने से महरूम नहीं रह सकता।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْكَيْلِ وَالْيَمِينِ بِالْقِسْطِ ۚ لَا تُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدُوا ۚ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۚ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ بِهَ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٢﴾
وَإِنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ بِهَ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

और यतीम के माल के पास न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और नाप तौल में पूरा इंसाफ करो। हम किसी के जिम्मे वही चीज लाजिम करते हैं जिसकी उसे ताक़त हो। और जब बोलो तो इंसाफ की बात बोलो चाहे मामला अपने रिश्तेदार ही का हो। और अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो। ये चीजें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अल्लाह ने हुक्म दिया कि यही मेरी सीधी शाहराह है। पस इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से जुदा कर देंगी। यह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम बचते रहो। (153-154)

यतीम किसी समाज का सबसे कमजोर फ़र्द होता है। वे तमाम इज्मी असबाब (अतिरिक्त कारक) उसकी जात में नहीं होते जो आम तौर पर किसी के साथ अच्छे सुलूक का प्रेरक बनते

हैं। 'यतीम' के साथ जिम्मेदारी का मामला वही शख्स कर सकता है जो खालिस उसूल बुनियाद पर बाकिरदार बना हो न कि फायदा और मस्लेहत (स्वार्थ) की बुनियाद पर। यतीम किसी समाज में हुस्ने सुलूक की आखिरी अलामत होता है। जो शख्स यतीम के साथ खैरख्वाहाना सुलूक करे वह दूसरे लोगों के साथ और ज्यादा खैरख्वाहाना सुलूक करेगा।

कायनात की हर चीज दूसरी चीज से इस तरह वाबस्ता है कि हर चीज दूसरे को वही देती है जो उसे देना चाहिए और दूसरे से वही चीज लेती है जो उसे लेना चाहिए। यही उसूल इंसान को अपनी जिंदगी में इस्तिस्नान करना है। इंसान को चाहिए कि जब वह दूसरे इंसान के लिए नापे तो ठीक नापे और जब तौले तो ठीक तौले। ऐसा न करे कि अपने लिए एक पैमाना इस्तेमाल करे और ग़ैर के लिए दूसरा पैमाना।

जिंदगी में बार-बार ऐसे मौके आते हैं कि आदमी को किसी के खिलाफ इन्हारे राय करना होता है। ऐसे मौकों पर खुदा का पसंदीदा तरीका यह है कि आदमी वही बात कहे जो इंसान से मेयार पर पूरी उतरने वाली हो। कोई अपना हो या ग़ैर हो। उससे दोस्ती के तअल्लूकत हों या दुश्मनी के तअल्लूकत, ऐसा शख्स हो जिससे कोई फायदा वाबस्ता है या ऐसा शख्स हो जिससे कोई फायदा वाबस्ता नहीं, इन तमाम चीजों की परवाह किए बग़ैर आदमी वही कहे जो फिलवाकअ दुस्त और हक़ है।

हर आदमी फितरत के अहद में बंधा हुआ है। कोई अहद लिखा हुआ होता है और कोई अहद वह होता है जो लफ्जों में लिखा हुआ नहीं होता मगर आदमी का ईमान, उसकी इंसानियत और उसकी शराफ़त का तक्का होता है कि इस मौके पर ऐसा किया जाए। दोनों किस्म के अहदों को पूरा करना हर मोमिन व मुस्लिम का फरीजा है। ये तमाम बातें इतिहाई वाजेह हैं। आसमानी 'वही' और आदमी की अक्ल उनके बरहक होने की गवाही देते हैं। मगर उनसे वही शख्स नसीहत पकड़ेगा जो खुद भी नसीहत पकड़ना चाहता हो।

ये अहकाम (151-153) शरीअते इलाही के बुनियादी अहकाम हैं। इन पर उनके सीधे मफहूम के एतबार से अमल करना खुदा की सीधी शाहराह पर चलना है। और अगर तावील और मूशिगाफियों (कृतकों) के जरिए उनमें शाखें निकाली जाएं और सारा जोर इन शाखों पर दिया जाने लगे तो यह इधर-उधर के विभिन्न रास्तों में भटकना है जो कभी आदमी को खुदा तक नहीं पहुँचाते।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّعِبَادِهِمُ الْمُقَرَّبِينَ ۚ وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا عَذَابَ مُرْحَمُونَ ۚ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنَ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَفِيلِينَ ۚ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا الْكِتَابَ لَكُنَّا أَهْدَى مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۖ سَجِرَى الَّذِينَ

يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۚ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي اٰيْمَانِهَا خَيْرًا ۚ قُلِ انْظُرُوا اِنْ اَنْتُمْ مُنْظَرُونَ ۚ

फिर हमने मूसा को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमतें पूरी करने के लिए और हर बात की तफसील और हिदायत और रहमत ताकि वे अपने रब के मिलने का यकीन करें। और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली किताब। पस इस पर चलो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहमत की जाए। इसलिए कि तुम यह न कहने लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी और हम उन्हें पढ़ने पढ़ाने से बेखबर थे। या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते। पस आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक रोशन दलील और हिदायत और रहमत। तो उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और उनसे मुंह मोड़े। जो लोग हमारी निशानियों से एराज (उपेक्षा) करते हैं हम उन्हें उनके एराज की पादाश में बहुत बुरा अजाब देंगे। ये लोग क्या इसके मुंजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएँ या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुँचेगी तो किसी शख्स को उसका ईमान नफा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो। कहो तुम राह देखो, हम भी राह देख रहे हैं। (155-159)

खुदा की तरफ से जो किताब आती है उसमें अगरचे बहुत सी तफसीलात होती हैं मगर बिलआखिर उसका मकसद सिर्फ एक होता है यह कि आदमी अपने रब की मुलाक़त पर यकीन करे। यानी दुनिया में वह इस तरह जिंदगी गुजारे कि वह अपने हर अमल के लिए अपने आपको खुदा के यहां जवाबदेह समझता हो। उसकी जिंदगी एक जिम्मेदाराना जिंदगी हो न कि आजद और बेइद जिंदगी। यही पिछली किताबों का मकसद था और यही कुरआन का उद्देश्य भी है।

खुदा ने बाकी दुनिया को बराहेरास्त अपने ज़ब्री हुक्म के तहत अपना पाबंद बना रखा है। मगर इंसान को उसने पूरा इस्तिस्नान दे दिया है। उसने इंसान की हिदायत का यह तरीका रखा है कि रसूल और किताब के जरिए दलाइल की जवान में वह लोगों को हक और बातिल से बाखबर करता है। दुनिया में खुदा की मर्जी लोगों के सामने दलील की सूत में जाहिर होती है। यहां दलील को मानना खुदा को मानना है और दलील को झुठलाना खुदा को झुठलाना। कियामत का धमाका होने के बाद तमाम छुपी हुई हकीकतें लोगों के सामने आ जाएंगी।

उस वक्त हर आदमी खुदा और उसकी बातों को मानने पर मजबूर होगा। मगर उस वक्त के मानने की कोई कीमत नहीं। मानना वही मानना है जो हालते ग़ैब में मानना हो। ईमान दरअसल यह है कि देखने के बाद आदमी जो कुछ मानने पर मजबूर होगा उसे वह देखे बग़ैर मान ले। जो शख्स देखकर माने उसने गोया माना ही नहीं।

जो लोग आज इख़्तियार की हालत में अपने को खुदा का पाबंद बना लें उनके लिए खुदा के यहां जन्मत है। इसके बरअक्स जो लोग कियामत के आने के बाद खुदा के आगे झुकेंगे उनका झुकना सिर्फ उनके जुर्म को और भी ज़्यादा साबित करने के हममअना होगा। इसका मतलब यह होगा कि उन्होंने, खुद अपने एतराफ के मुताबिक, एक मानने वाली बात को न माना, उन्होंने एक किए जाने वाले काम को न किया।

إِنَّ الَّذِينَ فَرَقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا سَتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنْ أَمَرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرٌ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

जिन्होंने अपने दीन में राहें निकालीं और गिरोह-गिरोह बन गए तुम्हें उनसे कुछ सरोकार नहीं। उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर वही उन्हें बता देगा जो वे करते थे। जो शख्स नेकी लेकर आएगा तो उसके लिए उसका दस गुना है। और जो शख्स बुराई लेकर आएगा तो उसे बस उसके बराबर बदला मिलेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। (160-161)

दीन यह है कि आदमी एक खुदा के सिवा किसी को अपनी ज़िंदगी में बरतर मक़ाम न दे। वह हक़शनासी (दायित्व बोध) की बुनियाद पर तअल्लुम्मत कायम करे न कि मफ़द (स्वार्थ) की बुनियाद पर, जिसकी पहली अलामत वालिदेन हैं। वह रिजक को खुदा का अतिया समझे और खुदाई निजाम में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) न करे, इस मामले में आदमी की गुमराही उसे औलाद के क़त्ल और तहदीदे नस्ल (परिवार नियोजन) की हिमाक़त तक ले जाती है। वह फ़ोहश और बेहयाई के कामों से बचे ताकि बुराई के बारे में उसके दिल की हस्सासियत ज़िंदा रहे। वह कमजोर का इस्तहसाल (शोषण) न करे जिसका करीबी इस्तेहान आदमी के लिए यतीम की सूरत में होता है। वह हुकूम की अदायगी और लेन देन में तराजू की तरह बिल्कुल ठीक-ठीक रहे। वह अपनी ज़बान का इस्तेमाल हमेशा हक के मुताबिक करे। वह इस एहसास के साथ ज़िंगी गुजारे कि हर हाल में वह अहदे खुदावंदी में बंधा हुआ है, वह किसी भी वक्त खुदाई अहद की जिम्मेदारियों से आज़ाद नहीं है। यही किसी आदमी के लिए खुदा की पसंद के मुताबिक ज़िंगी गुजारने का सीधा रास्ता है। आदमी को चाहिए कि वह दाएं बाएं भटके बग़ैर इस सीधे रास्ते पर हमेशा कायम रहे।

ऊपर जो दस अहक़ाम (151-153) बयान हुए हैं वे सब सादा फ़ितरी अहक़ाम हैं। हर

आदमी की अक्ल उनके सच्चे होने की गवाही देती है। अगर सिर्फ इन चीज़ों पर ज़ोर दिया जाए तो कभी इस्तेलाफ और फ़िस्सफ़ी न हो। मगर जब कैमों में ज़वाल (पतन) आता है तो उनमें ऐसे रहनुमा पैदा होते हैं जो इन सादा अहक़ाम में तरह-तरह की ग़ैर फ़ितरी शिकें निकालते हैं। यही वह चीज है जो दीनी इस्तेहाद को टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

तौहीद में अगर यह बहस छेड़ी जाए कि खुदा जिस्म रखता है या वह बग़ैर जिस्म है। यतीम के मामले में मूशियाफियां (कुतर्क) की जाएं कि यतीम होने की शराइत क्या हैं। या यह नुक़ता निकाला जाए कि इन खुदाई अहक़ाम पर उस वक्त तक अमल नहीं हो सकता जब तक हुकूमत पर कब्ज़ा न हो। इसलिए सबसे पहला काम 'ग़ैर इस्लामी' हुकूमत को बदलना है। इस किस्म की बहसें अगर शुरू कर दी जाएं तो इनकी कोई हद न होगी। और उन पर उम्मी इत्तेफ़ाक़ हासिल करना नामुमकिन हो जाएगा। इसके बाद मुक़ल्लिफ़ फ़ित्री (वैचारिक) हलकेबनौ। अलग-अलग फ़िस्के और जमाअतें कायम होंगी। आपसी इस्तेफ़ाक़ आपस में बिखराव की सूरत इख़्तियार कर लेगा।

इस सादा और फ़ितरी दीन पर अपनी सारी तवज्जोह लगाना सबसे बड़ी नेकी है। मगर इसके लिए आदमी को नफ़स से लड़ना पड़ता है। माहौल की नासाजगारी के बावजूद सब्र और कुर्बानी का सुबूत देते हुए उस पर जमे रहना होता है। यह एक बड़ा पुरमशक्क़त अमल है इसलिए इसका बदला भी खुदा के यहां कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है। जो लोग बुराई करते हैं, जो खुदा की दुनिया में खुदा के मुकर्रर रास्ते के सिवा दूसरे रास्तों पर चलते हैं वे अगरचे बहुत बड़ा जुर्म करते हैं। ताहम खुदा उनके ख़िलाफ़ इंतक़ामी कार्रवाई नहीं करता। वह उन्हें उतनी ही सजा देता है जितना उन्होंने जुर्म किया है।

قُلْ إِنِّي هَدَيْتَنِي رَبِّيَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ دِينًا قِيمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۝ قُلْ أَغْوَى اللَّهُ ابْنِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ۖ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

कहो मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता बता दिया है। सही दीने इब्राहीम की मिल्लत की तरफ जो एकसू थे और मुश्किन (बहुदेववादियों) में से न थे। कहो मेरी नमाज़ और मेरी

बाकी लोगों के लिए वह सिर्फ उस बुरे अंजाम से डराने के हममअना होकर रह जाती है जिसकी तरफ वे अपनी सरकशी की वजह से बढ़ रहे हैं। दाजी यह देखकर तड़पता है कि जो चीज मुझे कामिल सदाकत के रूप में दिखाई दे रही है उसे बेशतर लोग बातिल समझ कर ठुकरा रहे हैं। जो चीज मेरी नजर में पहाड़ से भी ज्यादा अहम है उसके साथ लोग ऐसी बेपरवाही का सुलूक कर रहे हैं जैसे उसकी कुछ हकीकत ही न हो, जैसे वह बिल्कुल बेअस्त हो।

यह दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां हर आदमी के लिए मौका है कि अगर वह किसी बात को न मानना चाहे तो वह उसे न माने, यहां तक कि वह उसे रद्द करने के लिए खूबसूरत अल्फाज भी पा ले। मगर यह सूरतेहाल बिल्कुल आरज़ी है। इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही अचानक खुल जाएगा कि दाजी की बात लोहे और पत्थर से भी ज्यादा साबितशुदा थी। यह सिर्फ मुख़ालिफ़ीन का तअस्सुब और उनकी अनानियत (अहंकार) थी जिसने उन्हें दलील को दलील की सूरत में देखने न दिया। उस वक़्त खुल जाएगा कि हक के दाजी की बातों की रद्द में जो दलीलें वे पेश करते थे वे महज धांधली थी न कि हकीकी मअनों में कोई इस्तदलाल (तर्क)।

दुनिया में जो चीज़ें किसी को बावजन बनाती हैं वे ये कि उसके गिर्द मादुदी रौनके जमा हों। वह अल्फ़ाज के दरिया बहाने का फन जानता हो। उसके साथ अवाम की भीड़ इकट्ठा हो गई हो। क्योंकि हक के दाजी के साथ आम तौर पर ये असबाब जमा नहीं होते इसलिए दुनिया के लोगों की नजर में उसकी बात बेवजन और उसके मुख़ालिफ़ों की बात वजनदार बन जाती है। मगर क्रियामत जब बनावटी पर्दों को फाड़ेगी तो सूरतेहाल बिल्कुल वरअक्स हो जाएगी। अब सारा वजन हक की तरफ होगा और नाहक बिल्कुल बेदलील और बेवैमत हेफ़र रह जाएगा।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَكِ اسْجُدُوا لِلْآدَمِ فَسَجَدُوا ۖ
إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يُكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۖ قَالَ مَا مَنَعَكَ إِلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۚ
قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۖ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا
فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ ۖ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۖ قَالَ
أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۖ قَالَ فَبِمَا
أَعْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ ثُمَّ لَاتِيَهُم مِّنْ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ
شَاكِرِينَ ۖ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْذُومًا مَّدْحُورًا لَّنْ تَبْعَكَ مِنْهُمْ
لَا مَلَأْنَا جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

और हमने तुम्हें जमीन में जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें ज़िंदगी का सामान फराहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने तुम्हारी सूरत बनाई। फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो। पस उन्होंने सज्दा किया। मगर इब्लीस (शैतान) सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। खुदा ने कहा कि तुझे किस चीज ने सज्दा करने से रोका जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था। इब्लीस ने कहा कि मैं इससे बेहतर हूँ। तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से। खुदा ने कहा कि तू उतर यहां से। तुझे यह हक नहीं कि तू इसमें घमंड करे। पस निकल जा, यकीनन तू जलील है। इब्लीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए तू मुझे मोहलत दे जबकि सब लोग उठाए जाएंगे। खुदा ने कहा कि तुझे मोहलत दी गई। इब्लीस ने कहा कि चूंकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी लोगों के लिए तेरी सीधी राह पर बैटूंगा। फिर उन पर आऊंगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से, और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुजार न पाएगा। खुदा ने कहा कि निकल यहां से जलील और ठुकराया हुआ। जो कोई उनमें से तेरी राह पर चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा। (10-18)

खुदा ने इंसान को इस दुनिया में जो कुछ दिया है इसलिए दिया है कि उसका नफिसयाती जवाब वह शुक्र की सूरत में पेश करे। मगर यही वह चीज है जिसे आदमी अपने खब के सामने पेश नहीं करता। इसकी वजह यह है कि शैतान उसके अंदर दूसरे-दूसरे जज्बात उभार कर उसे शुक्र की नफिसयात से दूर कर देता है।

आदम और इब्लीस के किस्से से मालूम होता है कि दुनिया में हिदायत और गुमराही का मअरका कहां बरपा है। यह मअरका उन मौकों पर बरपा है जहां आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफिसयात जागती है। इस्तेहान की इस दुनिया में बार-बार ऐसा होता है कि एक आदमी दूसरे आदमी से ऊपर उठ जाता है। कभी कोई शख्स दौलत व इज्जत में दूसरे से ज्यादा हिस्सा पा लेता है। कभी दो आदमियों के दर्मियान ऐसा मामला पड़ता है कि एक शख्स के लिए दूसरे को उसका जाइज हक देना अपने को नीचे गिराने के हममअना नजर आता है। कभी किसी शख्स की जबान से खुदा एक सच्चाई का एलान कराता है और वह उन लोगों को अपने से बरतर दिखाई देने लगता है जो उस सच्चाई तक पहुंचने में नाकाम रहे थे। ऐसे मौकों पर शैतान आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफिसयात जगा देता है। मैं बेहतर हूँ के जज्बे से मगलूब होकर वह दूसरे का एतराफ करने के लिए तैयार नहीं होता। यही खुदा की नजर में शैतान के रास्ते पर चलना है। जिस शख्स ने ऐसे मौकों पर हसद और घमंड का तरीका इख्तियार किया उसने अपने को जहन्नमी अंजाम का मुस्तहिक बना लिया जो शैतान के लिए मुकद्दर है और जिसने ऐसे मौकों पर शैतान के पैदा किए हुए जज्बात को अपने अंदर कुचल डाला उसने इस बात का सुबूत दिया कि वह इस काबिल है कि उसे जन्नत के बागों में बसाया जाए।

जो कुछ किसी को मिलता है खुदा की तरफ से मिलता है। इसलिए किसी की फजीलत

का एतराफ दरख्त खुदा की तक्सीम के बरहक होने का एतराफ है और उसकी फजीलत को न मानना खुदा की तक्सीम को न मानना है। इसी तरह जब एक शख्स किसी हक की बिना पर दूसरे के आगे झुकता है तो वह किसी आदमी के आगे नहीं झुकता बल्कि खुदा के आगे झुकता है। क्योंकि ऐसा वह खुदा के हुक्म की बिना पर कर रहा है न कि उस आदमी के जाती फल की बिना पर।

وَيَا دَا مُرْسِكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ فَوَسَّوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَاتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَائِينَ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ۝ وَقَاسَمَهُمَا إِنْ كُنَا لَنِالْمَلَأَيْنِ النَّاصِيحِينَ ۝

और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहां से चाहो। मगर उस दरख्त के पास न जाना वरना तुम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि वह खोल दे उनकी वह शर्म की जगहें जो उनसे छुपाई गई थीं। उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें इस दरख्त से सिर्फ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फरिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की जिंदगी हासिल हो जाए। और उसने कसम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का खैरखाह (हितैषी) हूँ। (19-21)

जन्नत अपनी तमाम वस्तुओं के साथ आदम और उनकी बीवी के लिए खुली हुई थी। उसमें तरह-तरह की चीजें थीं और खुदा की तरफ से उन्हें आज्ञा दी थी कि उन्हें जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें। बेशुमार जाइज चीजों के दर्मियान सिर्फ एक चीज के इस्तेमाल से रोक दिया था। शैतान ने उसी ममनूआ (निषिद्ध) मकाम से उन पर हमला किया। उसने वसवसाअंदजियों के जरिए सिखाया कि जिस चीज से तुम्हें रोका गया है वही जन्नत की अहमतर चीज है। उसी में तकद्दुस (पवित्रता) और अबदियत का सारा राज छुपा हुआ है। आदम और उनकी बीवी इब्लीस की मुसलसल तल्कीन से मुतास्सिर हो गए। और बिलआखिर ममनूआ दरख्त का फल खा लिया। मगर जब उन्होंने ऐसा किया तो नतीजा उनकी उम्मीदों के बिल्कुल बरअक्स निकला। उनकी इस खिलाफवर्जी ने खुदा का लिबासे हिफाजत उनके जिस्म से उतार दिया। वह उस दुनिया में बिल्कुल बेयारोमदगार होकर रह गए जहां इससे पहले उन्हें तरह-तरह की सुहूलत और हिफाजत हासिल थी।

इससे मालूम हुआ कि शैतान का वह खास हरबा क्या है जिससे वह इंसान को बहका कर खुदा की रहमत व नुसरत (मदद) से दूर कर देता है। वह है हलाल रिज्क के पैले हुए मैदान को आदमी की नजर में कमतर करके दिखाना और जो चन्द चीजें हराम हैं उन्हें खूबसूरत

तौर पर पेश करके यकीन दिलाना कि तमाम बड़े-बड़े फायदों और मस्तेहतों का राज बस इन्हीं चन्द चीजों में छुपा हुआ है।

शैतान अपना यह काम हर एक के साथ उसके अपने जौक और हालात के एतबार से करता है। किसी को तमाम कीमती गिजाओं से बेराबत करके यह सिखाता है कि शानदार तंदरुस्ती हासिल करना चाहते हो तो शराब पियो। कहीं लाखों बेरोजगार मर्द काम करने के लिए मौजूद होंगे मगर वह तर्फीब देगा कि अगर तरक्की की मंजिल तक जल्द पहुंचना चाहते हो तो औरतों को घर से बाहर लाकर उन्हें मुखालिफ तमद्दुनी (सांस्कृतिक) शोबों में सरगम कर दो। किसी के पास अपने मुखालिफ को जेर करने का यह कबिले अमल तरीका मौजूद होगा कि वह अपने आपको मुस्तहकम (सुदृढ़) बनाए मगर शैतान उसके कान में डालेगा कि तुम्हारे लिए अपने मुखालिफ को शिकस्त देने का सबसे ज्यादा कारगर तरीका यह है कि उसके खिलाफ तख्बीबी (विध्वंसक) कारवाइयां शुरू कर दो। किसी के लिए 'अपनी तामीर आप' के मैदान में काम करने के लिए बेशुमार मौके खुले हुए होंगे मगर वह सिखाएगा कि दूसरों के खिलाफ एहतेजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालबे का तूफान बरपा करना अपने को कामयाबी की तरफ ले जाने का सबसे ज्यादा करीबी रास्ता है। किसी के सामने हुक्मते वक्त से टकराव किए बगैर बेशुमार दीनी काम करने के लिए मौजूद होंगे मगर वह उसे इस गलतफहमी में डालेगा कि गैर इस्लामी हुक्मरानों को अगर किसी न किसी तरह फांसी पर चढ़ा दिया जाए या उन्हें गोली मार कर खत्म कर दिया जाए तो इसके बाद आनन-फानन इस्लाम का मुकम्मल निजाम सारे मुल्क में कायम हो जाएगा, वगैरह।

فَدَلَّهِمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذَرْقِ الْجَنَّةِ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْتُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا ۖ وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ۝

पस मायल कर लिया उन्हें फरेब से। फिर जब दोनों ने दरख्त का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं। और वे अपने को बाग के पत्तों से ढांकने लगे और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस दरख्त (वृक्ष) से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें माफ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे। खुदा ने कहा, उतरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन

होगे, और तुम्हारे लिए जमीन में एक खास मुद्दत तक ठहरना और नफा उठाना है। खुदा ने कहा, उसी में तुम जियोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (22-25)

आदम और शैतान दोनों एक दूसरे के दुश्मन की हैसियत से जमीन पर भेजे गए हैं। अब कियामत तक दोनों के दर्मियान यही जंग जारी है। शैतान की मुसलसल कोशिश यह है कि वह इंसान को अपने रास्ते पर लाए और जिस तरह वह खुद खुदा की रहमत से महरूम हुआ है इंसान को भी खुदा की रहमत से महरूम कर दे। इसके मुकाबले में इंसान को यह करना है कि वह शैतान के मंसूबे को नाकाम बना दे। वह शैतान की पुकार को नजरअंदाज करके खुदा की पुकार की तरफ दौड़े।

आदम और शैतान की यह जंग अमलन इंसानों में दो गिरोह बन जाने की सूरत में जाहिर होती है। कुछ लोग शैतान की तर्गीबात (प्रेरणा) का शिकार होकर उसकी सफ में शामिल हो जाते हैं। और कुछ लोग खुदा की आवाज पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कह कर यह खतरा मोल लेते हैं कि शैतान के तमाम साथी उसे बेइज्जत करने और नाकाम बनाने के लिए हर किस्म की तदबीरें करना शुरू कर दें। हर दौर में यह देखा गया है कि सच्चे हकपरस्त जो हमेशा कम तादाद में होते हैं, लोगों की सख्ततरीन अदावतों का शिकार रहते हैं। इसकी वजह यही शैतान की दुश्मनाना कारवाइयां हैं। वह लोगों को सच्चे हकपरस्त आदमी के खिलाफ भड़का देता है। वह मुख़लिफ तरीक़ों से लोगों के दिल में उसके ख़िलाफ नफ़रत की आग भरता है। चुनांचे वे शैतान का आलाकार बनकर ऐसे आदमी को सताना शुरू कर देते हैं।

शैतान का अस्ल जुर्म एतराफ न करना था। शैतान की यह कोशिश होती है कि हर आदमी के अंदर यही एतराफ न करने का मिजाज पैदा कर दे। वह छोटे को भड़काता है कि वह अपने बड़े का लिहाज न करे। मामलात के दौरान जब एक शख्स के जिम्मे दूसरे का कोई हक आता है तो वह उसे सिखाता है कि वह हकदार का हक अदा न करे। कोई खुदा का बंदा सच्चाई का पैगाम लेकर उठता है तो लोगों के दिलों में तरह-तरह के शुबहात डाल कर उन्हें आमादा करता है कि वे उसकी बात न मानें। दो फ़रीक़ों (पक्षों) के दर्मियान निजाअ (विवाद) हो और एक फ़रीक़ अपने हलाल के एतबार से कुछ ठेस पर राज़ हो जाए तो शैतान दूसरे फ़रीक़ के ज़हन में यह डालता है कि उसकी पेशकश को कुबूल न करो, और इतना ज्यादा का मुतालबा करो जो वह न दे सकता हो। ताकि जंग व फ़साद मुस्तक़िल तौर पर जारी रहे।

इस तरह शैतान के बहकावों से हर जगह लोगों के दर्मियान दुश्मनियां जारी रहती हैं। इंसानों में दो गिरोह बन जाते हैं और उनमें ऐसा टकराव शुरू होता है जो कभी ख़त्म नहीं होता।

يَبْنِيْ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُؤْوِيْ سَوَاتِكُمْ وَرِيْشًا وَّلِبَاسٌ مِّنَ التَّقْوٰى
ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيَةِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ۝ يَبْنِيْ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمْ
الشَّيْطٰنُ كَمَا اَخْرَجَ اٰبَوٰيَكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسًا مِّنَ اَلْبُرِّ يَهُمَا سَوَاتِلَهُمَا

اِنَّ يَزِيْرَكُمْ هُوَ وَّقَبِيْلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرْوُوْنَهُمْ ۚ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِيْنَ
اَوْلِيَاءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

ऐ बनी आदम, हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे बदन के काबिले शर्म हिस्सों को ढके और ज़िन्नत (साज-सज्जा) भी। और तक्वा (ईश-परायणता) का लिबास इससे भी बेहतर है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग ग़ौर करें। ऐ आदमी की औलाद, शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां बाप को ज़िन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके लिबास उतरवाए ताकि उन्हें उनके सामने बेपर्दा कर दे। वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते। (26-27)

दुनिया का निज़ाम खुदा ने इस तरह बनाया है कि इसकी जाहिरि चीज़ें इसकी बातिनी हकीकतों की अलामत हैं। जाहिरि चीज़ों पर ग़ौर करके आदमी छुपी हुई हकीकतों तक पहुंच सकता है। इसी किस्म की एक चीज़ लिबास है।

खुदा ने इंसान को लिबास दिया जो उसकी हिफाजत करता है और इसी के साथ उसके हुस्न व वक़ार को बढ़ाने का जरिया भी है। यह इस बात का इशारा है कि आदमी के रूहानी वजूद के लिए भी इसी तरह एक लिबास जरूरी है, यह लिबास तक्वा है। तक्वा आदमी का मअनवी (अर्थपूर्ण) लिबास है। जो एक तरफ उसे शैतान के हमलों से बचाता है और दूसरी तरफ उसके बातिन (भीतर) को संवार कर उसे ज़िन्नत की लतीफ व नफीस दुनिया में बसाने के काबिल बनाता है। यह तक्वा का लिबास क्या है। यह है अल्लाह का ख़ैफ़, हक़ का एतराफ, अपने लिए और दूसरों के लिए एक मेयार रखना, अपने को बंदा समझना, तवाजोअ (विनम्रता) को अपना शिआर बनाना, दुनिया में गुम होने के बजाए आख़िरत (परलोक) की तरफ मुतवज्जह रहना। आदमी जब इन चीज़ों को अपनाए तो वह अपने अंदरूनी वजूद को ढकता है और अगर वह इसके ख़िलाफ़ रवैया इख़्तियार करता है तो वह अपने अंदरूनी को नंगा कर लेता है। जाहिरि जिस्म को कपड़े का बना हुआ लिबास ढांकता है और बातिनी (भीतरी) जिस्म को तक्वा (परहेजगारी, ईश-परायणता) का लिबास।

आदमी को गुमराह करने के लिए शैतान का तरीका यह है कि वह उसे बहकाता है। वह खुदा के ममनूआ दरख़्त को हर किस्म के ख़ैर का सरचश्मा (स्रोत) बताता है। वह ऐसे मासूम रास्तों से उसकी तरफ आता है कि आदमी का गुमान भी नहीं जाता कि उधर से उसकी तरफ गुमराही आ रही होगी। शैतान आदमी के तमाम नाजुक मक़ामात को जानता है और उन्हीं नाज़ुक मक़ामात से वह उस पर हमलाआवर होता है। कभी एक बेख़्तीक़ नज़रिये को ख़ूबसूरत अल्फ़ज़ में बयान करता है। कभी एक जुर्न (आंशिक) ख़ैफ़ के कुली हकीक़ के रूप में उसके सामने लाता है। कभी मामूली चीज़ों में फायदों का ख़ूजना बताकर सारे लोगों को उसकी तरफ दौड़ा देता है। कभी एक बेमयदा हरकत में तरक्की का राज

बताता है। कभी एक तख्तीबी (विध्वंसक) अमल को तामीर के रूप में पेश करता है।

शैतान किन लोगों को बहकाने में कामयाब होता है। वह उन लोगों पर कामयाब होता है जो इम्तेहान के मौकों पर ईमान का सबूत नहीं दे पाते। जो खुदा की निशानियों पर गौर नहीं करते। जो दलाइल (तर्कों) की जवान में बात को समझने के लिए तैयार नहीं होते। जिन्हें अपने जती रुहान के मुकबले में हक के तकजे को तरजीह देना गवारा नहीं होता। जिन्हें ऐसी सच्चाई, सच्चाई नजर नहीं आती जिसमें उनके फायदों और मस्तेहतों की रियायत शामिल न हो। जिन्हें वह हक पसंद नहीं आता जो उनकी जात को नीचे करके खुद उनके मुकबले में ऊंचा होना चाहता हो।

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آيَةً وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ اتَّقُوا اللَّهَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ۝ فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّقْتَدُونَ ۝

और जब वे कोई फोहश (खुली बुराई) करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और खुदा ने हमें इसी का हुक्म दिया है। कहो, अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के जिम्मे वह बात लगाते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। कहो कि मेरे रब ने किस्त (न्याय) का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज के वक्त अपना रुख सीधा रखो। और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को खालिस करते हुए। जिस तरह उसने तुम्हें पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे। एक गिरोह को उसने राह दिखा दी और एक गिरोह है कि उस पर गुमराही साबित हो चुकी। उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना रफीक बनाया और गुमान यह रखते हैं कि वे हिदायत पर हैं। (28-30)

❖ (प्राचीन) अरब में लोग नंगे होकर काबा का तवाफ करते और इसकी हिमायत में यह कहते कि खुदा की इबादत दुनिया की गंदगियों से پاک होकर फितरी हालत में करना चाहिए। हालांकि नंगापन ऐसी खुली हुई बुराई है जिसका बुरा होना अक्लेआम से मालूम हो सकता है। इसी तरह आदमी यह अकीदा कायम कर लेता है कि बेअमली और सरकशी के बावजूद सिफारिशों की बुनियाद पर खुदा उसे इनामात से नवाजेगा हालांकि वह अपने सरकश गुलामों के मामले में महज किसी के कहने से ऐसा नहीं कर सकता। मामूली मामूली नाकाबिलेफहम आमाल जिनसे दुनिया में एक घर भी नहीं बन सकता उनसे यह उम्मीद कर

लेता है कि वे आखिरत में उसके लिए आलीशान महल तामीर कर देंगे। अल्फाज का शोर व गुल जिससे दुनिया में एक दरख्त भी नहीं उगता उनके मुतअल्लिक यह खुशगुमानी कायम कर लेता है कि वे आखिरत में उसके लिए जन्नत के बाग उगा रहे हैं।

किस्त से मुयाद वह मुसिफाना रविश है जो हर नाप में पूरी उतरे, वह ऐन वही हो जो कि होना चाहिए। इबादत इंसान की एक फितरी ख्वाहिश है। वह किसी को सबसे ऊंचा मान कर उसके आगे अपने को डाल देना चाहता है। इस मामले में किस्त यह होगा कि आदमी सिर्फ खुदा का इबादतगुजार बने जो उसका खलिक और रब है। इंसान किसी को यह मकाम देना चाहता है कि वह उसके लिए एतमाद की बुनियाद हो। इस मामले में किस्त यह होगा कि आदमी खुदा को अपनी जिंदगी में एतमाद की बुनियाद बनाए जो सारी ताकतों का मालिक है। इसी तरह मौत के बाद एक और जिंदगी को मानना ऐन किस्त है। क्योंकि आदमी जब पैदा होता है तो वह अदम (अस्तित्वहीनता) से वजूद की सूरत इख्तियार करता है। इसलिए मौत के बाद दुबारा पैदा होने को मानना ऐन उसी हकीकत को मानना है जो अव्वल पैदाइश के वक्त हर आदमी के साथ पेश आ चुकी है।

हक के दाओ का इंकार करने के लिए आदमी कदीम बुजुर्गों का सहारा लेता है। कदीम बुजुर्ग वे लोग होते हैं जिनकी अज्मत तारीखी तौर पर कायम हो चुकी है। हर आदमी की नजर में उनका हक पर होना मुसल्लमा अम्र (वास्तविकता) बना हुआ होता है। दूसरी तरफ सामने का हक का दाओ एक नया आदमी होता है जिसके साथ अभी तारीख की तस्दीक जमा नहीं हुई है। कदीम बुजुर्गों को आदमी उसकी तारीख के साथ देख रहा होता है और नए दाओ को उसकी तारीख के बगैर। वह कदीम बुजुर्गों के नाम पर हक के दाओ का इंकार कर देता है और समझता है कि वह ऐन हिदायत पर है। मगर इस तरह की गलतफहमी किसी के लिए खुदा के यहां उज (विवशता) नहीं बन सकती। यह खुदा के नाम पर शैतान की पैवी है न कि हकीकतन खुदा की पैवी।

يٰۤاَيُّهَا اٰدَمُ خُذْ زَيْنَتَكَ كُلُّ مَسْجِدٍ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زَيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِي اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ كَذٰلِكَ نَفْصَلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّهَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاَنْ تُشْرَبُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

ऐ औलादे आदम, हर नमाज के वक्त अपना लिबास पहनो और खाओ पियो। और हद से तजावुज (सीमा उल्लंघन) न करो। बेशक अल्लाह हद से तजावुज करने वालों को पसंद नहीं करता। कहो अल्लाह की जीनत (साज-सज्जा) को किसने हराम किया जो उसने अपने बंदों के लिए निकाला था और खाने की पाक चीजों को। कहो वे दुनिया

की जिंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आखिरत (परलोक) में तो वे खास उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। कहे मेरे ख ने तो बस फोहश (अश्लील) बातों को हराम ठहराया है वे खुली हों या छुपी। और गुनाह को और नाहक की ज्यादाती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के जिम्मे ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते। (31-33)

अरब के कुछ कबीले नंगे होकर काबे का तवाफ करते थे और उसे बड़ी कुरबत का जरिया समझते थे। इसी तरह जाहिलियत के जमाने में कुछ लोग ऐसा करते कि जब वे हज के लिए निकलते तो कुछ मुतअय्यन चीजें मसलन बकरी का दूध या गोशत इस्तेमाल करना छोड़ देते और यह ख्याल करते कि वे परहेजगारी का कोई बड़ा अमल कर रहे हैं। यह गुमराही की वह किस्म है जिसमें हर जमाने के लोग मुक्ति रहे हैं। ऐसे अपराध अपनी हकीमी और मुस्तकिल जिंदगी में दीन के तकाजों को शामिल नहीं करते। अलबत्ता चन्द मौकों पर कुछ ग़ैर मुतअल्लिक किस्म के बेफ़ायदा आमाल का ख़ुसी एहतिमांम करके यह मुजाहिदा करते हैं कि वे ख़ुदा के दीन पर मामूली जुज़्यात (अंशों) की हद तक अमल कर रहे हैं। वे ख़ुदा की मर्ज़्यात पर कामिल अदायगी की हद तक कायम हैं।

इंसान के बारे में अल्लाह की असल मर्जी तो यह है कि आदमी इसराफ (हद से बढ़ने) से बचे, वह ख़ुदा की मुकर्र की हुई हदों से तजावुज न करे। वह हलाल को हराम न करे और ख़ुदा की हराम की हुई चीजों को अपने लिए हलाल न समझ ले। वह फोहश कामों से अपने को दूर रखे। वह उन बुराइयों से बचे जिनका बुरा होना अक्लेआम से साबित होता है। वह बगावत की रविश को छोड़ दे। जब भी उसके सामने कोई हक आए तो हर दूसरी चीज को नजरअंदाज करके वह हक को इख़्तियार कर ले। वह शिर्क से अपने आपको पूरी तरह पाक करे, अल्लाह के सिवा किसी से वह बरतर तअल्लुक कायम न करे जो सिर्फ एक ख़ुदा का हक है। वह ऐसा न करे कि अपनी पसंद का एक तरीका इख़्तियार करे और उसे बिना दलील ख़ुदा की तरफ मंसूब कर दे, अपने जाती दीन को ख़ुदा का दीन कहने लगे। वह पूरी तरह ख़ुदा का बंदा बनकर रहे, ऐसी कोई रविश इख़्तियार न करे जो बंदा होने के एतबार से उसके लिए दुरुस्त न हो।

आखिरत में किसी को जो नेमतें मिलेंगी वे बतौर इनाम मिलेंगी। इसलिए वे सिर्फ उन ख़ुदा के बंदों के लिए होंगी जिनके लिए ख़ुदा जन्नत में दाखिले का फैसला करेगा। मगर दुनिया में किसी को जो नेमतें मिलती हैं वह महदुद मुद्दत के लिए बतौर आजमाइश मिलती हैं। इसलिए यहां की नेमतों में हर एक को उसके इस्तेहान के पर्चे के बक़द हिस्सा मिल जाता है। इस इस्तेहान में पूरा उतरने का तरीका यह नहीं है कि आदमी ख़ुद इस्तेहान के सामान से दूरी इख़्तियार कर ले। बल्कि सही तरीका यह है कि उन्हें मुकर्र की हुई हदों के मुताबिक इस्तेमाल करे। वह उनके मिलने पर शुक्र का जवाब पेश करे न कि बेनियाजी और ढिठाई का।

وَلَكِنْ أَتَيْتُمْ أَجَلَ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۝
يَبْنِي أَدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنْ أَتَىٰ فَمَنْ أَتَىٰ وَأَصْلَهُ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم مِّنَ الْكِتَابِ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ ثَمَّهُمْ
رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلُوا ضَلُّوا عَنَّا
وَشَهِدُوا عَلَيَّ أَنْفُسُهُمْ أَنَّهُمْ كَانُوا الْكَافِرِينَ ۝

और हर कौम के लिए एक मुकर्रह मुद्दत है। फिर जब उनकी मुद्दत आ जाएगी तो वे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। ऐ बनी आदम, अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख्स डरा और जिसने इस्लाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग मेरी आयतों को झुठलाएं और उनसे तकब्बुर करें वही लोग दोजख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। फिर उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वे उन्हें मिलकर रहेगा। यहां तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी जान लेने के लिए उनके पास पहुंचेंगे तो उनसे पूछेंगे कि अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम पुकारते थे कहां हैं। वे कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए। और वे अपने ऊपर इकरार करेंगे कि बेशक वे इंकार करने वाले थे। (34-37)

मौजूदा दुनिया में किसी को काम का मौका उसी वक्त तक है जब तक उसकी इस्तेहान की मुकर्रह मुद्दत पूरी हो जाए। फर्द (व्यक्ति) की मुद्दत उसकी उम्र के साथ पूरी होती है। मगर वैम के बारे में मुकर्रह फैसले के निफ़ज (लागू होने) की इस किस्म की कोई हद नहीं। इसका फैसला इस बुनियाद पर किया जाता है कि हक के सामने आने के बाद वह उसके साथ क्या मामला करती है। जिस कौम की मुद्दत पूरी हो जाए उसको कभी ग़ैर मामूली अजाब भेज कर फना कर दिया जाता है और कभी उसकी सजा यह होती है कि उसे इज्जत व बड़ई के मक़ाम से हटा दिया जाए।

किसी आदमी के लिए जन्नत या दोजख़ का फैसला इस बुनियाद पर किया जाता है कि उसके सामने जब हक आया है तो उसने उसके साथ क्या मामला किया। जब भी कोई हक ऐसे दलाइल के साथ सामने आ जाए जिसकी सदाकत (सच्चाई) पर आदमी की अक्ल गवाही दे रही हो तो उस आदमी पर गोया ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गई। इसके बाद भी अगर आदमी

उस हक को मानने से इंकार करता है तो वह यकीनन किन्न (अहं, बड़ाई) की वजह से ऐसा कर रहा है। अपने आपको बड़ा रखने की नफिसयात उसके लिए रुकावट बन गई कि वह हक को बड़ा बना कर उसके मुकाबले में अपने को छोटा बनाने पर राजी कर ले। ऐसे आदमी के लिए खुदा के यहां जहन्नम के सिवा कोई अंजाम नहीं।

आदमी जब भी हक का इंकार करता है तो वह किसी एतमाद के ऊपर करता है। किसी को दैलत व इक्तदार का एतमाद होता है। कोई अपनी इज्जत व मकबूलियत पर भरोसा किए हुए होता है। किसी को यह एतमाद होता है कि उसके मामलात इतने दुरुस्त हैं कि हक को न मानने से उसका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। किसी को यह नाज होता है कि उसकी जिहानत ने अपनी बात को ऐन खुदा की बात साबित करने के लिए शानदार अल्फाज दरयाफ्त कर लिए हैं। मगर यह इंसान की बहुत बड़ी भूल है। वह आजमाइश की चीजों को एतमाद की चीज समझे हुए है। कियामत के दिन जब ये तमाम झूठे सहारे उसका साथ छोड़ देंगे तो उस वक्त उसके लिए यह समझना मुश्किल न होगा कि वह महज सरकशी की बिना पर हक का इंकार करता रहा। अगरचे अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए वह बहुत से उसूली अल्फाज बोलता था।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّى إِذَا كُوفِيَهَا جَمِيعًا قَالَتْ أَخْرِهُمُ لَأُولَهُم رِبًّا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَاتَّهَمُوا عَدَا بَا ضَعُفًا مِنَ النَّارِ قَالَ يَكُلُّ ضِعْفٌ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَقَالَتْ أُولَهُمُ لَأَخْرُجُكُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنا مِنْ فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

खुदा कहेगा, दाखिल हो जाओ आग में जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं। जब भी कोई गिरोह जहन्नम में दाखिल होगा वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा। यहां तक कि जब वे उसमें जमा हो जाएंगे तो उनके पिछले अपने अगले वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब, यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया पस तू उन्हें आग का दोहरा अजाब दे। खुदा कहेगा कि सबके लिए दोहरा है मगर तुम नहीं जानते। और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई फजीलत (श्रेष्ठता) हासिल नहीं। पस अपनी कमाई के नतीजे में अजाब का मजा चखो। (38-39)

इस आयत में 'उम्मत' से मुराद गुमराह करने वाले लीडर और 'उख्त' से मुराद गुमराह होने वाले अवाम हैं। आखिरत में जब हर दौर के बेराह कायदीन और उनका साथ देने वाले बेराह अवाम जहन्नम में डाले जाएंगे तो यह एक बड़ा इबरतनाक मंजर होगा। दुनिया में तो वे एक दूसरे के बड़े खैरब्राह और फिदाकार बने हुए थे। कायदीन (लीडर) अपने अवाम की हर ख्वाहिश का एहतराम

करते थे और अवाम अपने कायदीन को हीरो बनाए हुए थे। मगर जब जहन्नम की आग उन्हें पकड़ेगी तो उनकी आंखों से तमाम मस्नूई (बनावटी) पर्दे हट जाएंगे। अब हर एक दूसरे को उसके असली रूप में देखने लगेगा। पैरवी करने वाले अपने कायदीन से कहेंगे कि तुम पर लानत हो। तुम्हारी कयादत कैसी बुरी कयादत थी जिसने चन्द दिन के झूठे तमाशे दिखाए और इसके बाद हमें इतनी बड़ी तबाही में डाल दिया। इसके जवाब में कायदीन अपने पैरोकारों से कहेंगे कि तुम अपनी पसंद का एक दीन चाहते थे और ऐसा दीन हमारे पास देखकर हमारे पीछे दौड़ पड़े। वर्ना ऐन उसी जमाने में ऐसे भी खुदा के बंद थे जो तुम्हें कामयाबी के सच्चे रास्ते की तरफ बुलाते थे। तुमने उनकी पुकार सुनी मगर तुमने उनकी तरफ कोई तवज्जोह न दी।

रहनुमा अपने पैरोकारों से कहेंगे कि तुम किसी एतबार से हमसे बेहतर नहीं हो। हमने अपनी ख्वाहिशों की खातिर कयादतें खड़ी कीं और तुमने भी अपनी ख्वाहिशों की खातिर हमारा साथ दिया। हकीकत के एतबार से दोनों का दर्जा एक है। इसलिए यहां तुम्हें भी वही सजा भुगतनी है जो हमारे लिए हमारे आमाल के सबब से मुकद्दर की गई है।

पैरोकारों की जमाअत अपने रहनुमाओं के बारे में खुदा से कहेंगी कि उन्होंने हमें गुमराह किया था इसलिए उन्हें हमारे मुकाबले में दुगना अजाब दिया जाए। जवाब मिलेगा कि तुम्हारे रहनुमाओं में से हर एक को दुगना अजाब मिल रहा है मगर तुम्हें इसका एहसास नहीं है। हकीकत यह है कि जहन्नम में जिसे जो अजाब मिलेगा वह उसे इतना ज्यादा सख्त मालूम होगा कि वह समझेगा कि मुझसे ज्यादा तकलीफ में कोई दूसरा नहीं है। हर शख्स जिस तकलीफ में होगा वही तकलीफ उसे सबसे ज्यादा मालूम होगी।

दुनिया में मफादपरस्त (स्वार्थी) रहनुमा और उनके मफादपरस्त पैरोकार खूब एक दूसरे के दोस्त बने हुए हैं। हर एक के पास दूसरे के लिए उम्दा अल्फाज हैं। हर एक दूसरे की बेहतरी में लगा हुआ है। मगर आखिरत में हर एक दूसरे से नफरत करेगा, हर एक दूसरे को शदीदतर (सख्त) अजाब में धकेलना चाहेगा।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفْعَلُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهِمْ أَنْهَرُوا قَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَنْ تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे तकबुर (घमंड) किया उनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जाएंगे और वे जन्नत में दाखिल न होंगे जब तक कि ऊंट सूई के नाके में न घुस जाए। और हम मुजरिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। उनके लिए दोजख का बिछोना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा। और हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए हम किसी शर पर उसकी ताकत के मुवाफिक ही बेझ डालते हैं यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उनके सीने की हर खलिश (दुराव) को हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहां तक पहुंचाया और हम राह पाने वाले न थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न करता। हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे। और आवाज आएगी कि यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए हो अपने आमाल के बदले। (40-43)

खुदा के दाअियों के मुकाबले में क्यों ऐसा होता है कि उनके मदऊ के अंदर मुतकब्बिराना नपिसयात जाग उठती हैं और वे उन्हें मानने से इंकार कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि दाअी की तरफ सिर्फ निशानी (दलील) का जोर होता है और मदऊ की तरफ मादूदी रौनकों का जोर। दाअी दलील की बुनियाद पर खड़ा होता है और उसके मदऊ मादूदियात (संसाधनों) की बुनियाद पर। दलील की ताकत दिखाई नहीं देती और मादूदी ताकत आंखों से दिखाई देती है। यही फर्क लोगों के अंदर किन्न (अह) मिजाज पैदा कर देता है। लोग दाअी को अपने मुक़बले में हकीर (तुच्छ) समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

ऐसे लोगों का खुदा की रहमत में दाखिल होना उतना ही नामुमकिन है जितना ऊंट का सूई के नाके में दाखिल होना। उन्होंने खुदा को नजरअंदाज किया इसलिए खुदा ने भी उन्हें नजरअंदाज कर दिया। खुदा ने अपने दाअी के जरिए उन्हें अपनी झलकियां दिखाई। खुदा उनके सामने दलाइल के रूप में जाहिर हुआ। मगर उन्होंने उसे बेवजन समझा। उन्होंने खुदाई निशानियों के सामने झुकने से इंकार कर दिया। ऐसा लोग क्योंकर खुदा की रहमतों में हिस्सा पा सकते हैं।

दोजखियों का यह हाल होगा कि जो लोग दुनिया में एक दूसरे के दोस्त बने हुए थे वे वहां एक दूसरे से नफरत करने लगेंगे। और एक दूसरे पर लानत कर रहे होंगे। मगर जन्नत का माहौल इससे बिल्कुल मुक़्तलिफ होगा। यहां सबके दिल एक दूसरे के लिए खुले हुए होंगे। हर एक के दिल में दूसरे के लिए मुहब्बत और खैरख्वाही का चश्मा फूट रहा होगा। दोजखी इंसान के लिए उसका माजी (अतीत) एक दुख भरी दास्तान बना हुआ होगा और जन्नती इंसान के लिए उसका माजी एक खुशगवार याद।

बुरे लोगों के लिए उनकी अगली जिंदगी इस तरह शुरू होगी कि उनका सीना हसरत और यास (नाउम्मीदी) का कब्रस्तान बना हुआ होगा। उनका माजी (अतीत) उनके लिए तलख यादों के सिवा और कुछ न होगा। दूसरी तरफ अच्छे लोगों का यह हाल होगा कि उनकी जबानें उस खुदा की याद से तर होंगी जिसे उन्होंने बजा तौर पर अपना सहारा बनाया था। वे हक के

अलमबरदारों की दी हुई खबर को ऐन सच्चा पाकर खुश हो रहे होंगे कि खुदा का यह कितना बड़ा एहसान था कि उसने उन्हें उन हक के दाअियों का साथ देने की तौफिक अता फरमाई।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ قَالُوا مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَعُوكُمَا عَوجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ كَفُورُونَ ۝

और जन्नत वाले दोजख वालों को पुकारेंगे कि हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसे सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के वादे को सच्चा पाया। वे कहेंगे हां। फिर एक पुकारने वाला दोनों के दर्मियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो जालिमों पर। जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते थे और वे आखिरत (परलोक) के मुंकिर थे। (44-45)

इन आयतों में कदीम जमाने के कुछ लोगों ने यह सवाल उठाया था कि जन्नत और जहन्नम तो एक दूसरे से बहुत ज्यादा दूर वाकअ होंगी, जन्नत आसमानों के ऊपर होगी और दोजख सबसे नीचे तहतुस्सरा में। फिर जन्नत वालों की आवाज जहन्नम वालों तक किस तरह पहुंचेगी। मगर अब रेडियो और टेलिविजन के दौर में यह सवाल कोई सवाल नहीं। आज इंसान यह जान चुका है कि दूर के फासलों से किसी को देखना भी मुमकिन है और उसकी आवाज को सुना भी। जो बात कदीम इंसान को नाकबिलेफहम नजर आती थी वह आज के इंसान के लिए खुद अपने तजर्बात व मुशाहिदात की रोशनी में पूरी तरह काबिलेफहम हो चुकी है। इससे मालूम हुआ कि कुरआन की कोई बात अगर आज की मालूमात की रोशनी में समझ में न आ रही हो तो इस बिना पर उसके बारे में कोई हुक्म नहीं लगाना चाहिए। ऐन मुमकिन है कि इल्म के इजाफे के बाद कल वह चीज एक जानी पहचानी चीज बन जाए जो आज बजाहिर अनजान चीज की तरह दिखाई दे रही है।

इसका मतलब यह नहीं कि आखिरत (परलोक) में जन्नतियों और दोजखियों के दर्मियान तअल्लुक मौजूदा किस्म के रेडियो और टेलिविजन के जरिए कायम होगा। इसका मतलब सिर्फ यह है कि जदीद दर्याफतों ने इस बात को काबिलेफहम बना दिया है कि खुदा की कायनात में ऐसे इंतजामात भी मुमकिन हैं कि एक दूसरे से बहुत दूर रहकर भी दो आदमी एक दूसरे को देखें और एक दूसरे से बखूबी तौर पर बात करें।

किसी दलील का वजन आदमी उसी वक्त समझ पाता है जबकि वह उसके बारे में संजीदा हो। जो लोग आखिरत को अहमियत न दें वे आखिरत के मुतअल्लिक दलाइल का वजन भी महसूस नहीं कर पाते। आखिरत की बात उनके सामने इतिहाई मजबूत दलाइल के साथ आती है। मगर इसके बारे में उनका गैर संजीदा जेहन उसके अंदर कोई न कोई ऐब तलाश

कर लेता है। वे तरह-तरह के एतराजात निकाल कर खुद भी शक व शबह में मुब्तला होते हैं और दूसरों को भी शक व शबह में मुब्तला करते हैं। ऐसे लोग खुदा की नजर में सख्त मुजरिम हैं। वे आखिर में सिर्फ खुदा की लानत के मुस्तहिक होंगे चाहे दुनिया में वे अपने को खुदा की रहमतों का सबसे बड़ा हकदार समझते रहे हों।

कोई दलील चाहे कितनी ही वजनी और कर्तई हो, आदमी के लिए हमेशा यह मौका रहता है कि वह कुछ खूबसूरत अल्फाज बोल कर उसकी सदावक्त के बारे में लोगों को मुशतबह कर दे। अवांम एक हकीमी दलील और एक लफ्फी शेष में फर्क नहीं कर पाते इसलिए वे इस किसम की बातें सुनकर हक से बिदक जाते हैं। मगर जो लोग समझने की सलाहियत रखने के बावजूद इस तरह के शोशे निकाल कर लोगों को हक से बिदकाते हैं वे आखिरत के दिन खुदा की रहमतों से आखिरी हद तक दूर होंगे।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَنَادَوُا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمُوا عَلَيْنَا لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۖ وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۚ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ۖ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ۝

और दोनों के दर्मियान एक आड़ होगी। और आराफ (जन्नत और जहन्नम के बीच की जगह) के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे मगर वे उम्मीदवार होंगे। और जब दोजख वालों की तरफ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमें शामिल न करना इन जालिम लोगों के साथ। और आराफ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आई तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना। क्या यही वे लोग हैं जिनके बारे में तुम कसम खाकर कहते थे कि उन्हें कभी अल्लाह की रहमत न पहुंचेगी। जन्नत में दाखिल हो जाओ, अब न तुम पर कोई डर है और न तुम शमगीन होगे। (46-49)

दुनिया में ऐसा होता है कि खुदा की नेमतों और उसकी जानिब आई हुई सख्तियों से मोमिन व मुस्लिम सब यकसां दो चार होते हैं। मगर आखिरत में ऐसा नहीं होगा। वहां दोनों के दर्मियान 'आड़' कायम हो जाएगी। वहां मोमिनीन को मिली हुई नेमतों की कोई खुशबू मुकिरों को नहीं मिलेगी और इसी तरह मुकिरों को मिली हुई तकलीफों का कोई असर जन्नत वालों तक नहीं पहुंचेगा।

अरफ के मअना अरबी जवान में बुलन्दी के होते हैं। आराफ वाले का मतलब है बुलन्दियों वाले। इससे मुराद पैगम्बरों और दाअियों का गिरोह है जिन्होंने मुख्तलिफ वक्तों में लोगों को हक का पैगाम दिया। कियामत में जब लोगों का हिसाब होगा और हर एक को मालूम हो चुका होगा कि उसका अंजाम क्या होने वाला है और हक के दाअी की बात जो वह दुनिया में कहता था आखिरी तौर पर सही साबित हो चुकी होगी उस वक्त हर दाअी अपनी कौम को खिताब करेगा। खुदा के हुक्म से आखिरत में उनके लिए ऊंचा स्टेज मुहय्या किया जाएगा जिस पर खड़े होकर वे पहले अपने मानने वालों को खिताब करेंगे। ये लोग अभी जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे मगर वे इसके उम्मीदवार होंगे। इसके बाद उनका रुख उनके झुटलाने वालों की तरफ किया जाएगा। वे उनकी बुरी हालत देखकर कमाले अब्दियत (बंदगी व अजिजी) की वजह से कह उठेंगे कि खुदाया हमें इन जालिमों में शामिल न कर। वे मुकिरों के गिरोह के लीडरों को उनके चहरे की हैयत से पहचान लेंगे और उनसे कहेंगे कि तुम्हें अपने जिस जख्ते और अपने जिस साजोसामान पर घमंड था और जिसकी वजह से तुमने हमारे हक के पैगाम को झुटला दिया वह आज तुम्हारे कुछ काम न आ सका।

हक का इंकार करने वाले वक्त के कायमशुदा निजाम के साए में होंगे। इस दुनिया में उनकी हैसियत हमेशा मजबूत होती है। इसके बरअक्स (विपरीत) जो लोग हक के दाअियों का साथ देते हैं उनका साथ देना सिर्फ इस कीमत पर होता है कि वक्त के जमे हुए निजाम की सरपरस्ती उन्हें हासिल न रहे। इसके नतीजे में ऐसा होता है कि जो लोग हक को नहीं मानते वे मानने वालों की बेचारगी को देखकर उनका मजाक उड़ाते हैं। वे कहते हैं कि क्या यही वे लोग हैं जो खुदा की जन्नतों में जाएंगे। असहाबे आराफ कियामत में ऐसे लोगों से कहेंगे कि अब देख लो कि हकीकत क्या थी और तुम उसे क्या समझे हुए थे। बिलआखिर कौन कामयाब रहा और कौन नाकाम ठहरा।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَزَمَهُمْ عَلَى الْكُفْرَيْنِ ۚ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتُهُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ نَنسِفُهُمْ كَمَا نَسَوُا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۝

और दोजख के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है। वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों चीजों को मुकिरों के लिए हराम कर दिया है। वे जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में डाल रखा था। पस आज हम उन्हें भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया था और जैसा कि वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। (50-51)

दुनिया दो किस्म की गिजाओं का दस्तरख्वान है। एक दुनियावी और दूसरी उख़रवी। एक इंसान वह है जिसकी रूह की गिजा यह है कि वह अपनी जात को नुमायां होते हुए देखे। दुनिया की रैनकें अपने गिर्द पाकर उसे खुशी हासिल होती हो। मादूदी साजोसामान का मालिक होकर वह अपने को कामयाब समझता है। ऐसा आदमी खुदा और आख़िरत को भूला हुआ है। उसके सामने खुदा की बात आएगी तो वह उसे ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देगा। वह उसके साथ ऐसा सरसरी सुलूक करेगा जैसे वह कोई संजीदा मामला न हो बल्कि महज खेल तमाशा हो।

ऐसे आदमी के लिए आख़िरत के इनामात में कोई हिस्सा नहीं। उसने अपने अंदर एक ऐसी रूह की परवरिश की जिसकी गिजा सिर्फ दुनिया की चीजें बन सकती थीं। फिर आख़िरत की चीजों से उसकी रूह क्योंकि अपनी ख़राक पा सकती है, जो इंसान आज आख़िरत में न जिया हो उसके लिए आख़िरत, कल के दिन भी जिंदगी का जरिया नहीं बन सकती।

दूसरा इंसान वह है जो ग़ैबी हकीकतों में गुम रहा हो। जिसकी रूह को आख़िरत की याद में लज्जत मिली हो। जिसकी गिजा यह रही हो कि वह खुदा में जिए और खुदा की फज़ाओं में सांस ले। यही वह इंसान है जिसके लिए आख़िरत रिज्क का दस्तरख्वान बनेगी। वह जन्नत के बाग़ों में अपने लिए जिंदगी का सामान हासिल कर लेगा। उसने ग़ैब (अप्रकट) के आलम में खुदा को पाया था इसलिए शुहूद (प्रकट) आलम में भी वह खुदा को पा लेगा।

खुदा की दुनिया में आदमी खुदा को क्यों भुला देता है। इसकी वजह यह है कि खुदा ऐसी निशानियों के साथ सामने आता है जो सिर्फ सोचने से जेहन की पकड़ में आती हैं, जबकि दुनिया की चीजें आंखों के सामने अपनी तमाम रैनकों के साथ मौजूद होती हैं। आदमी जाहिरी चीजों की तरफ झुक जाता है और खुदा की तरफ इशारा करने वाली निशानियों को नजरअंदाज कर देता है। मगर ऐसा हर अमल दुनिया की कीमत पर आख़िरत को छोड़ना है। और जिसने मौत से पहले वाली जिंदगी में आख़िरत को छोड़ा वह मौत के बाद वाली जिंदगी में भी आख़िरत से महरूम रहेगा।

अल्लाह जब एक चीज को हक की हैसियत से लोगों के सामने लाए और वे उसे अहमियत न दें, वे उसके साथ ग़ैर संजीदा मामला करें तो यह दरअसल खुद खुदा को ग़ैर अहम समझना और उसके साथ ग़ैर संजीदा मामला करना है। दुनिया में हक को नजरअंदाज करने से आदमी का कुछ बिगड़ता नहीं, हक की पुश्त पर जो खुदाई ताकतें हैं वे अभी ग़ैब में होने की वजह से उसे नजर नहीं आती। यह सूरतेहाल उसे धोखे में डाल देती है। जो लोग इस तरह हक को नजरअंदाज करें वे यह ख़तरा मोल लेते हैं कि खुदा भी आख़िरत के दिन उन्हें नज़अंदाज कर दे।

وَلَقَدْ جِئْتُهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٥﴾
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوا مِنْ قَبْلُ
قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ

فَنَعْمَلْ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٦﴾

और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बुनियाद पर मुस्तसल (विस्तृत) किया है, हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। क्या अब वे इसी के मुंतज़िर हैं कि उसका मजमून जाहिर हो जाए। जिस दिन उसका मजमून जाहिर हो जाएगा तो वे लोग जो उसे पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के पैग़म्बर हक लेकर आए थे। पर अब क्या कोई हमारी सिफारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफारिश करें या हमें दुबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि हम उससे मुज़ल्लिफ अमल करें जो हम पहले कर रहे थे। उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया वह जो वे गढ़ते थे। (52-53)

कुरआन आदमी को मौत के बाद आने वाली जिंदगी से डराता है, वह आख़िरत के हिसाब किताब से लोगों को आगाह करता है। मगर आदमी चौकन्ना नहीं होता। कुरआन की ये ख़बरें अगरचे महज ख़बरें नहीं हैं बल्कि वे कायनात की अटल हकीकतें हैं। ताहम अभी वे वाक़ेयात की सूरत में जाहिर नहीं हुई, अभी वे मुस्तकबिल के पर्दे में छुपी हुई हैं। इस बिना पर ग़ाफ़िल इंसान यह समझता है कि ये सिर्फ कहने की बातें हैं। वे उन्हें ग़ैर अहम समझ कर नज़अंदाज कर देता है।

मगर ये बातें खुदा की तरफ से हैं जो तमाम बातों का जानने वाला है। जिन लोगों ने अपनी फितरत को बिगाड़ा नहीं है। जिनकी आंखों पर मस्नूई (बनावटी) पर्दे पड़े हुए नहीं हैं वे कुरआन की इन बातों को अपने दिल की आवाज़ पाएंगे। वे उन्हें ऐन वही चीज मालूम होंगी जिसकी तलाश उनकी फितरत पहले से कर रही थी। कुरआन उनके लिए जिंदगी और यकीन का रूजना बन जाएगा।

इसके बरअक्स हाल उन लोगों का है जो कुरआन की आगाही को कोई संजीदा चीज नहीं समझते। वे अपनी इसी ग़फलत की हालत में पड़े रहेंगे यहां तक कि वह वक्त उन पर फट पड़े जिसकी ख़बर उन्हें दी जा रही है। उस वक्त आदमी अचानक देखेगा कि वह बिल्कुल बेसहारा हो चुका है। वह जिन मसाइल को अहम समझ कर उनमें उलझा हुआ था उस दिन वे बिल्कुल बेहकीकत नजर आएंगे। वह जिन चीजों पर भरोसा किए हुए था वे सब उसका साथ छोड़ चुके होंगे। वह जिन उम्मीदों पर जी रहा था वे सब झूठी खुशख़बालियां साबित होंगी।

आख़िरत का मसला आज महज एक नजरिया है, वह बजाहिर कोई संपीन मसला नहीं। इसलिए आदमी इसके बारे में संजीदा नहीं हो पाता। मगर मौत के बाद आने वाली जिंदगी में जब आख़िरत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ फट पड़ेगी, उस वक्त हर आदमी उस बात को मानने पर मजबूर होगा जिसे वह इससे पहले मानने को तैयार नहीं होता था। उस वक्त आदमी जान लेगा कि इससे पहले जो बात दलील की जवान में कही जा रही थी वह ऐन

हकीकत थी मगर मैं उसके बारे में संजीदा न हो सका इसलिए मैं उसे समझ भी न पाया।

जब वे तमाम चीजें आदमी का साथ छोड़ देंगी जिन्हें वह दुनिया में अपना सहारा बनाए हुए था तो वह चाहेगा कि दुनिया में उसे दुबारा भेज दिया जाए ताकि वह सही जिंदगी गुजारे। मगर जिंदगी का यह मौक़ा किसी को दुबारा मिलने वाला नहीं।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى الْبَيْتَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۖ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝
أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह उड़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किए सूरज और चांद और सितारे, सब ताबेदार हैं उसके हुक्म के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। अपने रब को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके। यकीनन वह हद से गुजरने वालों को पसंद नहीं करता। और जमीन में फ़साद न करो उसकी इस्लाह के बाद। और उसी को पुकारो ख़ौफ़ के साथ और तमअ (आशा) के साथ। यकीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से करीब है। (54-56)

जमीन व आसमान और उसकी तमाम चीजों का पैदा करने वाला खुदा है। इस पैदा करने की एक सूरत यह भी थी कि वह तमाम चीजों को बनाकर उन्हें इतिशार (बिखराव) की हालत में छोड़ देता। मगर उसने ऐसा नहीं किया। उसने तमाम चीजों को एक हद दर्जा कामिल और हकीमाना निजाम के तहत जोड़ा और उन्हें इस तरह चलाया कि हर चीज ठीक उसी तरह काम करती है जैसा कि मज़्मूई मस्लेहत के एतबार से उसे करना चाहिए।

इंसान भी इसी दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा है। फिर ऐसी इस्लाहयाफ़ता दुनिया में उसका रवैया क्या होना चाहिए। उसका रवैया वही होना चाहिए जो बाकी तमाम चीजों का है। वह भी अपने आपको उसी ख़ालिक के मंसूबे में दे दे जिसके मंसूबे में बाकी कायनात पूरी ताबेदारी के साथ अपने आपको दिए हुए है।

कायनात की तमाम चीजें एहसान (सर्वोत्तम कारकदर्गी) की हद तक अपने आपको खुदा के मंसूबे में शामिल किए हुए हैं। इसलिए इंसान को भी एहसान की हद तक अपने आपको

उसके हवाले कर देना चाहिए। यहां कोई चीज कभी ऐतिदा (अपनी मुकर्ररह हद से तजावुज) नहीं करती। इसलिए इंसान के वास्ते भी लाज़िम है कि वह अदूल और हक़ की खुदाई हदों से तजावुज न करे। मज़ीद यह कि इंसान नुक़ (बेलने) और शुऊर की इजाज़ी खुसूसियात रखता है। इसलिए नुक़ और शुऊर की सतह पर भी उसका रब के हवाले होने का इज़हार होना ज़रूरी है। इंसान के अंदर खुदा की मअरफ़त इतनी गहराई तक उतर जाना चाहिए कि उसकी जवान से बार-बार इसका इज़हार होने लगे। वह खुदा को इस तरह पुकारे जिस तरह बंदा अपने ख़ालिक व मालिक को पुकारता है। उसे खुदा की खुदाई का इतना इदराक़ (ज्ञान) होना चाहिए कि खुदा के सिवा उसकी उम्मीदों और उसके अदेशों का कोई केन्द्र बाकी न रहे। वह खुदा ही से डरे और उसी से अपनी तमाम तमन्नाएं वाबस्ता करे। खुदा के साथ ख़ौफ़ और उम्मीद को वाबस्ता करना खुदा की ताबेदारी की आखिरी और इंतहाई सूरत है।

बंदे की सबसे बड़ी कामयाबी यह है कि उसे खुदा की रहमत हासिल हो, मगर यह रहमत सिर्फ़ उन लोगों का हिस्सा है जो अल्लाह के साथ अपने आपको इतना ज़्यादा मुतअल्लिक कर लें कि उनके तमाम जच्चात का रुख़ अल्लाह की तरफ़ हो जाए। वे उसी को पुकारें और उसी के साथ आजिजी करें। उन्हें पाने की उम्मीद उसी से हो और छिनने का डर भी उसी से। यही लोग हैं जिन्होंने खुदा की कुरबत चाही इसलिए खुदा ने भी उन्हें अपने करीब जगह दे दी।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَيْنٍ يَدْعِي رَحْمَتَهُ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقِقَتْ لِبْدَلٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَاهُ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَالَّذِي خَبَتْ لَا يُخْرِجُهُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْأَيَّاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ۝

और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत के आगे खुशख़बरी बनाकर भेजता है। फिर जब वे बोझिल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी खुशक सरजमीन की तरफ़ हंफ़ देते हैं। फिर हम उसके ज़रिए पानी उतारते हैं। फिर हम उसके ज़रिए से हर किस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम ग़ौर करो। और जो जमीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है उसके रब के हुक्म से और जो जमीन ख़राब है उसकी पैदावार कम ही होती है। इसी तरह हम अपनी निशानियां मुज़ल्लिफ़ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं। (57-58)

दुनिया को खुदा ने इस तरह बनाया है कि उसके मादूदी (भौतिक) वाक़ेयात उसके रूहानी पहलुओं की तमसील (उदाहरण) बन गए हैं।

जब कहीं बारिश होती है तो उस मक़ाम के हर हिस्से तक उसका पानी यकसां तौर पर पहुंचता है। मगर फ़ैज उठने के एतबार से मुज़ल्लिफ़ ज़मीनों का हाल मुज़ल्लिफ़ है ता है। कोई

हिस्सा वह है कि पानी उसे मिला तो उसके अंदर से एक लहलहाता हुआ चमनिस्तान निकल आया। दूसरी तरफ किसी हिस्से का हाल यह होता है कि वह बारिश पाकर भी बेफैज (अलाभावित) पड़ा रहता है। वहां झाड़ झंकाड़ के सिवा कुछ नहीं उगता।

यही हाल उस रूहानी बारिश का है जो खुदा की तरफ से हिदायत की सूरत में उतरी है। इस हिदायत का पैगाम हर आदमी के कानों तक पहुंचता है। मगर फायदा हर एक को अपनी-अपनी इस्तेदाद (सामर्थ्य) की बद्ध मिलता है। जिसके अंदर हक को कुबूल करने की सलाहियत (क्षमता) जिंदा है वह उससे भरपूर फैज हासिल करता है। इससे उसे एक नई जिंदगी मिलती है। उसकी फितरत अचानक जाग उठती है। उसका रब अपने मालिकेआला से कायम हो जाता है। उसकी खुशक नफिसयात में रबानी कैफियात का बाग खिल उठता है।

इसके बरअक्स हाल उस शख्स का होता है जिसने अपनी फितरी सलामती को खो दिया हो। हिदायत की बारिश अपने तमाम बेहतरीन इम्कानात के बावजूद उसे कोई फायदा नहीं पहुंचाती। इसके बाद भी वह वैसा ही खुशक पड़ा रहता है जैसा कि वह इससे पहले था। और अगर उसके अंदर कोई फल निकलती है तो वह भी झाड़ झंकाड़ की फल होती है। हिदायत की बारिश पाकर उसके अंदर से हसद, कibr (अहं), हुजतबाज, हक की मुखलिफत जैसी चीजें जाग उठती हैं न कि हक का एतराफ करने और उसका साथ देने की।

बारिश के पानी को कुबूल करने के लिए जमीन का खुशक होना जरूरी है। जो जमीन खुशक न हो, पानी उसके ऊपर से गुजर जाएगा, वह उसके अंदर दाखिल नहीं होगा। इसी तरह खुदा की हिदायत सिर्फ उस आदमी के अंदर जड़ पकड़ती है जो उसका तालिब हो, जिसने अपनी रूह को ग़ैर खुदाई बातों से खाली कर रखा हो। इसके बरअक्स जो शख्स खुदा की हिदायत से बेपरवाह हो, जिसका दिल दूसरी दिलचस्पियों या दूसरी अज्मतों में अटका हुआ हो, उसके पास खुदा की हिदायत आएगी मगर वह उसके अंदरून में दाखिल नहीं होगी, वह उसकी रूह की गिजा नहीं बनेगी, वह उसकी फितरत की जमीन को सैराब करके उसके अंदर खुदा का बाग नहीं उगाएगी।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ الْبَلَاءُ مِّنْ قَوْمِهِ ۖ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأُنصِتُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ أَوْحَجِبْتُمْ
أَن جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا ۖ وَاعْلَمُوا
تَرْحَمُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِ ۖ وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝

ع

हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा। नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। उसकी कौम के बड़ों ने कहा कि हमें तो यह नजर आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुत्तिला हो। नूह ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझमें कोई गुमराही नहीं है। बल्कि मैं भेजा हुआ हूं सारे आलम के परवरदिगार का। तुम्हें अपने रब के पैगामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारी खैरखाही कर रहा हूं। और मैं अल्लाह की तरफ से वह बात जानता हूं जो तुम नहीं जानते। क्या तुम्हें इस पर तज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख्स के जरिए आई ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर रहम किया जाए। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ कश्ती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। बेशक वे लोग अंधे थे। (59-64)

हजरत आदम के बाद तकरीबन एक हजार साल तक तमाम आदम की औलाद तौहीद पर कायम थी। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि इसके बाद लोगों ने अपने अकाबिर असलाफ (पूर्वजों) की शक्लें बनाना शुरू कीं ताकि उनके अहवाल व इबादात की याद ताजा रहे। उन बुजुर्गों के नाम वुद, सुवाअ, यमूस, यऊक और नम्र थे। धीरे-धीरे इन बुजुर्गों ने उनके दर्मियान माबूद का दर्जा हासिल कर लिया। ये लोग कदीम इराक में आबाद थे। जब बिगाड़ इस नौबत तक पहुंचा तो अल्लाह ने उनकी इस्लाह के लिए हजरत नूह को पैगम्बर बनाकर उनकी तरफ भेजा। मगर उन्होंने हजरत नूह को मानने से इंकार कर दिया। वे तकवा की रविश इख्तियार करने पर आमादा न हुए।

इस इंकार की वजह कुरआन के बयान के मुताबिक यह थी कि उनके लिए यह समझना मुश्किल हो गया कि एक आदमी जो देखने में उन्हीं जैसा है वह खुदा की तरफ से खुदा का पैगाम पहुंचाने के लिए चुना गया है। वे अपने को जिन अकाबिर के दीन पर समझते थे उनके मुकाबले में हजरत नूह उन्हें बहुत मामूली आदमी दिखाई देते थे। इन कदीम अकाबिर की अज्मत सदियों की तारीख से मुसल्लम हो चुकी थी। इसके मुकाबले में हजरत नूह एक मुआसिर (समकालीन) शख्स थे। उनके नाम के साथ तारीखी अज्मतें जमा नहीं हुई थीं। चुनांचे कौम ने आपका इंकार कर दिया। उन्होंने वक्त के पैगम्बर को अहमक और गुमराह कहने से भी देर नहीं किया। क्योंकि उनके ख्याल के मुताबिक आप अकाबिर के दीन से मुहरिफ हो गए थे। हजरत नूह की खैरखाही, उनके साथ दलाइल का जोर, उनका हक की राह पर कायम होना, कोई भी चीज कौम को मुतअस्सिर न कर सकी।

हजरत नूह की तरफ से इत्मांमे हुजत (आह्वान की अति) के बाद कैम ग़र्क़र दे गई। इस ग़रकाबी की वजह यह थी कि उन्होंने खुदा की निशानियों को झुठलाया। उन्होंने चाहा कि 'मामूली शख्सियत' के बजाए किसी 'मुसल्लमा शख्सियत' के जरिए उन्हें खुदा का पैगाम पहुंचाया जाए। मगर खुदा की नजर में यह अंधापन था। खुदा ने आदमी को बसीरत

(विवेक) इसलिए दी है कि वह 'निशानी' के रूप में हक को पहचान ले न कि हिस्सी मुजाहिदा (प्रकट रूप) की सूरत में। जो लोग निशानी के रूप में हक को न पहचानें वे खुदा की नजर में आंख रखते हुए भी अंधे हैं। ऐसे लोगों के लिए खुदा की रहमत में कोई हिस्सा नहीं।

وَالِى عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرُكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۝ قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَإِنَّا لَكُم نَاصِحٌ أَمِينٌ ۝ أَوْ عَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَأَذْكُرُوا ۚ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَضْطَةً ۚ فَادْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। सो क्या तुम डरते नहीं। उसकी कौम के बड़े जो इंकार कर रहे थे बोले, हम तो तुम्हें बेअक्ली में मुत्तिला देखते हैं और हमें गुमान है कि तुम झूठे हो। हूद ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझे कुछ बेअक्ली नहीं। बल्कि मैं खुदावदेआलम का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब के पैगामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारा खैरख्वाह और अमीन हूं। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख्स के जरिए तुम्हारे रब की नसीहत आई ताकि वह तुम्हें डराए। और याद करो जबकि उसने कौमे नूह के बाद तुम्हें उसका जानशीन बनाया और डीलडोल में तुमको फैलाव भी ज्यादा दिया। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम फलाह पाओ। (65-69)

हजरत नूह की कश्ती में जो अहले ईमान बचे थे उनमें आपके पोते इरम की औलाद से एक नस्ल चली। वे कदीम यमन में आबाद थे और आद कहलाते थे। ये लोग इब्तिदा में हजरत नूह के दीन पर थे। बाद को जब उनमें बिगाड़ पैदा हुआ तो अल्लाह ने हजरत हूद को उनके ऊपर अपना पैगम्बर मुकर्रर किया। मगर कौम के सरदारों को आपके अंदर वह अज्मत नजर न आई जो उनके ख्वाल के मुताबिक खुदा के पैगम्बर के अंदर होना चाहिए थी। उन्होंने समझा कि यह शख्स या तो अहमक है या फिर वह झूठा दावा कर रहा है। 'मैं तुम्हारा नासेह (नसीहत करने वाला) और अमीन हूं' पैगम्बर की जवान से यह (वाक्य) बताता है कि दाअी और मदऊ का रिश्ता कौमी हरीफ (प्रतिपक्षी) या सियासी मददेमुकाबिल जैसा रिश्ता नहीं है। यह खैरख्वाही और अमानतदारी का रिश्ता है। दाअी को ऐसा होना चाहिए कि उसके दिल में मदऊ के लिए खैरख्वाही के सिवा और कुछ न हो। मदऊ

की तरफ से चाहे कैसा ही नाखुशगवार रवैया सामने आए मगर दाअी आखिर वक्त तक मदऊ का खैरख्वाह बना रहे। फिर जो पैगाम वह दे रहा है उसे देते हुए उसके अंदर यह एहसास न हो कि यह मेरी कोई अपनी चीज है जो मैं दूसरों को अता कर रहा हूं। बल्कि यह जब्बा हो कि यह खुद दूसरों की चीज है। यह दूसरों के लिए खुदा की अमानत है जो मैं उन्हें पहुंचा कर बीज्जि (दायित्व-मुक्त) हो रहा हूं।

पैगम्बरों की दावत की बुनियाद हमेशा यह रही है कि वे इंसान के ऊपर खुदा की नेमतें याद दिलाएं और उसे इस बात से डराएं कि अगर वह खुदा का शुक्रगुजार बनकर न रहा तो वह खुदा की पकड़ में आ जाएगा। कौमी झगड़ों और मादूदी मसाइल को पैगम्बर कभी अपनी दावत का उनवान नहीं बनाते। वे आखिरी हद तक इस बात की कोशिश करते हैं कि उनके और मदऊ के दर्मियान अस्ल दावत के सिवा कोई चीज बहस की बुनियाद न बनने पाए, कौम उन्हें सिर्फ तौहीद और आखिरत के दाअी के रूप में देखे न कि किसी और रूप में।

'खुदा की नेमतों को याद करो ताकि तुम कामयाब हो' इससे मालूम होता है कि आखिरत की नेमतों इत्तहक्क (अधिकार) उसके लिए है जिसने दुनिया में खुदा की नेमतों का एतराफ किया हो। जन्नत खुदा के मुन्धम (दाता) व मोहसिन होने का सबसे बड़ा इश्हार है। इसलिए आखिरत की जन्नत को वही पाएगा जिसने दुनिया में खुदा के मुन्धम व मोहसिन होने की हैसियत को पा लिया हो। यही मअरफत (अन्तर्ज्ञान) जन्नत की अस्ल कीमत है।

قَالُوا ااجئتنا لنعبُد الله وحده ونذر ما كان يعبد اباؤنا فائتينا بما تعدنا ان كنت من الصادقين ۝ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّن رَّبِّكُمْ رَجْسٌ وَعَظْبٌ اُتْجَادِلُونَنِي فِيْ اٰتَمَاءٍ سَكَنَتْهُمَا اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ مَا نَزَّلَ اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَاَنْتَظِرُوْا ۙ اِنِّىْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ فَاَنْجِيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَاۤىَِٔ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰتِنَا وَمَا كَاُنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝

हूद की कौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते आए हैं। पस तुम जिस अजाब की धमकी हमें देते हो उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो। हूद ने कहा तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से नापाकी और गुस्सा वाकेअ हो चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। जिनकी खुदा ने कोई सनद नहीं उतारी। पस इंतजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूं। फिर हमने बचा लिया उसे और जो उसके साथ थे अपनी रहमत से और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे और मानते न थे। (70-72)

इंसान नामों के जरिए किसी चीज का तसबुर कायम करता है। किसी शख्स के साथ अच्छा लफज लग जाए तो वह अच्छा मालूम होता है और अगर बुरा लफज लग जाए तो बुरा दिखाई देने लगता है। खुदा के सिवा दूसरी चीजें या हस्तियां जो आदमी की तबज्जोहात का मर्कज बनती हैं इसकी वजह भी यही नाम होते हैं। लोग किसी शख्सियत को ग़ौस पाक, गंजबख्श, गरीब नवाज, मुश्किलकुशा जैसे अल्फ़ज से फ़क्रने लगते हैं। ये अल्फ़ज धीरे-धीरे इन शख्सियतों के साथ ऐसे वाबस्ता हो जाते हैं कि लोग यकीन कर लेते हैं कि जिसे ग़ौस (फरयाद सुनने वाला) कहा जाता है वह वाकई फरयाद को पहुंचने वाला है और जिसे मुश्किलकुशा के नाम से पुकारा जाता है सचमुच वह मुश्किलों को हल करने वाला है। मगर हकीकत यह है कि इस किस्म के तमाम नाम सिर्फ इंसानों के रखे हुए हैं। इन नामों का कोई अस्ल कहीं मौजूद नहीं। इनके हक में न कोई शर्इ दलील है और न कोई अक्ली दलील।

नामों की शरीअत की एक किस्म वह है जो जाहिल इंसानों के दर्मियान राइज है। ताहम इसकी एक ज़्यादा मुहज़ब (सम्भ्य) सूरत भी है जो पढ़े-लोगों के दर्मियान मक्बूल है। यहां भी कुछ शख्सियतों के साथ ग़ैर मामूली अल्फ़ज वाबस्ता कर दिए जाते हैं। मसलन कुदसी सिफ़त, महबूबेखुदा, सुतूने इस्लाम, नजात दहिंदए मिल्लत (समुदाय का मुक्ति दाता) वगैरह। इस किस्म के अल्फ़ज धीरे-धीरे मज्बूरा शख्सियतों के नाम का जुज बन जाते हैं। लोग इन शख्सियतों को वैसा ही ग़ैर मामूली समझ लेते हैं जैसा कि इन्हें दिए हुए नाम से जाहिर होता है।

जो चीज 'बाप दादा' से चली आ रही हो, बअल्फ़ज दीगर जिसने तारीख़ी अहमियत हासिल कर ली हो और तवील (लंबी) रिवायात के नतीजे में जिसके साथ माजी का तकदुस शामिल हो गया हो वह लोगों की नजर में हमेशा अजीम हो जाती है। इसके मुक़बले में 'आज' के दाअी की बात हल्की दिखाई देती है। वे हाल के दाअी को ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें एतमाद होता है कि वे असलाफ़ (पूर्वजों) की अज़मतों के वारिस हैं फिर कौन उनका कुछ बिगाड़ सकता है।

खुदा के मामले में ढिठाई आदमी को धीरे-धीरे बेहिस बना देती है। वह इस काबिल नहीं रहता कि वह नसीहत और याददिहानी की जवान में कोई इस्लाह कुबूल कर सके। ऐसे लोग गोया इस बात के मुंजिर हैं कि खुदा अज़ाब की जवान में उनके सामने जाहिर हो।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ أَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम,

अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई मावूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे ख की तरफ से एक खुला हुआ निशान आ गया है। यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी की तौर पर है। पस इसे छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की जमीन में। और इसे कोई तकलीफ न पहुंचाना वरना तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब पकड़ लेगा। और याद करो जबकि खुदा ने आद के बाद तुम्हें उनका जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और तुम्हें जमीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और जमीन में फसाद करते न फिरो। (73-74)

कौम आद की तबाही के बाद उसके नेक अफ़राद अरब के शिमाल मरिब (उत्तर-पश्चिम) में हिज़ के इलाके में आबाद हुए। उनकी नस्ल बढ़ी और उन्होंने जराअत (कृषि) और तामीरात में बड़ी तरक़ियां कीं। उन्होंने मैदानों में महल बनाए और पहाड़ों को तराश कर उन्हें बड़े-बड़े पर्वतीय मकानात की सूरत दे दी। बाद में उनमें वे खराबियां पैदा हो गईं जो माददी तरक़ी और दुनियावी खुशहाली के साथ कौमों में पैदा होती हैं। ऐशपरस्ती, आखिरत फरामोशी, अल्लाह की हदों से बेपरवाही, अल्लाह की बड़ाई को भूलकर अपनी बड़ाई कायम करना। उस वक़्त अल्लाह ने हज़रत सालेह को खड़ा किया ताकि वह उन्हें अल्लाह की पकड़ से डराए। मगर उन्होंने नसीहत कुबूल न की। वे अपने बिगाड़ को सुधार में बदलने पर राजी न हुए। जिस कायनात में तमाम चीजें खुदा की ताबेअ बनकर रह रही हैं वहां उन्होंने खुदा का सरकश बनकर रहना चाहा। जहां हर चीज अपनी हद के अंदर अपना अमल करती है वहां उन्होंने अपनी हद से तजावुज करके जिंदा रहना चाहा। यह एक इस्लाहयाफ़ता दुनिया में फसाद फैलाना था। चुनांचे उन्हें दुनिया में बसने के नाअहल करार दे दिया गया।

कौम समूद को जांचने के लिए खुदा ने एक ऊंटनी मुकरर की और कहा की इसे तकलीफ न पहुंचाना वरना हलाक कर दिए जाओगे। खुदा के लिए यह भी मुमकिन था कि वह उनके लिए एक ख़ौफ़नाक शेर मुकरर कर दे। मगर खुदा ने शेर के बजाए ऊंटनी को मुकरर फरमाया। इसका राज यह है कि आदमी की खुदातरसी (खुदा से डरने) का इम्तेहान हमेशा 'ऊंटनी' की सतह पर लिया जाता है न कि 'शेर' की सतह पर। समाज में हमेशा कुछ नाकतुल्लाह (खुदा की ऊंटनी) जैसे लोग होते हैं। ये वे कमजोर अफ़राद हैं जिनके साथ वह माददी जोर नहीं होता जो लोगों को उनके खिलाफ कार्रवाई करने से रोके। जिनके साथ हुस्ने सुलूक का मुहरिक (प्रेरक) सिर्फ अज़्ज़ाकी एहसास होता है न कि कोई डर। मगर यही वे लोग हैं जिनकी सतह पर लोगों की खुदापरस्ती जांची जा रही है। यही वे अफ़राद हैं जिनके जरिए किसी को जन्नत का सर्टिफिकेट दिया जा रहा है और किसी को जहन्नम का।

समूद ने फने तामीर (निर्माण कला) में कमाल पैदा किया। संबंथित उलूम मसलन रियाजी (गणित), हिंदिसा (गणना), इंजीनियरिंग में भी यकीनन उन्होंने ज़रूरी योग्यता हासिल की होगी वरना ये तरक़ियात मुमकिन न होतीं। मगर उन्हें जिस बात का मुज़रिम ठहराया गया वे उनकी माददी तरक़ियां नहीं थीं बल्कि जमीन में फसाद फैलाना था। इसका मतलब यह है कि जाइज़ हुदूद में तरक़ी करने से खुदा नहीं रोक्ता। अलबत्ता जिंदगी के मामलात में आदमी को उस निजामे इस्लाह (सुधारतंत्र) का पाबंद रहना चाहिए जो खुदा ने पूरी कायनात में कायम कर रखा है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتُضِعُوا لِمَنْ أَمَنَ مِنْهُمْ اتَّعَلُّونَ إِنَّ صَلَاتَكُمْ مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝
قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُصْلِحْ أَيْتَانَا بِمَا عِدُّنَا إِنَّ كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ فَآخَذَتْهُمْ رَجْفَةٌ فَاصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَيِّينَ ۝ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُؤْمِنُونَ الصَّحِيفَ ۝

उनकी कौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन मोमिनीन से बोले जो कमजोर समझे जाते थे, क्या तुम्हें यकीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुए हैं। उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं उस पर ईमान रखते हैं। वे मुतकब्बिर (घमंडी) लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज के मुंकिर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो। फिर उन्होंने ऊंटनी को काट डाला और अपने रब के हुक्म से फिर गए। और उन्होंने कहा, ऐ सालेह अगर तुम पैगम्बर हो तो वह अजाब हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डराते थे। फिर उन्हें जलजले ने आ पकड़ा और वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। और सालेह यह कहता हुआ उन की बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी कौम, मैंने तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी खैरखाही की मगर तुम खैरखाहों को पसंद नहीं करते। (75-79)

पैगम्बर जब आता है तो अपने जमाने में वह एक विवादित शख्सियत होता है न कि साबितशुदा शख्सियत। मजीद यह कि उसके साथ दुनिया की रैनकें जमा नहीं होतीं, वह दुनिया की गद्दियों में से किसी गद्दी पर बैठा हुआ नहीं होता। यही वजह है कि जो लोग पैगम्बर के मुआसिर (समकालीन) होते हैं वे पैगम्बर के पैगम्बर होने को समझ नहीं पाते और उसका इंकार कर देते हैं। उन्हें यकीन नहीं आता कि वह शख्स जिसे हम सिर्फ एक मामूली आदमी की हैसियत से जानते हैं वही वह शख्स है जिसे खुदा ने अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए चुना है।

‘हम सालेह के पैगाम पर ईमान लाए हैं’ हजरत सालेह के साथियों का यह जवाब बताता है कि उनमें और दूसरों में क्या फर्क था। मुकिरीन ने हजरत सालेह की शख्सियत को देखा और मोमिनीन ने उनके अस्ल पैगाम को। मुकिरीन को हजरत सालेह की शख्सियत में जाहरी अज्मत दिखाई नहीं दी, उन्होंने आपको नजरअंदाज कर दिया। इसके बरअक्स मोमिनीन ने हजरत सालेह के पैगाम में हक के दलाइल और सच्चाई की झलकियां देख लीं, वे फौरन उनके साथी बन गए। सच्चाई हमेशा दलाइल के जोर पर जाहिर होती है न कि दुनियावी अज्मतों के

जोर पर। जो लोग दलाइल के रूप में हक को देखने की सलाहियत रखते हैं वे फौरन उसे पा लेते हैं। और जो लोग जाहरी बड़ाइयों में अटके हुए हों वे मुशतबह (श्रमित) होकर रह जाते हैं। उन्हें कभी हक का साथ देने की तौफ़ीक हासिल नहीं होती।

हजरत सालेह की ऊंटनी को मारने वाला अगरचे कौम का एक सरकश आदमी था। मगर यहां उसे पूरी कौम की तरफ मंसूब करके फरमाया ‘उन लोगों ने ऊंटनी को हलाक कर दिया’ इससे मालूम हुआ कि किसी गिरोह का एक शख्स बुरा अमल करे और दूसरे लोग उसके बुरे फेअल पर राजी रहें। तो सबके सब उस मुजरिमाना फेअल में शरीक क़ार दे दिए जाते हैं।

जो कौम ख़्वाहिशपरस्ती का शिकार हो उसे हकीकतपसंदी की बातें अपील नहीं करतीं। वे ऐसे शख्स का साथ देने के लिए तैयार नहीं होती जो उसे संजीदा अमल की तरफ बुलाता हो। इसके बरअक्स जो लोग खुशनुमा अल्फ़ाज बोलें और झूठी उम्मीदों की तिजारात करें। उनके गिर्द भीड़ की भीड़ जमा हो जाती है। सच्चे खैरखाह के लिए उसके अंदर कोई कशिश नहीं होती। अलबत्ता उन लोगों की तरफ वह तेजी से दौड़ पड़ती है जो उसका इस्तहसाल (शोषण) करने के लिए उठे हों।

وَلَوْ طَافَ إِذْ قَالَ يَقَوْمِ اتَّاتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝
إِن كُنْتُمْ لِنَاقَتِ الرِّجَالِ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النَّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۝
وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنْ لَسَ يَتَطَهَّرُونَ ۝ فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
مَطَرًا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी कौम से कहा। क्या तुम खुली बेहयाई का काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया। तुम औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो। बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। मगर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज बनते हैं। फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घर वालों को, उसकी बीबी के सिवा जो पीछे रह जाने वालों में से बनी। और हमने उन पर बारिश बरसाई पत्थरों की, फिर देखो कि कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का। (80-84)

हजरत लूत हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। वह जिस कौम की तरफ पैगम्बर बनाकर भेजे गए वह दरियाए उर्दुन के किनारे जुनूबी शाम के इलाके में आबाद थी। इस कौम की खुशहाली उसे ऐशपरस्ती की तरफ ले गई। यहां तक कि उन लोगों की बेराहरवी इतनी बढ़ गई कि उन्होंने अपनी शहवानी ख़्वाहिशात (काम वासना) की तस्कीन के लिए हमजिन्सी (समलैंगिक) के तरीके को इख़्तियार कर लिया। पैगम्बर ने उन्हें इस खुली हुई बेहयाई से डराया।

कायनात के लिए फितरत की एक स्कीम है। इस स्कीम को कुरआन में इस्लाह (सुधार) कहा गया है। इस इस्लाह के खिलाफ चलने का नाम फसाद है। कायनात की तमाम चीजें इसी इस्लाही रास्ते पर चल रही हैं। यह सिर्फ इंसान है जो अपनी आजादी का ग़लत फ़ायदा उठाता है और फितरत के रास्ते के खिलाफ अपना रास्ता बनाता है। हज़रत लूत की कैम इसी किस्म के एक फसाद में मुब्तिला थी। जिन्सी तअल्लुक का फितरी तरीक़ा यह है कि औरत मर्द बाहम बीवी और शौहर बनकर रहें। यह इस्लाह के तरीके पर चलना है। इसके बरअक्स अगर यह हो कि मर्द मर्द या औरत औरत के दर्मियान जिन्सी तअल्लुक कायम किए जाने लें तो यह खुदा की मुकर्रर की हूँ हद से गुज़र जाना है। यह वही चीज़ है जिसे कुरआन में फसाद कहा गया है।

हज़रत लूत पर सिर्फ उनके करीबी लोगों में से चन्द अफ़सद ईमान लाए। बाकी पूरी कौम अपनी हवसपरस्ती में गर्क रही। उन्होंने कहा 'जब यह हम सब लोगों को गंदा समझते हैं और खुद पाक बनना चाहते हैं तो गंदों में पाकों का क्या काम। फिर तो यह निकल जाएं हमारे शहर से' उनका यह कौल दरअसल घमंड का कौल था। उन्हें यह कहने की जुरअत इसलिए हुई कि वे अपनी अक्सरियत और माद्री तरक्की की वजह से अपने को महफूज़ हालत में समझते थे। घमंड की नफिसयात में मुब्तिला लोग हमेशा अपने कमजोर पड़सियों से कहते हैं कि जिन लोगों को हमारा तरीका पसंद नहीं वे हमारी जमीन को छोड़ दें। मगर यह खुदा की दुनिया में शिर्क करना है और शिर्क सबसे बड़ा जुर्म है।

हज़रत लूत की कैम पर खुदा का अजाब आया तो अजाब का शिकार हेने वालों में पैग़म्बर की बीवी भी शामिल थी। इससे इनाम और सजा के बारे में खुदा का बेलाग़ इंसाफ़ जाहिर होता है। खुदा के इंसाफ़ के तराजू में रिश्तों और दोस्तियों को कोई लिहाज़ नहीं। खुदा का फैसला इतना बेलाग़ है कि उसने हज़रत नूह के बेटे, हज़रत इब्राहीम के बाप, हज़रत लूत की बीवी और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चचा को भी माफ़ नहीं किया। और दूसरी तरफ़ फिरऔन की बीवी ने नेक अमल का सुबूत दिया तो उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया।

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ٥ وَلَا تَتَّبِعُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُؤْنَهَا عِوَجًا وَادْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَرْتُمْ ٦ وَاللَّهُ مِّنْ أَمْنٍ ۖ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ٧ وَإِنْ كَانَ طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ أٰمَنُوا بِآلِئِىٓ أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِينَ ٨

और मदयन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से दलील पहुंच चुकी है। पस नाप और तौल पूरी करो। और मत घटाकर दो लोगों को उनकी चीज़ें। और फसाद न डालो जमीन में उसकी इस्लाह के बाद। यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और रास्तों पर मत बैठो कि डराओ और अल्लाह की राह से उन लोगों को रोको जो उस पर ईमान ला चुके हैं और उस राह में कज़ी (टेढ़) तलाश करो। और याद करो जबकि तुम बहुत थोड़े थे फिर तुम्हें बढ़ा दिया। और देखो फसाद करने वालों का अंजाम क्या हुआ। और अगर तुममें से एक गिरोह उस पर ईमान लाया है जो देकर मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह ईमान नहीं लाया है तो इंतज़ार करो यहां तक कि अल्लाह हमारे दर्मियान फैसला कर दे और वह बेहतर फैसला करने वाला है। (85-87)

हज़रत इब्राहीम के एक बेटे मदयान थे जो आपकी तीसरी बीवी कतूरा से पैदा हुए। अहले मदयन इन्हीं की नस्ल में से थे। यह कौम बहरे अहमर (लाल सागर) के अरब साहिल पर आबाद थी। ये लोग खुदा को मानने वाले थे और अपने को दीने इब्राहीमी का हामिल समझते थे। मगर हज़रत इब्राहीम के पांच सौ साल बाद उनके अंदर बिगाड़ आ गया। यह एक तिजारत पेशा कौम थी और उसके बिगाड़ का सबसे ज्यादा इन्हार इसी पहलू से हुआ। वे नाप तौल और लेन देने में दयानतदारी के उसूलों पर पूरी तरह कायम नहीं रहे।

दूसरे से मामला करने में बेईसाफी खुदा के कायमकरदा निजामे इस्लाह के खिलाफ़ है। खुदा ने अपनी दुनिया का निजाम कामिल इंसाफ़ पर कायम किया है। यहां कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो लेते वक़्त दूसरे से ज्यादा ले और देते वक़्त दूसरे को कम दे। यहां हर चीज़ हिसाबी सेहत की हद तक इंसाफ़ के उसूल पर कायम है। ऐसी हालत में इंसान को भी वही करना चाहिए जो उसके गिर्द व पेश की सारी कायनात कर रही है। ऐसा न करना खुदा की इस्लाहयाफ़्ता दुनिया में फसाद बरपा करना है।

अहले मदयन का मामलाती बिगाड़ जब बहुत बढ़ गया तो खुदा ने हज़रत शुऐब को उनकी तरफ़ अपना पैग़ाम लेकर भेजा। आपने उन्हें बताया कि मामलात में रास्ती (नेकी) और दयानतदारी का तरीका इख़्तियार करो। आपने खुले-खुले दलाइल के जरिए उन्हें आखिरी हद तक बाख़बर कर दिया। मगर वे नसीहत कुबूल करने के लिए तैयार नहीं हुए। यहां तक कि उनका हाल यह हुआ कि खुद हज़रत शुऐब की दावत को मिटाने पर तुल गए। वे आपकी बातों में तरह-तरह के शोशे निकाल कर लोगों को आपके बारे में ग़लतफहमी में डालते। वे जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयों के जरिए कोशिश करते कि लोग आपका साथ न दें। बिलआखिर उन पर खुदाई अजाब आया और वे तबाह कर दिए गए। बंदों के हक्क की रियायत और बाहमी मामलात की दुरुस्तगी खुदा की नजर में इतनी ज्यादा अहम है कि उसकी मुख़ालिफ़त पर एक कौम, ईमान की दावेदार होने के बावजूद तबाह कर दी गई। खुदा बेहतर फैसला करने वाला है और बेहतर फैसला जानिबदारी (पक्षपात) के साथ नहीं हो सकता। यह मुमकिन नहीं कि खुदा बेकलिमा वालों को उनकी बेईसाफी पर पकड़े और कलिमा वालों को ठीक उसी बेईसाफी पर छोड़ दे।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعَبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنَّا
مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَا أَوْ لَنَعُودَنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ ۖ قَدْ افْتَرَيْنَا
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنَّ عِدَّتَنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِذْ نَجَّيْنَا اللَّهُ مِنْهَا لَوْ مَا يَكُونُ لَنَا
أَنْ نَعُودَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ
تَوَكَّلْنَا لربَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۝
وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنْ اتَّبَعْتُمْ يَشْعَبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَكَاثِرُونَ ۝
فَأَخَذَ تَهُمَ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيمِينَ ۝
الَّذِينَ كَذَّبُوا شَعْبًا
كَانَ لَمْ يَغْنَوْا فِيهَا ۚ الَّذِينَ كَذَّبُوا شَعْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ ۝ فَتَوَلَّى مِنْ
عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولَ رَبِّي وَنَحْنُ لَكُمْ فَكَيْفَ أَسَى عَلَى
قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝

कौम के बड़े जो मुतकबिर (घमंडी) थे उन्होंने कहा कि ऐ शूऐब हम तुम्हें और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारी मिल्लत में फिर आ जाओ। शूऐब ने कहा, क्या हम बेजार हों तब भी। हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे अगर हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आएंगे बाद इसके कि अल्लाह ने हमें उससे नजात दी। और हमसे यह मुमकिन नहीं कि हम उस मिल्लत में लौट आएंगे मगर यह कि खुदा हमारा रब ही ऐसा चाहे। हमारा रब हर चीज को अपने इल्म से घेरे हुए है। हमने अपने रब पर भरोसा किया। ऐ हमारे रब, हमारे और हमारी कौम के दर्मियान हक के साथ फैसला कर दे, तू बेहतरीन फैसला करने वाला है। और उन बड़ों ने जिन्होंने उसकी कौम में से इंकार किया था कहा कि अगर तुम शूऐब की पैरवी करोगे तो तुम बर्बाद हो जाओगे। फिर उन्हें जलजले ने पकड़ लिया। पस वे अपने घर में औंधे मुंह पड़े रह गए। जिन्होंने शूऐब को झुठलाया था गोया वे कभी उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शूऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे। उस वक़्त शूऐब उनसे मुंह मोड़ कर चला और कहा, ऐ मेरी कौम मैं तुम्हें अपने रब के पैगामात पहुंचा चुका और तुम्हारी खैरखाही कर चुका। अब मैं क्या अफसोस करूं मुक़िरो पर। (88-93)

हजरत शूऐब की कौम खुदा के इंकार की मुजरिम न थी बल्कि खुदा पर इफ़्तिरा करने (झूठ गढ़ने) की मुजरिम थी। यानी उसने खुदा की तरफ एक ऐसे दीन को मंसूब कर रखा था जिसे खुदा ने उनके लिए उतारा न था। यही तमाम नबियों की कौमों का हाल रहा है। नबियों

की कौमों में सब वही थीं जिन पर इससे पहले खुदा ने अपना दीन उतारा था मगर बाद को उन्होंने खुदसाखा (स्वनिर्मित) तब्दीलियों और इजाफों के जरिए उसे कुछ से कुछ कर दिया। उन्होंने खुदा के दीन को अपनी ख्वाहिश का दीन बना डाला और उसी को खुदा का दीन कहने लगे। वक़्त के क़यमशुदा दीन में जिन लोगों को इज्जत व बड़ई का मक़म मिला हुआ था उन्होंने महसूस किया कि दलील के एतबार से उनके पास पैगम्बर की बातों का तोड़ नहीं है। ताहम इक्तेदार के जराए (सत्ता-संसाधन) सब उन्हीं के पास थे। उन्होंने दलील के मैदान में अपने को लाजवाब पाकर यह चाहा कि जोर व कुव्वत के जरिए वे पैगम्बर को ख़ामोश कर दें। उन्होंने पैगम्बर के साथियों को इस नाज़ुक सूरतेहाल की याद दिलाई कि वक़्त के निजाम में ज़िंदगी के तमाम सिरे उन्हीं लोगों के पास हैं जिन्हें वे बातिल ठहरा रहे हैं। ये बातिल लोग अगर उनके खिलाफ सरगर्म हो जाएं तो इसके बाद वे ज़िंदगी के जराए कहां से पाएंगे। मगर वे भूल गए कि खुदा उनसे भी ज्यादा ताकतवर है। और खुदा जिसके खिलाफ हो जाए उसके लिए कहीं पनाह की जगह नहीं।

किसी शख्स के लिए सिर्फ उस वक़्त तक छूट है जब तक उस पर अफ़ेहक (सच्चाई) वाज़ेह न हुआ हो। अफ़ेहक जब बख़ूबी वाज़ेह हो जाए और इसके बाद भी आदमी सरकशी करे तो वह हमदर्दी का इस्तहक़क (अधिकार) खो देता है। इसी बुनियाद पर दुनिया में भी किसी मुजरिम के लिए सजा है और इसी बुनियाद पर आखिरत (परलोक) में भी लोगों के लिए उनके ज़ुर्म के मुताबिक सजा का फैसला होगा।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَاءِ
لَعَلَّهُمْ يَضُّرُّعُونَ ۝ ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوْا وَقَالُوا
قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝
وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا فَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
وَلَكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ أَفَأَمِّنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ
بَأْسُنَا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ۝ أَوْ أَمِّنَ أَهْلُ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَهُمْ
يَكْعَبُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخَاسِرُونَ ۝

और हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा, उसके बाशिन्दों को हमने सख़्ती और तकलीफ में मुन्तिला किया ताकि वे गिड़गिड़ाएं। फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया यहां तक कि उन्हें ख़ुब तरक्की हुई और वे कहने लगे कि तकलीफ और ख़ुशी तो हमारे बाप दादाओं को भी पहुंचती रही है। फिर हमने उन्हें अचानक पकड़ लिया और वे इसका गुमान भी न रखते थे। और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उन पर आसमान और ज़मीन की नेमतें खोल देते। मगर उन्होंने झुठलाया तो हमने उन्हें

पकड़ लिया उनके आमाल के बदले। फिर क्या बस्ती वाले इससे बेखौफ हो गए हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े जबकि वे सोते हैं। या क्या बस्ती वाले इससे बेखौफ हो गए हैं कि हमारा अज़ाब आ पहुँचे उन पर दिन चढ़े जब वे खेलते हैं। क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों (युक्तियों) से बेखौफ हो गए हैं। पस अल्लाह की तदबीरों से वही लोग बेखौफ होते हैं जो तबाह होने वाले हैं। (94-99)

हदीस में आया है कि मोमिन पर मुसीबतें आती रहती हैं। यहां तक कि वह गुनाहों से پاک हो जाता है। और मुनाफ़िक की मिसाल गधे की तरह है कि वह नहीं जानता कि उसके मालिक ने किस लिए उसे बांधा और क्यों छोड़ दिया।

ख़ुदा इंसान के ऊपर मुख़लिफ़ किस्म की तकलीफें डालता है ताकि उसका दिल नर्म हो। ख़ुदा के सिवा दूसरी चीज़ों पर से उसका एतमाद टूट जाए, उसका वह घमंड जाता रहे जो आदमी के लिए अपने से बाहर किसी सच्चाई को कुबूल करने में रुकावट बनता है। इस तरह ख़ुदाई इतिजाम के तहत आदमी के अंदर कमी और बेचारी की नफ़िसयात पैदा की जाती है ताकि वह हक की आवाज़ पर कान लगाए। ख़ुदा का यह मामला आम लोगों के साथ भी होता है और पैग़म्बर के मुख़ातब ग़िरोह के साथ भी। ताहम यह मामला अल्लाह की सुन्नत (तर्ज़) के तहत रूपों-प्रतीकों में होता है। मसलन कोई आफ़त आती है तो वह असबाब व इलाल (कारकों) के रूप में आती है। यह सूरतेहाल बहुत से लोगों के लिए फ़ितना बन जाती है। वे यह कहकर उसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि यह तो एक होने वाली बात थी जो हो हुई। फिर जब वे मुसीबतों से असर नहीं लेते तो ख़ुदा उनके हालात बदल कर उन्हें खुशहाली में मुब्तिला कर देता है। अब इस किस्म के लोग और भी ज्यादा मुग़ालते में पड़ जाते हैं। उन्हें यकीन हो जाता है कि यह महज़ हवादिसे रोज़गार (काल-चक्र) की बात थी। यह वही आम उतार चढ़ाव था जो हमेशा लोगों के साथ पेश आता रहा है वर्ना क्या वज़ह है कि हमें बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन देखने को मिले। वे पहली तंबीह से भी सबक लेने से महरूम रहते हैं और दूसरी तंबीह से भी।

सरकशी के बाद किसी को तरक्की मिलना सख़्त ख़तरनाक है। यह इस बात की अलामत है कि ख़ुदा ने उसे ऐसी हालत में पकड़ने का फैसला कर लिया है जबकि वह अपने पकड़े जाने के बारे में ज्यादा से ज्यादा बेखौफ हो चुका हो।

ईमान और तक्वा की ज़िंदगी का फ़ायदा अगरचे अस्तन आख़िरत में मिलने वाला है। ताहम अगर ख़ुदा चाहता है तो दुनिया में भी वह ऐसे लोगों को फ़राख़ी और इज्ज़त की सूरत में उनके अमल का इब्तिदाई इनाम दे देता है।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرْتُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصْبَنَهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَنُطْبِئُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۚ تِلْكَ الْقُرَى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا وَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا

كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۚ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۝

क्या सबक नहीं मिला उन्हें जो जमीन के वारिस हुए हैं उसके अगले वाशिनदों के बाद कि अगर हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके गुनाहों पर। और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है पस वे नहीं समझते। ये वे बस्तियां हैं जिनके कुछ हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं। उनके पास हमारे रसूल निशानियां लेकर आए तो हरगिज़ न हुआ कि वे ईमान लाएं उस बात पर जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इस तरह अल्लाह मुंकिरों के दिलों पर मुहर कर देता है। और हमने उनके अक्सर लोगों में अहद (वचन) का निबाह न पाया और हमने उनमें से अक्सर को नाफ़रमान (अवज्ञाकारी) पाया। (100-102)

जमीन पर बार-बार यह वाक्य होता है कि एक कैम को यहां इज्ज़त और ख़ुशहाली नसीब होती है। इसके बाद उस पर जवाल (पतन) आता है। वे मैदान से हटा दी जाती है और उसकी जगह दूसरी कैम इज्ज़त और ख़ुशहाली के तमाम मक़मात पर कब्ज़ हो जाती है।

यह वाक्य ख़ुदा की एक निशानी है। वह आदमी को ख़ुदा की याद दिलाने वाला है। वह बताता है कि मिलने या न मिलने के सिरे किसी बालातर (उच्च) हस्ती के हाथ में हैं। वह जिसे चाहे दे और जिससे चाहे छीन ले। ख़ुदा ने इंसान को देखने और समझने की जो ताकत दी है उसे काम में लाकर वह बाआसानी इस हकीकत को समझ सकता है। वह जान सकता है कि अस्ल सरचश्मा (स्रोत) अगर किसी और के हाथ में न होता तो जो ग़िरोह एक बार ग़ालिब आ जाता वह कभी दूसरे को ऊपर आने न देता। आदमी अगर इस किस्म का सबक ले तो कैमों के उरूज़ व जवाल (उत्थान-पतन) में उसे ख़बानी ग़िज़ा मिलेगी। मगर जब भी एक कैम पीछे हटती है और उसकी जगह दूसरी कैम ऊपर आती है तो उसके अफ़राद इस ग़लतफ़हमी में पड़ जाते हैं कि पिछली कैम के साथ जो कुछ हुआ वह सिर्फ़ पिछली कैम के लिए था, हमारे साथ ऐसा कभी नहीं होगा।

ख़ुदा ने आंख और कान और अक्ल की सलाहियत इंसान को इसलिए दी है कि वह इससे सबक ले, वह इनके जरिये ख़ुदा के इशारात को समझे। मगर जब आदमी अपनी इन सलाहियतों से वह काम नहीं लेता जो उसे लेना चाहिए तो इसके बाद लाजिमी तौर पर ऐसा होता है कि ख़ुदा के कानून के तहत उसके दिल की हस्सासियत (संवेदनशीलता) मुर्दा होने लगती है। यहां तक कि इन मामलात में उसके जब्बात कुंद होकर रह जाते हैं। उसके दिल व दिमाग़ पर बेहिंसी की मुहर लग जाती है। अब उसका हाल यह हो जाता है कि वह देखने के बावजूद न देखे और सुनने के बावजूद न सुने। वह अक्ल रखते हुए भी बातों को न समझे। वह इंसान होते हुए बेइंसान बन जाए।

ईसानियत का आगाज़ हज़रत आदम के मोमिनीन से हुआ। इसके बाद जब बिगाड़ हुआ तो याददिहानी के लिए ख़ुदा के पैग़म्बर आए। अब यह हुआ कि पैग़म्बर के जरिए इस्लाह (सुधार) कुबूल करने वाले अफ़राद को बचाकर उन लोगों को हलाक कर दिया गया जिन्होंने

और जादूगर फिरऔन के पास आए। उन्होंने कहा, हमें इनाम तो जरूर मिलेगा अगर हम ग़ालिब (विजित) रहे। फिरऔन ने कहा, हाँ और यकीनन तुम हमारे मुक़र्रबिन (निकटवर्तियों) में दाखिल होंगे। जादूगरों ने कहा, या तो तुम डालो या हम डालने वाले बनते हैं। मूसा ने कहा, तुम ही डालो। फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन पर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा करतब दिखाया, और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि अपना असा (डंडा) डाल दो। तो अचानक वह निगलने लगा उसे जो उन्होंने गड़ा था। पस हक़ ज़ाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था बातिल होकर रह गया। पस वे लोग वहीं हार गए और जलील होकर रहे। और जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रबुलआलमीन (सृष्टि-प्रभु) पर जो रब (प्रभु) है मूसा और हारून का। (113-122)

किसी माहौल में जिस चीज की अहमियत लोगों के जेहनों पर छाई हुई हो उसी निस्वत से उनके पैगम्बर को मोजिजा (चमत्कार) दिया जाता है। कदीम मिश्र में जादू का बहुत जोर था इसलिए हजरत मूसा को उसी नौइयत का मोजिजा दिया गया।

फिरऔन के तैकरदा प्रेष्ठाम के मुताबिक मिश्रियों के कौमी त्यौहार (योमुलज्ज़ीनह) के मौके पर उनके तमाम बड़े-बड़े जादूगर जमा हुए। जादूगरों ने कहा कि पहले हम अपना करतब सामने लाएं या तुम जो कुछ दिखाना चाहते हो दिखाओगे। हजरत मूसा ने कहा पहले तुम अपना करतब सामने लाओ। चुनांचे ऐसा ही हुआ। इससे मालूम होता है कि पैगम्बर अपने दुश्मन के खिलाफ इक्दाम करने में कभी पहल नहीं करता। वह आखिर वक्त तक दुश्मन को मौअद देता है कि वह खुद पहल करे। मुख़ालिफ़ फ़रीक़ जब इस तरह पहल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले चुका होता है उस वक्त पैगम्बर अपनी पूरी कुव्वत को इस्तेमाल करके उसे ज़र कर देता है। नज़रियाती दावत के मामले में पैगम्बर का तरीका इक्दाम का होता है और अमली टकराव के मामले में दिफ़ाअ (प्रतिरक्षा) का।

मिश्र में हजरत मूसा की दावत तकरीबन चालीस साल तक जारी रही है। जादूगरों से मुक़बले का वाक़या उसके आख़िरी ज़माने का है। इससे क़यास किया जा सकता है कि जादूगर हजरत मूसा की दावत से आशना रहे होंगे। ताहम अभी तक उनकी आंख का पर्दा नहीं हटा था। जब उन्होंने अपन मखसूस फन के मैदान में हजरत मूसा की बरतरी देखी तो हिजाबात उठ गए। उन्हें नज़र आ गया कि यह जादूगरी का मामला नहीं बल्कि खुदाई पैगम्बरी का मामला है। वे बेइख़्तियार होकर खुदा के सामने गिर पड़े।

जादूगरों ने अपनी लाठियाँ और रस्सियाँ फेंकीं तो ख़्यालबंदी (ट्रुप्टि भ्रम) की वजह से वे लोगों को चलता फिरता सांप नज़र आने लगीं। मगर जब हजरत मूसा का असा (डंडा) सांप बनकर मैदान में घूमा तो जादूगरों की हर लाठी और रस्सी सिर्फ़ लाठी और रस्सी होकर रह गई। जादूगर जादू के हूदू को जानते थे। इस वाक़ये में जादूगरों को नज़र आ गया कि इंसानी तदबीरें अपने आख़िरी कमाल पर पहुंच कर भी कितनी हकीर हैं और खुदा कितना अज़ीम और कितना ज़्यादा ताक़तवर है। इसके बाद फिरऔन उन्हें अपने तमाम इक़्तदार के

बावज़ूद बेवक़अत नज़र आने लगा। वही जादूगर जो खुदा की अज़मत को देखने से पहले फिरऔन से इनाम के तालिब थे। अब उन्होंने फिरऔन की तरफ से बदतरीन सजाओं की धमकी को भी इस तरह नज़रअंदाज़ कर दिया जैसे उसकी कोई हकीकत ही नहीं।

قَالَ فِرْعَوْنُ اَمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ اَنْ اَدْنٰ لَكُمْ اِنَّ هٰذَا لَبُكْرٌ مُّكْرُتُوهُ فِى الْمَدِيْنَةِ لِيُخْرِجُوْا مِنْهَا اَهْلَهَا فَاَنْسَوْا تَعْلُوْنَ ۝ لَا قَطْعَانَ اِيْدِيْكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَصَلَبَكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝ قَالُوْا اِنَّا اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝ وَمَا نُنْعِمُ مِثْلًا اِلَّا اَنْ اَمْكُرًا يَّاتِ رَبَّنَا لِنَا جِئْتَنَا رَبَّنَا اَفِرْغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقُّاْ مُّسْلِمِيْنَ ۝

फिरऔन ने कहा, तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं। यकीनन यह एक साजिश है जो तुम लोगों ने शहर में इस राज से की है कि तुम उसके बाशिन्दों को यहां से निकाल दो, तो तुम बहुत जल्द जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पाओं मुख़ालिफ़ सत्तों से काटूंगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने कहा, हमें अपने रब ही की तरफ लौटना है। तू हमें सिर्फ़ इस बात की सज़ा देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियाँ जब हमारे सामने आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ रब, हम पर सब्र उडेल दे और हमें वफ़ात दे इस्लाम पर। (123-126)

हक के लिए जान कुर्बान करना हक के हक़ हने की आख़िरी गवाही देना है। जादूगरों को खुदा की मदद से इसी की तौफ़ीक़ हासिल हुई। जादूगरों ने अपने आपको सख़्ततरीन सज़ा के लिए पेश करके यह साबित कर दिया कि उनका हजरत मूसा पर ईमान लाना कोई हीला और साजिश का मामला नहीं, यह सच्चे एतराफ़े हक़ का मामला है। मगर जादूगरों का सबसे बड़ा अमल फिरऔन की मुतक़बिराना नफ़िसयात (अहं भाव) के लिए सबसे बड़ा ताजयाना प्रहार था। उन्होंने फिरऔन के मुक़बले में हजरत मूसा का साथ देकर फिरऔन को सारी वैम के सामने रूसवा कर दिया था। चुनांचे फिरऔन उनके खिलाफ़ गुस्से से भर गया। उसने जादूगरों के साथ उसी ज़ालिमाना कार्रवाई का फैसला किया जो हर वह मुतक़बिर शख्स करता है जिसे ज़मीन पर किसी क्रिम का इख़्तियार हासिल हो जाए। जादूगर भी दलील के मैदान में हारे और फिरऔन भी। मगर जादूगर अपनी शिकस्त का एतराफ़ करके खुदा की अबदी नेमतों के मुस्तहक़ बन गए और फिरऔन ने इसे अपनी इज्जत का मसला बना लिया। उसके हिस्से में सिर्फ़ यह आया कि अपनी झूठी अनानियत अहंकार की तस्कीन के लिए दुनिया में वह हक़मरस्तों पर जुम करे और आख़िरत में खुदा के अबदी अज़ाब में डाल दिया जाए।

फिरऔन ने मूसा की दावत को कुबूल करने या न करने को अपनी 'इजाज़त' का मसला समझा। और जादूगरों ने 'निशानी' का। मुतक़बिर (घमंडी) आदमी का मिजाज हमेशा यह होता है कि वह अपनी मर्जी को सबसे ज़्यादा अहम समझता है न कि दलील और सुबूत को। ऐसे

लिए है और अगर उन पर कोई आफत आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत बताते। सुनो, उनकी बदबख्ती तो अल्लाह के पास है मगर उनमें से अक्सर नहीं जानते। और उन्होंने मूसा से कहा, हमें मसहूर (जादू ग्रस्त) करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (130-132)

किसी बात को गलत कहना हो तो उसका गलत होना लफ्जों की सूरत में बताया जाता है और किसी बात को सही कहना हो तो उसे भी लफ्जों ही के जरिए सही कहा जाता है। इसी तरह किसी को मुजरिम करार देना हो तो उसे लफ्जों के जरिए मुजरिम करार दिया जाता है और अगर किसी को हक पर जाहिर करना हो तो उसका हक पर होना भी लफ्जों में बताया जाता है। मगर अल्फाज का इस्तेमाल करने वाला इंसान है और मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में इंसान को यह इख्तियार हासिल है कि वह अल्फाज को जिस तरह चाहे अपनी मर्जी के मुताबिक इस्तेमाल करे।

इस्तेहान की इस दुनिया में आदमी को जो आजादी दी गई है उसमें सबसे ज्यादा नाजुक आजादी यह है कि वह हक को बातिल कहने के लिए भी अल्फाज पा लेता है और बातिल को हक कहने के लिए भी। वह एक खुले हुए पैगम्बराना मोजिजे को जादू कहकर नजरअंदाज कर सकता है। खुदा उसे कोई नेमत दे तो वह उसे ऐसे अल्फाज में बयान कर सकता है गोया कि उसे जो कुछ मिला है अपनी सलाहियतों (क्षमताओं) और कोशिशों की बदौलत मिला है। हक को नजरअंदाज करने की वजह से खुदा उसके ऊपर कोई तंबीही (सचेतक) सज भेजे तो वह आजाद है कि उसे वह उन्हीं खुदापरस्त बंदों की नहूसत का नतीजा करार दे दे जिनके साथ बुरा रवैया इख्तियार करने ही की वजह से उस पर यह तंबीह आई है। खुदा की तरफ से हर बात इसलिए आती है कि आदमी उससे नसीहत पकड़े। मगर अल्फाज के जरिए आदमी हर नसीहत को एक उल्टा रुख दे देता है और उसके अंदर जो सबक का पहलू है उसे पाने से महरूम रह जाता है।

‘तुम चाहे कोई भी निशानी दिखाओ हम ईमान नहीं लाएंगे’ फिरऔन का यह जुमला बताता है कि हक अपनी मुकम्मल सूरत में मौजूद होने के बावजूद सिर्फ उसी को मिलता है जो उसे पाना चाहे। बअल्फाज दीगर, जो शख्स हक के मामले में संजीदा हो, जिसके अंदर **सिद्क** (सचमुच) यह आमादगी हो कि हक चाहे जहां और जिस सूरत में भी मिले वह उसे ले लेगा, उस पर हक का हक होना खुलता है। इसके बरअक्स जो शख्स इस मामले में संजीदा न हो। जिसका हाल यह हो कि जो कुछ उसके पास है बस उसी पर वह मुतमइन (संतुष्ट) है वह हक (सत्य) को हक की सूरत में देखने से आजिज रहेगा और इसीलिए वह उसे इख्तियार भी न कर सकेगा। अपने हाल पर मगन रहना आदमी को अपने से बाहर की चीजों के लिए बेखबर बना देता है। वह जानकर भी नहीं जानता, वह सुनकर भी नहीं सुनता।

आदमी अगर गैर मुतअस्सिर (निष्पक्ष) जेन्न के तहत सेवे तो वह जरूर ह्वीमत्त को पा लेगा। मगर अक्सर लोग अपनी नफिसयात (मानसिकता) के जेअसर राय कयम करते हैं, यही वजह है कि वे हकीकत को पाने में नाकाम रहते हैं।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِ وَالْدَّمَائِثَ مُفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا فَجْرِمِينَ ۖ وَلَبَّأَوْ قَوْمَ الرِّجْزِ قَالُوا يُمُوسَى اذْعُرْ لَنَا رَبِّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بِالْغُفْوَةِ إِذْ هُمْ يَنْتَكِبُونَ ۝

फिर हमने उनके ऊपर तूफान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक और खून। ये सब निशानियां अलग-अलग दिखाईं। फिर भी उन्होंने तकबुर (घमंड) किया और वे मुजरिम लोग थे। और जब उन पर कोई अजाब पड़ता तो कहते थे मूसा, अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है। अगर तुम हम पर से इस अजाब को हटा दो तो हम जरूर तुम पर ईमान लाएंगे और तुम्हारे साथ बनी इस्राईल को जाने देंगे। फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफत को कुछ मुद्दत के लिए जहां बहरहाल उन्हें पहुंचना था तो उसी वक्त वे अहद (वचन) को तोड़ देते। (133-135)

हजरत मूसा ने मिश्र में तकरीबन 40 साल तक पैगम्बरी की। आपके मिशन के दो अज्जा थे। एक, फिरऔन को तौहीद का पैगाम देना। दूसरे, बनी इस्राईल को मिश्र से निकाल कर सहारा सीना में ले जाना और वहां आजादना फजा में उनकी दीनी तर्बियत करना। बनी इस्राईल (हजरत याकूब की औलाद) उस वक्त शदीद तौर पर किस्ती बादशाह (फिरऔन) की गिरफ्त में थे। किस्ती कौम उन्हें अपने जराअती (कृषि) और तामीरी कामों में बतौर मजदूर इस्तेमाल करती थी। इसलिए किस्ती हुक्मरां नहीं चाहते थे कि बनी इस्राईल मिश्र से बाहर चले जाएं। हजरत मूसा ने इब्त्दा में जब फिरऔन से मुतालबा किया कि बनी इस्राईल को मेरे साथ मिश्र से बाहर जाने दे तो फिरऔन और उसके दरबारियों ने उसे सियासी मअना पहना कर आप पर यह इल्जाम लगाया कि वह किस्ती कौम को मिश्र से निकाल देना चाहते हैं। (110) यह बात सरासर बेमअना (अर्थहीन) थी। क्योंकि हजरत मूसा का मंसूबा तो खुद अपने आपको मिश्र से बाहर ले जाने का था, और फिरऔन ने यह उल्टा इल्जाम लगाया कि वह किस्तियों को उनके मुल्क से बाहर निकाल देना चाहते हैं। उस वक्त फिरऔन और उसके साथी इक्तेदार (सत्ता) के घमंड में थे इसलिए सीधी बात भी उन्हें टेढ़ी नजर आई।

मगर बाद के मरहले में खुदा ने फिरऔन और उसकी कौम पर हर तरह की बलाएं नाजिल कीं। उन पर कई साल तक मुसलसल कहत (अकाल) पड़े। शदीद गरज चमक के साथ ओलों का तूफान आया। टिड्डियों के दल के दल आए जो फसल और बाग को खा गए और हर किस्म की सब्जी का ख़ात्मा कर दिया। जुएं और मेंढक इस कसरत से हो गए कि कपड़ों और बिस्तरों पर जुएं ही जुएं थीं और घरों और रास्तों में हर तरफ मेंढक ही मेंढक

कूदने लगे। दरियाओं और तालाबों का पानी खून हो गया। फिरऔन और उसकी कौम जब इन अजीब व गरीब मुसीबतों में मुब्तिला हुए तो वे कह उठे कि खुदा अगर इन मुसीबतों को हमसे डाल दे तो हम बनी इस्राईल को मूसा के साथ जाने देंगे। हजरत मूसा के जिस मुतालबे में पहले किवियों के इख़ाज (निष्कासन) की सियासी साजिश दिखाई दी थी वह अब खुद बनी इस्राईल की हिजरत के हममअना नजर आने लगी।

आदमी अपने को महफूज हालत में पा रहा हो तो वह तरह-तरह की बातें बनाता है। मगर जब उससे हिफ़ाजत छीन ली जाए और उसको इज्ज और बेवसी के मक़म पर खड़ा कर दिया जाए तो अचानक वह हकीकतपसंद बन जाता है। अब वह बात खुद ही उसकी समझ में आ जाती है जो पहले समझाने के बाद भी समझ में नहीं आती थी। मगर इंकार की ताकत रखते हुए इक्कार करने का नाम इक्कार है। अल्फ़ज छिन जाने के बाद कोई इक्कार इक्कार नहीं।

فَاتَّقِنَا مِنْهُمْ فَأَعْرِفْنَهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ۝ وَأَوْزَيْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِن تَرَكَ الْغُرُفَ وَنَجَّيْنَا الْإِسْرَائِيلَ مِنْهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۖ هَٰذَا صَبْرُكُمْ وَأَنَّ الْأَعْيُنُ عَلَىٰ آثَارِكُم بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۖ وَمَا كُنَّا لِنُعْزِلَهُمْ ۖ

फिर हमने उन्हें सजा दी और उन्हें समुद्र में ग़र्क कर दिया क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह हो गए। और जो लोग कमजोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस सरजमीन के पूरब व पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और बनी इस्राईल पर तेरे रब का नेक वादा पूरा हो गया इस सबब से कि उन्होंने सब्र किया और हमने फिरऔन और उसकी कौम का वह सब कुछ बर्बाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे। (136-137)

नबियों की मुखातब कौमों पर जो अज़ाब आता है वह आयतों की तक़ज़ीब की वजह से आता है। यानी निशानियों को झुठलाना। इसके मुकाबले में नबियों के साथियों पर जो खुसूसी नुसरत (मदद) उतरती है उसका इस्तेमाल (पात्रता) उन्हें सब्र की वजह से हासिल होता है। यानी अपने ज़बात को थाम कर अल्लाह के तरीके पर साबित कदम रहना।

निशानियों से मुराद वे दलाइल हैं जो हक को हक साबित करने वाले होते हैं मगर आदमी अपनी मुतक़बिराना नफ़िसयात (अहं-भाव) की वजह से उन्हें मानने पर कादिर नहीं होता। वह दलील के मामले को दलील पेश करने वाले का मामला बना लेता है। वह समझता है कि अगर मैंने यह दलील मान ली तो फलां शख्स के मुकाबले में मेरा मर्तबा घट जाएगा। वह दलील पेश करने वाले के मुकाबले में अपने को बाला (उच्च) रखने की खातिर दलील की बालातरी (उच्चता) को तस्लीम नहीं करता। मगर यही इंसान की आजमाइश का अस्ल मक़ाम

है। मौजूदा दुनिया में खुदा निशानियों या दलाइल के पर्दे में जाहिर होता है, आखिरत में वह बेहिजाब होकर जाहिर हो जाएगा। मगर ईमान वही मौतबर है जबकि आदमी पर्दादारी के साथ जाहिर होने वाले हक को पा ले। बेहिजाबी के साथ जाहिर होने वाले हक को मानना सिर्फ आदमी के जुर्म को साबित करेगा न कि वह उसे इनाम का मुस्तहिक बनाए। ऐसा इक्कार सिर्फ इस बात का सुबूत होगा कि आदमी ने अपनी बेपरवाही की वजह से हक को ना जाना। अगर वह उसके बारे में संजीदा होता तो यकीनन वह उसे जान लेता।

इसके मुकाबले में खुदा के वफ़ादार बंदे हैं जिनकी सबसे नुमायां खुसूसियत सब्र है। हकीकत यह है कि ईमान की ज़िंदगी सरासर सब्र की ज़िंदगी है। अपने जैसे एक इंसान की ज़बान से हक का एलान सुनकर उसे मान लेना, आदतों और मस्लेहों पर कायमशुदा ज़िंदगी को हक और उसूल की बुनियाद पर कायम करना, लोगों की तरफ से पेश आने वाली ईजाओं (यातनाओं) को खुदा के खातिर नजरअंदाज करना, हक के मुख़ालिफ़ीन की डाली हुई मुसीबतों से पस्तहिम्मत न होना, ये सब ईमान के लाजिमी मराहिल (चरण) हैं और आदमी सब्र के बग़ैर इन मराहिल से कामयाबी के साथ गुजर नहीं सकता।

फिरऔन को अपने इक्तेदार पर और अपने बागों और इमारतों पर घमंड था। हजरत मूसा की हिजरत के बाद फिरऔन और उसका लश्कर समुद्र में ग़र्क कर दिया गया। ओलों और टिड्डियों ने मित्र के सरसब्ज व शादाब बागात को उजाड़ दिया और जलजलों ने उनकी शानदार इमारतें ढा दीं। दूसरी तरफ हजरत मूसा की चन्द नस्लों के बाद हजरत दाऊद और हजरत सुरेमान के जमाने में बनी इस्राईल अतरफे मित्र (शाम व फिलिस्तीन) पर कब्ज हो गए। निशानियों को झुठलाने वाले हमेशा खुदा के ग़ज़ब के मुस्तहिक होते हैं और सब्र करने वाले हमेशा खुदा की नुसरत के।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَمِيزُونَ عَلَىٰ أَصْنَامِهِمْ ۚ لَّهُمْ قَالُوا يُؤْمِسُ أَجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَبْهَلُونَ ۚ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَرِّئُونَ مِنْكُمْ وَبُطْلٌ فَاكُنُوا يَعْلَمُونَ ۚ قَالَ أَغَيْرِ اللَّهُ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ وَإِذْ أَخْبَيْنَاكُمْ مِّنَ الْإِلَهِ فِرْعَوْنَ يَسُومُكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَعْيِبُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذِكْرِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۖ

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका गुजर एक ऐसी कौम पर हुआ जो पूजने में लग रहे थे अपने बुतों के। उन्होंने कहा ऐ मूसा, हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बना दे जैसे इनके बुत हैं। मूसा ने कहा, तुम बड़े जाहिल लोग हो। ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं वह बातिल है। उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे

लिए तलाश करूं हालांकि उसने तुम्हें तमाम अहले आलम पर फजीलत (श्रेष्ठता) दी है। और जब हमने फिरऔन वालों से तुम्हें नजात दी जो तुम्हें सज़ा अजाब में डाले हुए थे। तुम्हारे बेटों को कल्ल करते और तुम्हारी औरतों को जिंदा रहने देते और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी बड़ी आजमाइश थी। (138-141)

बनी इस्राईल बहरे अहमर (लाल सागर) के शिमाली (उत्तरी) सिरे को पार करके जजीरा नुमाए सीना में पहुंचे। फिर शिमाल से जुनूब (दक्षिण) की तरफ समुद्र के किनारे-किनारे अपना सफर शुरू किया। इस दरमियान में किसी मकाम से गुजरते हुए बनी इस्राईल ने एक कौम को देखा कि वह बुत की परस्तिश में मशगूल है। उस वक़्त बनी इस्राईल के कुछ लोगों ने (न कि सारे बनी इस्राईल ने) यह तकाज़ा किया कि उनके लिए एक बुत बना दिया जाए।

आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी जाहिरपरस्ती है। वह ग़ैब में छुपे हुए ख़ुदा पर अपना ज़ेहन पूरी तरह जमा नहीं पाता, इसलिए वह किसी न किसी जाहिरी चीज़ में अटक कर रह जाता है। कुछ बेशुऊर लोग पत्थर और धातु के बने हुए बुतों के आगे झुकते हैं। और जो लोग ज्यादा मुहज्जब (सम्प्य) हैं वे किसी शरिअत, किसी क़ैम या किसी तमज़ुनी (सांस्कृतिक) ढांचे को अपनी तवज्जोह का मर्कज़ बना लेते हैं।

बनी इस्राईल के कुछ अफ़राद ने जब हज़रत मूसा से जाहिरी बुत गढ़ने की फ़रमाइश की तो आपने फरमाया ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह सब बर्बाद किया जाने वाला है। यानी हमारा मिशन तो यह है कि हम इन जाहिरी ख़ुदाओं को तोड़कर ख़त्म कर दें और आदमी को पूरी तरह सिर्फ़ एक ख़ुदा का परस्तार बनाएं। फिर कैसे मुमकिन है कि हम ख़ुद ही इस किस्म का एक जाहिरी ख़ुदा अपने लिए गढ़ लें।

‘बनी इस्राईल को तमाम अहले आलम पर फजीलत दी’ से मुराद किसी किस्म की नस्ली (श्रेष्ठता) नहीं है बल्कि मंसबी (दायित्वपूर्ण) फजीलत है। यह उसी मअना में है जिसमें उम्मत मुहम्मदी के बारे में कहा गया है कि ‘तुम ख़ैरे उम्मत हो’। अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि वह किसी ग़िरोह को अपनी किताब का हामिल बनाता है और उसके जरिए दूसरी कौमों तक अपना पैग़ाम पहुंचाता है। कदीम जमाने में यह मंसब बनी इस्राईल (यहूद) को हासिल था, ख़त्मे नुबुव्वत के बाद यह मंसब उम्मत मुहम्मदी को दिया गया।

फिरऔन को यह मौक़ा मिलना कि वह बनी इस्राईल पर जुल्म करे। यह बनी इस्राईल के लिए बतौर आजमाइश था न कि बतौर अजाब। इस तरह की आजमाइश इस लिए होती है कि अहले ईमान को झिंझोड़ कर बेदार किया जाए। यह मालूम किया जाए कि कौन मुश्किल हालात में ख़ुदा के दीन से फिर जाता है और कौन है जो सब्र की हद तक ख़ुदा के दीन पर कायम रहने वाला है।

وَوَعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ فِتْنَةٍ مُّيَقَاتٍ رَبِّهِ أَزْبَعِينَ
لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ

الْمُفْسِدِينَ ۚ وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ ارْنِي أَنْظُرَ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرَانِي وَلَكِنْ أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي ۚ فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا ۚ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَنَكَ ثُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसे पूरा किया दस मजीद रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी कौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, इस्लाह (सुधार) करते रहना, और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना। और जब मूसा हमारे वक़्त पर आ गया और उसके रब ने उससे कलाम किया तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मैं तुझे देखूं। फरमाया, तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते। अलबत्ता पहाड़ की तरफ देखो, अगर वह अपनी जगह कायम रह जाए तो तुम भी मुझे देख सकोगे। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली (आलोक) डली तो उसे ख़ैर ख़ैर कर दिया। और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश आया तो बोला, तू पाक है, मैंने तेरी तरफ रुजूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूं। (142-143)

हज़रत हारून हज़रत मूसा के बड़े भाई थे, हज़रत मूसा की उम्र उनसे तीन साल कम थी। मगर नुबुव्वत अस्लान हज़रत मूसा को मिली और हज़रत हारून उनके साथ सिर्फ़ मददगार की हैसियत से शरीक किए गए। इससे अंदाज़ा होता है कि दीनी ओहदों की तक्सीम में अस्ल अहमियत इस्तेदाद (क्षमता) की है न कि उम्र या इसी किस्म की दूसरी इजाफ़ी चीज़ों की।

हज़रत मूसा को मिन्न में दावती अहकाम दिए गए थे और सहराए सीना में पहुंचने के बाद पहाड़ी पर बुलाकर कानूनी अहकाम दिए गए। इससे ख़ुदाई अहकाम की तर्तीब मालूम होती है। आम हालात में ख़ुदापरस्तों से जो चीज़ मलूब है वह यह कि वे जाती जिंदगी को दुरुस्त करें और ख़ुदा के परस्तार बनकर रहें। इसी के साथ दूसरों को भी तौहीद व आख़िरत की तरफ बुलाएं। मगर जब अहले ईमान आजाद और बाइख़ियार ग़िरोह की हैसियत हासिल कर लें, जैसा कि सहराए सीना में बनी इस्राईल थे, तो उन पर यह फ़र्ज भी आयद हो जाता है कि अपनी इज्तिमाई जिंदगी को शरई कानूनों की बुनियाद पर कायम करें।

हज़रत मूसा ने अपनी ग़ैर मौजूदगी के लिए जब हज़रत हारून को बनी इस्राईल का निगरा बनाया तो फरमाया : ‘इस्लाह (सुधार) करते रहना और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना’ (142)। इससे मालूम होता है कि इज्तिमाई सरबराह (प्रमुख) के लिए अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने का बुनियादी उसूल क्या है। वह है इस्लाह और मुस्लिम (उपद्रवियों) की पैरवी न करना। इस्लाह से मुराद यह है कि मुख़लिफ़ अफ़राद के

दर्मियान इंसान का तवाजु (संतुलन) किसी हाल में टूटने न दिया जाए। हर एक को वही मिले जो उसे अजरूए अदूल (न्यायानुसार) मिलना चाहिए और हर एक से वही छीना जाए जो अजरूए अदूल उससे छीना जाना चाहिए। इस इस्लाही अमल में अक्सर उस वक्त खराबी पैदा होती है जबकि सरदार 'मुफ़्सीदीन' (उपद्रवियों) की पैरवी करने लगे। यह पैरवी कभी इस शक्ल में होती है कि उसके मुफ़्सीदीन (समीपवर्ती) अपने जाती अग्राज की बिना पर जो कुछ कहें वह उन्हें मान ले। और कभी इस तरह होती है कि मुफ़्सीदीन की ताकत से ख़ैफ़जदा होकर वह ख़ामोशी इख़्तियार कर ले।

हजरत मूसा ने खुदा को देखना चाहा और जब मालूम हुआ कि खुदा को देखना मुमकिन नहीं तो उन्होंने तौबा की और बग़ैर देखे ईमान का इकरार किया। ईसान का इस्तेहान यह है कि वह देखे बग़ैर खुदा को माने। खुदा को देखना आख़िरत (परलोक) का एक इनाम है फिर वह मौजूदा दुनिया में क्योंकर मुमकिन हो सकता है।

قَالَ يٰمُوسَىٰ اِنِّى اصْطَفَيْتَكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلَامِى فَخُذْ مَا آتَيْتَكَ وَكُنْ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهُ فِى الْاَوْارِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۝ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يٰاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا سٰوِرِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

अल्लाह ने फरमाया, ऐ मूसा मैंने तुम्हें लोगों पर अपनी पैगम्बरी और अपने कलाम के जरिए से सफ़राज किया। पस अब लो जो कुछ मैंने तुम्हें अता किया है। और शुक्रगुजारों में से बानो। और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर किस्म की नसीहत और हर चीज की तफ़्सील लिख दी। पस इसे मजबूती से पकड़ो और अपनी कैम को हुक्म दो कि इनके बेहतर मफहूम (भावार्थ) की पैरवी करें। अन्करीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा। (144-145)

हजरत मूसा को पहली बार नुबुव्वत पहाड़ के ऊपर मिली थी और दूसरी बार भी तौरात के अहकाम उन्हें पहाड़ पर बुलाकर दिए गए। यह इस बात का एक इशारा है कि खुदा का फैज़ान हसिल करने की सब से ज्यादा मौजूजगह फ़ितरत का माहल है न कि इंसानी आबादियों का माहौल। ईसानों की पुरशोर दुनिया से निकल कर आदमी जब पथरों और दरख़्तों की ख़ामोश दुनिया में पहुंचता है तो वह अपने आपको खुदा के करीब महसूस करने लगता है। वह मस्तुई (कृत्रिम) एहसासात से ख़ाली होकर अपनी फ़ितरी (स्वाभाविक) हालत पर पहुंच जाता है। यह किसी आदमी के लिए बेहतरीन लम्हा होता है जबकि वह बेआमेज फ़ितरी (सहज-स्वाभाविक) अंदाज में सोचे और यकसू (एकाग्र) होकर अपने रब से जुड़ सके।

पैगम्बर आम इंसानों में से एक इंसान होता है। वह किसी भी एतबार से कोई ग़ैर इंसानी मख़बूक नहीं होता। उसकी खुसूसियत सिर्फ यह होती है कि वह अपनी पैदाइशी इस्तेदाद (क्षमता) को महफूज रखने में कामयाब हो जाता है इसलिए खुदा उसे चुनता है कि वह उसके

पैगाम का हामिल (धारक) बने और लोगों के दर्मियान उसकी काबिले एतमाद नुमाइंदगी करे। हजरत मूसा उस वक्त अपनी कैम के बेहतरीन शख़्स थे इसलिए खुदा ने उन्हें अपना पैगम्बर चुना और उन पर अपना कलाम उतारा।

खुदा के कलाम में अगरचे हिदायत से मुतअल्लिक हर किस्म की जरूरी तफ़्सील मौजूद होती है मगर वह अल्फ़ाज में होती है और मौजूदा इस्तेहानी दुनिया में बहरहाल इसका इश्कान बाकी रहता है कि आदमी इन अल्फ़ाज की ग़लत तशरीह करके उसे ग़ैर मल्बूब मअना पहना दे। मगर जो शख़्स हिदायत के मामले में संजीदा हो और खुदा की पकड़ से डरता हो वह इन अल्फ़ाज से वही मअना लेगा जो कलामेइलाही की शायानेशान है न कि वह जो उसके नपस को मरगूब हो।

'मैं अन्करीब तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा' यानी अपने इस सफर में आगे चलकर तुम उन कैमों के खंडहरों से गुजरोगे जिन्हें इससे पहले खुदा की हिदायत दी गई थी। मगर वे उसे मजबूती के साथ पकड़ने में नाकाम साबित हुए। हालात के दबाव या जज्बात के मैलान को नजरअंदाज करके वे उस पर ठीक तरह क़ायम न रह सके। चुनचि उनका अंजाम यह हुआ कि वे हलाक कर दिए गए। अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारा अंजाम भी दुनिया व आख़िरत में वही होगा जो उन पिछली कैमों का हुआ। खुदा का मामला जैसा एक कैम के साथ है वैसा ही मामला दूसरी कैम के साथ है। अदले इलाही (ईश-न्याय) की मीजान (तुला) में एक कैम और दूसरी कैम के दर्मियान कोई फ़र्क नहीं।

इस दुनिया में यह मौका है कि आदमी अपनी खुदसाख़्ता तशरीह से खुदा के अहसन (अच्छे) कलाम का कोई ग़ैर अहसन मफहूम (भावार्थ) निकाल ले। मगर यह ऐसी ज़सारत है जो फरमांवरदारी के दावेदार को भी नाफरमानों की फ़ेहरिस्त में शामिल कर देती है।

سٰصِرِفْ عَنِ الْاِيتِى الَّذِيْنَ يَكْتَبُرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَا يُؤْمِنُوْا بِهَا وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغٰى يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ الْاَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूंगा जो जमीन में नाहक घमंड करते हैं। और अगर वे हर किस्म की निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं। और अगर वे हिदायत का रास्ता देखें तो उसे न अपनाएं और अगर गुमराही का रास्ता देखें तो उसे अपना लेंगे। यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी तरफ से अपने को ग़ाफिल रखा। और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आख़िरत की मुलाकात को झुठलाया उनके आमाल अकारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे जो वे कहते थे। (146-147)

दुनिया में ज़िंदगी गुज़ारने की दो सूरते हैं। एक यह कि आदमी ने अपने आंख और कान खुले रखे हों। वह चीजों को उनके असली रंग में देखता और सुनता हो। ऐसे आदमी के सामने हक आया तो वह उसे पहचान लेगा। दुनिया में बिखरी हुई खुदाई निशानियां उसे जो सबक देंगी वह उन्हें पा लेगा। दूसरी सूरत यह है कि आदमी मुत्तकबिराना नपिसयात (अहंभाव) के साथ जी रहा हो। वह जमीन में इस तरह रहता हो जैसे वह उसका मालिक हो, उसे अपने जाती दाअियात (निजी भावनाओं) के सिवा किसी और चीज की परवाह न हो। वह समझता हो कि यहां जो कुछ उसे मिल रहा है वह अपनी लियाकत की वजह से मिल रहा है। अपनी मिली हुई चीजों में उसे किसी और की मर्जी का लिहाज करने की जरूरत नहीं।

इस दूसरे आदमी का इस्तराग (उदासीनता) उसके लिए कुबूलेहक में रुकावट बन जाएगा।

पहले आदमी की नपिसयात लेने वाली नपिसयात होती है। वह अपने खुले ज़ेहन की वजह से खुदा के हर इशारे को पढ़ लेता है। और फौरन अपने आपको उसके मुताबिक ढाल लेता है। इसके बरअक्स दूसरे आदमी की नपिसयात बेनियाजी (उदासीनता) की नपिसयात होती है। उसके सामने हक के दलाइल आते हैं मगर वह उन्हें ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देता है। उसके सामने क़दरत ख़ामोश ज़बान में अपना नगमा छेड़ती है मगर वह उस पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझता। उसके अपने से बाहर किसी सच्चाई की तरफ राबत नहीं होती। मौत के बाद आने वाली दुनिया सिर्फ पहले लोगों के लिए है। दूसरे लोग खुदा की अबदी (चिरस्थायी) दुनिया में उसी तरह नजरअंदाज कर दिए जाएंगे जिस तरह मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में वे खुदा की बात को नजरअंदाज किए हुए थे।

गुमराही का रास्ता नपस (अंतःकरण) के मुहरिकात (प्रेरकों) के तहत बनता है और हिदायत का रास्ता वह है जो नपस और माहौल के असरात से ऊपर उठकर खालिस खुदा के लिए वुजूद में आता है। अब जो लोग अपनी जात की सतह पर जी रहे हों, जो सिर्फ अपने नपस के अंदर उभरने वाले दाअियात (भावनाओं) को जानते हों वे गुमराही के रास्ते पर ऐन अपनी चीज समझ कर उसकी तरफ दौड़ पड़ें। हिदायत का रास्ता उनका अपने मिजाज के एतबार से अजनबी दिखाई देगा इसलिए वे उसकी तरफ बढ़ने में भी नाकाम साबित होंगे।

बड़ाई की नपिसयात उस चीज को आसानी से कुबूल कर लेती है जिसमें उसकी बड़ाई बाकी रहे। और जहां उसकी बड़ाई ख़त्म होती हो उससे उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती।

وَإِذْ أَخَذْنَا مَوْسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُورٌ ۚ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۚ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ۝ وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَكَانُوا اتَّخَذُوا قَالُوا لَيْنَ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبَّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي ۖ أَتَعْبَلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ وَأَلْقَىٰ

الْأَنْوَاعَ ۚ وَآخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ ۚ قَالَ ابْنَ أَقْرَبَ الْقَوْمِ اسْتَصْعَفُونِي ۚ وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي ۚ فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوِي ۖ وَادْخُلْنَا فِي رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

और मूसा की कौम ने उसके पीछे अपने जेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई राह दिखाता है। उसे उन्होंने माबूद (पूज्य) बना लिया और वे बड़े जालिम थे। और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा, अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख़्शा तो यकीनन हम बर्बाद हो जाएंगे। और जब मूसा रंज और गुस्से में भरा हुआ अपनी कौम की तरफ लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) की। क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली। और उसने तख़्तियां डाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींचने लगे। हारून ने कहा, ऐ मेरी मां के बेटे, लोगों ने मुझे दबा लिया और करीब था कि मुझे मार डालें। पस तू दुश्मनों को मेरे ऊपर हंसने का मौका न दे और मुझे जालिमों के साथ शामिल न कर। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब माफ़ कर दे मुझे और मेरे भाई को और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फरमा और तू सबसे ज्यादा रहम करने वाला है। (148-151)

बनी इस्राईल के गिरोह में उस वक्त सामिरी नाम का एक बहुत शातिर आदमी था। हजरत मूसा जब बनी इस्राईल को हजरत हारून की निगरानी में छोड़कर पहाड़ पर चले गए तो उसने लोगों को बहकाया। उसने लोगों से जेवरात लेकर उन्हें बछड़े की सूरत में ढाल दिया। बुतगरी (मूर्ति शिल्प) के कदीम मिश्री फन के मुताबिक बछड़े की यह मूर्त इस तरह बनाई गई थी कि जब उसके अंदर से हवा गुजरे तो उसके मुंह से ख़ार (बैल की डकार की सी आवाज) आए। लोग आम तौर पर अजूबापसंद होते हैं। चुनांचे इतनी सी बात पर बहुत से लोग शुबह में पड़ गए और उसके बारे में खुदाई तसव्वुर (धारण) कयम कर लिया। एक शातिर आदमी ने कुछ अवामी बातें करके भीड़ की भीड़ अपने गिर्द जमा कर ली। उसका जोर इतना बढ़ा कि हजरत हारून और संभवतः उनके चन्द साथियों के सिवा कोई खुल्लम खुल्ला एहतेजाज (प्रतिरोध) करने वाला भी न निकला। जाहिर है कि जिस अवामी तूफान में पैगम्बर के नायब की आवाज दब जाए वहां कैसे कोई बोलने की ज़रूरत कर सकता है।

अवाम का जौक हर जमाने में यही रहा है और आज भी वह पूरी तरह मौजूद है। आज भी एक होशियार आदमी अपनी तकरीरों और तहरीरों से किसी न किसी 'ख़ार' पर लोगों की भीड़ जमा कर लेता है। लोग यह नहीं सोचते कि जिस चीज के गिर्द वे जमा हो रहे हैं वह महज एक तमाशा है न कि सचमुच कोई हकीकत। कोई संजीदा आदमी अगर इस तमाशे की हकीकत को खोलता है तो उसका वही अंजाम होता है जो बनी इस्राईल के दर्मियान हजरत हारून का हुआ।

हजरत मूसा ने जब देखा कि बनी इस्राईल मुशिरकाना फेअल में मशगूल हैं तो उन्हें गुमान हुआ कि हजरत हारून ने इस्लाह (सुधार) के सिलसिले में कोताही की है। चुनांचे गुस्से में उन्हें पकड़ लिया। मगर जैसे ही उन्होंने बताया कि उन्होंने अपनी इस्लाह की कोशिश में कोई कमी न की थी तो उनके बयान के बाद फौरन रुक गए और अपने लिए और हजरत हारून के लिए खुदा से दुआ करने लगे। एक मोमिन को दूसरे मोमिन के बारे में बड़ी से बड़ी गलतफहमी हो सकती है मगर मामले की वजाहत के बाद वह ऐसा हो जाता है जैसे उसे गलतफहमी पैदा ही नहीं हुई थी।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمُ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۖ وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا
وَأٰمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

वेशक जिन लोगों ने बछड़े को माबूद (पूज्य) बनाया उन्हें उनके रब का ग़ज़ब पहुंचेगा और जिल्लत दुनिया की ज़िंदगी में। और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ बांधने वालों को। और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर इसके बाद तौबा की। और ईमान लाए तो वेशक इसके बाद तेरा रब बख्शने वाला महरबान है। (152-153)

बनी इस्राईल के बछड़ा बनाने को यहां इफ़्तिरा (झूठ बांधना) कहा गया है। ऐसा क्यों है। इसकी वजह यह है कि उन्होंने यह बातिल काम हक के नाम पर किया था। उन्होंने अपना यह काम खुदा के दीन का इंकार करके नहीं किया था बल्कि खुदा के दीन को मानते हुए किया था। अपनी इस बेदीनी को वे दीनी अल्फाज में बयान करते थे। मुशिरकीन के आम अकीदे की तरह, वे कहते थे कि खुदा उन की गढ़ी हुई मूरत में हुलूल कर आया है। इसलिए उसकी इबादत खुद खुदा की इबादत के हममअना है। यहां तक कि इस फेअल (कृत्य) के लीडर सामिरी ने उसके हक में कश्फ व करामत (दिव्य निर्देश) की दलील भी तलाश कर ली। उसने कहा कि मैंने ख़ाब में देखा कि जिब्रील आए हैं और मैंने उनके घोड़े के नक्शे कदम से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई है और एक बछड़ा बनाकर उसके अंदर वह मिट्टी डाल दी तो मुकद्दस (पवित्र) मिट्टी की बरकत से वह बछड़ा बोलने लगा। गोया सामिरी और उसके साथी खुदा की तरफ ऐसी बात मंसूब कर रहे थे जो खुदा ने खुद नहीं बताई थी। इस किस्म की निस्वत इफ़्तिरा (खुदा पर झूठ बांधना) है चाहे वह एक सूरत में हो या दूसरी सूरत में।

कोई दीन का हामिल (धारक) गिरोह इस किस्म का इफ़्तिरा करता है, वह बेदीनी के फेअल को दीन का नाम दे देता है, तो यह चीज खुदा के ग़ज़ब को शदीद तौर पर भड़का देती है। उसके मुतअल्लिक यह फैसला किया जाता है कि उसे आखिरत से पहले दुनिया की ज़िंदगी ही में रुखाकुन सजा दी जाए। बनी इस्राईल के लिए यह दुनियावी सजा इस सूरत में आई कि हजरत मूसा के हुक्म पर हर कबीले के मुख़्तस जिम्मेदारों ने अपने अपने कबीले के उन अफ़राद को पकड़ा जिन्होंने बछड़ा बनाने के इस काम में हिस्सा लिया था और इस फितने में बराहेरास्त शरीक रहे थे। इसके बाद हर कबीले के अफ़राद ने खुद अपने हाथ से अपने कबीले के मुजरिमीन

को क़त्ल कर दिया। इस दर्दनाक अंजाम से सिर्फ वे लोग बचे जो अपने इस फेअल पर सख़्त शर्मिन्दा हुए और उन्होंने अपने जुर्म का इकरार करते हुए तौबा की।

बनी इस्राईल के जुर्म पर खुदा ने जिस सजा का फैसला किया उसका निफ़ज खुद उनकी अपनी तलवारों से किया गया। ताहम इस किस्म के फैसले का निफ़ज कभी अग़ाधार (अन्योन्य) की तलवारों के जरिए किया जाता है। और अग़ाधार की तलवारों से इसका निफ़ज उस वक़्त होता है जबकि सजा के साथ रुखाई को भी शामिल कर देने का फैसला किया गया हो।

गुनाह पर तौबा यह है कि गुनाह हो जाने के बाद आदमी अपने उस फेअल पर शदीद शर्मिन्दा हो। तौबा की अस्त हकीकत शर्मिन्दगी है। यह शर्मिन्दगी इस बात की जमानत है कि आदमी अपने पूरे वजूद से फैसला करे कि आइंदा वह ऐसा फेअल (कृत्य) न करेगा। कोई गुनाहगार जब इस तरह शर्मिन्दगी का और आइंदा के लिए परहेज के अज्म (संकल्प) का सबूत दे देता है तो गोया कि वह दुबारा ईमान लाता है, दीन के दायरे से निकल जाने के बाद वह दुबारा खुदा के दीन में दाख़िल होता है।

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَابَ ۚ وَفِي سَخِيبَةٍ هُدًى
وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْتَدُّونَ ۖ وَاخْتَارَ مُوسَىٰ قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا
رِّمْقَاتِنَا فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ
وَإِلَآئِي أَتَّخِذُكُمَا بِمَافَعَلِ السُّفَهَاءِ مِثْلًا إِن هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن
تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ إِنَّتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۖ وَكُتِبَ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا
إِلَيْكَ ۚ قَالَ عِدَاؤِي أَصِيبْ بِهِ مَن أَشَاءُ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ
فَسَاكِبْهَا الَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝

और जब मूसा का गुस्सा थमा तो उसने तख़्तियां उठाई और जो उनमें लिखा हुआ था उसमें हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। और मूसा ने अपनी क़ैम में से सत्तर आदमी चुने हमारे फ़ुकरर किए हुए वक़्त के लिए। फिर जब उन्हें जलजले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ रब, अगर तू चाहता तो तू पहले ही इन्हें हलाक कर देता और मुझे भी। क्या तू हमें ऐसे काम पर हलाक करेगा जो हमारे अंदर के बेवकूफ़ों ने किया। ये सब तेरी आजमाइश है तू इससे जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे। तू ही हमारा थामने वाला है। पस हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा, तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है। और तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आखिरत में भी। हमने तेरी तरफ़ रुजूअ किया। अल्लाह ने कहा, मैं अपना अज़ाब उसी पर डालता हूँ जिसे चाहता हूँ और मेरी रहमत शामिल है हर चीज

को। पस मैं उसे लिख दूंगा उनके लिए जो डर रखते हैं और जकात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं। (154-156)

बनी इस्राईल के बछड़ा बनाने से यह जाहिर हुआ था कि उनके अंदर खुदा पर वह यकीन नहीं है जो होना चाहिए। चुनांचे उन्हें पहाड़ पर बुलाया गया। हजरत मूसा मुकर्रह वक्त के मुताबिक बनी इस्राईल के सत्तर नुमाइंदा अफराद को लेकर दुबारा कोहेतूर पर गए। वहां खुदा ने गरज चमक और जलजले के जरिए ऐसे हालात पैदा किए जिससे बनी इस्राईल के लोगों के अंदर इनाबत व खशियत (ईशभय) पैदा हो। चुनांचे इसके बाद वे खुदा के सामने रोए गिड़गिड़ाए और इज्तिमाई (सामूहिक) तौबा की। उन्होंने अहद किया कि वे तौरात के अहकाम पर सच्चाई के साथ अमल करेंगे।

इस मौके पर हजरत मूसा ने दुआ कि 'ऐ हमारे रब, हमारे लिए दुनिया और आखिरत में भलाई लिख दे' अल्लाह तआला ने इसके जवाब में फरमाया 'मैं जिस पर चाहता हूं अपना अजाब डालता हूं और मेरी रहमत हर चीज को शामिल है' हजरत मूसा की दुआ बहसियत मज्मूई अपनी पूरी उम्मत के लिए थी। मगर अल्लाह तआला ने अपने जवाब में वाजेह कर दिया कि नजात और कामयाबी कोई गिरोही चीज नहीं है। इसका फैसला हर हर फर्द के लिए उसके जाती अमल की बुनियाद पर होता है। अगरचे मैं तमाम रहम करने वालों से ज्यादा रहीम हूं। मगर जो शख्स अमले सालेह (सत्कर्मों) का सुबूत न दे वह मेरी पकड़ से बच नहीं सकता, चाहे वह किसी भी गिरोह से तअल्लुक रखता हो।

खुदा की किताब हिदायत व रहमत होती है। वह दुनिया की जिंदगी में आदमी के लिए बेहतरीन रहनुमा है और आखिरत में खुदा की रहमत का यकीनी जरिया। मगर खुदा की किताब का यह फायदा सिर्फ उसे मिलता है जो 'डर' रखता हो, जिसे अदिशा लगा हुआ हो कि मालूम नहीं खुदा मेरे साथ क्या मामला करेगा। ये वे लोग हैं जो सच्चे हक के तालिब होते हैं। उनके सामने जब हक आता है तो वे किसी किस्म की नपिसयाती पेचीदगी में मुब्तिला हुए बगैर उसे पा लेते हैं। इसके बाद खुदा उनके खौफ और उम्मीद का मर्कज बन जाता है। उनका सब कुछ खुदा के लिए वक्फ हो जाता है। उनका डर उनके शुऊर को बेदार कर देता है। उनकी निगाह से तमाम मस्नूई पर्दे हट जाते हैं। खुदा की तरफ से जाहिर होने वाली निशानियों को पहचानने में वे कभी नहीं चूकते। वे अदिशे की नपिसयात में जीते हैं न कि कनाअत (संतोष) की नपिसयात में।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الَّذِي يَجِدُونَ أَهْلَهُمْ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۚ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَزَّرُوا وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنْزِلَ مَعَهُ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٩﴾

जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (अनपढ़) है, जिसे वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उनके लिए पाकीजा चीजे जाइज ठहराता है और नापाक चीजे हराम करता है और उन पर से वह बोझ और कैदें उतारता है जो उन पर थीं। पस जो लोग उस पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज्जत की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। (157)

बनी इस्राईल देखते चले आ रहे थे कि जितने नबी आते हैं वे सब उनकी अपनी कौम में आते हैं। आखिरी रसूल खुदा के मंसूवे के मुताबिक बनी इस्राईल में आने वाला था। इसलिए खुदा ने बनी इस्राईल के नबियों के जरिए उन्हें पहले से इनकी खबर कर दी। उनकी किताबों में कसरत से इसकी पेशीनगोइयां अभी तक मौजूद हैं। ऐसा इसलिए हुआ ताकि जब आखिरी रसूल आए तो वे किसी बड़े फितने में न पड़ें और आसानी से उसे पहचान कर उसके साथी बन जाएं।

पैगम्बरे इस्लाम पढ़े लिखे न थे। आप उम्मी रसूल थे। उम्मियत के साथ पैगम्बरी, जो पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिंदगी में आखिरी और इतिहाई सूरत में जमा हुई यही हमेशा के लिए अल्लाह तआला की सुन्नत है। मअरफते खुदावंदी का इन्हार हमेशा 'उम्मियत' की सतह पर होता है। यानी वह किसी ऐसे शख्स के जरिए जहिर किया जाता है जो दुनियावी मेयार के लिहाज से इस किस्म के अजैम काम का अहल न समझा जाता हो। तारीख (इतिहास) में कभी ऐसा नहीं हुआ कि खुदा ने बुकरात और अफलातून को अपना पैगम्बर बनाकर भेजा हो।

दीन की अस्ल रूह अल्लाह का खौफ और आखिरत की फिक्र है। मगर बाद के जमाने में जब अंदरूनी रूह सर्द पड़ती है तो जवाहिर (वास्त्यता) का जोर बहुत बढ़ जाता है। अब गैर जरूरी मूशिगाफियां (कुतकी) करके नए-नए मसाइल बनाए जाते हैं। रूहानियत के नाम पर मशकों और रियाजतों (साधना) का एक पूरा ढांचा खड़ा कर लिया जाता है। अवामी तवह्हुमात (अंधविश्वास) मुकद्दस होकर नई शरीअत की सूरत इख्तियार कर लेते हैं। यहूद का यही हाल हो चुका था। उन्होंने खुदा के दीन के नाम पर तवह्हुमात और जकड़बंदियों का एक खुदासाझा ढांचा बना लिया था और उसे खुदा का दीन समझते थे। पैगम्बरे इस्लाम ने उनके सामने दीन को उसकी फितरी सूरत में पेश किया। गैर जरूरी पाबंदियों को खत्म करके सादा और सच्चे दीन की तरफ उनकी रहनुमाई फरमाई।

पैगम्बर जब आता है तो सबसे बड़ी नेकी यह होती है कि उस पर ईमान लाया जाए। मगर यह ईमान आम मअनों में महज एक कलिमा पढ़ाना नहीं है। यह बेरूह ढांचे वाले दीन से निकल कर जिंदा शुऊर वाले दीन में दाखिल होना है। साबिक़ा (पूर्ववर्ती) मजहबी ढांचे से आदमी की वाबस्तगी महज तारीखी रिवायात या नस्ली रवाज के जोर पर होती है। मगर नए पैगम्बर के दीन को जब वह कुबूल करता है तो वह उसे शुऊरी फैसले के तहत कुबूल करता है, वह रस्म से निकल कर हकीकत के दायरे में दाखिल होता है। बजाहिर यह एक सादा सी

बात मालूम होती है। मगर यह सादा बात हर दौर में इंसान के लिए मुश्किलतरीन बात साबित हुई है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا ۖ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ
الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ ۖ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۚ وَمِنْ قَوْمِ
مُوسَىٰٓ أَنَاۤءُ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْدِلُونَ ۝

कहो ऐ लोगो, बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम सबकी तरफ जिसकी हुक्मत है आसमानों और जमीन में। वही जिलाता है और वही मारता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलिमात (वाणी) पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। और मूसा की कौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक के मुताबिक रहनुमाई करता है और उसी के मुताबिक इंसान करता है। (158-159)

‘कहो मैं सब इंसानों की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ’ का मतलब यह नहीं है कि दूसरे तमाम पैगम्बर कौमी पैगम्बर थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लिम बैनुलअक्वामी (अन्तर्राष्ट्रीय) पैगम्बर हैं। यह बात बतौर तकाबुल (तुलना) नहीं कही गई है बल्कि बतौर वाक्या कही गई है।

अस्त यह है कि पैगम्बरे इस्लाम की दो बेअसतें (आगमन) हैं। एक बराहेरास्त, दूसरी बिलवास्ता उम्मत। आपकी बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) बेअसत अरब के लिए थी (अनआम 92) और आपकी बिलवास्ता (परोक्ष) बेअसत सारे आलम के लिए है (हज्ज 78)। हुक्मन (सिद्धांततः) यही नौइयत खुदा के तमाम पैगम्बरों की थी। मगर दूसरे पैगम्बरों का दीन महफूज हालत में बाकी न रह सका इसलिए यह मुमकिन नहीं हुआ कि वे तमाम आलम के लिए नजीर व बशीर (डराने और खुशखबरी देने वाले) बनते। आज मसीहियत की तब्तीग सारे आलम में बहुत बड़े पैमाने पर हो रही है। इसके बावजूद हजरत मसीह की नुबुव्वत सिर्फ फिलिस्तीन तक महदूद होकर रह गई। क्योंकि हजरत मसीह के बाद उनकी तालीमात अपनी अस्त हालत में बाकी नहीं रहीं। आज मसीहियत के नाम से जो दीन लोगों तक पहुंच रहा है वह हकीकतन सेंट पॉल का दीन है न कि मसीह का दीन। गोया नबियों के वुस्अतेकार (कार्यक्षेत्र) में जो फर्क है वह फर्कबस्तबार वाक्या है न कि बस्तबार तप्बीज (प्रस्तुत)।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) अरबी के मुतअल्लिक बाइबल में यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है कि जमीन के सब कबीले उसके वसीले से बरकत पाएंगे (पेदाइश बाब 12)। सब कौमों तक आपकी बरकत पहुंचना इसलिए मुमकिन हो सका कि आपका लाया हुआ दीन महफूज (सुरक्षित) है। हजरत मूसा और हजरत मसीह का दीन महफूज नहीं। इसलिए बजहिर इसकी आवाज सब तक पहुंच कर भी उसकी बरकत सब तक न पहुंच सकी।

अरब में यहूदी कबीले आबाद थे। ये वे लोग थे जिन्हें यह फख्र था कि उनके पास खुदा की मुकद्दस किताब (दिक् ग्रंथ) है। ऐसे लोग हमेशा अपने से बाहर किसी सच्चाई को मानने के लिए सबसे ज्यादा सख्त होते हैं। उनका यह एहसास कि वे सबसे बड़ी सच्चाई को लिए हुए हैं उनके लिए किसी दूसरे की तरफ से आने वाली सच्चाई को कुबूल करने में रुकावट हो जाता है। यही हाल यहूद का हुआ है। उनकी बहुत बड़ी अक्सरियत ज़िद और तअस्सुब की नफिसयात में मुब्तिला हो गई। सिर्फ चन्द लोग (अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह) ऐसे निकले जिन्होंने खुले जेहन के साथ इस्लाम को देखा। उन्होंने अपनी दुनियावी इज्जत की परवाह किए बगैर उसकी सदाकत (सच्चाई) का एलान किया और अपनी दुनियावी ज़िंदगी को उसके हवाले कर दिया।

‘रसूल ईमान रखता है अल्लाह पर और उसके कलिमात (वाणी) पर’ यह जुमला बताता है कि फलसफियों के ख़ुदा और पैगम्बर के ख़ुदा में क्या फर्क है। फलसफी का ख़ुदा एक मुजर्द रूह (निर्जीव) है। उसे मानना ऐसा ही है जैसे कायनात में कुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) को मानना। कुव्वते कशिश न बोलती और न हुक्म देती। मगर पैगम्बर का ख़ुदा एक ज़िदा और बाशुऊर खुदा है। वह इंसानों से हमकलाम होता है। वह अपने बंदों को हुक्म देता है और उस हुक्म के मानने या न मानने पर हर एक के लिए इनाम या सजा का फैसला करता है।

وَقَطَعْنَا لَهُمْ شُرَكَاءَ أَسْبَاطِ أُمَمًا ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ ۖ
أَنِ اصْرَبْ بَعْصَاكَ الْحَبْرَ ۖ فَانْجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ ۖ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّٰنَ ۖ وَالسَّلَٰوِيَّ
كُلُّوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ ۖ وَمَا ظَلَمُونَا وَلٰكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝ وَإِذْ
قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا
الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ ۖ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۝ فَبَكَدَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ
قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ ۖ يَمَّا كَانُوا يَظْلِمُونَ ۝

और हमने उन्हें बारह घरानों में तक्सीम करके उन्हें अलग-अलग गिरोह बना दिया। और जब मूसा की कौम ने पानी मांगा तो हमने मूसा को हुक्म भेजा कि फलां चट्टान पर अपनी लाठी मारो तो उससे बारह चशमे (जलस्रोत) फूट निकले। हर गिरोह ने अपना पानी पीने का मकाम मालूम कर लिया। और हमने उन पर बदलियों का साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ पाकीजा चीजों में से जो हमने तुम्हें दी हैं। और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि खुद अपना ही नुक्सान करते रहे। और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ। उसमें जहां से चाहो खाओ और

कहो हमें बख्श दे और दरवाजे में झुके हुए दाखिल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं माफ़ कर देंगे। हम नेकी करने वालों को और ज्यादा देते हैं। फिर उनमें से जालिमों ने बदल डाला दूसरा लफ़्ज़ उसके सिवा जो उनके कहा गया था। फिर हमने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इसलिए कि वे जुल्म करते थे। (160-162)

मिस्र की मुश्किरकाना फ़जा से निकाल कर ख़ुदा ने बनी इस्राईल को सहारा सीना में पहुंचाया। यहां उनकी तंजीम कायम की गई। उन्हें बारह जमाअतों में बांट दिया गया। हर जमाअत के ऊपर एक निगरां था और हजरत मूसा सबके ऊपर निगरां थे।

फिर बनी इस्राईल को ख़ुसूसी तौर पर तमाम ज़रूरियातें ज़िंदगी अता की गईं। पहाड़ी चशमे निकाल कर उनके लिए पानी फ़राहम किया गया। खुले सहारा में साये के लिए उन पर मुसलसल बदलियां भेजी गईं। उनकी ख़ुराक के लिए मन्न व सलवा उतरा जो बाआसानी उन्हें अपने खेमों के सामने मिल जाता था। उनकी बाकायदा सकूनत के लिए एक पूरा शहर अरीहा (वादी यरदुन में) उनके हवाले कर दिया गया।

अल्लाह तआला ने उनसे कहा कि तुम्हारी तमाम ज़रूरियात का हमने इंतज़ाम कर दिया है। अब हिंस और लज्जतपरस्ती में मुब्तिला होकर नापाक चीजों की तरफ न देखो। इसके बजाए कनाअत (संतोष) और अल्लाह के आगे शुक़रगुजारी का तरीका इस्तिआर करो।

‘बाब (दरवाजा) में झुके हुए दाखिल हो’ यहां बाब से मुराद बस्ती का दरवाजा नहीं है बल्कि हैकले सुलैमानी का दरवाजा है। जमीन में इक्तेदार देने के बाद बनी इस्राईल से कहा गया कि अपनी इबादतगाह में ख़ाशेअ (शालीन) बनकर जाओ और गुनाहों से मग़िफ़रत मांगो। मुसलमानों के यहां जिस तरह काबा को बैतुल्लाह (ख़ुदा का घर) कहा जाता है इसी तरह यहूद के यहां हैकल को बाबुल्लाह (ख़ुदा का फाटक) कहा जाता है। यहूद को हुक्म दिया गया था कि अपने इबादतखाने में इज्ज व तवाजोअ के साथ दाखिल होकर अपने रब की इबादत करो और अल्लाह की अज्मत व जलाल को याद करके उसके आगे अपनी कोताहियों का एतराफ़ करते रहो। मगर यहूद ख़ुदा की नसीहतों को भूल गए। वे ख़ुदा की बताई हुई राह पर चलने के बजाए ख़ुदा के नाम पर ख़ुदसाज़ता (स्वनिर्मित) राहों पर चलने लगे। उन्होंने इज्ज के बजाए सरकशी का तरीका अपनाया। शुक़ का कलिमा बोलने के बजाए वे बेसब्री के कलिमात बोलने लगे।

यहूद जब बिगाड़ की इस हद को पहुंच गए तो ख़ुदा ने अपनी इनायात उनसे वापस ले ली। रहमत के बजाए उन्हें मुख़लिफ़ किस्म के अज़ाबों ने घेर लिया।

وَسَأَلُهُمُ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً الْبَحْرِ اذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ اذْ
تَأْتِيهِمْ حِينَا لَهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرْعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ
نَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝ وَاِذْ قَالَتْ اِمْرَاةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعْطُونَ قَوْمًا لِّلّٰهِ
مُهْلِكُهُمْ اَوْ مَعَدَّيْهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ اَقَالُوْا مَعْرَدَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝

और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो दरिया के किनारे थी। जब वे सब (सनीचर) के बारे में तज़ाबुज़ (उल्लंघन) करते थे। जब उनके सब के दिन उनकी मछलियां पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सब न होता तो न आतीं। उनकी आजमाइश हमने इस तरह की, इसलिए कि वे नाफरमानी कर रहे थे। और जब उनमें से एक ग़िरोह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सज़ा अज़ाब देने वाला है। उन्होंने कहा, तुम्हारे रब के सामने इल्जाम उतारने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें। (163-164)

यहूद को यह तल्कीन की गई थी कि वे हफ्ते का एक दिन (सनीचर) इबादत और ज़िक्र ख़ुदा के लिए ख़ास रखें। उस दिन कोई मआशी (आर्थिक) काम न करें। बाइबल के मुताबिक हुक्म यह था कि जो शख्स सब के क़ानून के ख़िलाफ़वर्जी करे वह मार डाला जाए (ख़ुर्रुज बाब 31)। मगर जब यहूद में बिगाड़ आया तो वे इसकी ख़िलाफ़वर्जी करने लगे। उनके मुस्लेहीन (सुधारकों) ने मुतवज्जह किया तो वे न माने। ताहम मुस्लेहीन ने अपनी कोशिश मुसलसल जारी रखी। हकीकत यह है कि दूसरों की इस्लाह का काम अगरचे बजाहिर दूसरों के लिए होता है मगर वह ख़ुद अपने लिए किया जाता है, इसका असली मुहर्कि (प्रेरक) अपने आपको अल्लाह के यहां बरीउज्जिम्मा ठहराना है। अगर यह मुहर्कि ज़िंदा न हो तो आदमी दर्मियान में ठहर जाएगा, वह अपने इस्लाह और तल्कीन के अमल को आखिर वक्त तक जारी नहीं रख सकता।

यहूद की सरकशी का नतीजा यह हुआ कि मामले को उनके लिए और सख़्त कर दिया गया। बहरे कुलजुम (लाल सागर) की मश्किरी ख़लीज के किनारे ईला शहर में यहूद की आबादियां थीं। उनकी मईशत (जीविका) का इहिसार ज्यादातर मछलियों के शिकार पर था। ख़ुदा के हुक्म से यह हुआ कि सनीचर के दिन उनके साहिल पर मछलियों की आमद बहुत बढ़ गई। बाकी छः दिनों में मछलियां बहुत कम आतीं। मगर ममनूआ (निषिद्ध) दिन (सनीचर) को वे कसरत से पानी की सतह के ऊपर तैरती हुई दिखाई देतीं।

यह यहूद के लिए बड़ी सख़्त आजमाइश थी। गोया पहले अगर यह नौइयत थी कि सनीचर के अलावा छः जाइज दिनों में शिकार करने का पूरा मौक़ा था तो अब सिर्फ़ एक हराम दिन ही शिकार करने का मौक़ा उनके लिए बाकी रह गया। अब यहूद ने यह किया कि वे हीले के जरिए हराम को हलाल करने लगे। वे सनीचर के दिन शिकार न करते। अलबत्ता वे समुद्र का पानी काट कर बाहर बने हुए हैजों में लाते। सनीचर के दिन मछलियां चढ़तीं तो वे नाली के रास्ते से उनके बनाए हुए हैज में आ जातीं। इसके बाद वे हैज का मुंह बंद करके मछलियों के दरिया में लौटने का रास्ता रोक देते। फिर अगले दिन इतवार को जाकर उन्हें पकड़ लेते। इस तरह वे एक नाजाइज फ़ेअल को जवाज की सूरत देने की कोशिश करते ताकि उन पर यह हुक्म सादिर न आए कि उन्होंने सनीचर के दिन शिकार किया है।

इससे मालूम हुआ कि जो शख्स जाइज जरियों से अपनी ज़रूरियात फ़राहम करने पर कनाअत न करे तो वह अपने आपको इस ख़तरे में डालता है कि उसके लिए जाइज जरियों का दरवाजा सिरे से बंद कर दिया जाए और नाजाइज जरिये के सिवा उसके लिए हुसूले मआश की कोई सूरत बाकी न रहे।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا
بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٥٧﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿٥٨﴾

फिर जब उन्होंने भुला दी वह चीज जो उन्हें याद दिलाई गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया एक सख्त अजाब में पकड़ लिया। इसलिए कि वे नाफरमानी (अवज्ञा) करते थे। फिर जब वे बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि जलील बंदर बन जाओ। (165-166)

एक काम जिससे खुदा ने मना किया हो उसे करना गुनाह है और हीले के जरिए नाजाइज को जाइज बनाकर करना गुनाह पर सक्रशी का इजफ है। कानूने सब की खिलाफ़र्जी करके यहूद इसी किस्म के मुजरिम बन गए थे। ऐसे लोग खुदा की लानत के मुस्तहिक हो जाते हैं। यानी वे खुदा की उन इनायतों से महरूम हो जाते हैं जो उसने इस दुनिया में सिर्फ इंसान के लिए मखसूस की हैं। ऐसे लोग इंसानियत की सतह से गिर कर हैवानियत की सतह पर आ जाते हैं।

कानूने सब की खिलाफ़र्जी करने वालों के साथ यही मामला किया गया। 'अल्लाह ने उन्हें बंदर बना दिया' का मतलब यह नहीं है कि उनकी सूरत बंदरों की सूरत हो गई। इसका मतलब यह है कि उनका अख़लाक बंदरों जैसा हो गया। उनका दिल और उनकी सोच इंसानों के बजाए बंदर जैसे हो गए। (तफ़सीर क़ुर्तुबी)

इंसान एक ऐसी मख़बूक है जिसके अंदर उसके ख़ालिक ने अक्ल और जमीर रख दिया है। उसके अंदर जब कोई ख़्वाहिश उठती है तो उसकी अक्ल व जमीर (अन्तरात्मा) मुतहर्कि होकर फौरन उसके सामने यह सवाल खड़ा कर देते हैं कि ऐसा करना तुम्हारे लिए दुरुस्त है या नहीं। इसके बरअक्स बंदर का हाल यह है कि उसकी ख़्वाहिश और उसके अमल के दर्मियान कोई तीसरी चीज हायल नहीं। जो बात भी उसके जी में आ जाए वह फौरन उसे कर डालता है। उसे न अपनी ख़्वाहिश के बारे में सोचने की जरूरत होती है और न उस पर अमल करने के बाद उस पर शर्मिन्दा होने की।

अब इंसान का बंदर हो जाना यह है कि वह अपनी अक्ल और अपने जमीर के खिलाफ़ अमल करते करते इतना बेहिस हो जाए कि इस किस्म के नाजुक अहसासात उसके अंदर से जाते रहें। उसके दिल में जो भी ख़्वाहिश पैदा हो उसे वह कर गुजरे। जब भी कोई शख्स उसकी जद में आ जाए तो वह उसकी इज्जत और उसके माल पर हमला कर दे। किसी से शिकायत पैदा हो तो फौरन उसे जलील करने के लिए खड़ा हो जाए। किसी से इख़्तेलाफ़ (मतभेद) हो जाए तो उस पर गुराने लगे। कोई उसे अपनी राह में रुकावट नजर आए तो फौरन उससे लड़ना शुरू कर दे। सच्चा इंसान वह है जो अपने आप पर खुदा की लगाम लगा

ले। और बंदर इंसान वह है जो बेक़ैद होकर वह सब कुछ करने लगे जो उसका नपस उससे करने के लिए कहे।

बुराई से रोकना एक किस्म का एलाने बरा-त (विरक्ति) है। इसलिए जब किसी गिरोह पर खुदा की यह सजा आती है तो उसकी जद में आने से वे लोग बचा लिए जाते हैं जो बुराई से इस हद तक बेजार (खिन्न) हों कि वे उसे रोकने वाले बन जाएं।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ
إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ﴿٥٩﴾ وَإِنَّكَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٦٠﴾ وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ
أُمَمًا مِّنْهُمْ الضَّالُّونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦١﴾

और जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया कि वह यहूद पर क़ियामत के दिन तक जरूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें निहायत बुरा अजाब दें। बेशक तेरा रब जल्द सजा देने वाला है और बेशक वह बख़्शने वाला महरबान है। और हमने उन्हें गिरोह-गिरोह करके जमीन में बिखेर दिया। उनमें कुछ नेक हैं और उनमें कुछ इससे मुत्तलिफ़ (भिन्न)। और हमने उनकी आजमाइश की अच्छे हालात से और बुरे हालात से ताकि वे बाज आएँ। (167-168)

इन आयत में यहूद के लिए जिस सजा का एलान है उसके साथ क़ियामत के दिन तक की शर्त लगी हुई है। इससे मालूम होता है कि यह सजा वह है जिसका तअल्लुक दुनिया से है। आख़िरत के अंजाम का मामला इससे अलग है जिसका ज़िक्र दूसरे मक़ामात पर आया है।

किसी काम के करने पर जब बड़ा इनाम रखा जाए तो इसका मतलब यह है कि उस काम को न करने पर उतनी ही बड़ी सजा भी होगी। यही मामला उस कौम का है जो आसमानी किताब की हामिल बनाई गई हो। यहूद को खुदा ने इसी मंसब पर फायज किया था। चुनांचे आख़िरत के वादे के अलावा दुनिया में भी उन्हें ग़ैर मामूली इनामात दिए गए। मगर यहूद ने मुसलसल नाफरमानी (अवज्ञा) की। वे दीन के नाम पर बेदीनी करते रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि खुदा ने उन्हें फज़ीलत (श्रेष्ठता) के मंसब से हटा दिया। उनके लिए यह पैसला हुआ कि जब तक दुनिया क़यम है वे खुदा की सजा का मजा चखते रहें। और आख़िरत में जो कुछ होना है वह इसके अलावा है।

इसका मतलब यह नहीं है कि अब क़ियामत तक उन पर कभी अच्छे हालात नहीं आएंगे। जैसा कि खुद इन आयतों में सराहत है, उन पर 'हसनात' के वक़्फ़े (उत्तम काल) भी पड़ेंगे। मगर यह हसनह का वक़्फ़ भी उनके लिए एक किस्म का अताब होगा ताकि वे और सक्रशी करके और ज्यादा सजा के मुतहिक बनें।

इन आयतों में यहूद के लिए दो सजाओं का ज़िक्र है। एक यह कि उन पर ऐसी कौमों मुसल्लत की जाएगी जो उन्हें अपने जुल्म का निशाना बनाएं। तारीख़ बताती है कि यहूद

कभी बुख्त नम्र और कभी टाइटस रूमी के शदाइद (उत्पीड़न) का निशाना बने। कभी वे मुसलमानों की मातहत में दिए गए। मौजूदा जमाने में उन्होंने पूर्वी यूरोप में अपना जबरदस्त आर्थिक जाल फैला लिया तो हिटलर ने उन्हें तबाह व बर्बाद कर डाला। अब अर्जे मक्दिस में उनका जमा होना बजाहिर इसकी अलामत है कि उनकी पूरी कुवत शायद इज्माई (सामूहिक) तौर पर हलाक की जाने वाली है।

दूसरी सजा जिसका यहां जिक्र है वह 'तक्तीअ' है। यानी उनके गिरोह को मुख़ल्लिफ हिस्सों में बांट कर मुंतशिर (विघटित) कर देना। यह दूसरा वाकया भी तारीख में बार-बार उनके साथ होता रहा है।

अल्लाह का यह कानून सिर्फ यहूद के लिए नहीं था। वह बाद के उस गिरोह के लिए भी है जिसे यहूद की माज़ली के बाद खुदा की गवाही के मंसब पर फायज किया गया है। मुसलमान अपने को अगर इस हाल में पाए कि मुकिरीन व मुशिरकीन ने उन पर ग़लबा पा लिया हो और वे छोटे-छोटे जुगराफियों (भू-क्षेत्रों) में बंटकर बिखर गए हों तो उन्हें खुदा की तरफ लौटना चाहिए। क्योंकि इसका मतलब यह है कि वे एहतसावे इलाही की जद में आ गए हैं।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَصَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَصٌ مِثْلُهُ يَأْخُذُوهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَالْذَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّالَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُبَيِّسُونَ بِالنَّاسِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَإِذْ نَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

फिर उनके पीछे नाख़ल्फ (अयोग्य) लोग आए जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) लेते हैं और कहते हैं कि हम यकीनन बख़्श दिए जाएंगे। और अगर ऐसी ही मताअ उनके सामने फिर आए तो उसे ले लेंगे। क्या उनसे किताब में इसका अहद (वचन) नहीं लिया गया है कि अल्लाह के नाम पर हक के सिवा कोई और बात न कहें। और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है। और आखिरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए, क्या तुम समझते नहीं। और जो लोग खुदा की किताब को मजबूती से पकड़ते हैं और नमाज कायम करते हैं, बेशक हम मुस्लिहीन (सुधारकों) का अज़्र जाया नहीं करेंगे। और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान है। और उन्होंने गुमान किया कि वह उन पर आ पड़ेगा। पकड़ो उस चीज को जो हमने तुम्हें दी है मजबूती से, और याद रखो जो उसमें है ताकि तुम बचो। (169-171)

हजरत मूसा के जमाने में यहूद को जब खुदाई अहकाम दिए गए तो उसकी कार्रवाई पहाड़ के दामन में हुई थी। उस वक्त ऐसे हालात पैदा किए गए कि यहूद को महसूस हुआ कि पहाड़ उनके ऊपर गिरा चाहता है। यह इस बात का इज्हार था कि खुदा से अहद बांधने का मामला बेहद गंभीर मामला है। अगर तुमने उसके तकाजों को पूरा न किया तो याद रखो कि इस अहद का दूसरा फरीक वह अजीम हस्ती है जो चाहे तो पहाड़ को तुम्हारे ऊपर गिराकर तुम्हें हलाक कर दे।

उस वक्त यहूद में बड़ी तादाद ऐसे लोगों की थी जो अल्लाह से डरने वाले और नेक अमल करने वाले थे। मगर बाद को धीरे-धीरे उन्होंने दुनिया को अपना मक्सूद बना लिया। वे जाइज नाजाइज का फर्क किए बगैर माल जमा करने में लग गए। आसमानी किताब को अब भी वे पढ़ते थे मगर उसकी तालीमात की खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तावीलें करके उसे उन्होंने ऐसा बना लिया कि खुदा भी उन्हें अपनी बागियाना जिंदगी का हामी नजर आने लगा। उनकी बेहिंसी यहां तक बढ़ी कि वे ये कहकर मुतमइन हो गए कि हम बरगुजीदा (प्रतिष्ठित) उम्मत हैं। हम नबियों की औलाद हैं। खुदा अपने महबूब बंदों के सदके में हमें जरूर बख़्श देगा।

यही वाकया हर नबी की उम्मत के साथ पेश आता है। इब्तिदाई दौर में उसके अफराद खुदा से डरने वाले और नेक अमल करने वाले होते हैं। मगर अगली नस्तों में यह रूह निकल जाती है। वे दूसरे दुनियादार लोगों की तरह हो जाते हैं। उनके दर्मियान अब भी दीन मौजूद होता है। खुदा की किताब अब भी उनके यहां पढ़ी पढ़ाई जाती है। मगर यह सब कौमी विरासत के तौर पर होता है न कि हकीकतन अहदे खुदावंदी के तौर पर। वे अमलन आखिरत को भूल कर दुनियापरस्ती की राह पर चल पड़ते हैं। वे सही और ग़लत से बेनियाज होकर अपनी ख़्वाहिशों को अपना मजहब बना लेते हैं। मगर इसी के साथ उन्हें यह भी फख़ होता है कि वे बेहतरीन उम्मत हैं। वे महबूबे खुदा के उम्मती हैं। वे आसमानी किताब के वारिस हैं। कलिमा तौहीद की बरकत से वे जरूर बख़्श दिए जाएंगे।

मगर असल चीज यह है कि आदमी खुदा की किताब को मजबूती से पकड़े, वह नमाज को कायम करे। और किताबे इलाही को पकड़ने और नमाज को कायम करने का मेयार यह है कि आदमी 'मुस्लेह' (सुधारक) बन गया हो। खुदा की किताब से तअल्लुक और खुदा की इबादत करना आदमी को मुस्लेह बनाता है न कि मुफ़्सिद।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَسْتُ بَرِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ۝ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهَمِّكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

और जब तेरे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन्हें गवाह ठहराया खुद उनके ऊपर। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ। उन्होंने कहा हां, हम इकारा करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम कियामत के दिन कहने लगे हमें तो इसकी खबर न थी। या कहो कि हमारे बाप दादा ने पहले से शिर्क (खुदा का साझीदार ठहराना) किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए। तो क्या तू हमें हलाक करेगा उस काम पर जो गलतकार लोगों ने किया। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोलकर बयान करते हैं ताकि वे पलट आएँ। (172-174)

एक जानवर को उसके मां बाप से अलग कर दिया जाए और उसकी परवरिश बिल्कुल अलग माहौल में की जाए तब भी बड़ा होकर वह मुकम्मल तौर पर अपनी नस्ली खुसूसियात पर कायम रहता है। वह अपने तमाम मामलात में ऐन वही तरीका इख्तियार करता है जो उसकी जिबिल्लत (Instinct) में पेवस्त है। यही मामला इंसान का 'शुऊरे रब' के बारे में है। इंसान की रूह में एक खालिक व मालिक का शुऊर इतनी गहराई के साथ जमा दिया गया है कि वह किसी हाल में उससे जुदा नहीं होता। मौजूदा जमाने में एक एतबार से रूस और दूसरे एतबार से टर्की का तजर्बा बताता है कि मुकम्मल तौर पर मुखालिफ मजहब माहौल में तर्कित पाने के बावजूद इंसान की फितरत ऐन वही बाकी रहती है जो इकारे मजहब के माहौल में हमेशा पाई जाती रही है।

ताहम जानवर और इंसान में एक फर्क है। जानवर अपनी फितरत की इक्लाफजर्जी पर कादिर नहीं। वे मजबूर हैं कि अमलन भी वही करें जो उनके अंदर की फितरत उन्हें सबक दे रही है। इसके बरअक्स इंसान का हाल यह है कि शुऊरे फितरत की हद तक पाबंद होने के बावजूद अमल के मामले में वह पूरी तरह आजाद है। जब भी कोई बात सामने आती है तो उसकी अक्ल और उसका जमीर अंदर से इशारा करते हैं कि सही क्या है और गलत क्या। मगर इसके बावजूद इंसान को इख्तियार है कि वह चाहे अपनी अंदरूनी आवाज की पैरवी करे, चाहे उसे नजरअंदाज करके मनमानी कार्रवाई करने लगे।

यही वह मकाम है जहां इंसान का इम्तेहान हो रहा है और इसी पर जन्नत और जहन्नम का फैसला होना है। जो शख्स खुदाई आवाज पर कान लगाए और वही करे जो खुदा फितरत की खामोश जवान में उससे कह रहा है, वह इम्तेहान में पूरा उतरा। उसके मरने के बाद उसके लिए जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाएंगे। और जो शख्स फितरत की सतह पर नश्र (प्रसारित) हेने वाली खुदाई आवाज को नजरअंदाज कर दे वह खुदा की नजर में मुजरिम है। उसे मरने के बाद जहन्नम में डाला जाएगा। खुदा भी उसे नजरअंदाज कर देगा जिस तरह उसने खुदा की आवाज को नजरअंदाज किया था।

फितरत की यह आवाज हर आदमी के ऊपर खुदा की दलील है। अब किसी के पास न तो बेखुबरी का उज्र है और न कोई यह कह सकता है कि माजी में जो होता चला आ रहा था वही हम भी करने लगे। जब इंसान पैदाइश ही से खुदा का शुऊर लेकर आता है और माहौल के विपरीत उसे हमेशा बाकी रखता है तो अब किसी शख्स के पास बेराह होने का क्या उज्र है।

وَأْتِلْ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آسَنَةً مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ ﴿٧٢﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلَ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرَكْهُ يَلْهَثْ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٧٣﴾ سَاءَ مَثَلًا لِّلْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَانْفُسُهُمْ كَانُوا بِظُلْمٍ ﴿٧٤﴾ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىَّ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَا وَلِيكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٧٥﴾

और उन्हें उस शख्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं तो वह उनसे निकल भागा। पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयतों के जरिए से बुलन्दी अता करते मगर वह तो जमीन का हो रहा और अपनी इबाहिशों की पैरवी करने लगा। पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उस पर बोझ लादे तब भी हांपे और अगर छोड़ दे तब भी हांपे। यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। पस तुम यह अहवाल उन्हें सुनाओ ताकि वे सोचें। कैसी बुरी मिसाल है उन लोगों की जो हमारी निशानियों को झुठलाते हैं और वे अपना ही नुक्सान करते रहे। अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है और जिसे वह बेराह कर दे तो वही घाटा उठाने वाले हैं। (175-178)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में एक शख्स उमैया बिन अबी अस्सल्ल था। आला इंसानी औसाफ के साथ वह हकीमाना कलाम में भी मुमताज दर्जा रखता था। उसे जब मालूम हुआ कि ईसाइयों और यहूदियों की किताबों में एक पैगम्बर के आने की पेशीनगोइयां मौजूद हैं तो उसे गुमान हुआ कि शायद वह पैगम्बर मैं ही हूँ। बाद को उसे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावए नुबुव्वत की खबर मिली और उसने आपका आला कलाम सुना तो उसे सख्त मायूसी हुई। वह पैगम्बरे इस्लाम का मुखालिफ बन गया। उमैया बिन अबी अस्सल्ल को खुदा ने जो आला खुसूसियात दी थीं उनका सही इस्तेमाल यह था कि वह खुदा के पैगम्बर को पहचाने और उनका साथी बन जाए। मगर खुदा की नवाजिशों से उसने अपने अंदर यह जेहन बनाया कि अब खुदा को मेरे सिवा किसी और पर अपना फज्र न करना चाहिए। पैगम्बरे खुदा को न मानने में उसे दुनियावी फायदा नजर आता था इसके बरअक्स आपको मानने में उखरवी फायदा था। उसने आखिरत के मुक़बले में दुनिया को तरजीह दी। वह अगर एतराफ के रूख पर चलता तो वह फरिश्तों को अपना हमसफर बनाता। मगर जब वह हसद व घमंड के रास्ते पर चल पड़ता तो वहां शैतान के सिवा कोई और न था जो उसका साथ दे। यह मिसाल उन तमाम लोगों पर सादिक आती है जो हसद और किब्र (अहं, बड़ाई) की बिना पर सच्चाई को नजरअंदाज करें या उसे मानने से इंकार कर दें।

किसी आदमी का ऐसा बनना अपने आपको इंसानियत के मकाम से गिराकर कुत्ते के मकाम पर पहुंचा देना है। कुत्ता अच्छे सुलूक पर भी हांपता है और बुरे सुलूक पर भी। यही हाल ऐसे आदमी का है। खुदा ने जब उसे दिया तब भी उसने उससे सरकशी की गिजा ली और न दिया तब भी वह सरकश ही बना रहा। हालांकि चाहिए यह था कि जब खुदा ने उसे दिया था वह तो उसका एहसानमंद होता और जब खुदा ने नहीं दिया तो वह खुदा की तक्सीम पर राजी रहकर उसकी तरफ रुजू करता।

किसी को रास्ता दिखाने के लिए खुदा खुद सामने नहीं आता बल्कि वह निशानियों (दलीलों) की सूरत में अपना रास्ता लोगों के ऊपर खोलता है। जिन लोगों के अंदर यह सलाहियत हो कि वे दलीलों और निशानियों के रूप में जाहिर होने वाले हक को पहचान लें और अपने आपको उसके हवाले करने पर राजी हो जाएं वही इस दुनिया में हिदायतयाव होते हैं। और जो लोग दलीलों और निशानियों को अहमियत न दें उनके लिए अबदी (चिरस्थायी) बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا الْجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ وَالْإِنسَ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا
وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ أذانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ
بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ۝ وَلِلَّهِ الْأَسْبَابُ الْحُسْنَىٰ فَاذْعُوهُ بِهَا
وَذُرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْبَابِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمِمَّنْ
خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝

और हमने जिन्नात और इंसानों में से बहुतों को दोजख के लिए पैदा किया है। उनके दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनकी आंखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे ऐसे हैं जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी ज्यादा बेराह। यही लोग हैं ग्राफिल। और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम। पस इन्हीं से उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में कजरवी (कुटिलता) करते हैं। वे बदला पाकर रहेंगे अपने कामों का। और हमने जिन्हें पैदा किया है उनमें से एक गिरोह ऐसा है जो हक के मुताबिक फैसला करता है। और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुल्लाय़ा हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहां से उन्हें खबर भी न होगी। और मैं उन्हें ढील देता हूं, बेशक मेरा दाव बड़ा मजबूत है। (179-183)

सच्चाई एक ऐसी चीज है जिसे हर आदमी को खुद पाना होता है। खुदा ने हर आदमी को दिल और आंख और कान दिए हैं। आदमी इन्हीं सलाहियतों को इस्तेमाल करके सच्चाई को पाता है। और जो शख्स इन सलाहियतों को इस्तेमाल न करे वह यकीनन सच्चाई को पाने से महरूम रहेगा, चाहे सच्चाई उससे कितना ही ज्यादा करीब मौजूद हो।

सच्चाई को पाना हर आदमी का एक शुऊरी और इरादी फेअल है। सच्चाई को वही शख्स समझ सकता है जिसने अपने दिल के दरवाजे उसके लिए खुले रखे हों। उसे वही देख सकता है जिसने अपनी आंखों पर मस्नूई (कृत्रिम) पर्दे न डाले हों। उसकी आवाज उसी को सुनाई दे सकती है जिसने अपने कान में किसी किस्म के डाट न लगा रखे हों। ऐसे लोग सच्चाई की आवाज को पहचान कर उसके आगे अपने को डाल देंगे। और जिस शख्स का मामला इसके बरअक्स हो वह चौपायों की तरह नासमझ बना रहेगा। पहाड़ जैसे दलाइल का वजन महसूस करना भी उसके लिए मुमकिन न होगा। उसके सामने खुदा की तजल्लियां (आलोक) जाहिर होंगी मगर वह उसे देखने से आजिज होगा। उसके पास खुदा का नगमा छेड़ा जाएगा मगर वह उसे सुनने से महरूम रहेगा। सच्चाई हमेशा बेदार लोगों को मिलती है। ग्राफिलों के लिए कोई सच्चाई सच्चाई नहीं।

खुदा के बारे में इंसान के बेराह होने की वजह अक्सर यह होती है कि वह खुदा को मानते हुए अपने जेहन में खुदा की गलत तस्वीर बना लेता है। वह खुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब कर देता है जो उसके शायनेशान नहीं हैं। मसलन इंसानों के हालात पर कयास करके खुदा के मुकर्रबीन (निकटस्थ) का अकीदा बना लेना। बादशाहों को देखकर यह फर्ज कर लेना कि जिस तरह बादशाहों के नायब और मददगार होते हैं उसी तरह खुदा के भी नायब और मददगार हैं। खुदाई फैसले के बारे में ऐसा ख्याल कायम कर लेना जिसमें आदमी की अपनी ख्वाहिशें तो पूरी हो रही हों मगर वह खुदावंदी अदल (न्याय) से मुताबिकत न रखता हो। यह खुदा के नामों में कजी (कुटिलता) करना है कि खुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब की जाएं जो उसकी अज्मत के शायनेशान न हों।

खुदा किसी आदमी की कजरवी पर फौरन उसे नहीं पकड़ता। इस तरह उसे मौका दिया जाता है कि वह या तो खुदा की तंबीहात को देखकर संभल जाए या मजीद ढीठ होकर अपने जुर्म को पूरी तरह साबितशुदा बना दे।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ حِجَّةٍ إِن هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَن عَسَىٰ أَن يَكُونُوا قَدِ اقْتَرَبَ إِلَيْهِمْ هَٰذَا يَوْمُهُمْ الَّذِي هُمْ يُوعَدُونَ ۝ مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ هَادٍ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجِيبُهَا إِلَّا هُوَ تَنقَلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمُ إِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيفٌ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَٰكِن أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَا سْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ ۚ إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है। वह तो एक साफ़ डराने वाला है। क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन के निज़ाम पर नज़र नहीं की और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज़ से और इस बात पर की शायद उनकी मुद़दत करीब आ गई हो। पस इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। जिसे अल्लाह बेराह कर दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। और वह उन्हें सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है। वह तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाक़े होगी। कहो इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। वही उसके वक़्त पर उसे जाहिर करेगा। वह भारी हो रही है आसमानों में और ज़मीन में। वह जब तुम पर आएगी तो अचानक आ जाएगी। वह तुमसे पूछते हैं गोया कि तुम उसकी तहकीक़ कर चुके हो। कहो इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। कहो मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब को जानता तो मैं बहुत से फ़ायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक्सान न पहुंचता। मैं तो महज़ एक डराने वाला और खुशख़बरी सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें। (184-188)

बामक्सद आदमी की सबसे बड़ी ख़ुसूसियत यह है कि वह ग़ैर मस्तेहतपसंद (निस्वार्थ) इंसान होता है। वह वक़्त के रवाज़ से ऊपर उठकर सोचता है। वह माहौल में जमे हुए मसालेह (स्वार्थ) से बेपरवाह होकर अपना काम करता है। वह एक ऐसे निशाने की खातिर अपना जान व माल सब कुछ कुर्बान कर देता है जिसका कोई नतीजा बजाहिर इस दुनिया में मिलने वाला नहीं। यही वजह है कि बामक्सद आदमी अक्सर अपने मुआसिरीन (समकालीन) की तरफ़ से जो सबसे बड़ा ख़िताब मिलता है वह 'मजनून' है। ख़ुदा का पैग़म्बर अपने वक़्त का सबसे बड़ा बामक्सद इंसान होता है। इसलिए ख़ुदा के पैग़म्बरों को हर ज़माने के लोगों ने यही कहा कि यह मजनून हो गए हैं।

ख़ुदा के दीन के दाओ (आह्वानकर्ता) को मजनून कहना तमाम जुल्मों में सबसे बड़ा जुल्म है। क्योंकि वह जिस पैग़ाम को लेकर उठता है वह एक ऐसा पैग़ाम है जिसकी तस्दीक़ तमाम ज़मीन व आसमान कर रहे हैं। वह ऐसे ख़ुदा की तरफ़ बुलाता है जो अपनी कायनाती तज़्ज़ीकात में हर तरफ़ इतिहाई हद तक नुमायां है। वह ऐसी आख़िरत की ख़बर देता है जो ज़मीन व आसमान में उसी तरह संगीन हकीक़त बनी हुई है जिस तरह किसी मां के पेट में पूरा हमल। लोग हक़ के बारे में संजीदा नहीं, इसलिए हक़ की खातिर जान खपाने वाला उन्हें मजनून दिखाई देता है। अगर वे हक़ की क़द्र व कीमत को जानते तो कभी ऐसा न कहते।

'क़ियामत किस तारीख़ को आएगी' इस क़िस्म के सवालालत ग़ैर संजीदा ज़ेहन से निकले हुए सवालालत हैं। क़ियामत को मानने का इहिसार (निर्भरता) क़ियामत के हक़ में ज़ख़्ख़ी दलील पर है न कि इस बात पर कि क़ियामत की तारीख़ तैशुदा सूत में बता दी जाए। जब यह दुनिया दारुल इम्तेहान है तो यहां क़ियामत को तंबीह (चेतावनी) की ज़बान में बताया जाएगा न कि हिसाबी तअय्युनात (निर्धारण) की ज़बान में।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّيْهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَكَرَتْ بِهِ فَلَمَّا ثَقُلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبُّهَا لِيَنْ آتِيَنَا صَاحِبًا لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا آتَاهُمَا صَاحِبًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فَبَيَّاتَاهُمَا فَتَعَلَّى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ أَشِرُّكُمْ مَالًا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ۝ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ ۝ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۝ إِنْ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी ने बनाया उसका जोड़ा ताकि उसके पास सुकून हासिल करे। फिर जब मर्द ने औरत को ढांक लिया तो उसे एक हल्का सा हमल रह गया। फिर वह उसे लिए फिरती रही। फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर अल्लाह अपने रब से दुआ की, अगर तूने हमें तंदुरुस्त औलाद दी तो हम तेरे शुक्रगुजार रहेंगे। मगर जब अल्लाह ने उन्हें तंदुरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़्शी हुई चीज़ में दूसरों को उसका शरीक ठहराने लगे। अल्लाह बरतर है उन मुश्रिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं। क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि वे ख़ुद मज़बूक (सृजित) हैं। और वे न उनकी किसी क़िस्म की मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे। बराबर है चाहे तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो। जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं। पस तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हें ज़वाब दें अगर तुम सच्चे हो। (189-194)

कायनात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ़ (परिचय) कराती है वह ऐसा तआरुफ़ है तो किसी हाल में शिर्क के तसख़ुर को कुबूल नहीं करता। कायनात में बेशुमार अज्जा (अवयव) अलग-अलग पाए जाते हैं। मगर तमाम अज्जा मिलकर एक हमआहंग (अंतरंग) कुल बन जाते हैं। इनमें किसी क़िस्म का तज़ाद (अन्तर्विरोध) या टकराव नहीं। यह कामिल हमआहंगी इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक हो और वही तंहा इसको चला रहा हो।

मर्द और औरत के मामले को देखिए। एक मर्द और एक औरत में जो कामिल मुताबिक़त (सामंजस्य) होती है वह शायद मौजूदा कायनात का सबसे ज्यादा अजीब वाक़या है जिसका तज़र्बा एक शख्स करता है। मर्द एक मुंफ़रिद और मुस्तक़िल (एकल) वजूद है। और औरत उससे अलग एक मुस्तक़िल (एकल) वजूद। मगर ये मर्द और औरत जब मियां

और बीवी की हैसियत से एक दूसरे से मिलते हैं तो दोनों का वजूद इस तरह एक दूसरे में शामिल हो जाता है कि उनमें कोई दूरी बाकी नहीं रहती। हर एक को ऐसा महसूस होता है कि मैं उसके लिए पैदा किया गया हूँ और वह मेरे लिए। दोनों के दर्मियान यह गहरी साजगारी इस बात का खुला हुआ सबूत है कि एक ही इरादे ने अपने पेशगी मंसूबे के तहत दोनों को एक खास ढंग पर बनाया है। कायनात में अगर एक से ज्यादा हस्तियों की कारफरमाई होती तो दो मुखलिफ और मुतजाद (अन्तर्विरोधी) चीजों के दर्मियान यह कामिल हमआहंगी (अंतरंगता) मुमकिन नहीं होती।

मगर कैसी अजीब बात है कि जिस कायनात में तौहीद के इतने ज्यादा दलाइल मौजूद हैं वहाँ आदमी शिर्क को अपना मजहब बनाता है। दो इंसानों में 'वहदत' (एकत्व) के करिश्मे से एक तीसरे बच्चे ने जन्म लिया मगर जब वह पैदा हो गया तो किसी ने यह अकीदा बना लिया कि यह जैलाद फलां जिंदा या मुर्दा बुर्जा की बरकत से हुई है। किसी ने उसे मफरूज (काल्पनिक) देवताओं की तरफ मंसूब कर दिया। किसी ने कहा कि यह मादुदा (पदार्थ) की अंधी ताकतों के अमल और रद्देअमल (क्रिया-प्रतिक्रिया) का नतीजा है। किसी ने यह समझा कि यह खुद उसकी अपनी कमाई है जो एक खूबसूरत बच्चे की सूरत में उसे हासिल हुई है।

الْهَمُّ أَزْجَلُ يَبْشُرُونَ بِهَاءٍ أَمْ لَهُمْ آعِينٌ
يُبْصِرُونَ بِهَاءٍ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَاءٍ أَمْ لَهُمْ آفْئِدَةٌ تَبْصُرُونَ
كَيْدُ وَنَ فَلَا تَنْظُرُونَ ۚ إِنَّ إِلَى اللَّهِ الدِّينَ نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ
يَتَوَكَّلُ الصَّالِحِينَ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا
أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۚ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

क्या उनके पाँव हैं कि उनसे चलें। क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें। क्या उनकी आंखें हैं कि उनसे देखें। क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें। कहो, तुम अपने शरीकों को बुलाओ। फिर तुम लोग मेरे खिलाफ तदवीरें करो और मुझे मोहलत न दो। यकीनन मेरा क़स्साज (कार्य साधक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह कारसाजी करता है नेक बंदों की। और जिन्हें तुम पुकारते हो उसके सिवा वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रास्ते की तरफ पुकारो तो वे तुम्हारी बात न सुनेंगे और तुम्हें नजर आता है कि वे तुम्हारी तरफ देख रहे हैं मगर वे कुछ नहीं देखते। (195-198)

बुतपरस्त लोग पत्थर या धातु की जो मूर्तियाँ बनाते हैं इसका फलसफा यह बयान किया जाता है कि यह ख़ारजी मजाहिर (वाह्य रूप) हैं जिनके अंदर उनका मज्ज़मा (मान्य) देवता हुलूल (विलय) कर आया है। इन मजाहिर की परस्तिश उनके नजदीक उन माबूदों की

परस्तिश है जिनकी वे महसूस अलामतें हैं। ताहम अवाम की सतह पर अमलन बुतपरस्ती जो शकल इख़्तियार करती है वह यह कि लोग खुद इन मूर्तियों को मुकद्दस (पवित्र) समझने लगते हैं। इन बुतों में न चलने की ताकत होती, न पकड़ने की, न देखने की और न सुनने की। मगर वही इंसान उनके बारे में यह फर्ज कर लेता है कि वे उसके काम आएंगे और उसकी हाजतें पूरी करेंगे।

ताहम यह मामला प्रचलित बुतों ही का नहीं है। इनके सिवा जिन चीजों को इंसान माबूदियत (पूज्य) का दर्जा देता है उनका हाल भी यही है। वतन और कौम से लेकर जिंदा या मुर्दा शख्सियतों तक जिन-जिन चीजों से भी वे जज्बात वाबस्ता किए जाते हैं जो सिर्फ एक खुदा का हक हैं उनकी हकीकत क्या है। उनमेंसे किसी के पास भी कोई जती ताकत नहीं। कोई भी पाँव या हाथ या आंख वाला ऐसा नहीं जिसके पाँव और हाथ और आंख उसके अपने हों। हर 'पाँव' वाले के पास दिया हुआ पाँव है और अगर उसका पाँव छिन जाए तो वह उसे दुबारा वापस नहीं ला सकता। हर 'हाथ' वाले के पास दिया हुआ हाथ है और अगर उसका हाथ बाकी न रहे तो वह दुबारा अपना हाथ नहीं बना सकता। हर 'आंख' वाले की आंख दी हुई आंख है और अगर उसकी आंख जाती रही तो उसके लिए मुमकिन नहीं कि वह दुबारा अपने लिए आंख तैयार कर ले।

और अल्लाह की परस्तिश करने वाले लोग अपने बुतों के भरोसे हमेशा एक खुदा के परस्तारों पर जुल्म करते रहे हैं। मगर ये लोग बहुत जल्द जान लेंगे कि खुदा की इस दुनिया में उनका भरोसा किस कदर बेबुनियाद था। जिस खुदा का जुहूर मौजूदा दुनिया में किताबी मीजान (तुला) की सूरत में हुआ है, उसका जुहूर अनकरीब अदालती मीजान की सूरत में होने वाला है। उस वक्त हर आदमी देख लेगा कि काम बनाने वाला सिर्फ खुदा था, अगरचे आदमी अपनी नादानी की वजह से दूसरों को अपना काम बनाने वाला समझता रहा। शरीकों के पास तो सिरे से मदद करने की कोई ताकत ही नहीं, मगर खुदा अपने वफादार बंदों की मदद दुनिया में भी करता है और आखिरत में भी।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ۚ وَإِنَّا يَنْزَغُوكَ مِنَ
الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا
مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ۚ وَإِخْوَانُهُمْ
يَمُدُّوهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝

झुझ (क्षमा) करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से न उलझो। और अगर तुम्हें कोई वसवसा शैतान की तरफ से आए तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। जो लोग डर रखते हैं जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़्याल उन्हें घू जाता है तो वे फौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक्त उन्हें सूझ आ जाती है। और जो शैतान के भाई हैं वे उन्हें गुमराही में खींचे चले जाते हैं फिर वे कमी नहीं करते। (199-202)

तौहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत (परलोक), नेकी और अदुल (न्याय) की तरफ बुलाना 'उर्फ' की तरफ बुलाना है। यानी उन भलाइयों की तरफ जो अक्ल और फितरत के नजदीक जानी पहचानी हैं। मगर यह सादातरीन काम हर जमाने में मुश्किलतरीन काम रहा है। इंसान की हुब्बेआजिला (स्वार्थपरकता) का यह नतीजा है कि हर जमाने में लोग अपनी जिंदगी का निजम बुनियावी मफद और जती मस्लेहों (हित, स्वार्थ) की बुनियाद पर कायम किए हुए होते हैं। वेहक (सत्य) का नाम लेकर बातिलपरस्ती (असत्यता) के मशाले में मुब्तिला होते हैं। ऐसी हालत में जब भी सच्चाई की बेआमेज (विशुद्ध) दावत उठती है तो हर आदमी अपने आप पर उसकी जद पड़ते हुए महसूस करता है। नतीजा यह होता है कि हर आदमी उसका मुखालिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

ऐसी हालत में दाआ (आह्वानकर्ता) को क्या करना चाहिए। इसका एक ही जवाब है और वह है दरगुजर और एराज (क्षमा, उपेक्षा)। यानी लोगों से उलझे बगैर बिल्कुल ठंडे तौर पर अपना काम जारी रखना। दाआ अगर लोगों के निकाले हुए शोशों का जवाब देने लगे तो हक की दावत मुनाजिरे की सूरत इख्तियार कर लेगी। दाआ अगर लोगों की तरफ से छेड़े हुए गैर जरूरी सवालात में अपने को मशगूल करे तो वह सिर्फ अपने वक्त और अपनी ताकत को जाया करेगा। दाआ अगर लोगों की तरफ से आनी वाली तकलीफों पर उनसे झगड़ने लगे तो हक की दावत (सत्य का आह्वान), हक की दावत न रहेगी बल्कि मआशी (आर्थिक) और सियासी लड़ाई बन जाएगी। इसलिए हक की दावत को उसकी असली सूरत में बाकी रखने के लिए जरूरी है कि दाआ जाहिलों और विरोधियों की तरफ से पेश आने वाली नाखुशगवारियों पर सब्र करे और उनसे उलझे बगैर अपने मुस्बत (सकारात्मक) काम को जारी रखे।

ताहम मौजूदा दुनिया में कोई शख्स नफ्स और शैतान के हमलों से खाली नहीं रह सकता। ऐसे मौके पर जो चीज आदमी को बचाती है वह सिर्फ अल्लाह का डर है। अल्लाह का डर आदमी को बेहद हस्सास बना देता है। यही हस्सासियत (संवेदनशीलता) मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में आदमी की सबसे बड़ी ढाल है। जब भी आदमी के अंदर कोई गलत ख्याल आता है या किसी क्रिम की मंफे नफिसयात (नकारात्मक मानसिकता) उभरती है तो उसकी हस्सासियत उसे फौरन बता देती है कि वह फिसल गया है। एक लम्हे की गफलत के बाद उसकी आंख खुल जाती है और वह अल्लाह से माफी मांगते हुए दुबारा अपने को दुरुस्त कर लेता है। इसके बरअक्स जो लोग अल्लाह के डर से खाली होते हैं उनके अंदर शैतान दाखिल होकर अपना काम करता रहता है और उन्हें महसूस भी नहीं होता कि उसके साथी बनकर वे किस गढ़े की तरफ चले जा रहे हैं। हस्सासियत आदमी की सबसे बड़ी मुहाफिज (रक्षक) है जबकि बेहिसी आदमी को शैतान के मुकाबले में गैर महफूज बना देती है।

وَإِذْ أَلَمْنَا لَهُمْ بِآيَةِ قَالُوا لَوْ لَا اجْتَبَيْنَاهَا قُلُوبَنَا أَتَمْنَا آيَةً مَّا يُؤْمَىٰ إِلَىٰ
مِنْ رَبِّ هَذَا بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٠﴾
وَإِذْ أَوْفَىٰ الْقُرْآنُ فَاَسْتَبْعُودَالَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠١﴾ وَادْكُرْ رَبَّكَ

فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ
وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ﴿٢٠٣﴾

और जब तुम उनके सामने कोई निशानी मोजिजा (चमत्कार) नहीं लाए तो कहते हैं कि क्यों न तुम छोट लाए कुछ अपनी तरफ से। कहे, मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे रब की तरफ से मुझ पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ से और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो इमान रखते हैं। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुनो और खामोश रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। और अपने रब को सुबह व शाम याद करो अपने दिल में, आजिजी और खौफ के साथ और पस्त आवाज से, और गफिलों में से न बनो। जो (फरिश्ते) तेरे रब के पास हैं वे उसकी इबादत से तकबुर (घमंड) नहीं करते। और वे उसकी पाक जात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं। (203-206)

मक्का के लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि अगर तुम खुदा के पैगम्बर हो तो खुदा के यहां से कोई मोजिजा क्यों नहीं लाए। खुदा के लिए इतिहाई आसान था कि वह आपको एक मोजिजा दे देता। मगर इसका नतीजा यह होता कि अस्ल मक्सद जाता रहता।

मसलन फर्ज कीजिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक जदीद तर्ज की एक मोटरकार उतार दी जाती जिसमें लाउडस्पीकर नसब होता। आप उसमें बैठकर चलते और लोगों के दर्मियान तब्तीग करते। डेढ़ हजार साल पहले के हालात में ऐसी एक कार लोगों के लिए इतिहाई हैरतनाक मोजिजा होती। मगर इसका नुकसान यह होता कि लोगों की तवज्जोह अस्ल बात से हट जाती। अस्ल मक्सद तो यह था कि खुदा का कलाम लोगों के लिए बसीरत बने। इससे लोगों को सोचने का ढंग और अमल करने का तरीका मालूम हो। इससे रूहों को खुदाई ठंडक मिले। मगर मज्जूरा मोजिजे के बाद यह सारा मंसूबा धरा रह जाता और लोग बस तिलिस्माती सवारी के अजूबे में मगन होकर रह जाते।

करामाती चीजों में खोने का नाम दीन नहीं। दीन यह है कि आदमी खुदा के कलाम पर ध्यान दे। उसे गौर के साथ पढ़े और तवज्जोह के साथ सुने। दीनदार होने की पहचान यह है कि खुदा के साथ आदमी का गहरा तअल्लुक कायम हो जाए। उसके दिल में गुदाज (नम्रता) पैदा हो। वह खुदा की याद करने वाला बन जाए। खुदा की अजमत उसके दिल व दिमाग पर इस तरह छा जाए कि वह उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) और खौफ की कैफियत पैदा कर दे। खुदा का तच्चिरा करते हुए उसकी आवाज पस्त हो जाए। वह गफलत से निकल कर बेदारी (सजगता) के आलम में पहुंच जाए।

आखिर में फरिश्तों का किरदार बयान किया गया है। यह इसलिए कि तुम भी ऐसा ही करो ताकि तुम्हें फरिश्तों का साथ हासिल हो। जब आदमी अपने आपको घमंड से पाक करता है, और खुदा के कमालात से इतना सरशार होता है कि उसके दिल से हर वक्त उसकी याद उबलती रहती है तो वह फरिश्तों का हम सतह (सम-स्तर) हो जाता है। इस दुनिया में किसी इंसान की तरक्की का आलातरीन मक़ाम यह है कि वह इंसान होते हुए मलकूती किरदार का हामिल (फरिश्ता-चरित्र) बन जाए। वह दुनिया में रहते हुए फरिश्तों के पड़ेस में ज़िंदगी गुज़रने लगे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَمِعَ اللّٰهُ الرّٰحِمَ الرَّحِيْمَ حَمْدَ رَبِّكَ الَّذِيْ
يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرّٰسُوْلِ ۗ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا
ذٰتَ بَيْنِكُمْ وَاَطِيعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ ۚ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱ اِنَّهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تَلٰتِ عَلَيْهِمُ اٰيٰتُهُ زَادَتْهُمْ
اِيْمٰنًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۲ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنفِقُوْنَ ۝۳
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ۚ لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ
وَرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।
वे तुमसे अनफ़ल (ग़नीमत का माल) के बारे में पूछते हैं। कहो कि अनफ़ल अल्लाह
और उसके रसूल के हैं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के तअल्लुकात
की इस्लाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो,
अगर तुम ईमान रखते हो। ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाए तो
उनके दिल दहल जाएं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएं तो वे उनका
ईमान बढ़ा देती हैं और वे अपने ख़ब पर भरोसा रखते हैं। वे नमाज़ कायम करते हैं और
जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। यही लोग हकीकी मोमिन हैं। उनके
लिए उनके ख़ब के पास दर्जे और मफ़िज़त (क्षमा) हैं और उनके लिए इज्ज़त की रोज़ी है।
(1-4)

सूरह अनफ़ल बद्र की जंग (2 हि०) के बाद उतरी। इस जंग में मुसलमानों को फतह
हुई थी और इसके बाद जंग के मैदान से काफी ग़नीमत का माल हासिल हुआ था। मगर ये
अमवाल (धन) अमलन एक गिरोह के कब्ज़े में थे। इस बिना पर जंग के बाद ग़नीमत (युद्ध
में प्राप्त सामग्री) की तक्सीम पर निज़ाअ (विवाद) पैदा हो गई। जंग में कुछ लोग पिछली सफ

में थे। कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफाजत में लगे हुए थे। कुछ लोग
आखिरी मरहले में दुश्मन का पीछा करते हुए आगे निकल गए। इस तरह जंग के मैदान से
ग़नीमत का माल लूटने का मौक़ा एक ख़स फ़रीक (पक्ष) को मिला। दूसरे लोग जो उस वक्त
जंग के मैदान से दूर थे वे दुश्मन के छोड़े हुए अमवाल को हासिल न कर सके।

अब सूरतेहाल यह थी की उसूली तौर पर तो जंग के तमाम शुरका (भागीदार) अपने को
ग़नीमत के माल में हिस्सेदार समझते थे। मगर ग़नीमत का माल अमलन सिर्फ एक गिरोह के
कब्ज़े में था। एक फ़रीक (पक्ष) के पास दलील थी और दूसरे फ़रीक के पास माल। एक के
पास अपने हक़ को साबित करने के लिए सिर्फ अल्फ़ज़ थे। जबकि दूसरे का हक़ किसी
दलील व सुकूत के बग़ैर खुद कब्ज़े के जोर पर कायम था।

इस विस्म के तमाम झगड़े खुदा के ख़ैफ़ के मनाफ़ी (प्रतिकूल) हैं। खुदा का ख़ैफ़
आदमी के अंदर जिम्मेदारी की नफ़िसयात उभारता है। ऐसे आदमी की तक्वोज़ोह फ़राइज़ पर
हेती है न कि हुक्क़ पर। वह अपनी तरफ़ देखने के बजाए खुदा की तरफ़ देखने लगता है।
उसका दिल खुदा व रसूल की इताअत के लिए नर्म पड़ जाता है। वह खुदा का इबादतगुजार
बंदा बन जाता है। लोगों को देकर उसे तस्कीन मिलती है न कि लोगों से छीन कर। ये
औसाफ़ (गुण) आदमी के अंदर हकीकतपसंदी और हक़ के एतराफ़ का माद्दा पैदा करते हैं।
हकीकतपसंदी और एतराफ़ेहक़ की फज़ का लाज़िमी नतीजा यह होता है कि आपस के
झगड़े ख़त्म हो जाते हैं। और अगर कभी इत्तेफ़ाक़न (संयोगवश) उभरते हैं तो एक बार की
तंबीह उनकी इस्लाह के लिए काफी हो जाती है।

खुदा की पकड़ का अंदेशा हर एक को इस हद पर पहुंचा देता है जिस हद पर उसे
फिलवाकेअ (वस्तुतः) होना चाहिए था। और जहां हर आदमी अपनी वाकई हद पर रुकने के
लिए राजी हो जाए वहां झगड़े का कोई गुज़र नहीं।

كَمَا اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَاِنْ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكَرِهُوْنَ ۝
يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاتِبًا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ
يَنْظُرُوْنَ ۝۱ وَاِذْ يَعِدُّكُمْ اللّٰهُ اِحْدٰى الطّٰوِفَتَيْنِ اَنْهَآ لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنْ
غَيَّرَ ذٰلِكَ الشّٰوْكَهٖ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ
دَابِرَ الْكَافِرِيْنَ ۝۲ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۝۳

जैसा कि तुम्हारे ख़ब ने तुम्हें हक़ के साथ तुम्हारे घर से निकाला। और मुसलमानों में
से एक गिरोह को यह नागवार था। वे इस हक़ के मामले में तुमसे झगड़ रहे थे बावजूद
यह कि वह जाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ़ हंके जा रहे हैं आंखो देखते।
और जब खुदा तुमसे वादा कर रहा था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हें मिल जाएगी।
और तुम चाहते थे कि जिसमें कांटा न लगे वह तुम्हें मिले। और अल्लाह चाहता था
कि वह हक़ का हक़ होना साबित कर दे अपने कलिमात से और मुक़िरो की जड़ काट

दे ताकि हक (सत्य) हक होकर रहे और बातिल (असत्य) बातिल होकर रह जाए चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (5-8)

शाबान 2 हिजरी में मालूम हुआ कि कुरैश का एक तिजारती काफिला शाम से मक्का की तरफ वापस जा रहा है। इस काफिले के साथ तकरीबन 50 हजार अश्वरूपा का सामान था। इसका रास्ता मदीना के करीब से गुजरता था। यह अंदेश था कि मुसलमान अपने दुश्मनों के तिजारात के काफिले पर हमला करें। चुनांचे काफिले के सरदार अबू सुफयान बिन हर्ब ने तेज रफ्तार उट्टनी के जरिए मक्का वालों के पास यह खबर भेजी कि मदद के लिए दौड़ो वर्ना मुसलमान तिजारती काफिले को लूट लेंगे। मक्का में इस खबर से बड़ा जोश पैदा हो गया। चुनांचे 950 सवार जिनमें 600 जिरहपोश (कवचधारी) थे मक्का से निकल कर मदीना की तरफ रवाना हुए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी तमाम खबरें मिल रही थीं। अब मदीना के मुसलमान दो गिरोहों के दर्मियान थे। एक शाम से आने वाला तिजारती काफिला। दूसरा मक्का से मदीना की तरफ बढ़ने वाला जंगी लश्कर। मुसलमानों के एक तबके में यह जेहन पैदा हुआ कि तिजारती काफिले की तरफ बढ़ जाए। इस काफिले के साथ बमुश्किल 40 मुहाफिज थे। उसे बाआसानी मालूम करके उसके सामान पर कब्जा किया जा सकता था। मगर खुदा का मंसूबा दूसरा था। खुदा को दरअसल मुकिरीने हक का जोर तोड़ना था न कि कुछ इकतसादी (आर्थिक) फायदे हासिल करना। खुदा ने मखसूस हालात पैदा करके ऐसा किया कि तमाम मुखालिफ सरदारों को मक्का से निकाला और उन्हें मदीना से 20 मील के फासले पर बद्र के मकाम पर पहुंचा दिया ताकि मुसलमानों को उनसे टकरा कर हमेशा के लिए उनका ख़ात्मा कर दिया जाए। अल्लाह के रसूल ने जब मुसलमानों को खुदा के इस मंसूबे से सूचित किया तो सबके सब मुत्तफिक (सहमत) होकर बद्र की तरफ बढ़े। उनकी तादाद अगरचे सिर्फ 313 थी। उनके पास हथियार भी कम थे। मगर अल्लाह ने उनकी खुसूसी मदद फरमाई। उन्होंने कुरैश के लश्कर को बुरी तरह शिकस्त दी। उनके 70 सरदार कत्ल हुए और 70 गिरफ्तार कर लिए गए। बद्र का मैदान कुफ के मुक़बले में इस्लाम की फतह का मैदान बन गया। जब भी ऐसा हो कि एक तरफ मादूदी फायदा हो और दूसरी तरफ दीनी फायदा तो यह तक्सीम खुद इस बात का सुकूत है कि खुदा की मर्जी दीनी फायदे की तरफ है न कि मादूदी फायदे की तरफ।

इस्लामी जद्दोजहद का निशाना कभी मआशी मफाद हासिल करना नहीं होता। इस्लामी जद्दोजहद का निशाना हमेशा बातिल (असत्य) का जोर तोड़ना होता है। चाहे वह नजरियाती ताक़त के जरिए हो या हालात के एतबार से मादूदी ताक़त के जरिए।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَبَ لَكُمْ أَنِّي مُبْدِلُكُمْ بِأَفْئِفٍ مِنَ الْمَلِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ إِذْ يُغَشِّيكُمُ اللَّيْلُ أَمَنَةً وَمِنْهُ يُنْزِلُ

عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَ كُفْرَهُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمُ رِجْسَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝ إِذْ يُوجِى رَبُّكَ إِلَى الْمَلِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبَّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَالِقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَأَصْرَبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَأَصْرَبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ ذَلِكُمْ فَذُقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۝

जब तुम अपने रब से फरियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फरियाद सुनी कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हजार फरिश्ते लगातार भेज रहा हूं। और यह अल्लाह ने सिर्फ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए खुशखबरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएं। और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है। यकीनन अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। जब अल्लाह ने तुम पर ऊंच डाल दी अपनी तरफ से तुम्हारी तस्कीन के लिए और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके जरिए से तुम्हें पाक करे और तुमसे शैतान की नजासत (गंदगी) को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और उससे कदमों को जमा दे। जब तैरे रब ने फरिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूं, तुम ईमान वालों को जमाए रखो। मैं मुकिरों के दिल में रौब डाल दूंगा। पस तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर-पोर पर जर्ब (चोट) लगाओ। यह इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत की। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफत करता है तो अल्लाह सजा देने में सज़त है। यह तो अब चखो और जान लो कि मुकिरों के लिए आग का अजाब है। (9-14)

बद्र की लड़ाई बड़े नाजुक हालात में हुई। तकरीबन एक हजार मुसल्लह दुश्मनों के मुकाबले में मुसलमानों की तादाद सिर्फ 313 थी। उनके पास हथियार भी कम थे। दुश्मनों ने जंग के मक़ाम (बद्र) पर पहले पहुंच कर वहां अच्छी जगह और पानी के चशमे पर कब्जा कर लिया। इस किस्म के हालात देखकर मुसलमानों के दिल में यह वसवसा आने लगा कि जिस मिशन के लिए वे अपनी जिंदगी वीरान कर रहे हैं उसके साथ शायद खुदा की मदद शामिल नहीं। अगर वह हक होता तो ऐसे नाजुक मौके पर खुदा क्यों उनका साथ न देता, क्यों असबाब के तमाम सिरे उनके हाथ से निकल कर दुश्मनों की तरफ चले जाते।

उस वक़्त अल्लाह तआला ने बद्र के इलाके में जोर की बारिश बरसाई। मुसलमानों ने हौज बना बनाकर बारिश का पानी जमा कर लिया। दुश्मन ने मुसलमानों को जमीन के पानी से महरूम किया था, खुदा ने उनके लिए आसमान से पानी का इतिजाम कर दिया। इसी तरह खुदा ने यह तैर मामूली इतिजाम फरमाया कि मुसलमानों के ऊपर नौद तारी कर दी। सोना

आदमी के ताजा दम होने के लिए बहुत जरूरी है। मगर जंग के मैदान के हालात इस कदम वहाशतनाक होते हैं कि आदमी की नींद उड़ जाती है। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों की यह खुसूसी मदद फरमाई कि जंग के दिन से पहले वाली रात को उन पर नींद तारी कर दी। वे रात को जेहन्नी बेझ से फरिग होकर सो गए और सुबह को पूरी तरह ताजा दम होकर उठे। जो हालात मुसलमानों के अंदर वसवसा पैदा करने का सबब बन रहे थे, उन्हीं हालात के अंदर खुदा ने ऐसे इस्कानात पैदा कर दिए कि उनके अंदर नया यकीन व एतमाद उभर आया।

मुक्कबले के वक्त अहले हक से जो चीज मल्लूब है वह साबितकदमी है। उन्हें किसी हाल में बददिल नहीं होना चाहिए। इस साबितकदमी का नक्कल इनाम खुदा की तरफ से यह मिलता है कि हक के दुश्मनों के दिलों में रौब डाल दिया जाता है। और जो गिरोह अपने हरीफ से मरऊब हो जाए, उसे कोई चीज शिकस्त से नहीं बचा सकती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا الْقِيَتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُولُوهُمُ الْأُدْبَارَ ۖ
وَمَنْ يُؤَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرًا إِلَّا مُتَحَرِّقًا لِّإِقْتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ
بِعَظْمٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَا وَهُ جَهَنَّمُ دُيُوسُ الْمُصِيرِ ۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम्हारा मुकाबला मुंकिरीन से जंग के मैदान में हो तो उनसे पीठ मत फेरो। और जिसने ऐसे मौके पर पीठ फेरी, सिवा इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फौज से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (15-16)

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम का टकराव जब जंग के मैदान तक पहुंच जाए तो यह गोया कोपफौज (पक्षों) के लिए आखिरी फैसले का वक्त होता है। ऐसे नाजुक लम्हे में अगर कोई शख्स या गिरोह ऐसा करे कि ऐन मअरके के वक्त वह मैदान छोड़ कर भागे तो उसने बदतरीन ज़ुर्म किया। एक तरफ उसने हक को बचाने के मुक्कबले में अपने आपको बचाने को ज्यादा अहम समझा, उसने अपने मकसद के मुक्कबले में अपनी जात को तरजीह दी। और यह सब कुछ उसने उस वक्त किया जबकि उस हक की जिद्दी की बाजी लगी हुई थी जिसे आलातरीन सदाकत कारर देकर वह उस पर ईमान लाया था।

दूसरे यह कि ऐसे नाजुक मौके पर अक्सर एक छोटा सा वाक्या बहुत बड़े वाक्ये का सबब बन जाता है। एक शख्स या एक गिरोह का मैदान छोड़कर भागना पूरी फौज का हौसला तोड़ देता है। एक शख्स की भगदड़ बिलआखिर आम भगदड़ की सूरत इख़्तियार कर लेती है। और हंगामी हालात (आपात स्थिति) में जब किसी मज्मअ में आम भगदड़ शुरू हो जाए तो वह अपनी आखिरी हद पर पहुंचने से पहले कहीं नहीं रुकती।

इससे मुस्तसना (अपवाद) सिर्फ वह सूरत है जबकि कोई सिपाही या सिपाहियों का कोई दस्ता किसी जंगी तदबीर के लिए पीछे हटता है या वह अपने एक मोर्चे से हटकर दूसरे मोर्चे

की तरफ सिमटना चाहता है। फरार के तौर पर अगर कोई पीछे हटता है तो वह बिलाशुबह नाकबिले माफी ज़ुर्म करता है। मगर जो पीछे हटना जंग की तदबीर से तअल्लुक रखता हो वह जाइज है। इसके लिए आदमी पर कोई इल्जाम नहीं।

मज्कूरा हुक्म अस्लान जंग से मुतअल्लिक है। ताहम दूसरी मुशाबह सूरतें भी दर्जा बदर्जा इसी के जेल में आ सकती हैं। मसलन एक शख्स बेआमेज (विशुद्ध) इस्लाम के ख़ामोश और तामीरी अमल की तरफ लोगों को पुकारे। मगर कुछ अर्से के बाद जब वह देखे कि उसकी दावत लोगों में ज्यादा मकबूल नहीं हो रही है तो वह बेसब्री का शिकार हो जाए और ख़ामोश तामीर के महाज को छोड़कर ऐसे इस्लाम की तरफ दौड़ पड़े जिसके जरिए अवाग में बहुत जल्द शोहरत और मर्तबा हासिल किया जा सकता है।

जंग के मैदान से भागना शुऊर और इरादे के तहत होता है। मगर जंगी मैदान के बाहर जो मअरका जारी है उससे 'भागना' एक ग़ैर शुऊरी वाकया है। आदमी तबई तौर पर (स्वभावगत) नतीजापसंद वाकअ हुआ है। वह अपने काम का एतराफ (स्वीकार्यता) चाहता है। उसका यह मिजाज ग़ैर शुऊरी तौर पर उसे उन कामों से हटा देता है जिनमें फौरी नतीजा निकलता हुआ नजर न आता हो। वह अपने अंदर काम करने वाले ग़ैर शुऊरी असरात के तहत उन चीजों की तरफ खिंच उठता है जिनमें बजहिर यह उम्मीद हो कि फ़ैसल इन्त व कामयाबी हासिल हो जाएगी। इस किस्म का हर इहिराफ (भटकाव) अपनी हकीकत के एतबार से उसी नैइयत की चीज है जिसे मज्कूरा आयत में मुक्कबले के मैदान से भागना कहा गया है।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۚ
وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءٌ حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ سَبِيحٌ عَلِيمٌ ۝ ذَلِكُمْ وَأَنَّ
اللَّهَ مُؤْمِنٌ كِيدَ الْكَافِرِينَ ۝ إِن تَسْتَفْتِئُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْهُ ۚ وَإِنْ تَنْهَوْا
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ ۖ
وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

पस उन्हें तुमने कत्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने कत्ल किया। और जब तुमने उन पर ख़ाक फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी ताकि अल्लाह अपनी तरफ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे। बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। यह तो हो चुका। और बेशक अल्लाह मुंकिरीन की तमाम तदबीरों (युक्तियाँ) बेकार करके रहेगा। अगर तुम फैसला चाहते थे तो फैसला तुम्हारे सामने आ गया। और अगर तुम बाज आ जाओ तो यह तुम्हारे हक में बेहतर है। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा जल्था तुम्हारे कुछ काम न आएगा चाहे वह कितना ही ज्यादा हो। और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है। (17-19)

रिवायात में आता है कि जब बद्र का मअरका गर्म हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की जवान से दुआ करते हुए यह अल्फ़ज निकले : 'ऐ मेरे रब, अगर यह जमाअत हलाक हो गई तो कभी जमीन पर तेरी परस्तिश न होगी।' फिर आपने अपने हाथ में मुट्ठी भर खाक ली और उसे मुश्किन की तरफ फेंकते हुए कहा : 'चेहरे बिगड़ जाएं' इसके बाद मुंकिरों के लश्कर का यह हाल हुआ जैसे सबकी आंखों में रेत पड़ गई हो। चुनांचे अहले ईमान ने निहायत आसानी से जिसे चाह कल किया और जिसे चाह गिरफ्तार कर लिया।

यह अल्लाह का जिम्मा है कि वह अहले ईमान की मदद करता है। उनके दुश्मन चाहे कितनी ही साजिशें करें वह उनकी साजिशों को अपनी तदबीरों से बेअसर कर देता है। वह उन्हें मगलूब करके अहले ईमान को उनके ऊपर ग़ालिब कर देता है। मगर ऐसा कब होता है। ऐसा उस वक़्त होता है जबकि अहले ईमान अपने इरादे को खुदा के इरादे में इस तरह मिला दें कि खुदा की मंशा और अहले ईमान की मंशा दोनों एक हो जाएं। जब बंदा इस तरह अपने आपको खुदा के मुताबिक कर लेता है तो जो कुछ खुदा का है वह उसका हो जाता है क्योंकि जो कुछ उसका है वह खुदा को दे चुका होता है।

बद्र के लिए रवानगी से पहले मक्का के सरदार बैतुल्लाह गए और काबे के पर्दे को पकड़ कर यह दुआ की : 'खुदाया उसकी मदद कर जो दोनों लश्करों में सबसे आला हो, जो दोनों गिरेहों में सबसे मुअज्ज (आदरणीय) हो, जो दोनों कबीलों में सबसे बेहतर हो।' बद्र की लड़ाई में मक्का के सरदारों को कामिल शिकस्त और अहले ईमान को कामिल फतह हुई। इस तरह खुद मक्का के सरदारों के मेयार के मुताबिक यह साबित हो गया कि खुदा के नजदीक आला व अशरफ (उच्च, संभ्रात) गिरोह वह नहीं हैं बल्कि अहले इस्लाम हैं। इसके बावजूद उन्होंने इस्लाम कुबूल नहीं किया। जो लोग ऐसा करें उनके लिए आखिरत में सख़्ततरीन अजाब है और इसी के साथ दुनिया में भी।

'दोनों में जो सबसे आला और सबसे अशरफ हो उसे फतह दे' यह बजाहिर दुआ थी मगर हकीकतन वह अपने हक में फ़ुफ़्फ़ एतमाद का इशार था। इससे पीछे उनकी यह नफ़िसयात काम कर रही थी कि हम काबा के पासवान हैं, हम इब्राहीम व इस्लाम से निस्वत रखने वाले हैं। जब हमारे साथ इतनी बड़ी फज़ीलतें जमा हैं तो जीत बहरहाल हमारी होनी चाहिए। मगर खुदा के यहां जाती अमल की कीमत है न कि ख़ारजी इतिहासबात (वाह्य जुड़ावों) की। ख़ारजी इतिहासबात चाहे वह कितना ही बड़ा हो आदमी के कुछ काम आने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ ۖ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۚ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۚ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ ۚ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۚ

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो और उससे रूगर्दानी (अवहेलना) न करो हालांकि तुम सुन रहे हो। और उन लोगों की तरह न हो

जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालांकि वे नहीं सुनते। यकीनन अल्लाह के नजदीक बदतरीन जानवर वे बहरे गुंगे लोग हैं जो अक्ल से काम नहीं लेते। और अगर उनमें किसी भलाई का इल्म अल्लाह को होता तो वह जरूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक़ देता और अगर अब वह उन्हें सुनवा दे तो वे जरूर रूगर्दानी करेंगे बेरुखी करते हुए। (20-23)

आदमी के सामने जब हक बात पेश की जाए तो एक सूरत यह है कि वह उसे उन तमाम सलाहियों को इस्तेमाल करते हुए सुने जो खुदा ने उसे बहैसियत इंसान अता की हैं। वह उस पर पूरी तरह ध्यान दे। वह उसकी सदाकत के वजन को महसूस कर ले। और फिर अपनी जवान से वह सही जवाब पेश करे जो एक हक के मुक़बले में इंसान की फ़ितरत को पेश करना चाहिए। जो शख्स ऐसा करे उसने गोया पेश की हुई बात को इंसान की तरह सुना। दूसरी सूरत यह है कि वह उसे इस तरह सुने जैसे कि उसके पास सुनने के लिए कान नहीं हैं। उसके समझने की सलाहियत उसकी सच्चाई को पकड़ने से आजिज रह जाए। वह अपनी जवान से वह सही जवाब पेश न कर सके जो उसे अजरूप वाक्या (यथार्थतः) पेश करना चाहिए। जो शख्स ऐसा करे उसने गोया पेश की हुई बात को जानवर की तरह सुना।

कोई बात चाहे वह कितनी ही बरहक हो उसकी हक़मनित सिर्फ उसी शख्स पर खुलती है जो दिल की आमदगी के साथ उसे सुने। इसके बरअक्स जो शख्स हसद, किब्र (अहं), मस्लेहत अंदेशी (स्वार्थता) और जाहिरपरस्ती का मिजाज अपने अंदर लिए हुए हो वह सच्चाई को काबिले गौर नहीं समझेगा, वह उसे संजीदगी के साथ नहीं सुनेगा, इसलिए वह उसकी सदाकत को पाने में भी यकीनी तौर पर नाकाम रहेगा।

ईमान बजाहिर एक कैल है। मगर अपनी हकीकत के एतबार से वह एक इंसानी फैसला है। ईमान महज शहादत के अल्फ़ज की तकरार नहीं बल्कि अपनी मनअवी (अर्थपूर्ण) हालत का लफ़्ज़ी इशार है। अगर आदमी की हालत फ़ित्वाक़स (वस्तुतः) वही हो जिसका वह उन अल्फ़ज के जरिए एलान कर रहा है तो वह खुदा की नज़ में हकीकी मेमिन है। मेमिन संजीदातरीन इंसान है और संजीदा इंसान कभी ऐसा नहीं कर सकता कि उसकी अंदुरुनी हालत कुछ हो और बोले हुए अल्फ़ज में वह अपने को कुछ जाहिर करे।

जिस आदमी का ईमान अपनी अंदुरुनी हकीकत के एलान के हममअना हो वह ईमान का इक़्रार करते ही अमलन खुदा को अपना माबूद (पूज्य) बना लेगा और अपनी जिंदगी के तमाम मामलात में उसकी पैरवी करने वाला बन जाएगा। जवान से ईमान का इक़्रार उसके लिए अपनी समते सफ़र बताने के हममअना होगा न कि किसी क्रिम के ज़बानी तलफ़ुज (उच्चारण) के हममअना। इसके बरअक्स हालत उस शख्स की है जिसने बात सुनी। वह उसके दलाइल के मुकाबले में लाजवाब भी हो गया। मगर वह उसकी रूह में नहीं उतरी। वह उसके दिल की धड़कनों में शामिल नहीं हुई। ताहम ऊपरी तौर पर उसने जवान से कह दिया कि हां ठीक है। मगर उसकी वाकई जिंदगी इसके बाद भी वैसी ही रही जैसी कि वह इससे पहले थी। यह दूसरी सूरत निफ़ाक (पाखंड) की सूरत है और खुदा के यहां ऐसे मुनाफ़िक़ाना (पाखंड भरे) ईमान की कोई कीमत नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَهٌُ تُحْشَرُونَ ۝
فَتَنَّا ۖ لَا تَصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहो जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ बुला रहा है जो तुम्हें ज़िंदगी देने वाली है। और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल (बाधित) हो जाता है। और यह कि उसी की तरफ तुम्हारा इकट्ठा होना है। और डरो उस फितने से जो खास उन्हीं लोगों पर घटित न होगा जो तुममें से जुल्म के करने वाला हुए हैं। और जान लो कि अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। (24-25)

‘ज़िंदगी की पुकार’ से मुराद यहां ज़िहाद की पुकार है। यानी हक को दूसरों तक पहुंचाने की ज़द्वोज़हद। यह ज़द्वोज़हद इब्तिदा में जबान व कलम के ज़रिए तल्कीन (दीक्षा) की सूरत में शुरू होती है। मगर मदऊ (सम्बोधित पक्ष) का मुखालिफ़ाना रूदेअमल उसे विभिन्न मराहिल तक पहुंचा देता है, यहां तक कि हिजरत (स्थान-परिवर्तन) और जंग तक भी। आदमी इफ़रादी सतह पर अपने ख़्बाल के मुताबिक एक दीनी ज़िंदगी बनाता है। इस ज़िंदगी को वह अपने हालात से इस तरह मुताबिक कर लेता है कि वह उसे आफ़ियत का जजीरा (शांति द्वीप) मालूम होने लगती है। उसे ऐसा महसूस होता है कि अगर वह दूसरों की इस्लाह (सुधार) के लिए उठा तो उसका बना बनाया आशियाना उजड़ जाएगा। उसकी लगी बंधी ज़िंदगी बेतर्ती हो कर रह जाएगी। उसके वक़्त और उसके माल का वह निज़ाम बाक़ी न रहेगा जो उसने अपने जाती तक़ज़ों के तहत बना रखा है।

इस किस्म के अदिशे उसके लिए दावत व इस्लाह की ज़द्वोज़हद में निकलने और इसकी राह में जान व माल पेश करने के लिए रुकावट बन जाते हैं। मगर यह सरासर नादानी है। हकीक़त यह है कि आदमी जिस आफ़ियतक़द (शांति-स्थल) को अपने लिए ज़िंदगी समझ रहा है वह उसका क़ब्रस्तान है। और जिस कुर्बानी में उसे अपनी मौत नज़र आती है उसी में उसकी ज़िंदगी का राज छुपा हुआ है।

दावत व इस्लाह का अमल, बशर्ते कि वह आख़िरत के लिए हो न कि दुनियावी मकासिद के लिए, इतिहाई अहम अमल है। वह आदमी के मुर्दा दीन को ज़िंदा दीन बनाता है। वह आलातरिीन सतह पर इंसान को ख़ुदा से जोड़ता है। वह उन कीमती दीनी तज़र्बात से आदमी को आशना करता है जो इफ़रादी ख़ोल में रहकर कभी हासिल नहीं होते। ख़ुदा की तरफ से इतनी अहम पुकार को सुनकर जो लोग उसके बारे में बेतवज़ोह रहें वे यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि उनके और हक (सत्य) के दर्मियान एक नफ़िसयाती (मनोवैज्ञानिक) आड़ खड़ी हो जाए।

उनकी यह फितरी सलाहियत हमेशा के लिए कुंद हो जाए कि वे हक की पुकार को सुनें और उसकी तरफ दौड़कर अपने रब को पा लें।

इंसान की ज़िंदगी एक समाजी ज़िंदगी है। कोई शख्स उसके अंदर अपना इफ़रादी जज़ीरा बनाकर नहीं रह सकता। अगर एक शख्स जाती दीनदारी पर कानेअ (संतुष्ट) है तो वह हर वक़्त इस अदिशे में है कि इज्तिमाई (सामूहिक) बिगाड़ के नतीजे में कोई उम्मी आग फैले और वह खुद भी उसकी लपेट में आ जाए। इस्लाही (सुधारवादी) ज़द्वोज़हद इस्लाह के साथ दायित्व-पालन भी है। अगर आदमी दायित्व-पालन पेश करने में नाकाम रहे तो ख़ुदा उसके मामले को क्यों दूसरों से अलग करेगा।

कोई बुराई हमेशा छोटी सतह से शुरू होती है और फिर बढ़ते-बढ़ते बड़ी बन जाती है। अगर ऐसा हो कि बुराई जब अपनी इब्तिदाई हालत में हो उसी वक़्त कुछ लोग उसके खिलाफ उठ जाएं तो वे आसानी के साथ उसे कुचल देंगे। लेकिन जब बुराई फैल चुकी हो तो उसकी जड़ें इतनी गहरी हो जाती हैं कि फिर उसे ख़त्म करना मुमकिन नहीं रहता।

وَادْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَفَتَكُمْ النَّاسُ فَأَوْكُكُمْ وَأَيْدِيكُمْ بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَحُونُوا
أَمْنَتَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۖ
وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

और याद करो जबकि तुम थोड़े थे और जमीन में कमजोर समझे जाते थे। डरते थे कि लोग अचानक तुम्हें उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुम्हें रहने की जगह दी और अपनी नुसरत (मदद) से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीजा रोज़ी दी ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। ऐ ईमान वालो, ख़ियानत (विश्वास-भंग) न करो अल्लाह और रसूल की और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में हालांकि तुम जानते हो। और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आजमाइश हैं। और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अज़्र। (26-28)

मक्का में मुसलमान बिल्कुल बेबसी की हालत में थे। हर वक़्त यह अदिशा लगा रहता कि कब उन्हें उखाड़ कर फेंक दिया जाए। वे ऐसे कमजोर की मानिंद थे जिसे हर तरह दबाया जाता था और उसके जाइज हुक्म भी उसे नहीं दिए जाते। बिलआख़िर उनके लिए मदीने का रास्ता खुला। उन्हें यह मौका दिया गया कि वे मदीना जाकर अपना मर्कज़ बनाएं और वहां के माहिल में आजदी और इज्ज़त के साथ रहें।

मुश्किल के बाद आसानी फराहम करने का यह मामला इसलिए किया जाता है ताकि आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा उभरे। आदमी के हालात जब इस हद पर पहुंच जाते हैं

जहां वह अपने आपको बेबस महसूस करने लगता है। उस वक्त अचानक अल्लाह का मदद जाहिर होकर हालात को बदल देती है। ऐसा इसलिए होता है ताकि आदमी यकीन करे कि जो कुछ हुआ वह खुदा की तरफ से हुआ। इस एहसास की बिना पर वह खुदा के इनामात के जच्चे से सरशार हो जाए।

आदमी खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाता है। इस तरह वह यह अहद करता है कि वह खुदा व रसूल के रास्ते पर चलेगा। मगर जब ईमानी तरीके को इख्तियार करने में उसके माल व औलाद के तकाजे हायल होते हैं तो वह ईमान के तकाजे को छोड़कर माल व औलाद के तकाजे को पकड़ लेता है। यह ईमानी अहद के साथ खुली हुई गद्दारी है। इस गद्दारी की शनाअत (तीव्रता) उस वक्त और बढ़ जाती है जब यह देखा जाए कि आदमी जिस चीज की खातिर खुदा के साथ गद्दारी का मामला कर रहा है वह भी खुदा खुदा का एक अतिव्या (देन) है।

आदमी का माल और उसकी औलाद क्या है। वह खुदा ही का दिया हुआ तो है। वह बंदे के पास खुदा की अमानत है। इस अमानत का अगर कोई सबसे बेहतर मसरफ (उपयोग) हो सकता है तो वह यह है कि जब देने वाला उसे मांगे तो उसे बखुशी उसके हवाले कर दिया जाए। मगर जब खुदा कहता है कि मेरे दीन के लिए उठो और उसमें अपनी कुव्वतें लगाओ तो आदमी उसी अमानत को अपने लिए उज्र बना लेता है जिसे खुदा के दीन की राह में देकर उसे खुदा से किए हुए ईमान के अहद को पूरा करना था। वह कामयाबी के कनारे पहुंच कर अपने को नाकामों की फेहरिस्त में लिखवा लेता है।

कोई फेअल (कृत्य) खुदा के यहां जुर्म उस वक्त बनता है जबकि यह जानते हुए उस पर अमल किया जाए कि वह ग़लत है। किसी शख्स पर अगर उसके एक काम की ग़लती वाजेह हो जाती है और इसके बाद भी वह उसे करता है तो वह बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने सर ले रहा है। क्योंकि ग़लती को ग़लती जानने के बाद उसे दोहराना ठिठाई है और ठिठाई खुदा के यहां माफी के क़बिल नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝ وَإِذْ يَنْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَنْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फ़ुरकान बहम पहुंचाएगा और तुमसे तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है, और जब मुंकिर तुम्हारे बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि तुम्हें कैद कर दें या क़त्ल कर डालें या जलावतन (निर्वासित) कर दें। वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था और अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है। (29-30)

फ़ुक्कन के मअन है फ़र्क करने वाली चीज। यहां फ़ुक्कन से मुद्द हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क करने की सलाहियत है। आदमी अगर अल्लाह से डरे, वह वही करे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है और उससे बचे जिससे अल्लाह ने मना किया है तो उसे इस बात की तौफ़ीक़ मिलती है कि वह हक़ और बातिल को एक दूसरे से अलग करके देख सके।

इंसानी सलाहियों को बेदार करने वाली सबसे बड़ी चीज डर है। जिस मामले में इंसान के अंदर डर की नफ़िसयात पैदा हो जाए उस मामले में वह हद दर्जा हकीक़तपसंद बन जाता है। डर की नफ़िसयात उसके जेहन के तमाम पर्दों को इस तरह हटा देती है कि इस बारे में वह हर किस्म की ग़लत या ग़लतफ़हमी से कुलन्द होकर सहीतरीन राय क़यम कर सके। यही मामला खुदा के उस बंदे के साथ पेश आता है जिसे रब्बुल आलमीन के साथ तकवा (डर) का तअल्लुक पैदा हो गया हो।

यह फ़ुक्कन तक्रीबन वही चीज है जिसे मअरफ़त या बसीरत कहा जाता है। बसीरत किसी आदमी में वह अंदरूनी रोशनी पैदा करती है कि वह जाहिरी पहलुओं से धोखा खाए बग़ैर हर बात को उसके अस्त रूप में देख सके। जब भी कोई आदमी किसी मामले में अपने को इतना ज्यादा शामिल करता है कि वह उसकी परवाह करने लगे। वह उसके बारे में अंदेशानाक (संदेह में) रहता हो तो इसके बाद उसके अंदर एक ख़ास तरह की हस्सासियत (संवेदनशीलता) पैदा होती है जो उसे इस मामले में मुवाफ़िक़ और मुख़ालिफ़ पहलुओं की पहचान करा देती है। यह फ़ुरकानी मामला हर एक के साथ पेश आता है चाहे वह एक मजहबी आदमी हो या एक ताजिर और डॉक्टर और इंजीनियर। कोई भी आदमी जब अपने काम से तकवा (ख़टक) की हद तक अपने को वाबस्ता करता है तो उसे इस मामले की ऐसी मअरफ़त हो जाती है कि इधर उधर के मुग़ालतों (भ्रमों) में उलझे बग़ैर वह उसकी हकीक़त तक पहुंच जाए।

किसी आदमी के अंदर यह खुदाई बसीरत (फ़ुरकान) पैदा होना इस बात की सबसे बड़ी जमानत है कि वह बुराइयों से बचे, वह खुदा के साथ अपने तअल्लुक को दुरुस्त करे और बिलआख़िर खुदा के फ़ल का मुतहिक़ बन जाए। यह फ़ुक्कन (हक़ व बातिल की नफ़िसयाती तमीज) पैदा हो जाना इस बात का सुबूत है कि आदमी अपने आपको हक़ के साथ इतना ज्यादा वाबस्ता कर चुका है कि उसमें और हक़ में कोई फ़र्क़ नहीं रहा। वह और हक़ दोनों एक दूसरे का मुसन्ना बन चुके हैं। इसके बाद उसका बचाया जाना उतना ही ज़रूरी हो जाता है जितना हक़ को बचाया जाना। ऐसे लोग बराहेरास्त खुदा की पनाह में आ जाते हैं। अब उनके ख़िलाफ़ तदबीरें करना खुद हक़ के ख़िलाफ़ तदबीरें करना बन जाता है। और खुदा के ख़िलाफ़ तदबीरें करने वाला हमेशा नाकाम रहता है चाहे उसने कितनी ही बड़ी तदबीर कर रखी हो।

وَإِذْ تُثَلَّىٰ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِن هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا جَارَافًا مِنَ السَّمَاءِ أَوْ آتِنَا بِعَذَابٍ آسِيمٍ ۝ وَمَا كَانَ

اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ سِتْفِرُونَ ﴿٣٥﴾
وَمَا لَكُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا
أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّ أَوْلِيَاءَ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾ وَمَا كَانَ
صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَضْيِئَةً قَدْ وَقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٣٧﴾

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया। अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें। यह तो बस अगलों की कहानियां हैं। और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह अगर यही हक है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दर्दनाक अजाब हम पर ले आ। और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें अजाब दे इस हाल में कि तुम उनमें मौजूद हो और अल्लाह उन पर अजाब लाने वाला नहीं जबकि वे इस्तीफ़ार (क्षमा-याचना) कर रहे हों। और अल्लाह उन्हें क्यों न अजाब देगा हालांकि वे मस्जिद हराम से रोकते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली (संरक्षक) नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं। मगर उनमें से अक्सर इसे नहीं जानते। और बैतुल्लाह के पास उनकी नमाज सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं। पस अब चखो अजाब अपने क़ुफ़ का। (31-35)

हम भी ऐसा कलाम बना सकते हैं, हम नाहक पर हैं तो हमारे ऊपर पत्थर क्यों नहीं बरसता। ये सब घमंड की बातें हैं। आदमी जब दुनिया में अपने को महफूज हैसियत में पाता है, जब वह देखता है कि हक का इंकार करने या उसे नज़रअंदाज करने से उसका कुछ नहीं बिगड़ा तो उसके अंदर झूठे एतमाद की नफिसयात पैदा हो जाती है। वह समझता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह बिल्कुल दुरुस्त है। उसका यह एहसास उसकी जवान से ऐसे कलिमात निकलवाता है जो आम हालात में किसी की जवान से नहीं निकलते।

इस किस्म के लोगों में यह दिलेरी खुदा के कानून मोहलत की वजह से पैदा होती है। खुदा यकीनन मुजरिमों को सजा देता है मगर खुदा की सुन्नत यह है कि वह आदमी को हमेशा उस वक्त पकड़ता है जबकि उसके ऊपर हक व बातिल की वजाहत का काम मुकम्मल तौर पर अंजाम दे दिया गया हो। इस काम की तक्मील से पहले किसी को हलाक नहीं किया जाता। साथ ही यह कि दावती अमल के दर्मियान अगर एक-एक दो-दो आदमी उससे मुतअस्सिर होकर अपनी इस्लाह कर रहे हों तब भी सजा का नुज़ूल रुका रहता है ताकि यह अमल इस हद तक मुकम्मल हो जाए कि जितनी सईद (पावन) रूहें हैं सब उससे बाहर आ चुकी हों।

उम्मतों में बिगाड़ आता है तो ऐसा नहीं होता कि उनके दर्मियान से दीन की सूरतें मिट जाएं। बिगाड़ के जमाने में हमेशा यह होता है कि खुदा के ख़ौफ वाला दीन जाता रहता है

और उसकी जगह धूम धाम वाला दीन आ जाता है। अब कौम के पास अमल नहीं होता बल्कि माजी की शख्सियतों और उनके नाम पर कायमशुदा गद्दियां होती हैं। लोग इन शख्सियतों और इन गद्दियों से वाबस्ता होकर समझते हैं कि उन्हें वही अज्मत हासिल हो गई है जो तारीखी असबाब से खुद इन शख्सियतों और गद्दियों को हासिल है। लोग अंदर से खाली होते हैं मगर बड़े-बड़े नामों पर नुमाइशी आमाल करके समझते हैं कि वे बहुत बड़ा दीनी कारनामा अंजाम दे रहे हैं।

मक्का के लोग इसी किस्म की नफिसयात में मुक्तिला थे। उन्हें फ़ख्र था कि वे बैतुल्लाह के वारिस हैं। इब्राहीम व इस्माईल जैसे जलीलुलकदर पैगम्बरों की उम्मत हैं। उन्हें काबा के ख़ादिम होने का शरफ हासिल है। उनका ख़्याल था कि जब उन्हें इतने दीनी एजाजात (पारितोष) हासिल हैं और वे इतने बड़े-बड़े दीनी कारनामे अंजाम दे रहे हैं तो कैसे मुमकिन है कि खुदा उन्हें जहन्नम में डाल दे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا
ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ
يُخْشَرُونَ ۚ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ
عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكَبَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلُهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ۚ ﴿٣٦﴾

जिन लोगों ने इंकार किया वे अपने माल को इसलिए खर्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह की राह से रोकें। वे उसे खर्च करते रहेंगे फिर यह उनके लिए हसरत बनेगा फिर वे मगलूब (परास्त) किए जाएंगे। और जिन्होंने इंकार किया उन्हें जहन्नम की तरफ इकट्ठा किया जाएगा। ताकि अल्लाह नापाक को अलग कर दे पाक से और नापाक को एक पर एक रखे फिर इस ढेर को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारे (घाटे) में पड़ने वाले। (36-37)

इंसानों में कुछ पाक हैं और कुछ नापाक। कुछ रूहों की गिजा वे चीजें होती हैं जो खुदा को पसंद हैं और कुछ रूहों को उन चीजों में लज्जत मिलती है जो उनके नपस को या शैतान को मरगूब हैं।

आम हालात में ये दोनों किस्म के लोग एक दूसरे से मिले रहते हैं। बजाहिर इनमें कोई फर्क दिखाई नहीं देता। इसलिए अल्लाह तआला लोगों के दर्मियान हक व बातिल (सत्य-असत्य) की कशमकश बरपा करता है ताकि दोनों किस्म के लोग एक दूसरे से अलग हो जाएं और यह मालूम हो जाए कि कौन क्या था और कौन क्या था।

इस कशमकश के दौरान खुल जाता है कि कौन हक के सामने आने के बाद फ़ौरन उसे मान लेता है और कौन वह है जो उसका इंकार कर देता है। कौन दूसरों के साथ मामला पड़ने पर इंसाफ की हद पर कायम रहता है और कौन बेइंसाफी पर उतर आता

है। कौन खुदा की जमीन में मुतवाजेज (सदाचारी) बनकर रहता है और कौन सरकश बनकर। कौन सच्चाई की राह में अपना माल खर्च करने वाला है और कौन तअस्सुब और नुमाइश की राह में।

जो लोग हक को छोड़कर दूसरी राहों में अपनी कोशिशें सर्फ करते हैं उनके इस अमल को शैतान उनकी नजर में इस तरह हसीन बनाता रहता है कि वे समझते हैं कि वे आला कारनामे अंजाम दे रहे हैं, वे शानदार मुस्तकबिल की तरफ बढ़ रहे हैं। मगर इस गलतफहमी की उम्र बहुत थोड़ी होती है। बहुत जल्द आदमी पर वह वक्त आ जाता है जबकि वह जान लेता है कि उसने जो कुछ किया वह सिर्फ अपनी कुव्वत और अपने माल को जाया करना था, वह जिस मुस्तकबिल की तरफ बढ़ रहा था वह हसरत और मायूसी का मुस्तकबिल था। अगरचे झूठी खुशफहमी के तहत वह उसे रेशन मुस्तकबिल की तरफ सफर के हममअना समझता रहा था।

बेआमेज हक की दावत उठती है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर उसकी जद पड़ती हुई महसूस करते हैं जो मिलावटी दीन की बुनियाद पर सरदारी कायम किए हुए थे। वे उस रवाजी ढांचे की हिफाजत में अपनी सारी ताकत खर्च कर देते हैं जिसके अंदर उन्हें बड़ई का मकाम हासिल है। मगर ऐसे लोग बेआमेज हक के मुक़बले में लाजिम नाकाम होते हैं, कभी दलील के मैदान में और कभी इसी के साथ अमल के मैदान में भी।

मौजूदा दुनिया के हंगामे सिर्फ इसलिए जारी किए गए हैं कि पाक रूहों और नापाक रूहों को एक दूसरे से अलग कर दिया जाए। यह छांटने का अमल जब पूरा हो जाएगा तो खुदा पाक रूहों को जन्नत में दाखिल कर देगा और नापाक रूहों को एक साथ जमा करके जहन्नम में धकेल देगा।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنتُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةً وَيَكُونُوا الدِّينُ كُلَّهُ لِلَّهِ فَإِنْ انْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا فَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مُوَلِّكُمْ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۚ

इंकार करने वालों से कहो कि अगर वे बाज आ जाएं तो जो कुछ हो चुका है वह उन्हें माफ कर दिया जाएगा। और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला अगलों के साथ गुजर चुका है। और उनसे लड़े यहाँ तक कि फितना बाक़ी न रहे और दीन सब अल्लाह के लिए हो जाए। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो अल्लाह देखने वाला है उनके अमल का। और अगर उन्होंने एराज (उपेक्षा) किया तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार। (38-40)

इस्लाम का उसूल यह है कि जो शख्स जैसा अमल करे उसके मुताबिक वह अपना बदला पाए। ताहम अल्लाह तआला ने इस आम उसूल में अपनी रहमत से एक खास इस्तिस्ना (अपवाद) रखा है। वह यह कि आदमी जब 'तौबा' कर ले तो इसके बाद उसके पिछले आमाल पर उसे कोई सजा नहीं दी जाएगी। एक शख्स खुदा से दूरी की ज़िंदगी गुजार रहा था। फिर उसे हिदायत की रोशनी मिली। उसने सच्चा मोमिन बनकर सालेह ज़िंदगी इख़्तियार कर ली तो इससे पहले उसने जो बुराईयां की थीं वे सब माफ कर दी जाएंगी। उसके पिछले गुनाहों की बिना पर उसे नहीं पकड़ा जाएगा।

ठीक यही उसूल इज्तिमाई और सियासी मामले में भी है। किसी मकाम पर हक और बातिल की कशमकश बरपा होती है आपस में टकराव होता है, इस टकराव के दौरान में बातिल के अलमबरदार हक के लिए उठने वालों पर जुल्म करते हैं। बिलआखिर जंग का फैसला होता है। हकमस्त ग़ालिब आ जाते हैं और नाहक के अलमबरदार मग़लूब होकर जेर (परास्त) कर दिए जाते हैं। इस मामले में भी इस्लाम का उसूल वही है जो ऊपर मजकूर हुआ। यानी फ़तह के बाद पिछले जुल्म व सितम पर किसी को सजा नहीं दी जाएगी। अलबत्ता जो शख्स फ़तह के बाद कोई ऐसी हरकत करे जो इस्लामी क़ानून में जुर्म करार दी गई हो तो जरूरी कार्रवाई के बाद उसे वह सजा मिलेगी जो शरीअत ने ऐसे एक मुजरिम के लिए मुकरर की है।

फ़ितना का मतलब सताना (Persecution) है। कदीम ज़माने में सरदारी और हुकूमत शिर्क की बुनियाद पर कायम होती थी। आज हुकूमत करने वाले अवाम का नुमाइंदा बनकर हुकूमत करते हैं, माजी में खुदा या खुदा के शरीकों का नुमाइंदा बनकर लोग हुकूमत किया करते थे। इसके नतीजे में शिर्क को कदीम समाज में बाइक्तेदार (सत्तायुक्त) हैसियत हासिल हो गई थी। अहले शिर्क अहले तौहीद को सताते रहते थे। अल्लाह ने अपने रसूल और आपके साथियों को हुक्म दिया कि शिर्क और इक्तेदार के बाहमी तअल्लुक को तोड़ दो ताकि मुशिरकीन अहले तौहीद को सताने की ताकत से महरूम हो जाएं। चुनांचे आपके जरिए जो आलमी इंकलाब आया उसने हमेशा के लिए शिर्क का रिश्ता सियासी निजाम से ख़त्म कर दिया। अब शिर्क सारी दुनिया में सिर्फ एक मजहबी अक़ीदा है न कि वह सियासी नज़रिया जिसकी बुनियाद पर हुकूमतों का कयाम अमल में आता है।

ताहम जहाँ तक अरब का तअल्लुक है वहाँ यह मक़सद दोहरी सूरत में मल्लूब था, यहाँ शिर्क और मुशिरकीन दोनों को ख़त्म करना था ताकि हरमैन के इलाके को अबदी तौर पर ख़ालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) का मर्कज़ बना दिया जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि जजीरा अरब से मुशिरकीन को निकाल दो। यह काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में शुरू हुआ और हज़रत उमर फ़रूक की ख़िलाफ़त के ज़माने में अपनी तक्मील को पहुँचा।

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلْنَا
عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّفْصِيلِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ④

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत का माल (जंग में हासिल माल) तुम्हें हासिल हो उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और रसूल के लिए और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफिरों के लिए है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज पर जो हमने अपने बंदे (मुहम्मद) पर उतारी फैसले के दिन, जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (41)

ग़नीमत अरबी जवान में उस माल को कहते हैं जो जंग के मैदान में दुश्मन से लड़कर हासिल किया गया हो। कदीम जमाने में यह रवाज था कि जंग के बाद दुश्मन की जो चीज जिसके हाथ लगे वह उसी की समझी जाए। इस्लाम ने यह उसूल मुकर्रर किया कि हर एक को जो कुछ मिला हो वह सबका सब लाकर अमीर के पास जमा करे, कोई शख्स सूई का धागा तक छुपाकर न रखे।

इस तरह सारा ग़नीमत का माल इकट्ठा करने के बाद उसमें से पांचवां हिस्सा खुदा का है जिसे रसूल नियाबत (प्रतिनिधि) के तौर पर वसूल करके पांच जगह इस तरह खर्च करेगा कि एक हिस्सा अपनी जात पर, फिर अपने उन रिश्तेदारों पर जिन्होंने रिश्ते की बुनियाद पर मुश्किल वक्तों में आपके दीनी मिशन में आपका साथ दिया, और यतीमों पर और हाजतमंदों पर और मुसाफिरों पर। इसके बाद बाकी चार हिस्से को तमाम फैजियों के दर्मियान इस तरह तक्सीम किया जाए कि सवार को दो हिस्सा मिले और पैदल को एक हिस्सा।

इस्लाम यह ज़ेहन बनाना चाहता है कि आदमी जो चीज पाए उसे वह खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझे। इस दुनिया में किसी वाक्ये को ज़ुहूर में लाने के लिए बेशुमार असबाब की एक ही वक्त मुवाफिक़त (अनुकूलता) जरूरी है जो किसी भी इंसान के बस में नहीं। बद की लड़ाई में एक बेहद ताकतवर गिरोह के मुकाबले में एक कमजोर गिरोह का फैसलाकुन तौर पर ग़लबा पाना इस बात का एक ग़ैर मामूली सबूत था कि जो कुछ हुआ है वह खुदा की तरफ से हुआ है। ऐसी हालत में फ़तह के बाद मिली हुई चीज को खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझना ऐस उस हकीक़त को मानना था जो वाक़ेआत के नतीजे में फ़ितरी तौर पर सामने आई है।

ग़नीमत के माल में दूसरे मुस्तहिक़ भाइयों का हिस्सा रखना इस बात का सबक है कि अमवाल में हकदार होने की बुनियाद सिर्फ़ महनत और विरासत नहीं बल्कि ऐसी बुनियादें भी हैं जो महनत और विरासत जैसी चीजों के दायरे में नहीं आतीं। इस्तहकाक (पात्रता) की इन दूसरी मर्दों का एतराफ़ गोया इस वाक्ये का अमली एतराफ़ है कि आदमी चीजों को खुदा की चीज समझता है न कि अपनी चीज।

ग़नीमत के इस कानून में तीसरा ज़बरदस्त सबक यह है कि मिल्कियत की बुनियाद कब्ज़ नहीं बल्कि उसूल है। कोई शख्स महज इस बिना पर किसी चीज का मालिक नहीं बन जाएगा कि वह इत्तेफ़ाक़ से उसके कब्ज़े में आ गई है। कब्ज़े के बावजूद आदमी को चाहिए कि उस चीज को जिम्मेदार अफ़राद के हवाले करे और उसूलों और कानूनी बुनियाद पर उसे जितना मिलना चाहिए उसे लेकर उस पर राजी हो जाए।

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ الدِّينِ وَهُمْ بِالْعُدُوِّ الْقُصُوفِ وَالرَّكْبُ اسْفَلَ مِنْكُمْ
وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتِلَافِئُمْ فِي الْمَيْعَدِ وَلَكِنْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا
لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ
لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ⑤ إِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ فِي مَتَابِكُمْ قَلِيلًا وَكَثِيرًا لَّكُنْ لَكُمْ فِتْنَةٌ
أَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَكَمٌ إِنَّكَ عَلَيْهِمْ بِذَاتِ
الضُّدُورِ ⑥ وَإِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ إِذْ تَقِفْتُمْ فِي آغْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي
آغْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَاللَّهُ تَرْجِعُ الْأُمُورَ ⑦

और जबकि तुम वादी के करीबी किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर। और काफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ था। और अगर तुम और वे वक्त मुकर्रर करते तो ज़रूर इस तक्कर के बारे में तुममें इत्तेलाफ़ (मतभेद) हो जाता। लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसे होकर रहना था, ताकि जिसे हलाक होना है वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे ज़िंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ ज़िंदा रहे। यकीनन अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब अल्लाह तुम्हारे ख़्बाब में उन्हें थोड़ा दिखाता रहा। अगर वह उन्हें ज्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और आपस में झगड़ने लगते इस मामले में। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। यकीनन वह दिलों तक का हाल जानता है। और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी नजर में कम करके दिखाया और तुम्हें उनकी नजर में कम करके दिखाया ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसका होना तै था। और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं। (42-44)

अल्लाह तआला को यह मल्बूब है कि हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना लोगों पर पूरी तरह खुल जाए। यह काम इब्तिदा में दावत के ज़रिए दलाइल की जवान में होता है। दाओ ताक़तवर और आमफ़हम दलाइल के ज़रिए हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना साबित करता है। इस काम की तक्मील बिलआख़िर ग़ैर मामूली वाक़ेयात से की जाती है, चाहे यह ग़ैर मामूली वाक़या कोई आसमानी मौजजा हो या ज़मीनी ग़लबा। बद की जंग में यही दूसरा वाक़या पेश आया।

क़ैश मक्का से इसलिए निकले कि शाम से आने वाले अपने त्रिजारी कफ़िले की मदद करें। मुसलमान मदीने से इसलिए निकले कि त्रिजारी कफ़िले पर हमला करें। त्रिजारी कफ़िला मारुफ़ रास्ते को छोड़कर समुद्री साहिल से गुज़रा और बच गया। और ये दोनों फ़ीक़ बद्र पहुंच कर आमने सामने हो गए। यह अल्लाह की तदबीर से हुआ। दोनों को एक दूसरे से टकरा कर अहले ईमान को फ़तह दी गई। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके मिशन की सदाक़त (सच्चाई) लोगों पर पूरी तरह खुल गई। जो लोग सच्चे तालिब थे उन पर आखिरी हद तक यह बात वाज़ेह हो गई कि यही हक़ है। और जो लोग अपने अंदर किसी किस्म की नफ़िसयाती पेचीदगी लिए हुए थे उन्हें इसके बाद भी अपने मस्लक पर कायम रहकर साबित कर दिया कि वे इसी काबिल हैं कि उन्हें हलाक कर दिया जाए।

बद्र में क़ैश की फौज की तादाद ज्यादा थी। अगर मुसलमान उनकी अस्ल तादाद को देखते तो कोई कहता कि लड़ो और कोई कहता कि न लड़ो। इस तरह इख़्तेलाफ़ (मतभेद) पैदा हो जाता और अस्ल काम होने से रह जाता। ख़ुदा ने हस्बेमौका कभी तादाद घटा कर दिखाई और कभी बढ़ाकर। इस तरह मुमकिन हो सका कि तमाम मुसलमान बेजिगरी के साथ लड़ें। ख़ुदा को जब कोई काम मलूब होता है तो वह इसी तरह अपनी मदद भेजकर उस काम की तक्मील का सामान कर देता है।

अमल के दौरान जो हालात पेश आते हैं वे ख़ुदा की तरफ से होते हैं और यह देखने के लिए होते हैं कि किस शख्स ने अपने हालात के अंदर किस किस्म का रद्देअमल पेश किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَتَازَعَوْا فَنفَشَلُوكُمْ وَتَذْهَبَ رِجَالُكُمْ وَأَصِيرُوا إِنَّا اللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۖ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝

ऐ ईमान वाले जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो तुम साबितकदम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम कामयाब हो। और इताअत (आज्ञापालन) करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वना तुम्हारे अंदर कमजोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सब्र करो, वेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है, और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह की राह से रोकते हैं। हालांकि वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (45-47)

कामयाबी ख़ुदा की मदद से आती है। मगर ख़ुदा की मदद हमेशा असबाब के पर्दे में

आती है न कि बेअसबाबी के हालात में। मुसलमान अगर अपने मुमकिन असबाब को जमा कर दें तो बाकी कमी ख़ुदा की तरफ से पूरी करके उन्हें कामयाब कर दिया जाता है। लेकिन अगर वे बेअसबाबी का मुजाहिदा करें तो ख़ुदा कभी ऐसा नहीं कर सकता कि बेअसबाबी के नक्शे में उनके लिए अपनी मदद भेज दे।

असबाब क्या हैं। असबाब ये हैं कि मुसलमान इक़दाम में पहल न करें। वे अपनी जड़ों को मजबूत करने में लगे रहें यहां तक कि हरीफ़ ख़ुद चढ़ाई करके उनसे लड़ने के लिए आ जाए। फिर जब टकराव की सूरत पैदा हो जाए तो वे उसके मुकाबले में पूरी तरह जमाव का सुबूत दें। अल्लाह की याद, ब-अल्फ़ाज दीगर, मक्सूदे असली की मुक़म्मल पाबंदी रखें ताकि उनका कबी हैसला बाकी रहे। सरदार के हुक्म के तहत पूरी तरह मुनज़म रहें। बाहमी इख़्तेलाफ़त को नज़रअंदाज करें न यह कि इख़्तेलाफ़त को बढ़कर टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। वे अपने इत्तेहाद से हरीफ़ को मरऊब कर दें। वे सब्र करें, यानी जोश के बजाए होश को अपनाएं। जल्द कामयाबी के शौक में ग़ैर पुख़्ता इक़दाम न करें। उनकी नज़र हमेशा आखिरी मजिल पर हो न कि वक्ती मसालेह और मुनाफ़े पर। इन्हीं चीज़ों का नाम असबाब है और इन्हीं असबाब के पर्दे में ख़ुदा की मदद आती है।

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां ख़ुदा 'ग़ैब' में रहकर अपने तमाम काम अंजाम देता है, इसलिए जब वह मुसलमानों की मदद करता है तो असबाब के पर्दे में करता है। मुसलमान अगर असबाब का माहौल पैदा न करें वे बेहोसलगी का सुबूत दें, वे इत्तिदाई तैयारी के बग़ैर इक़दामात करने लगे। वे इख़्तेलाफ़ और इतिशार में मुब्तिला हों, तो उन्हें कभी यह उम्मीद न करनी चाहिए कि ख़ुदा ग़ैब का पर्दा फाड़कर सामने आ जाएगा और बेअसबाबी का शिकार होने के बावजूद बग़ैर असबाब के उनकी मदद करके उनके तमाम काम बना देगा।

मुसलमान अगर अपने हरीफ़ के मुकाबले में अपने को बेहतर हालात में पाएं तब भी ऐसा नहीं होना चाहिए कि वे मुक़िरो की तरह अपनी ताक़त पर घमंड करें, वे फख़्र व नुमाइश के जन्नात में मुब्तिला हो जाएं। वे बड़ाई के जोम (दंभ) में इस हद तक आगे बढ़ें कि एक शख्स के सिर्फ़ इसलिए मुख़ालिफ़ बन जाएं कि वह ऐसे हक़ की दावत दे रहा है जिसकी जद ख़ुद उनकी अपनी जात पर भी पड़ रही है।

وَاذْكُرْ لَكُمْ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَرَ اتِّفَاقَ الْفِتْنَةِ نَكَصَ عَلَى عَقَبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِحْتُ عَنْكُمْ إِنِّي أَرَى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هَؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

और जब शैतान ने उन्हें उनके आमाल खुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर ग़ालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूँ। मगर जब दोनों गिरोह आमने सामने हुए तो वह उल्टे पांव भागा और कहा कि मैं तुमसे बरी हूँ, मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह सज़ा सज़ा देना वाला है। जब मुनाफ़िक (पाखंडी) और जिनके दिलों में रोग है कहते थे कि इन लोगों को इनके दीन ने धोखे में डाल दिया है और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा जबरदस्त और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (48-49)

मक्का के मुख़ालिफ़ीन अपने आपको बरसरे हक और पैग़म्बर के साथियों को बरसरे बातिल समझते थे। इस पर उन्हें इतना यकीन था कि उन्होंने काबा के सामने खड़े होकर दुआ की कि, रुझाया, दोनों फ़ीक़ों में से जो फ़ीक़ हक़ पर हो तू उसे कामयाब कर और जो फ़ीक़ बातिल पर हो तू उसे हलाक कर दे। ताहम उनका यह यकीन झूठा यकीन था। इस किस्म का यकीन हमेशा शैतान के बहकावे की वजह से पैदा होता है।

शैतान ने मक्का के लोगों को सिखाया कि तुम तारीख़ के मुसल्लमा (सुस्थापित) पैग़म्बरों (इब्राहीम अलैहि० व इस्माईल अलैहि०) के मानने वाले हो जबकि मुसलमान एक ऐसे शख़्स को मानते हैं जिसका पैग़म्बर होना अभी एक मुतनाज़आ (विवादित) मसला है। तुम काबा के वारिस हो जबकि मुसलमानों को काबा की सरज़मीन से निकाल दिया गया है। तुम असलाफ़ (पूर्वजों) की रिवायतों को कायम रखने के लिए लड़ रहे हो जबकि मुसलमान असलाफ़ की रिवायतों को तोड़ने के लिए उठे हैं। शैतान ने मक्का वालों के दिलों में इस किस्म के ख़्यालात डाल कर उन्हें झूठे यकीन में मुत्तिला कर दिया था। वे समझते थे कि हम जो कुछ कर रहे हैं बिल्कुल दुरुस्त कर रहे हैं और खुदा की मदद बहरहाल हमें हासिल होगी।

मक्का के मुख़ालिफ़ीन एक तरफ़ अपने झूठे यकीन को इस किस्म की चीज़ों की बिना पर सच्चा यकीन समझ रहे थे। दूसरी तरफ़ जब वे देखते कि पैग़म्बर के साथी उनसे भी ज्यादा यकीन और सरफ़रोशी के जच्चे के साथ इस्लाम के महाज पर अपने आपको लगाए हुए हैं तो वे उनके सच्चे यकीन को यह कह कर बेएतबार साबित करते थे कि यह महाज एक मजहबी जुनून है। वह एक शख़्स (पैग़म्बर) की ख़ूबसूरत बातों से जोश में आकर दीवाने हो रहे हैं। उनके यकीन और कुर्बानी की इससे ज्यादा और कोई हकीकत नहीं।

मगर जब दोनों गिरोहों में मुकाबला हुआ और मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद उतर पड़ी तो शैतान इस्लाम के मुख़ालिफ़ों को छोड़कर भागा। एक तरफ़ खुदा की मदद से मुसलमानों के दिल और ज्यादा क़वी (दृढ़) हो गए। दूसरी तरफ़ मुख़ालिफ़ीन का झूठा यकीन बेदिली और पस्तहिम्मती में तब्दील हो गया। क्योंकि उनका एतमाद शैतान पर था और शैतान अब उन्हें छोड़कर भाग चुका था।

जो लोग अल्लाह पर भरोसा करें अल्लाह जरूर उनकी मदद करता है। मगर अल्लाह की मदद हमेशा उस वक़्त आती है जबकि अहले ईमान अल्लाह पर यकीन का इतना बड़ा सुबूत दे दें कि बेयकीन लोग कह उठें कि ये मजनून हो गए हैं।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ
وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۖ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ
لِّلْعَبِيدِ ۖ كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
فَاَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ
لَمَّ يَكُ مُعَذِّبًا نَّعِيمًا ۖ اَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُ مَا بِاَنْفُسِهِمْ
وَاَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ كَذَّبُوا
بِآيَاتِ رَبِّهِمْ ۖ فَاهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ ۖ وَاعْرِقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ
وَكُلٌّ كَانُوا ظَالِمِينَ ۝

और अगर तुम देखते जबकि फ़रिश्ते इन मुक़िरीन की जान कब्ज करते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने का अजाब चखो। यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था और अल्लाह हरगिज़ बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। फिरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला है, सज़ा सज़ा देने वाला है। यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी क़ैम पर करता है उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वे उसे न बदल दें जो उनके नफ़सों (अंतःकरणों) में है। और बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। फिरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने ख़ब की निशानियों को झुटलाया फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उन्हें हलाक कर दिया और हमने फिरऔन वालों को ग़र्क कर दिया और ये सब लोग ज़ालिम थे। (50-54)

नेमत का दारोमदार नेमत के इस्तहक़क (पात्रता) की हालत पर है। क़ैमी सतह पर किसी को जो नेमतें मिलती हैं वे हमेशा उस इस्तहक़क के बक़द होती हैं जो नफ़सी (आंतरिक) हालत के एतबार से उसके यहां पाया जाता है। यह 'नफ़स' चूँकि फ़र्द के अंदर होता है इसलिए इस बात को दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जा सकता है कि इज्तिमाई (सामूहिक) इनामात का इंहिसार इफ़रादी (व्यक्तिगत) हालात पर है। अफ़राद की सतह पर क़ैम जिस दर्जे में हो उसी के बक़द उसे इज्तिमाई इनामात दिए जाते हैं। इसका मतलब यह है कि कोई गिरोह अगर खुदा के इज्तिमाई इनामात को पाना चाहता है तो उसे अपने अफ़राद की नफ़सी इस्लाह पर अपनी ताक़त सर्फ़ करना चाहिए। इसी तरह कोई क़ैम अगर अपने को इस हाल में देखे कि उससे इज्तिमाई नेमतें छिन गई हैं तो उसे खुद नेमतों के पीछे दौड़ने के बजाए अपने

अफ़राद के पीछे दौड़ना चाहिए। क्योंकि अफ़राद ही के बिगड़ने से उसकी नेमतें छिनी हैं और अफ़राद ही के बनने से दुबारा वे उसे मिल सकती हैं।

जब कोई कौम अद्ल (न्याय) के बजाए जुल्म और तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए सरकशी का रवैया इस्तिआर करती है तो खुदा की तरफ से उसके सामने सच्चाई का एलान कराया जाता है ताकि वह मुतनब्वह (सचेत) हो जाए। यह एलान कमाले वजाहत के एतबार से खुदा की एक निशानी होता है। उसे मानना खुदा को मानना होता है और उसे न मानना खुदा को न मानना। खुदा की दावत (आह्वान) जब आयत (निशानी) की हद तक खुलकर लोगों के सामने आ जाए फिर भी वे उसका इंकार करें तो इसके बाद लाजिमन वे सजा के मुस्तहिक हो जाते हैं। इस सजा का अगाज अगरचे दुनिया ही से हो जाता है। ताहम दुनिया की सजा उस सज के मुकबले में बहुत कम है जो मौत के बाद आदमी के सामने आने वाली है। फ़रिश्तों की मार, सारी मख़बूक के सामने रुस्वाई और जहन्नम की आग में जलना। ये सब इतने हौलनाक मराहिल हैं कि मौजूदा हालात में उनका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

इंसान जब जुल्म और सरकशी का रवैया इस्तिआर करता है अव्वलन तो उसके लिए तंबीहात (चेतावनिया) जाहिर होती हैं। अगर वह उनसे सबक न ले तो बिलआखिर वह खुदा के पैसलाकुन अज़ब की जद में आ जाता है।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ الَّذِينَ عَاهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرْجَةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۚ وَأَمَّا تَثَقُّفُهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَدْكُرُونَ ۚ وَإِنَّمَا تَخَافَنْ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةٍ ۚ فَانْصُرْ إِلَيْهِمْ عَلَى سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۚ

बेशक सब जानदारों में बदतरीन अल्लाह के नजदीक वे लोग हैं जिन्होंने इंकार किया और वे ईमान नहीं लाते। जिनसे तुमने अहद (वचन) लिया, फिर वे अपना अहद हर बार तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं। पस अगर तुम उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सजा दो कि जो उनके पीछे हैं वे भी देखकर भाग जाएं, ताकि उन्हें इबरत (सीख) हो। और अगर तुम्हें किसी कौम से बदअहदी (वचन भंग) का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ फेंक दो, ऐसी तरह कि तुम और वे बराबर हो जाएं। बेशक अल्लाह बदअहदों को पसंद नहीं करता। (55-58)

मदीना के यहूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत (ईशदूतत्व) का इंकार करके खुदा की नज़र में मुजरिम हो चुके थे। इस जुर्म पर मज़ीद इजाफ़ा उनकी बदअहदी थी। हिजरत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मदीना के यहूद के दरमियान यह तहरीरी मुआहिदा हुआ कि दोनों एक दूसरे के मामले में ग़ैर जानिबदार रहेंगे। मगर यहूद खुफिया

तौर पर आपके दुश्मनों (मुश्किनी) से मिलकर आपके खिलाफ साजिशें करने लगे। यह कुफ़्र पर बदअहदी का इजाफ़ा था। यह इंकार के साथ कमीनगी को जमा करना था। ऐसे लोगों के लिए आखिरत में हौलनाक अज़ाब है और दुनिया में यह हुक्म है कि उनके खिलाफ सख़्त कार्रवाई की जाए ताकि उनकी शरारतों का ख़ात्मा हो और उनके इरादे पस्त हो जाएं।

अगर किसी कौम से मुसलमानों का अहद हो और मुसलमान उनकी तरफ से बदअहदी के अंदेश की बिना पर उस अहद को तोड़ना चाहें तो जरूरी है कि वे पहले उन्हें इसकी इत्तिहा दें ताकि दोनों पेशगी तौर पर यह जान लें कि अब दोनों के दरमियान अहद की हालत बाकी नहीं रही। अमीर मुआविया और रूमी हुक्मरां में एक बार मीआदी मुआहिदा (अवधिगत समझौता) था। मुआहिदे की मुदत करीब आई तो अमीर मुआविया ने अपनी फौजों को ख़ामोशी के साथ रूम की सरहद पर जमा करना शुरू किया ताकि मुआहिदे की तारीख ख़त्म होते ही अगली सुबह अचानक रूमी इलाके में हमला कर दिया जाए। उस वक़्त एक सहाबी हज़रत अम्र बिन अंबसा घोड़े पर सवार होकर आए। वह ब-आवाज़ बुलन्द कह रहे थे 'अल्लाहु अकबर, अहद पूरा करो, अहद को न तोड़ो' उन्होंने लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस सुनाई : 'जिसका किसी कौम से मुआहिदा हो तो कोई गिरह न खोली जाए और न बांधी जाए यहां तक कि मुआहिदे की मुदत पूरी हो जाए या बराबरी के साथ अहद उसकी तरफ फेंक दिया जाए।' (तफ़सीर इब्ने कसीर)

दूसरी सूत वह है जबकि सिर्फ अंदेश की बात न हो बल्कि फ़रीक सानी (प्रतिपक्ष) की तरफ से अमलन मुआहिदे की वाजेह ख़िलाफ़वर्जी हो चुकी हो। ऐसी सूत में इजाज़त है कि फ़रीक सानी को मुतलअ (सूचित) किए बग़ैर जवाबी कार्रवाई की जाए। मज़ाए मक्का इसी की मिसाल है। कु़ैश ने आपके समर्थक (बनू खुज़ाआ) के खिलाफ बनू बक्र की आक्रमक कार्रवाई में शरीक होकर मुआहिदाए हुदैबिया की एकतरफ़ ख़िलाफ़वर्जी की तो आपने कु़ैश को पेशगी इत्तला दिए बग़ैर उनके खिलाफ ख़ामोश कार्रवाई फरमाई।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِذْ يُنْفِخُونَ ۖ وَأَعِدُوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ ۚ وَإِنْ جَحَدُوا ۖ لِلْسَّلَامِ فَأَنْجِزْ لَهُمْ تَوَكُّلَ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۚ وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي يَتَذَكَّرُ فِي نَفْسِهِ ۖ وَالْمُؤْمِنِينَ ۚ وَالْأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلْفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और इंकार करने वाले यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज़ अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। और उनके लिए जिस कद्र तुमसे हो सके तैयार रखो कुव्वत और पले हुए घोड़े कि इससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर और इनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में खर्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जाएगी। और अगर वे सुलह (संधि) की तरफ झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफी है। वही है जिसने अपनी नुसरत (मदद) और मोमिनों के जरिए तुम्हें कुव्वत दी। और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक (जुड़व) पैदा कर दिया। अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब खर्च कर डालते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने उन में इत्तिफ़ाक पैदा कर दिया, बेशक वह जोरआवर है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (59-63)

इस्लाम का एतमाद इस्तेमाले कुव्वत से ज्यादा मजहिद-ए-कुव्वत (शक्ति प्रदर्शन) पर है। इसीलिए अहले इस्लाम को कुव्वते मुहिबा (सैन्य शक्ति) फराहम करने का हुक्म दिया गया, यानी वे चीजें जो हरीफ (प्रतिपक्ष) को इस कद्र मरऊब करें कि वह इक्दाम का हैसला खो दे। इस्लाम वक्त के मेयार के मुताबिक अपने को ताक़तवर बनाता है, मगर लाजिमन लड़ने के लिए नहीं। बल्कि इसलिए ताकि उसके दुश्मनों पर उसका धाक कायम रहे और वे उसके खिलाफ जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाई की हिम्मत न करें। इस्लाम को वक्त के मेयार के मुताबिक फिक्री (वैचारिक) और अमली एतबार से ताक़तवर बनाने में जो लोग अपनी कमाई खर्च करेंगे वे कई गुना ज्यादा मिक्दार में इसका बदला अपने रब के यहां पाएंगे।

इस्लाम की फ़तह का राज अस्लन जंगी मुक़ाबलों में नहीं बल्कि उसके उसूलों की तब्दील में है। इसलिए हुक्म हुआ कि जब भी फरीके सानी (प्रतिपक्षी) सुलह की पेशकश करें तो हर अंदेश को नजरअंदाज करते हुए उसे कुबूल कर लो। क्योंकि अंदेशा बहरहाल यक्नीनी नहीं और जंगबंदी का यह फ़ायदा यक्नीनी है कि फुरअमन फज़ा में इस्लाम का दावती अमल शुरू हो जाए और इस तरह जंग का रुकना इस्लाम की नजरियाती तोसीअ (प्रसार) का सबब बन जाए।

इस्लाम खुद अपनी जात में सबसे बड़ी ताक़त है। खुदा और आख़िरत का अकीदा अगर पूरी तरह किसी गिरोह के अफ़राद में पैदा हो जाए तो उनके अंदर से वे तमाम नफ़िसयाती ख़राबियां निकल जाती हैं जो नाइत्तिफ़ाकी और बाहमी टकराव का सबब होती हैं। इसके बाद लाजिमन ऐसा होता है कि वे सबके सब बाहम जुड़ कर एक हो जाते हैं। और यह एक हकीक़त है कि इतिहाद सबसे बड़ी ताक़त है। मुतहिद गिरोह अगर तादाद में कम हो तब भी वह अपने से ज्यादा तादाद रखने वाले गिरोह पर ग़ालिब आ जाएगा।

बाहमी इत्तिफ़ाक (एकजुटता) सबसे मुश्किल चीज है। किसी गिरोह के नुसरतयाफ़ता (सहायता प्राप्त) होने की एक पहचान यह है कि उसके अफ़राद बाहम मुतहिद रहें, कोई भी चीज उनके इतिहाद को तोड़ने वाली साबित न हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضْ
الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتِينَ
وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۖ
أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ
صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ
وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

ऐ नबी तुम्हारे लिए अल्लाह काफी है और वे मोमिनीन जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है। ऐ नबी मोमिनीन को लड़ाई पर उभारो। अगर तुम में बीस आदमी साबितकदम (टूढ़) होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में सौ होंगे तो हजार मुंकिरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुम में कुछ कमजोरी है। पस अगर तुम में सौ साबितकदम होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर हजार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हजार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबितकदम रहने वालों के साथ है। (64-66)

अहले ईमान की कम तादाद और अहले ईमान की ज्यादा तादाद पर ग़ालिब आने की वजह यह बताई कि अहले ईमान के अंदर फ़िक्ह होती है जबकि और अहले ईमान फ़िक्ह से महरूम हैं। फ़िक्ह के लफ़्ज़ी मअना समझ के हैं। इससे मुराद वह बसीरत (विवेक) और शुऊर है जो ईमान के नतीजे में एक शख्स को हासिल होता है। खुदा पर ईमान किसी आदमी के लिए वही मअना रखता है जो अंधेरे कमरे में बजली का बल्ब जल जाना। बल्ब पूरे कमरे को इस तरह रोशन कर देता है कि उसकी हर चीज वाजेह तौर पर दिखाई देने लगे। इसी तरह ईमान आदमी को एक रब्बानी शुऊर अता करता है जिसके बाद वह तमाम हकीक़तों को उसकी असली सूरत में देखने लगता है।

ईमान के नतीजे में यह होता है कि आदमी ज़िंदगी और मौत की हकीक़त को समझ लेता है। वह जान लेता है कि अस्त चीज दुनिया की हयात (ज़िंदगी) नहीं बल्कि आख़िरत की हयात है। यह चीज उसे बेपनाह हद तक निडर बना देती है। वह मौत को इस नजर से देखने लगता है कि वह उसके लिए जन्नत में दाखिले का दरवाजा है। मोमिन शहादत को जन्नत का मुख़्तसर रास्ता समझता है। अल्लाह की राह में जान देना उसके लिए मलूब चीज बन जाता है, जबकि और मोमिन की जन्नत यही मौजूदा दुनिया है। वह ज़िंदा रहना चाहता है ताकि अपनी जन्नत का लुफ़ उठा सके। और मोमिन कौमी शुऊर के तहत लड़ता है और मोमिन जन्नती शुऊर के तहत, और कौमी शुऊर वाला कभी इतनी बेजिगरी के साथ नहीं लड़ सकता।

मोमिन खुदा से डरने वाला होता है, वह आखिरत की फिक्र करने वाला होता है, यह मिजाज उसे हर किस्म के मंफ़ी (नकारात्मक) जबाबत से पाक करता है। वह जिद्द, नफ़रत, तअसुब (विद्वेष), इंतक़ाम और धमंड जैसी चीज़ों से ऊपर उठ जाता है। दूसरी तरफ़ ग़ैर मोमिन का मामला सरासर इसके बरअक्स होता है। इसका नतीजा यह होता है कि ग़ैर मोमिन के इक्दामात मंफ़ी नफ़िसयात के तहत होते हैं और मोमिन के इक्दामात ईजाबी नफ़िसयात (सकारात्मक मानसिकता) के तहत। ग़ैर मोमिन जबाबती अंदाज से अमल करता है और मोमिन हकीकतपरसंदांना अंदाज से। ग़ैर मोमिन इंसानों का दुश्मन होता है और मोमिन सिर्फ़ इंसानों की बुराई का। ग़ैर मोमिन तंगजर्फी (कुदृच्छा) के साथ मामला करता है और मोमिन कुस्रते जर्फ़ (सद्दृच्छा) के साथ।

हज़र के मुम्नबले में सौ और दो हज़र के मुम्नबले में एक हज़र के अफ़ज़ल बताते हैं कि किताल का हुक्म जमाअत और फौज के लिए है। ऐसा करना सही न होगा कि एक दो आदमी हों तब भी वे लड़ने के लिए खड़े हो जाएं।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُثْغِنَ فِي الْأَرْضِ ۚ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ فَكُلُوا مِنَّمَا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

किसी नबी के लिए लायक नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक वह ज़मीन में अच्छी तरह खूजेगी न कर ले। तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आखिरत को चाहता है। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अगर अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो तरीका तुमने इस्तिथार किया उसके सबब तुम्हें सख्त अजाब पहुंच जाता। पस जो माल तुमने लिया है उसे खाओ, तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (67-69)

बदर की लड़ाई में मुसलमानों ने सत्तर बड़े-बड़े मुंकिरों को कल किया। इसके बाद जब उनके पांव उखड़ने लगे तो उनके सत्तर आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। इन गिरफ्तार होने वालों में अक्सर सरदार थे। जंग के बाद मश्वरा हुआ कि इन कैदियों के साथ क्या किया जाए। सहाबा की अक्सरियत ने यह राय दी कि इनको फिदया (आर्थिक मुआवजा) लेकर छोड़ दिया जाए। उस वक्त इस्लाम के दुश्मनों ने मुसलसल जंग की हालत बरपा कर रखी थी। मगर मुसलमानों के पास माल न होने की वजह से जंग के सामान की बहुत कमी थी। यह ख्याल किया गया कि फिदये से जो रकम मिलेगी उससे जंग का सामान ख़रीदा जा सकता है। हज़रत उमर बिन ख़ताब और हज़रत साद बिन मुआज़ इस राय के ख़िलाफ़ थे। हज़रत उमर ने कहा : 'ऐं खुदा के रसूल ये कैदी कुफ़्र के इमाम और मुश्रिकीन के सरदार हैं।' यानी दुश्मनों की अस्ल ताकत हमारी मुट्ठी में आ गई है, इनको कल करके इस मसले का हमेशा

के लिए ख़ात्मा कर दिया जाए। ताहम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली राय पर अमल फरमाया।

बाद को जब वे आयतें उतरीं जिन में जंग पर तबसिरा था तो अल्लाह तआला ने फिदये की रकम को जाइज़ ठहराते हुए इस रविश पर अपनी नाराज़ी का इशारा फरमाया। जंगी कैदियों को फिदया लेकर छोड़ना अगरचे बज़ाहिर रहमत व शफ़क़त का मामला था। मगर वह अल्लाह के दूरस (दूरगामी) मंसूबे के मुताबिक न था। अल्लाह का अस्ल मंसूबा कुफ़्र व शिर्क की जड़ उखाड़ना था। इस मक़सद के लिए अल्लाह तआला ने कु़रैश के तमाम लीडरों को (अबू लहब और अबू सुफ़ियान को छोड़कर) बदर के मैदान में जमा कर दिया और ऐसे हालात पैदा किए कि वे पूरी तरह मुसलमानों के काबू में आ गए। अगर इन लीडरों को उस वक्त ख़त्म कर दिया जाता तो कुफ़्र व शिर्क की मुजाहमत (प्रतिरोध) बदर के मैदान ही में पूरी तरह दफ़न हो जाती। मगर लीडरों को छोड़ने का नतीजा यह हुआ कि वे मुनज़म होकर दुबारा अपनी मुजाहमत की तहरीक जारी रखने के काबिल हो गए।

यह पैसाला जंगी मस्तेहत के ख़िलाफ़ था। वे मुसलमानों के लिए अज़ाबे अजीम (सख्त मुसीबतों) का ज़रिया बन जाता। ये लीडर अपनी अवाम को साथ लेकर इस्लाम के सारे मामले को तहस नहस कर देते। मगर अल्लाह ने आखिरी रसूल और आपके असहाब (साथियों) के लिए पहले से मुक़द्दर कर दिया था कि वे लाजिमन ग़ालिब रहेंगे, उन्हें जेर करने में कोई कामयाब न हो सकेगा। यही वजह है कि जंगी तदबीर में इस कोताही के बावजूद कु़रैश अहले ईमान के ऊपर ग़ालिब न आ सके। और बिलआखिर वही हुआ जिसका होना पहले से खुदा के यहां लिखा जा चुका था, यानी मुसलमानों की फतह और इस्लाम का ग़लबा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَأْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا خَيْرًا مِّنْ خَيْرٍ مَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

ऐ नबी तुम्हारे हाथ में जो कैदी हैं उनसे कह दो कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें दे देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर ये तुमसे बदअहदी (वचन-भंग) करेंगे तो इससे पहले इन्होंने खुदा से बदअहदी की तो खुदा ने तुम्हें उन पर काबू दे दिया और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (70-71)

बदर के कैदियों को फिदया लेकर छोड़ना मुसलमानों के लिए एक जंगी ग़लती थी। मगर ख़ुद कैदियों के हक में यह एक नई जिद्दी फ़राहम करने के हममअना था। इसका मतलब यह था कि वे लोग जो अपनी मुख़ालिफ़ते हक के नतीजे में हलाकत के मुस्तहिक हो चुके थे उन्हें एक बार और मौका मिल गया कि वे इस्लाम की दावत और उसके मुकाबले में अपनी

बेजा रविश पर दुबारा गौर कर सकें। इस मोहलत ने उनके लिए अपनी इस्लाह का नया दरवाजा खोल दिया।

अब एक सूरत यह थी कि इन कैदियों के दिल में शिकस्त की बिना पर इंतिकाम (बदले) की आग भड़के। फिदया देने की वजह से उन्हें जो जिल्लत व नुस्सान हुआ है उसका बदला लेने के लिए वे बेचैन हो जाएं। ऐसी सूरत में वे फिर उसी ग़लती को दोहराएंगे जिसके नतीजे में वे खुदा की पकड़ के मुस्तहिक बन गए थे। वे अपनी कुव्वतों को इस्लाम की मुखालिफ़त में सर्फ़ करेंगे जिसका अंजाम दुनिया में हलाकत है और आखिरत में अजाब।

दूसरी सूरत यह थी कि वे बद्र के मैदान में पेश आने वाले ग़ैर मामूली वाकये पर गौर करें कि मुसलमानों को कमतर असबाब के बावजूद इतनी खुली हुई फतह क्यों नसीब हुई। इसका साफ़ मतलब यह है कि खुदा मुसलमानों के दीन के साथ है न कि कुरैश के दीन के साथ। यह दूसरा जेहन अगर पैदा हो जाए तो वह उन्हें आमादा करेगा कि वे अपनी साबिका (पहली) रविश को बदल लें और जिस दीन को पहले इख़्तियार न कर सके उसे अब से इख़्तियार कर लें। और इस तरह दुनिया व आखिरत में खुदा के इनाम के मुस्तहिक बनें।

तारीख़ बताती है कि कुरैश के लोगों में एक तादाद ऐसी निकली जिनके दिल में मञ्जूरा सवाल जाग उठा और जल्द या देर से वे इस्लाम में दाख़िल हो गए। हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ने कैद के जमाने ही में इस्लाम कुबूल कर लिया। कुछ दूसरे लोग बाद को इस्लाम के हलके में आ गए। ये लोग अगरचे गिरोही तअस्सुब की नजर में जलील हुए मगर उन्हें खुदा की नजर में इज्जत हासिल कर ली। दुनिया का नुस्सान उठाकर वे आखिरत के फ़ायदे के मालिक बन गए।

कैदियों को छोड़ने की वजह से मुसलमानों को यह अदेशा था कि वे इसे एहसान समझ कर इसका एतराफ़ नहीं करेंगे बल्कि पहले की तरह दुबारा साजिश और तख़्बीक़ारी (विध्वंस) का रास्ता इख़्तियार करके इस्लाम की राह में रुकावट बन जाएंगे। मगर कुरआन ने इस अदेशे को अहमियत न दी। क्योंकि ख़ालिस हक़ (सत्य) के लिए जो तहरीक उठती है वह आम तर्ज की इंसानी तहरीक नहीं होती। वह एक खुदाई मामला होता है। उसकी पुश्त पर खुद खुदा होता है और खुदा से लड़ना किसी के बस की बात नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَالَكُمْ مِنْ وَلَا يَتَّبِعُهُمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا وَإِنْ اسْتَفْضَرْتُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِعَهْدِهِمْ أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۝

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद किया। और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं और जो लोग ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा रिफ़ाक़त का कोई तअल्लुक नहीं जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएं। और वे तुमसे दीन के मामले में मदद मांगें तो तुम पर उनकी मदद करना वाजिब (जरूरी) है, इल्ला यह कि मदद किसी ऐसी कौम के ख़िलाफ़ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा (संधि) है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और जो लोग मुंकिर हैं वे एक दूसरे के रफ़ीक़ (सहयोगी) हैं। अगर तुम ऐसा न करेंगे तो ज़मीन में फ़ितना फैलेगा और बड़ा फ़साद होगा। (72-73)

आम तौर पर जब एक आदमी दूसरे की मदद करता है तो इसकी वजह यह होती है कि वह आदमी उसके अपने ख़ानदान का है, उससे गिरोही और जमाअती तअल्लुक है। मगर हिजरत के बाद मदीने में जो इस्लामी मआशरा (समाज) कायम हुआ वह ऐसा मआशरा था जिसमें घर वालों ने अपने घर ऐसे लोगों को दे दिए जिनसे तअल्लुक की बुनियाद सिर्फ़ दीन थी। जो लोग अपने वतन को छोड़कर मदीना आए वे भी अल्लाह के लिए और आखिरत तलबी के लिए आए। और जिन्होंने इन अजनबी लोगों को अपने माल और अपनी जायदाद में शरीक किया वे भी सिर्फ़ इसलिए ताकि उनका खुदा उनसे खुश हो और आखिरत में उन्हें जन्नतों में दाख़िल करे।

यह एक ऐसा समाज था जिसमें अहम चीज ख़ानदान और नसब (वंश) नहीं बल्कि ईमान व इस्लाम था। वे एक दूसरे की मदद करते थे मगर दुनियावी फ़ायदे के लिए नहीं बल्कि आखिरत के फ़ायदे के लिए। वे एक दूसरे को देते थे मगर पाने वाले से किसी बदले की उम्मीद में नहीं बल्कि अल्लाह से इनाम की उम्मीद में। वही मुआशिरा हकीकतन इस्लामी मुआशिरा है जहां तअल्लुकात ख़ानदानी रिश्तों और गिरोही अस्बियतों पर कायम न हों बल्कि हक़ की बुनियाद पर कायम हों। जहां लोग एक दूसरे के हामी व नासिर (मददगार) इस बुनियाद पर हों कि वे उनके दीनी भाई हैं न कि इस बुनियाद पर कि दुनियावी मस्तेहतों में से कोई मस्तेहत उनके साथ वाबस्ता है।

एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान से हक़ के मामले में मदद तलब करे तो उस वक़्त उसकी मदद करना बिल्कुल लाज़िम है। अगर मुसलमानों में बाहमी मदद की यह रूह बाकी न रहे तो यह होगा कि शरीर लोग कमजोर मुसलमानों पर दिलेर हो जाएंगे और उनकी ज़िंदगी और उनके ईमान का महफूज रहना सख़्त मुश्किल हो जाएगा। हक़ के मुखालिफ़ीन अपने साथियों की मदद के लिए इतिहाई हस्सास होते हैं फिर हक़ के मानने वाले अपने साथियों की मदद में क्यों न सरगर्म हों। इस में इस्तिस्ना (अपवाद) सिर्फ़ उस वक़्त है जबकि मामला अन्तर्राष्ट्रीय हो और मुसलमानों की मदद करना अन्तर्राष्ट्रीय पेचीदगियां पैदा करने के हममअना समझा जाए।

‘हिजरत’ जन्नत में दाख़िले का दरवाजा है। एक बंदा जब खुदा के नापसंदीदा मक़ाम से निकल कर खुदा के पसंदीदा मक़ाम की तरफ़ जाता है तो दरअसल वह ग़ैर जन्नत को छोड़कर जन्नत में दाख़िल होता है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَانصَرَوْا
أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مِنْ بَعْدِ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَئِكَ مِنْكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ
أَوْلَى بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत (स्थान परिवर्तन) की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने पनाह दी और मदद की, यही लोग सच्चे मोमिन हैं। इनके लिए वस्त्राश है और बेहतरीन रिश्क है। और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वे भी तुम में से हैं। और खून के रिश्तेदार एक दूसरे के ज्यादा हकदार हैं अल्लाह की किताब में। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (74-75)

खुदा पर ईमान लाना खुदा के लिए जिंदगी गुजारने का फैसला करना है। ऐसे लोग अक्सर उन लोगों के दर्मियान अजनबी बन जाते हैं जो खुदा के सिवा किसी और चीज की खातिर जिंदगी गुजार रहे हों। यह अजनबियत कभी इतनी बढ़ती है कि हिजरत की नौबत आ जाती है। माहौल की मुखातिफत के नतीजे में पूरी जिंदगी जद्दोजहद और जांफशानी (संघर्ष) की जिंदगी बनकर रह जाती है। यही लोग हैं जो खुदा के नजदीक सच्चे मोमिन हैं। इसके बाद सच्चा ईमान उन लोगों का है जो इस्लाम की खातिर बजाहिर बर्बाद हो जाने वाले इस काफिले के पुश्तपनाह बनें वे उन्हें जगह दें और उनकी हर मुमकिन मदद के लिए खड़े हो जाएं। जिनकी जिंदगियां नहीं लुटी हैं वे अपना असासा (सम्पत्ति) उन लोगों के हवाले कर दें जिनकी जिंदगियां इस्लाम की राह में लुट गई हैं।

इससे मालूम हुआ कि हकीकी मुस्लिम बनने के लिए आदमी को दो में से कम से कम एक चीज का सुबूत देना है। आदमी या तो अपने आपको इस्लाम के साथ इस तरह वाबस्ता करे कि अगर उसे अपनी बनी बनाई दुनिया उजाड़ देनी पड़े तो इससे भी दरेगा (संकोच) न करे, आराम की जिंदगी को बेआरामी की जिंदगी बना देना पड़े तो इसे भी गवारा कर ले। फिर यह कि इस्लाम की खातिर जब कुछ लोग अपना असासा लुटा दें तो वे लोग जो अभी लुटने से महफूज हैं वे पहले फरीक की मदद के लिए अपना बाजू खेल दें यहां तक कि जरूरत हो तो अपनी कमाई और अपनी जायदाद में भी उन्हें शरीक कर लें। सच्चा ईमान किसी को या तो 'मुहाजिर' (हिजरत करने वाला) बनने की सतह पर मिलता है या 'अंसार' (मदद करने वाला) बनने की सतह पर।

यही दो किस्म के लोग हैं जिनके लिए खुदा के यहां मफिरत और रिश्क करीम है। आखिरत में आने वाली जन्नत इतिहाई सुथरी और नफीस दुनिया है। वह एक कामिल दुनिया है और कामिल दुनिया में बसाए जाने के लायक वही लोग हो सकते हैं जो खुद भी कामिल हों। कोई इंसान अपनी बशरी कमजोरियों की बिना पर ऐसी कामलियत (पूर्णता) का सुबूत

नहीं दे सकता। ताहम अल्लाह का यह वादा है कि जो शख्स मज्हूरा दोनों कसौटी में से किसी एक कसौटी पर पूरा उतरेगा खुदा अपनी क़दरत से उसकी कमियों की तलाफी करके उसे जन्नत में दाखिल कर देगा।

दीन की बुनियाद पर भाई बनने वालों की मदद और हिमायत बेहद अहम है ताहम वह रहमी (खून के रिश्तों के हुक्म और उनके दर्मियान विरासतों की तक्सीम पर असरअंदाज न होगी। अपनी ख्वाहिश के तहत कोई शख्स अपने अहले खानदान के लिए जिन चीजों को जरूरी समझ ले उनकी कोई अहमियत अल्लाह ने नजदीक नहीं है। ताहम अल्लाह ने खुद अपनी किताब में अहले खानदान के लिए हुक्म और विरासत का जो क़ानून मुक्कर कर दिया है वह हर हाल में कायम रहेगा। और कोई दूसरी चीज उसकी अदायगी के लिए उज़ नहीं बन सकती।

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَمَانِيَةٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَتَبَعَتْهَا عَشْرُ رُكُوعًا
بَرَكَاتٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمُ مِنَ الشُّرَكِيِّينَ ۖ فَمَا يَأْتِيهِمْ فِي
الْأَرْضِ أَرْبَعَةٌ أَشْهُرٌ وَعَلِمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ
لَهُ الْفُتُورُ ۖ وَأَذَانُ اللَّهِ مِّنَ السَّمَاءِ إِلَى السَّمَاءِ يَوْمَ الْحُجَّةِ الْأَكْبَرِ
إِنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الشُّرَكِيِّينَ ۚ وَرَسُولُهُ ۚ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ
كَلِيمٍ ۚ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمُ مِنَ الشُّرَكِيِّينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ
يُظَاهَرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مُدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ۝

बरा-त (विरक्ति) का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उन मुश्किनी (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने मुआहिदे (संधि) किए थे। पस तुम लोग मुल्क में चार महीने चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह मुंकिरों को रुसवा करने वाला है। एलान है अल्लाह और रसूल की तरफ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्किनों से बरीउज्जिम्मा (जिम्मेदारी-मुक्त) हैं। अब अगर तुम लोग तौबह करो तो तुम्हारे हक में बेहतर है। और अगर तुम मुंह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज करने वाले नहीं हो। और इंकार करने वालों को सज़ा अजाब की खुशखबरी दे दो। मगर जिन मुश्किनों से तुमने मुआहिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं

की और न तुम्हारे खिलाफ किसी की मदद की तो उनका मुआहिदा (संधि) उनकी मुद्दत तक पूरा करो। बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। (1-4)

मौजूदा दुनिया में इंसान को रहने बसने का जो मौका दिया गया है वह किसी हक की बिना पर नहीं है बल्कि महज आजमाइश के लिए है। खुदा जब तक चाहता है किसी को इस जमीन पर रखता है और जब उसके इल्म के मुताबिक उसकी इस्तेहान की मुद्दत पूरी हो जाती है तो उस पर मौत वारिद करके उसे यहां से उठा लिया जाता है।

यही मामला पैगम्बर के मुखातबीन के साथ दूसरी सूरत में किया जाता है। पैगम्बर जिन लोगों के दर्मियान आता है उन पर वह आखिरी हद तक हक की गवाही देता है। पैगम्बर के दावती काम की तक्मील (पूर्णता) के बाद जो लोग ईमान न लाएं वे खुदा की जमीन पर जिंदा रहने का हक खो देते हैं। वे आजमाइश की गरज से यहां रखे गए थे। इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) ने आजमाइश की तक्मील कर दी। फिर इसके बाद जिंगी का हक किस लिए। यही वजह है कि पैगम्बरों के काम की तक्मील के बाद उनके ऊपर कोई न कोई हलाकत खेज आप्त आती है और उनका इस्तिंसा (विनाश) कर दिया जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुखातबीन के साथ भी यही मामला हुआ। मगर उन पर कोई आसमानी आप्त नहीं आई। उनके ऊपर खुदा की मक्खू सुन्नत का निफाज असबाब के नक्शे में किया गया। अव्वलन कुरआन के बरतर उस्तूब (शैली) और पैगम्बर के आला किरदार के जरिए उन्हें दावत पहुंचाई गई। फिर अहले तौहीद को मक्का के अहले शिर्क पर गालिब करके उनके ऊपर इतमामे हुज्जत कर दिया गया। जब यह सब कुछ हो चुका और इसके बावजूद वे इंकार की रविश पर कायम रहे तो उन्हें मुसलसल खियानत और अहद शिकनी का मुजरिम करार देकर उन्हें अल्टीमेटम दिया गया कि चार माह के अंदर अपनी इस्लाह कर लो, वरना मुसलमानों की तलवार से तुम्हारा ख़ात्मा कर दिया जाएगा।

फिर यह सारा मामला तकवा के उसूल पर किया गया न कि कौमी सियासत के उसूल पर। मुशिरकीन को दलाइल के मैदान में लाजवाब कर दिया गया, उन्हें पेशगी इतिबाह (संचेतना) के जरिए कई महीने तक सोचने का मौका दिया गया। आखिर वक्त तक उनके लिए दरवाजा खुला रखा गया कि जो लोग तौबह कर लें वे खुदा के इनामयाफता बंदों में शामिल हो जाएं। जिन कुछ कबाइल ने मुआहिदा नहीं तोड़ा था उनके मामले को मुआहिदा तोड़ने वालों से अलग रखा गया, वगैरह।

فَإِذَا اسْلَمَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوا هُمْ
وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ ۚ إِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَآتَوْا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ مَا مَنَّكَ عَلَيْهِ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۝

फिर जब हुसमत (गरिमा) वाले महीने गुजर जाएं तो मुशिरकीन को कल्ल करो जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में। फिर अगर वे तौबह कर लें और नमाज कायम करें और जफात अदा करें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और अगर मुशिरकीन में से कोई शख्स तुमसे पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दो ताकि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसके अमान (सुरक्षा) की जगह पहुंचा दो। यह इसलिए कि वे लोग इल्म नहीं रखते। (5-6)

मोहलत के चार महीने गुजरने के बाद यहां जिस जंग का हुक्म दिया गया वह कोई आम जंग न थी यह खुदा के कानून के मुताबिक वह अजाब था जो पैगम्बर के इंकार के नतीजे में उन पर जाहिर किया गया। उन्होंने इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद खुदा के पैगम्बर का इंकार करके अपने को इसका मुस्तहिक बना था कि उनके लिए तलवार या इस्लाम के सिवा कोई और सूरत बाकी न रखी जाए। यह खुदा का एक खुसूसी कानून है जिसका तअल्लुक पैगम्बर के मुखातबीन से है न कि आम लोगों से। ताहम इतमामे हुज्जत के बाद भी इस हुक्म का निफाज अचानक नहीं किया गया बल्कि आखिरी मरहले में फिर उन्हें चार महीने की मोहलत दी गई।

इतिक्रम माफ करना नहीं जानता। इतिक्रमी जब्बे के तहत जो कार्रवाई की जाए उसे सिर्फ उस वक्त तस्कीन मिलती है जबकि वह अपने हरीफ को जलील और बर्बाद हेतु हुए देख ले। मगर अरब के मुशिरकीन के खिलाफ जो कार्रवाई की गई उसका तअल्लुक किसी क्रिम के इतिक्रम से नहीं था बल्कि वह सरासर हकीकतपसंदाना (यथार्थवादी) उसूल पर मबनी था। यही वजह है कि इतने शदीद हुक्म के बावजूद उनके लिए यह गुंजाइश हर वक्त बाकी थी कि वे दीने इस्लाम को इख्तियार करके अपने को इस सजा से बचा लें और इस्लामी विरादरी में इज्जत की जिंगी हासिल कर लें। किसी की तौबह के कबिले कुबूल होने के लिए सिर्फ दो अमली शर्तों का पाया जाना काफी है। नमाज और जफात।

जंग के दौरान दुश्मन का कोई फर्द यह कहे कि मैं इस्लाम को समझना चाहता हूं तो मुसलमानों को हुक्म है कि उसे अमान देकर अपने माहौल में आने का मौका दें और इस्लाम के पैगाम को उसके दिल में उतारने की कोशिश करें। फिर भी अगर वह कुबूल न करे तो अपनी हिफाजत में उसे उसके ठिकाने तक पहुंचा दें। ऐसा नहीं किया जा सकता कि उसने दीन की बात नहीं मानी है तो उसे कल्ल कर दिया जाए। जब कोई शख्स अमान में हो तो अमान के दौरान उस पर हाथ उठाना जाइज नहीं।

जंग के जमाने में दुश्मन को इस क्रिम की रियायत देना इतिहाई नाजुक है। क्योंकि ऐन मुमकिन है कि दुश्मन का कोई जासूस इस रियायत से फायदा उठाकर मुसलमानों के अंदर घुस आए और उनके फौजी राज मालूम करने की कोशिश करे। मगर इस्लाम की नजर में दावत व तब्लीग (आह्वान एवं प्रचार) का मसला इतना ज्यादा अहम है कि इस नाजुक खतरे के बावजूद इसका दरवाजा बंद नहीं किया गया।

एक शख्स अगर बेखबरी और लाइल्मी की बिना पर जुल्म करे तो उसका जुल्म चाहे कितना ही ज्यादा हो मगर उसके साथ हर मुमकिन रियायत की जाएगी उस वक्त तक कि उसकी लाइल्मी और बेखबरी खत्म हो जाए।

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ
عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ٥ كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلَّا وَلَا
ذِمَّةً يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَىٰ قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَسِقُونَ ٦
إِشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ٧ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً ٨ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُعْتَدُونَ ٩ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَخَالَوْاكُمْ
فِي الدِّينِ وَنَفَصَلُ الْأَيَّاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ١٠

इन मुश्रिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के जिम्मे कोई अहद (वचन) कैसे रह सकता है, मगर जिन लोगों से तुमने अहद किया था मस्जिदे हारम के पास, पस जब तक वे तुमसे सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। कैसे अहद रहेगा जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर काबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न करावत (निकट के संबंधों) का लिहाज करें और न अहद का। वे तुम्हें अपने मुंह की बात से राजी करना चाहते हैं मगर उनके दिल इंकार करते हैं। और उनमें अक्सर बदअहद हैं। उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका। बहुत बुरा है जो वे कर रहे हैं। किसी मोमिन के मामले में वे न करावत का लिहाज करते हैं और न अहद का, यही लोग हैं ज्यादाती करने वाले। पस अगर वे तौबह करें और नमाज कायम करें और जकात अदा करें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं। और हम खोलकर बयान करते हैं आयतों को जानने वालों के लिए। (7-11)

मुसलमानों को जब जोर हासिल हो गया तो कुरैश ने उनसे मुआहिदे कर लिए। ताहम वे इन मुआहिदों से खुश न थे। वे समझते थे कि अपने 'दुश्मन' से यह मुआहिदा उन्होंने अपनी बर्बादी की कीमत पर किया है। यही वजह है कि वे हर वक्त इस इतिजार में रहते थे कि जहां मौका मिले मुआहिदे (संधि) की खिलाफत करके मुसलमानों को नुस्सान पहुंचाएं या कम से कम उन्हें बदनाम करें। जहिर है कि जब एक फरीक (पक्ष) की तरफ से इस किस्म की खियानत का मुजाहिरा हो तो दूसरे फरीक के लिए किसी मुआहिदे की पाबंदी जरूरी नहीं रहती।

यह कुरैश का हाल था जिन्हें मुसलमानों के उरूज (उत्थान काल) में अपनी कयादत छिनती हुई नजर आती थी। ताहम कुछ दूसरे अरब कबीले (बनू किनाना, बनू खुजाआ, बनू जमरा) जो इस किस्म की नपिसयाती पेचीदगी में मुक्किला न थे, उन्होंने मुसलमानों से

मुआहिदे किए और अपने मुआहिदे पर कायम रहे। जब चार माह की मोहलत का एलान किया गया तो उनके मुआहिदे की मीयाद पूरी होने में तकरीबन नौ महीने बाकी थे। हुक्म हुआ कि उनसे मुआहिदे को आखिर वक्त तक बांधी रखो, क्योंकि तकवा का तक्काज यही है। मगर इस मुद्दत के खत्म होने के बाद फिर किसी से इस किस्म का मुआहिदा नहीं किया गया और तमाम मुश्रिकीन के सामने सिर्फ दो सूरतें बाकी रखी गईं या इस्लाम लाएं या जंग के लिए तैयार हो जाएं।

समाजी जिहगी की बुनियाद हमेशा दो चीजों पर होती है। रिश्तेदारी या कैल व करार। जिनसे रहमी (खून के) रिश्ते हैं उनके हुक्क का लिहाज आदमी रहमी रिश्तों की बुनियाद पर करता है। और जिनसे कैल व करार हो चुका है उनसे कैल व करार की बिना पर। मगर जब आदमी के ऊपर दुनिया के मफाद और मस्लेहत (हित, स्वार्थ) का गलबा होता है तो वह दोनों बातों को भूल जाता है। वह अपने हकीर (तुच्छ) फायदे के खातिर रहमी हुक्क को भी भूल जाता है और कैल व करार को भी। ऐसे लोग हद से गुजर जाने वाले हैं। वे खुदा की नजर में मुजरिम हैं। दुनिया में अगर वे छूट गए तो आखिरत में वे खुदा की पकड़ से बच न सकेंगे। इल्ला यह कि वे तौबह करें और अपनी सरकशी से बाज आएँ। कोई शख्स माजी में चाहे कितना ही बुरा रहा हो मगर जब वह इस्लाह कुबूल कर ले तो वह इस्लामी बिरादरी का एक मुअज्जज (सम्मानित) रुकन बन जाता है। इसके बाद उसमें और दूसरे मुसलमानों में कोई फर्क ही रहता।

وَإِنْ تَكُونُوا إِبْنَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا إِنَّ يَدَ اللَّهِ
الْقُدْرَةَ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ١١ أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا
إِبْنَاءَهُمْ وَهَبُوا بَاخْرَاجَ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَّوْكُمْ وَأَوَّلَ مَرْثَةٍ أَخْشَوْنَهُمْ فَأَلَّ اللَّهُ
أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ١٢ قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ
وَيُخْرِجُهُمْ وَيَضْرِبُهُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ١٣ وَيَذْهَبْ
غِيظَ قُلُوبِهِمْ ١٤ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ١٥

और अगर अहद (वचन) के बाद ये अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ऐब लगाएं तो कुफ्र के इन सरदारों से लड़ो। बेशक उनकी कसमें कुछ नहीं, ताकि वे बाज आएँ। क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को निकालने की जसारात (दुस्साहस) की और वही हैं जिन्होंने तुमसे जंग में पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे। अल्लाह ज्यादा मुस्तहिक है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो। उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सजा देगा और उन्हें रुसवा करेगा और तुम्हें उन पर गलबा देगा और मुसलमान लोगों के सीने को ठंडा करेगा और उनके दिल की जलन को दूर कर देगा और अल्लाह तौबह नसीब करेगा जिसे चाहेगा और अल्लाह जानने वाला है हिकमत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (12-15)

कुफ्र के सरदारों से मुआद क़ैश हैं जो अपने क़ायदना मक़ाम की वजह से अरब में इस्लाम के ख़िलाफ़ तहरीक की इमामत (नेतृत्व) कर रहे थे। क़ैश के इस किरदार से मालूम होता है कि इस्लाम की तहरीक जब उठी है तो उसका पहला मुख़ालिफ़ कौन गिरोह बनता है। यह वह गिरोह है जिसे बेआमेज (विशुद्ध) हक़ के पैग़ाम में अपनी बड़ई पर ज़द पड़ती हुई नज़र आती है। यही वह सरबरआवुरदह (शीर्ष) तबका है जिसके पास वह ज़ेहन होता है कि वह इस्लामी दावत में शोशे निकाल कर लोगों को उसकी तरफ़ से मुशतबह करे। उसी के पास वे वसाइल होते हैं कि वह इस्लाम के दाअियों की हौसलाशिकनी के लिए उन्हें तरह-तरह की मुश्किलात में डाले। उसी के पास वह जोर होता है कि वह हक़परस्तों को उनके घरों से निकालने की तदबीरें करे। यहां तक कि उसी को ये मौक़े हासिल होते हैं कि इस्लाम के मानने वालों के ख़िलाफ़ बाक़ायदा जंग की आग़ भड़का सके।

‘उनके अहद कुछ नहीं बहुत मअनाख़ेज़ फ़िक्का है। जो लोग दुश्मनी और ज़िद की बुनियाद पर खड़े हुए हों उनके वादे और मुआहिदे बिल्कुल ग़ैर यकीनी होते हैं। उनकी नफ़िसयात में अपने हरीफ़ के ख़िलाफ़ मुस्तक़िल इशतेआल (उत्तेजना) बरपा रहता है। उनके अंदर ठहराव नहीं होता। वे अगर मुआहिदा भी कर लें तो अपने मिजाज के एतबार से उसे देर तक बांधी रखने पर क़दिर नहीं होते। ज़्यादा देर नहीं गुज़ती कि अपने मंमै ज़बात से मग़लूब होकर वे मुआहिदे को तोड़ देते हैं और इस तरह अहले हक़ को यह मौक़ा देते हैं कि अपने ऊपर पहल का इल्जाम लिए बग़ैर वे उनके ख़िलाफ़ मुदाफ़िआना (सुरक्षात्मक) कार्रवाई करें और खुद की मदद से उनका ख़ात्मा करें।

तमाम हिक़मत और दानाई (सूझबूझ) का सिरा अल्लाह का डर है। अल्लाह का डर आदमी के अंदर एतराफ़ का माद़दा पैदा करता है। वह आदमी के अंदर वह शुऊर जगाता है कि वह हकीकतों को उनके असली रूप में देख सके। यही वजह है कि अल्लाह से डरने वाले के लिए खुदाई मंसूबे को समझने में देर नहीं लगती। वह खुदा की मंशा को जान कर पूरे एतमाद के साथ अपने आपको उसमें लगा देता है। वह उस सहीतरीन रास्ते पर चल पड़ता है जिसकी आख़िरी मजिल सिर्फ़ कामयाबी है। अल्लाह का डर आदमी की आंखों को अश्क़ आलूद कर देता है। मगर अल्लाह के लिए भीगी हुई आंख ही वह आंख है जिसके लिए यह मुक़द़दर है कि उसे ठंडक हासिल हो, दुनिया में भी और आख़िरत में भी।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمْ يُنذِرْ لَكُمُ اللَّهُ الْكَافِرِينَ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يُتَخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥٦﴾

क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने ज़िहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ

तुम करते हो। (16)

मौजूदा दुनिया में आदमी जब किसी चीज़ को अपनी ज़िंदगी का मक़सद बनाता है तो उसे हासिल करने में तरह-तरह के मसाइल और तकाजे सामने आते हैं। अगर आदमी को अपना मक़सद अज़ीज है तो वह इन मसाइल को हल करने और इन तकाजों को पूरा करने में अपनी सारी कुव्वत लगा देता है। इसी का नाम ज़िहाद है। यह ज़िहाद इस दुनिया में हर एक को पेश आता है। हर आदमी को ज़िहाद की सतह पर अपनी तलब का सुबूत देना पड़ता है इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह अपनी तलब में कामयाब हो। फ़र्क़ यह है कि ग़ैर मोमिन दुनिया की राह में ज़िहाद करता है और मोमिन आख़िरत की राह में।

यही ज़िहाद यह साबित करता है कि आदमी अपने मक़सद में कितना संजीदा है। एक शख्स जो ईमान का मुद़ई (दावेदार) हो उसके सामने बार-बार मुख़ालिफ़ मौक़े आते हैं जो उसके दावे का इन्तेहान हों। कभी उसका दिल किसी के ख़िलाफ़ बुज़्र व हसद के ज़ब्बात से मुतअस्सिर होने लगता है और उसका ईमान उससे कहता है कि इस किस्म के तमाम ज़ब्बात को अपने अंदर से निकाल दो। कभी उसकी ज़बान पर नापसंदीदा कलिमात आते हैं और ईमान का तक्का यह होता है कि उस वक़्त अपनी ज़बान को पकड़ लिया जाए। कभी मामलात के दौरान किसी को ऐसा हक़ देना पड़ता है जो कल्ब को बिल्कुल नागवार हो मगर ईमान यह कह रहा होता है कि हक्द्वार को इंसफ़ के मुताबिक़ उसका पूरा हक़ पहुंचाया जाए। इसी तरह इस्लाम की दावत कभी ऐसे मोड़ पर पहुंच जाती है कि ईमान यह कहता है कि इसको कामयाब बनाने के लिए अपनी जान व माल कुर्बान कर दो। ऐसे तमाम मौक़ों पर गु़ेज़ (संकोच) या फ़रार से बचना और हर कीमत पर ईमान व इस्लाम के तक्काज़े पूरे करते रहना, इसी का नाम ज़िहाद है।

जब कोई शख्स इस्लाम के लिए मुजाहिद बन जाए तो उसका तमामतर नफ़िसयाती (मनोवैज्ञानिक) तअल्लुक अल्लाह और रसूल और अहले ईमान से हो जाता है। वह इनके सिवा किसी को अपना वलीजा नहीं बनाता। वलज के मअना हैं दाख़िल होना। वलीजा किसी वादी के उस ग़ार को कहते हैं जहां रास्ता चलने वाले बारिश वग़ैरह से पनाह लें। इसी से वलीजा है, यानी वली दोस्त।

मौजूदा दुनिया में जब भी आदमी किसी वसीअतर (बड़े) मक़सद को अपनाता है तो उसे लाजिमन ऐसा करना पड़ता है कि वह अपने मक़सद की मर्क़ज़ियत से वाबस्ता हो। वह अपने कायद का मुक़म्मल वफ़ादार बने। वह इस राह के साथियों से पूरी तरह जुड़ जाए। मक़सदियत के एहसास के साथ ये चीज़ें लाजिम मल्ज़ूम (परस्पर फूक) हैं। इनके बग़ैर बामक़सद ज़िंदगी का दावा बिल्कुल झूठ है। इसी तरह आदमी जब दीन को संजीदगी के साथ अपनी ज़िंदगी में दाख़िल करेगा तो लाजिमी तौर पर ऐसा होगा कि खुदा और रसूल और अहले ईमान उसका ‘वलीजा’ बन जाएंगे। वह हर एतबार से उनके साथ जुड़ जाएगा। संजीदगी के साथ दीन इख़्तियार करने वाले के लिए अल्लाह और रसूल और अहले ईमान, अमली तौर पर, ऐसी वहदत (एकत्व) के अज्जा हैं जिनके दर्मियान तक्सीम मुमकिन नहीं।

इस मामले की नजाकत बहुत बढ़ जाती है जब यह सामने रखा जाए कि इसकी जांच करने वाला वह है जिसे खुले और छुपे का इल्म है, वह हर आदमी से उसकी हकीकत के एतबार

से मामला करेगा न कि उसके जाहिरी खैये के एतबार से।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ
بَالْكَفْرِ أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ إِنَّا يَعْمُرُ
مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ
وَلَمْ يَحْشَسْ إِلَّا اللَّهَ ۚ فَعَسَىٰ أُولَئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ اجْعَلْتُمْ
سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوْنَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ أَكْثَرُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ
رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ قُنًى وَرِضْوَانٍ وَجَدَّتْ لَهُمْ فِيهَا نِعِيمٌ مُّقِيمٌ ۝ خَلِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

मुशिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें हालांकि वे खुद अपने ऊपर कुफ्र के गवाह हैं। उन लोगों के आमाल अकारत गए और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं। अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज कायम करे और जकात अदा करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने वालों में से बनें। क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और मस्जिदे हुराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख्स के जो अल्लाह और आखिरत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नजदीक ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने जान व माल से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहां बड़ा है और यही लोग कामयाब हैं। उनका रब उन्हें खुशखबरी देता है अपनी रहमत और खुशनूदी (प्रसन्नता) की और ऐसे बागों की जिनमें उनके लिए दाइमी (हमेशा रहने वालों) नेमत होगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (17-22)

नुक़ुले क़ुरआन के वक्त अरब में यह सूरतेहाल थी कि मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिर्द जमा थे और मुशिरकीन बैतुल्लाह के गिर्द। उस वक्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अजमतों की वह तारीख़ वाबस्ता नहीं हुई थी जिसे आज हम जानते हैं। लोगों को आप आम इंसानों की तरह एक इंसान दिखाई देते

थे। दूसरी तरफ मस्जिदे हुराम हज्रों वर्षों की तारीख़ के नतीजे में अजमत व तकद्दुस (पावनता) की अलामत बनी हुई थी। मुशिरकीन की नजर में अपनी तस्वीर तो यह थी कि वे एक मुकद्दसतरिन मर्कज के ख़ादिम और आबादकार हैं। दूसरी तरफ जब वे मुसलमानों को देखते तो उस वक्त के हालात में उन्हें ऐसा मालूम होता जैसे कुछ लोग बस एक दीवाने के पीछे लगे हुए हैं।

मगर मुशिरकीन का यह ख़्याल सरासर बातिल था। वह जवाहिर का तकाबुल (तुलना) हक्काइक से करने की ग़लती कर रहे थे। मस्जिदे हुराम के जायरीन को पानी पिलाना, उसके अंदर रोशनी और सफ़ाई का इतिजाम। काबा पर गिलाफ चढ़ देना। मस्जिद के फर्श और दीवार की मरम्मत, ये सब जाहिरी नुमाइश की चीजें हैं। ये भला उन आमाल के बराबर हो सकती हैं जबकि आदमी अल्लाह को पा लेता है और आखिरत की फ़िक्र में जीने लगता है। वह अपनी ज़िंदगी और अपने असासे को खुदा के हवाले कर देता है। वह दूसरी तमाम बड़ाइयों का इंकार करके एक खुदा को अपना बड़ा बना लेता है। सच्चाई को पाने वाले दरअसल वे लोग हैं जिन्होंने उसे मआना (निहिताथ) की सतह पर पाया हो न कि जवाहिर की सतह पर। जो कुर्वानी की हद तक सच्चाई से तअल्लुक रखने वाले हों न कि महज सतही और नुमाइशी कारवाइयों की हद तक।

अल्लाह से तअल्लुक की दो किस्में हैं। एक तअल्लुक वह है जो रस्मी अक़ीदे की हद तक होता है, जिसमें आदमी कुछ दिखावे के आमाल तो करता है मगर अपने को और अपने माल को खुदा की राह में नहीं देता। दूसरा तअल्लुक वह है जबकि आदमी अपने ईमान में इतना संजीदा हो कि इस राह में उसे जो कुछ छोड़ना पड़े वह उसे छोड़ दे और जो चीज देनी पड़े उसे देने के लिए तैयार हो जाए। यही दूसरी किस्म के बंदे हैं जो मरने के बाद खुदा के यहां आलातरीन इनामात से नवाजे जाएंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا
الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَوَلَّيْكُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ قُلْ
إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ
اِقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكَنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ
إِلَيْكُمْ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

ऐ ईमान वाले अपने बापों और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़बले में कुफ्र को अजीज रखें। और तुम में से जो उन्हें अपना दोस्त बनाएंगे तो ऐसे ही लोग जालिम हैं। कहो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई

और तुम्हारी बीवियां और तुम्हारा खानदान और वे माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारात जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा महबूब हैं तो इतिजार करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफरमान लोगों को रास्ता नहीं देता। (23-24)

लोगों के लिए अपना खानदान, अपनी जायदाद, अपने मआशी मफादात सबसे कीमती होते हैं। इन्हीं चीजों को वे सबसे ज्यादा अहम समझते हैं। हर दूसरी चीज के मुक़ाबले में वे उन्हें तरजीह देते हैं और अपना सब कुछ उनके ऊपर निसार कर देते हैं। इस किस्म की जिंदगी दुनियादाराना जिंदगी है। ऐसा आदमी जो कुछ पाता है बस इसी दुनिया में पाता है। मौत के बाद वाली अबदी दुनिया में उसके लिए कुछ नहीं। इसके बरअक्स दूसरी जिंदगी वह है जबकि आदमी अल्लाह और रसूल को और अल्लाह की राह में जद्दोजहद को सबसे ज्यादा अहमियत दे और इसके खातिर दूसरी हर चीज छोड़ने के लिए तैयार रहे। यही दूसरी जिंदगी खुदापरस्ताना जिंदगी है और ऐसे ही लोगों के लिए आखिरत में अबदी जन्मतों के दरवाजे खोले जाएंगे।

एक जिंदगी वह है जो दुनियावी तअल्लुक़ात और दुनियावी मफादात की बुनियाद पर कायम होती है। दूसरी जिंदगी वह है जो ईमान की बुनियाद पर कायम होती है। दोनों में से जिस चीज को भी आदमी अपनी जिंदगी की बुनियाद बनाए, वह हमेशा इस कीमत पर होता है कि वह उसके खातिर दूसरी चीजों को छोड़ दे। वह कुछ लोगों से तअल्लुक़ात कायम करे और कुछ दूसरे लोगों से बेतअल्लुक़ हो जाए। वह कुछ चीजों की बका और तरक्की में अपनी सारी तवज्जोह लगा दे और कुछ दूसरी चीजों की बका और तरक्की के मामले में बेपरवाह बना रहे। कुछ नुक्सानात उसे किसी कीमत पर गवारा न हों, वह जान पर खेलकर और अपना बेहतरीन सरमाया खर्च करके उन्हें बचाने की कोशिश करे और कुछ दूसरे नुक्सानात को वह अपनी आंखों से देखे मगर उनके बारे में उसके अंदर कोई तड़प पैदा न हो। दुनिया हमेशा उन लोगों को मिलती है जो दुनिया की खातिर अपना सब कुछ लगा दें। इसी तरह आखिरत सिर्फ उन्हीं लोगों के हिस्से में आएगी जो आखिरत के खातिर दूसरी चीजों को कुर्बान कर दें।

तरजीह (एक को छोड़कर दूसरे को इस्तिथार करने का मामला) इतिहाई संगीन है। यहां तक कि वही आदमी के कुफ़र व ईमान का फैसला करता है। खुदा की दुनिया में जिस तरह खुले मुँक़िरों के लिए कामयाबी मुक़द्दर नहीं है इसी तरह उन लोगों के लिए भी यहां कामयाबी का कोई इम्कान नहीं जो ईमान का दावा करें और जब नाजुक मौका आए तो वे आखिरत पसंदाना रविश के मुकाबले में दुनियादाराना रविश को तरजीह दें। ऐसे ईमान के दावेदार अगर अपने बारे में खुशफहमी में मुब्तिला हों तो उन्हें उस वक़्त मालूम हो जाएगा जब अल्लाह अपना फैसला ज़ाहिर कर देगा।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۖ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمُ

مُذَبِّرِينَ ۖ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَذَلِكَ جِزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ۖ

वेशक अल्लाह ने बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें नाज में मुब्तिला कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आई। और जमीन अपनी वुस्तत के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेर कर भागे। इसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत (शांति) उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने मुँक़िरों को सजा दी और यही मुँक़िरों का बदला है। फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहे तौबह नसीब कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ऐ ईमान वाले, मुशिरकीन बिल्कुल नापाक हैं। पस वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आएँ और अगर तुम्हें मुफ़्तसी का अदेशा हो तो अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने फ़ज़ल से तुम्हें धनी कर देगा। अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (25-28)

मुसलमानों का ग़लबा मुँक़िरों को उनके कुफ़र की सजा का अगला नतीजा है। मगर मुँक़िरों का कुफ़र मुसलमानों के इस्लाम की निखत से मुतहक्क़ होता है। अगर मुसलमान अपनी इस्लामियत खो दें तो मुँक़िरों का कुफ़र किस चीज के मुकाबले में साबित होगा और किस बुनियाद पर खुदा वह फ़र्क का मामला करेगा जो एक के लिए इनाम बने और दूसरे के लिए सजा।

रमजान 8 हिजरी में मुसलमानों ने क़ुरैश को कामयाब तौर पर मग़लूब करके मक्का को फ़तह किया। मगर अगले ही महीने शव्वाल 8 हिजरी में उन्हें हवाज़िन व सक्कीफ़ के मुशिरक कबीलों के मुक़ाबले में शिकस्त हुई, जबकि फ़तह मक्का के वक़्त मुसलमानों की तादाद दस हज़र थी और हवाज़िन व सक्कीफ़ से मुक़ाबले के वक़्त बारह हज़र। इसकी वजह यह थी कि क़ुरैश से मुक़ाबले के वक़्त मुसलमान सिर्फ अल्लाह के भरोसे पर निकले थे। मगर हवाज़िन व सक्कीफ़ से मुक़ाबले पर निकलते हुए उन्हें यह नाज हो गया कि अब तो हम फ़तह मक्का हैं। हमारे साथ बारह हज़ार आदमियों का लश्कर है, आज हमें कौन शिकस्त दे सकता है। जब वे खुदा के एतमाद पर थे तो उन्हें कामयाबी हुई, जब उन्हें अपनी जात पर एतमाद हो गया तो उन्हें शिकस्त का सामना करना पड़ा।

अपनी जात पर भरोसा आदमी के अंदर घमंड का जज्बा उभारता है जिसके नतीजे में ख़ारजी (वाह्य) हकीकतों से बेपरवाई पैदा होती है। वह नज़्म की पाबंदी में कोताह हो जाता

है। वह बेजा खुदएतमादी की वजह से रैर हकीकतपसंदाना इक्दाम करने लगता है जिसका नतीजा इस आलमे असबाब में लाजिमी शिकस्त है। इसके बरअक्स खुदा पर भरोसा सबसे बड़ी ताकत पर भरोसा है। इससे आदमी के अंदर तवाजोअ (विनम्रता) का जज्बा उभरता है। वह इतिहाई हकीकतपसंद बन जाता है। और हकीकतपसंदी बिलाशुबह तमाम कामयाबियों की जड़ है।

इब्तिदा में जब यह हुक्म आया कि हरम में मुशिरकों का दाखिला बंद कर दो तो मुसलमानों को तशवीश हुई क्योंकि बगैर खेती का मुल्क होने की वजह से अरब की इक्तिसादयात (अर्थव्यवस्था) का इंहिसार तिजारत पर था और तिजारत की बुनियाद हमेशा साझे तअल्लुकात पर होती है। मुसलमानों ने सोचा कि जब हरम में मुशिरकीन का आना बंद होगा तो उनके साथ तिजारती रिश्ते भी टूट जाएंगे। मगर उनकी नजर इस इम्कान पर नहीं गई कि आज के मुशिरक कल के मुसलमान हो सकते हैं। चुनांचे यही हुआ। अरबों के उमूमी तौर पर इस्लाम कुबूल कर लेने की वजह से तिजारती सरगर्मियां दुबारा नई सूरत से बहाल हो गई। साथ ही इस इब्तिदाई कुर्बानी का नतीजा यह हुआ कि बिलआखिर इस्लाम एक अन्तर्राष्ट्रीय दीन बन गया। जो आर्थिक दरवाजे मकामी सतह पर बंद होते नजर आते थे वे आलमी सतह पर खुल गए।

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى
يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ۚ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ ۖ
وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهَوْنَ
قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ أَتَى يُفْكَوْنَ ۚ اتَّخَذُوا
أَحْبَابَهُمْ وَرُءُوبًا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَمَا
أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَهًا وَاحِدًا ۚ لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

उन अहले किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न आखिरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते और न दीने हक को अपना दीन बनाते यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज्या (जान माल की हिफाजत) दें और छोटे बनकर रहें। और यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा (ईसाइयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उनके अपने मुंह की बातें हैं। वे उन लोगों की बात की नकल कर रहे हैं जिन्होंने इनसे पहले कुफ्र किया। अल्लाह इन्हें हलाक करे, वे किधर बहके जा रहे हैं। उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा (विद्वानों) और मशाइख (धर्म गुरुओं) को रब बना डाला और मसीह इब्ने मरयम को भी। हालांकि उन्हें सिर्फ यह हुक्म था कि वे एक माबूद की इबादत करें। उसके सिवा

कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह पाक है इससे जो वे शरीक करते हैं। (29-31)

ईमान जिंदा हो तो आदमी हर वाक्ये को खुदा की तरफ मंसूब करता है। वह किसी चीज को सिर्फ उस वक्त समझ पाता है जबकि खुदा की निस्वत से उसके बारे में राए कायम कर ले। वह फूल की खुशबू को उस वक्त समझता है जबकि उसमें उसे खुदा की महक मिल जाए। वह सूरज को उस वक्त दरयाप्त करता है जबकि वह उसके अता करने वाले को मालूम कर ले। हर बड़ाई उसे खुदा का अतिय्या (देन) नजर आती है। हर खूबी उसे खुदा का एहसान याद दिलाती है। इसके बरअक्स अगर खुदा से आदमी का तअल्लुक घटकर सिर्फ मोहूम (काल्पनिक) अक्कीदे के दर्जे पर आ जाए तो खुदा उसके जिंदा शुऊर के लिए एक लामालूम (अज्ञात) चीज बन जाएगा। वह दुनिया की नजर आने वाली चीजों पर खुदा को क्यास करने लगेगा।

दूसरी किस्म के लोग तबई (भौतिक) तौर पर खलिक (रचयिता) को उन दुनियावी चीजों की नजर से देखने लगते हैं जिन्हें वे जानते हैं। वे खलिक को मख्बूक (रचना) की सतह पर उतार लाते हैं। यही हाल यहूद व नसारा का अपने बिगाड़ के जमाने में हुआ। अब खुदा उनके यहां काल्पनिक आस्था के खाने में चला गया। चुनांचे वे अपने नजर आने वाले अकाबिर (बड़ी) और बुजुर्गों को वह दर्जा देने लगे जो दर्जा खुदाए आलिमुल्लैब को देना चाहिए। उन्होंने देखा कि यूनानी और रूमी कौमों सूरज को खुदा बनाकर उसके लिए बेटा फर्ज किए हुए हैं तो उन्हें भी अपने बुजुर्गों के लिए यही सबसे उंचा लफ्ज नजर आया। उन्होंने अपनी आसमानी किताबों में अबू (पिता) और इब्न (बेटा) के अल्फाज की खुदसाख्ता तशरीह करके खुदा को बाप और अपने पैगम्बर को उसका बेटा कहना शुरू कर दिया। हालांकि खुदा सिर्फ एक ही है, वह हर मुशाबिहत से पाक है, वही तंहा इसका मुस्तहिक है कि उसे बड़ा बनाया जाए और उसकी इबादत की जाए।

रसूलुल्लाह के खिलाफ जातिरहित करने वाले मुशिरकीन (बनू इस्माईल) भी थे और अहले किताब (बनू इस्राईल) भी। मगर दोनों के साथ अलग-अलग मामला किया गया। मुशिरकीन के साथ जंग या इस्लाम का उसूल इख्तियार किया गया। मगर अहले किताब के लिए हुक्म हुआ कि अगर वे जिज्या (सियासी इताअत) पर राजी हो जाएं तो उन्हें छोड़ दो। इस फर्क की वजह यह है कि मुशिरकीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्लन मुखातब थे और अहले किताब तबअन (परिवेशगत)। अल्लाह की सुन्नत यह है कि जिस कौम पर पैगम्बर के जरिए बराहिरास्त दावत पहुंचाई जाती है उससे इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बाद जिंदगी का हक छीन लिया जाता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी रियासत में एक शख्स के बागी साबित होने के बाद उससे जिंदगी का हक छीन लिया जाता है। मगर जहां तक दूसरे गिरोहों का तअल्लुक है उनके साथ वही सियासी मामला किया जाता है जो आम अन्तर्राष्ट्रीय उसूल के मुताबिक दुरुस्त हो।

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا سُورَةَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورُهُ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۚ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा किए बगैर मानने वाला नहीं, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। उसी ने अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सारे दीन पर ग़ालिब कर दे चाहे यह मुशिरकों को कितना ही नागवार हो। (32-33)

इन आयतों में खुदा ने अपने उस मुस्तकिल फैसला का एलान किया है कि वह अपने दीन को कियामत तक पूरी तरह महफूज रखेगा, माजी (अतीत) की तरह अब ऐसा नहीं होने दिया जाएगा कि लोग अपनी मिलावटों से खुदा के दीन को गुम कर दें या कोई ताकत उसे सफ़हा-ए-हस्ती से मिटा देने में कामयाब हो।

अल्लाह तआला ने जब इंसान को जमीन पर बसाया तो इसी के साथ उसके लिए अपना हिदायतनामा भी इंसान के हवाले कर दिया। बाद के दौर में जब लोग ग़फ़लत और दुनियापरस्ती में मुक्तिला हुए तो उन्होंने खुदा के अल्फाज को बदल कर उसे अपनी ख्वाहिशों के मुताबिक बना लिया। मसलन अपने बुजुर्गों को खुदा के यहां सिफ़रिशी मान कर यह अक्कीदा कायम कर लिया कि हम जो कुछ भी करें हमारे बुजुर्ग अपनी सिफ़रिश के ज़र पर हमें खुदा के यहां नज़ात दिला देंगे या यह कि जन्नत और जहन्नम सब इसी दुनिया में हैं। इसके आगे और कुछ नहीं। लोग जो कुछ खुद चाहते थे उसे उन्होंने खुदा की तरफ मंसूब करके खुदा की किताब में लिख दिया। इसके बाद खुदा ने दूसरा नबी भेजा जिसने खुदा के दीन को इंसानी मिलावटों से अलग करके दुबारा उसे सही शक़ल में पेश किया। मगर बाद के ज़माने में लोगों ने उसे भी बदल डाला। यही बार-बार होता रहा। बिलआख़िर अल्लाह तआला ने फैसला किया कि एक आख़िरी रसूल भेजे और उसके ज़रिए ऐसे हालात पैदा करे कि खुदा का दीन हमेशा के लिए अपनी असली हालत में महफूज हो जाए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए तरीख़े नुबुव्वत का यही अजीम कारनामा अंजाम पाया।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त लोगों ने खुदसाख़्ता तौर पर बहुत से दीन बना रखे थे। अरब के मुशिरकीन का एक दीन था जिसे वे दीने इब्राहीम कहते थे। यहूद का एक दीन था जिसे वे दीने मूसा कहते थे। नसारा का एक दीन था जिसे वे दीने मसीह कहते थे। ये सब खुदा के दीन के खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) एडीशन थे जिन्हें उन्होंने ग़लत तौर पर खुदा की तरफ से आया हुआ दीन करार दे रखा था। खुदा ने इन सब दीनों को रद्द कर दिया और मुहम्मद (सल्ल०) के दीन को अपने दीन के वाहिद (एकमात्र) मुस्तनद एडीशन के तौर पर कियामत तक के लिए कायम कर दिया।

आज इस्लाम वाहिद दीन है जिसके मूल (मूल रूप) में कोई तब्दीली मुमकिन न हो सकी जबकि दूसरे तमाम अदयान (धर्म) इंसानी तहरीफ़ात (संशोधनों) का शिकार होकर अपनी असली तस्वीर गुम कर चुके हैं। इस्लाम वाहिद दीन है जो तारीख़ी तौर पर मोतबर दीन है जबकि दूसरे तमाम अदयान (धर्म) अपने हक में तरीख़ी एतबारियत खो चुके हैं। इस्लाम वाहिद दीन है जिसकी तमाम तालीमात एक जिदा जवान में पाई जाती हैं जबकि दूसरे तमाम अदयान इब्तिदाई किताबें ऐसी जवानों में हैं जो अब मुर्दा हो चुकी हैं। इस्लाम की सूरत में खुदा ने मजहब की जो रोशनी जलाई वह कभी हल्की नहीं हुई और न बुझाई जा सकी। वह

कामिल तौर पर दुनिया के सामने मौजूद है और हर दूसरे दीन के ऊपर अपनी उसूलों बरतरी को मुसलसल कायम रखे हुए है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَخْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَكُونُونَ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْنُزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۚ يَوْمَ يُخْسَىٰ عَلَيْهِمْ فِي أَرْجَاهِهِمْ فَيَتَلَوَّىٰ بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ ۖ هَذَا مَا كُنْتُمْ تَكْنُزُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, अहले किताब के अक्सर उलमा (विद्वान) व मशाइख़ (धर्म गुरु) लोगों के माल बातिल (अवैध) तरीकों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो। उस दिन इस माल पर दोख़ की आग दहकाई जाएगी। फिर उससे उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दागी जाएंगी। यही है वह जिसे तुमने अपने वास्ते जमा किया था। पस अब चखो जो तुम जमा करते रहे। (34-35)

दूसरे का माल लेने का एक तरीका यह है कि उसे हक के मुताबिक लिया जाए। यानी आदमी दूसरे की कोई वाकई ख़िदमत करे या उसे कोई हक्की नफ़ा पहुंचाए और इसके बदले में उसका माल हासिल करे। यह बिल्कुल जाइज है। बातिल तरीके से दूसरे का माल लेना यह है कि दूसरे को धोखे में डाल कर उसका माल हासिल किया जाए। यह दूसरा तरीका नाजाइज है और खुदा के ग़ज़ब को भड़काने वाला है।

बातिल तरीके से दूसरे का माल खाना वही चीज़ है जिसे मौजूदा ज़माने में इस्तग़लाल (Exploitation) कहा जाता है। यहूद के अकाबिर बहुत बड़े पैमाने पर अपने अवाम का मजहबी इस्तग़लाल (शोषण) कर रहे थे। वे अवाम में ऐसी झूठी कहानियां फैलाए हुए थे जिसके नतीजे में लोग बुजुर्गों से ग़ैर मामूली उम्मीदें वाबस्ता करें और फिर उन्हें बुजुर्ग समझ कर उनकी बरकत लेने के लिए आए और उन्हें हदिये और नजराने पेश करें। वे खुदा के दीन की ख़िदमत के नाम पर लोगों से रकमें वसूल करते थे हालांकि जो दीन वे लोगों के दर्मियान तक़सीम कर रहे थे वह उनका अपना बनाया हुआ दीन था न कि हक्कीकतन खुदा का उतारा दीन। वे मिल्लते यहूद के इहया (उत्थान) के नाम पर बड़े-बड़े चन्दे वसूल करते थे हालांकि मिल्लत के इहया के नाम पर वे जो कुछ कर रहे थे वह सिर्फ यह था कि लोगों को खुशख़्यालियों में उलझा कर उन्हें अपनी कयादत (नेतृत्व) के लिए इस्तेमाल करते रहें। वे तावीज गंडे में रहस्य भरे औसाफ़ बता कर उन्हें लोगों के हाथों फरोख़्त करते थे। हालांकि उनका हाल यह था कि खुद अपने नाजुक मामलात में वे कभी इन तावीज गंडों पर भरोसा नहीं करते थे।

आदमी के पास जो माल आता है उसके दो ही जायज मसरफ (उपयोग) हैं। अपनी वाकई जरूरतों में खर्च करना, और जो कुछ वाकई जरूरत से जायद हो उसे खुदा के रास्ते में दे देना। इसके अलावा जो तरीके हैं वे सब आदमी के लिए अजाब बनने वाले हैं। चाहे वह अपने माल को फुजूलखर्चियों में उड़ता हो या उसे जमा करके रख रहा हो।

जो लोग यहूद की तरह खुदसाख्ता मजहब की बुनियाद पर किसी गिरोह के ऊपर अपनी कयादत कायम किए हुए हों और खुदा के दिन के नाम पर लोगों का शोषण कर रहे हों वे किसी ऐसी दावत को सख्त नापसंद करते हैं जो खुदा के सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दिन को जिंदा करना चाहती हो। ऐसे दिन में उन्हें अपनी मजहबी हैसियत बेएतबार होती नजर आती है। उन्हें दिखाई देता है कि अगर उसे अवाम में फरोज़ा हासिल हुआ तो उनकी मजहबी तिजारत बिल्कुल बेनकाब होकर लोगों के सामने आ जाएगी। वे ऐसी तहरीक के उठते ही उसे सूंघ लेते हैं और उसके मुखालिफ बनकर खड़े हो जाते हैं।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَغْلِبُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضِلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحْلُونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِيُؤْاطُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زَيْنَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

महीनों की गिनती अल्लाह के नजदीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जिस दिन से उसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, इनमें से चार हुरमत (गरिमा) वाले हैं। यही है सीधा दिन। पस उनमें तुम अपने ऊपर जुल्म न करो। और मुश्रिकों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्तकियों (ईश परायण लोगों) के साथ है। महीनों का हटा देना कुफ्र में एक इजाफा है। इससे कुफ्र करने वाले गुमराही में पड़ते हैं। वे किसी साल हुरमत महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हुरमत कर देते हैं ताकि खुदा के हुरमत किए हुए की गिनती पूरी करके उसके हुरमत किए हुए को हलाल कर लें। उनके बुरे आमाल उनके लिए खुशनुमा बना दिए गए हैं। और अल्लाह इंकार करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता। (36-37)

दीनी अहकाम पर हर शख्स अलग-अलग भी अमल कर सकता है। मगर अल्लाह तआला को यह मल्लूब है कि तमाम अहले ईमान एक साथ उन पर अमल करें ताकि उनमें इज्तिमाइयत (सामूहिकता) पैदा हो। इसी इज्तिमाइयत के मकसद को हासिल करने की खातिर

इबादात की अदायगी के लिए मुत्तअख्यन औकात और तारीखें मुकरर की गई हैं। ये तारीखें अगर शमसी केलेन्डर के एतबार से रखी जातीं तो इनके जमाने में एकसानियत (समरूपता) आ जाती। मसलन रोजा हमेशा एक मौसम में आता और हज हमेशा एक मौसम में। मगर एकसानियत आदमी के अंदर जुमूद (जड़ता) पैदा करती है और तब्दीली से नई कुव्वते अमल बेदार होती है। इस बिना पर दीनी उमूर के इज्तिमाई निजाम के लिए चांद का कुदरती केलेन्डर इख्तियार किया गया।

इसी उसूल की वजह से हज की तारीखें मुखल्लिफ मौसमों में आती हैं, कभी सर्दियों में और कभी गर्मियों में। कदीम जमाने में जबकि हज का इज्तिमा जबरदस्त तिजारती अहमियत रखता था, मुखल्लिफ मौसमों में हज का आना तिजारती एतबार से नुकसानदेह मालूम हुआ। अहले अरब को दीनी मस्लेहतों के मुक़ाबले में दुनियावी मस्लेहतें ज्यादा अहम नजर आईं। उन्होंने चाहा कि ऐसी सूरत इख्तियार करें कि हज की तारीख हमेशा एक ही मुवाफिक मौसम में पड़े। इस मौके पर यहूद व नसारा का कबीसा का हिसाब उनके इल्म में आया। अपनी ख्वाहिशों के ऐन मुताबिक होने की वजह से वह उन्हें पसंद आ गया और उन्होंने उसे अपने यहां राज़ कर लिया। यानी महीनों को हटाकर एक की जगह दूसरे को रख देना। मसलन मुहर्रम को सफर की जगह कर देना और सफर को मुहर्रम की जगह।

‘नसी’ के इस तरीके से अहले अरब को दो फायदे हुए। एक यह कि हज के मौसम को तिजारती तक़जे के मुताबिक कर लेना। दूसरे यह कि हुरमत महीनों (मुहर्रम, रजब, जैकअदा, जिलहिज्ज) में किसी के खिलाफ लड़ाई छेड़ना हो तो हुरमत महीने की जगह गैर हुरमत महीना रखकर लड़ाई को जाइज कर लेना। अहले अरब के सामने हजरत इब्राहीम का तरीका भी था। मगर उनके ज़हन पर चूँकि तिजारती मक़सिद और कबाइली तक़जों का ग़लबा था। इसलिए उन्हें ‘नसी’ का तरीका ज्यादा अच्छा मालूम हुआ और उन्होंने अपने मामलात के लिए उसे इख्तियार कर लिया।

‘तुम भी मिलकर लड़ो जिस तरह वे मिलकर लड़ते हैं’ इसका मतलब यह है कि मुंकिर लोग खुदा से बेख़ौफ़ी पर मुत्तहिद हो जाते हैं, तुम खुदा से ख़ौफ (तक़वा) पर मुत्तहिद हो जाओ। वे मंफ़ी (नकारात्मक) मक़सिद के लिए बाहम जुड़ जाते हैं तुम मुसबत (सकारात्मक) मक़सिद के लिए आपस में जुड़ जाओ। वे दुनिया के खातिर एक हो जाते हैं तुम आख़िरत की खातिर एक हो जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفُؤُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ إِثْنَا قُلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۖ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۝ إِلَّا تَنْفَرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِلَّا تَنْصَرُّوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ

يَجْنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٤٠﴾

ऐ ईमान वालो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम जमीन से लगे जाते हो। क्या तुम आखिरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी पर राजी हो गए। आखिरत के मुकाबले में दुनिया की जिंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है। अगर तुम न निकलोगे तो खुदा तुम्हें दर्दनाक सजा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा और तुम खुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और खुदा हर चीज पर कादिर है। अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह खुद उसकी मदद कर चुका है जबकि मुंकिरों ने उसे निकाल दिया था, वह सिर्फ दो में का दूसरा था। जब वे दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुम्हें नजर न आते थे और अल्लाह ने मुंकिरों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊंची है और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (38-40)

ये आयतें गजवा तबूक (9 हिजरी) के जेल (फ़संग) में उतरीं। इस मौके पर मदीने के मुनाफ़िक्कीन की तरफ से जो अमल ज़हिर हुआ उससे अंदाज़ होता है कि कमज़ोर इमान वाले लोग जब किसी इस्लामी समाज में दाख़िल हो जाते हैं तो नाजुक मौके पर उनका किरदार क्या होता है।

अस्त यह है कि इस्लाम से तअल्लुक के दो दर्जे हैं। एक यह कि उसी से आदमी की तमाम वफ़ादारियां वाबस्ता हो जाएं। वह आदमी के लिए जिंदगी व मौत का मसला बन जाए। दूसरे यह कि आदमी की हकीकी दिलचस्पियां तो कहीं और अटकी हुई हों और ऊपरी तौर पर वह इस्लाम का इकरार कर ले। पहली किस्म के लोग सच्चे मोमिन हैं और दूसरी किस्म के लोग वे हैं जिन्हें शरीअत की इस्तिलाह में मुनाफ़िक् कहा गया है। मोमिन का हाल यह होता है कि आम हालात में भी वह इस्लाम को पकड़े हुए होता है और कुर्बानी के लम्हात में भी वह पूरी तरह उस पर कायम रहता है। इसके बरअक्स मुनाफ़िक् का हाल यह होता है कि वह बेज़र (अहानिकारक) इस्लाम या नुमाइशी दीनदारी में तो बहुत आगे दिखाई देता है। मगर जब कुर्बानी की सतह पर इस्लाम के तकाज़ों को इख़्तियार करना हो तो वह पीछे हट जाता है।

इस फ़र्क की वजह यह है कि मोमिन के सामने अस्लान आख़िरत होती है और मुनाफ़िक् के सामने अस्लान दुनिया। मोमिन आख़िरत की बेपायां (असीम) नेमतों के मुकाबले में दुनिया की कोई कीमत नहीं समझता, इसलिए जब भी दुनिया की चीजों में से कोई चीज उसके रास्ते में हाथल हो तो वह उसे नजरअंदाज़ करके दीन की तरफ बढ़ जाता है। इसके बरअक्स मुनाफ़िक् ऐसे इस्लाम को पसंद करता है जिसमें दुनिया को बिगाड़े बौर इस्लामियत का क्रेडिट मिल रहा हो। इसलिए जब ऐसा मौका आता है कि दुनिया को खोकर इस्लाम को पाना हो तो वह दुनिया की तरफ झुक जाता है, चाहे इसके नतीजे में इस्लाम की रस्सी उसके हाथ से निकल जाए।

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम की कशमकश के जो लम्हात मौजूदा दुनिया में आते हैं वे बजाहिर देखने वालों को अगरचे दो इंसानी गिरोहों की कशमकश दिखाई देती है मगर अपनी हकीकत के एतबार से यह एक खुदाई मामला होता है। ऐसे हर मौके पर खुद खुदा इस्लाम की तरफ से खड़ा होता है। ऐसे किसी वाक्ये को असबाब के रूप में इसलिए जाहिर किया जाता है ताकि उन लोगों को दीन की ख़िदमत का क्रेडिट दिया जाए जो अपने आपको पूरी तरह खुदा के हवाले कर चुके हैं।

اِنْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾ لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكُمْ وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْكُمُ الشُّغْلَةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٤٢﴾

हल्के और बोझल और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अगर नफ़ा करीब होता और सफ़र हल्का होता तो वे जरूर तुम्हारे पीछे हो लेते मगर यह मंजिल उन पर कठिन हो गई। अब वे कसमें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि ये लोग यकीनन झूठे हैं। (41-42)

मदीना के मुनाफ़िक्कीन में एक तबक्क वह था जो कमज़ोर अक़ीदे के मुसलमान थे।

उन्होंने इस्लाम को हक समझ कर उसका इकरार किया था। वे इस्लाम की उन तमाम तालीमात पर अमल करते थे जो उनकी दुनियावी मस्लेहतों के ख़िलाफ न हों। मगर जब इस्लाम का तक्कज उन्हें दुनियावी तक्कजे से टकराता तो ऐसे मौके पर वे इस्लामी तक्कजे को छोड़कर अपने दुनियावी तकाजे को पकड़ लेते। मदीने के समाज में मोमिन उस शख्स का नाम था जो कुर्बानी की सतह पर इस्लाम को इख़्तियार किए हुए हो और मुनाफ़िक् वह था जो इस्लाम की खातिर कुर्बानी की हद तक जाने के लिए तैयार न हो।

तबूक का मामला एक अलामती (प्रतीकात्मक) तस्वीर है जिससे मालूम होता है कि खुदा की नजर में मोमिन कौन होता है और मुनाफ़िक् कौन। इस मौके पर रूम जैसी बड़ी और मुज्जम ताक़त से मुक़बले के लिए निकलना था। ज़माना श्रदीद गर्मी का था। फ़सल बिल्कुल काटने के करीब पहुंच चुकी थी। हर किस्म की नासाज़गारी का मुक़बला करते हुए शाम की दूरदराज़ सरहद पर पहुंचना था। फिर मुसलमानों में कुछ सामान वाले थे और कुछ बेसामान वाले। कुछ आज़ाद थे और कुछ अपने हालात में घिरे हुए थे। मगर हुक्म हुआ कि हर हाल में निकलो, किसी भी चीज को अपने लिए उज़्र (विवशता) न बनाओ। इसकी वजह यह है कि खुदा के यहां अस्त मसला मिक्दार का नहीं होता बल्कि यह होता है कि आदमी के पास जो कुछ भी है वह उसे पेश कर दे। यही दरअस्त जन्नत की कीमत है, चाहे वह बजाहिर देखने वालों के नजदीक कितनी ही कम क्यों न हो।

मुनाफिक की ख़स पहचान यह है कि अगर वह देखता है कि बेमशक़्त सफ़र करके इस्लाम की ख़िदमत का एक बड़ा क्रेडिट मिल रहा है तो वह फौरन ऐसे सफ़र के लिए तैयार हो जाता है। इसके बरअक्स अगर ऐसा सफ़र दरपेश हो जिसमें मशक़तें हों और सब कुछ करके भी बजाहिर कोई इज्जत और कामयाबी मिलने वाली न हो तो ऐसी दीनी मुहिम के लिए उसके अंदर रज़ाबत पैदा नहीं होती।

एक हकीमी दीनी मुहिम सामने हो और आदमी उजरात (विवशताएँ) पेश करके उससे अलग रहना चाहे तो यह साफ़ तौर पर इस बात का सुबूत है कि आदमी ने खुदा के दीन को अपनी जिंदगी में सबसे ऊँचा मक़ाम नहीं दिया है। उज़्र (विवशता) पेश करने का मल्लब ही यह है कि पेशज़र मक़सद के मुक़बले में कोई और चीज़ आदमी के नज़दीक ज़्यादा अहमियत रखती है। जाहिर है कि ऐसा उज़्र किसी आदमी को खुदा की नज़र में बेएतबार साबित करने वाला है न यह कि इसकी बिना पर उसे मकबूलीन (प्रिय बंदों) की फेहरिस्त में शामिल किया जाए। मुनाफिक दरअसल खुदा से बेपरवाह होकर बंदों की परवाह करना है। आदमी अगर खुदा की क़दरत को जान ले तो वह कभी ऐसा न करे।

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذْنَتْ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الْإِذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ
الْكَاذِبِينَ ۝ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِمُ الْيَمِينُ ۝ إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَاتَّبَعَتِ قُلُوبُهُمْ فُتْنَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُونَ ۝ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ
فَتَبَطَّهْمُ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ۝

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, तुमने क्यों उन्हें इजाजत दे दी। यहां तक कि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते। जो लोग अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुमसे यह दरख़ास्त न करेंगे कि वे अपने माल और अपनी जान से ज़िहाद न करें और अल्लाह डरने वालों को ख़ूब जानता है। तुमसे इजाजत तो वही लोग मांगते हैं जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं। पस वे अपने शक में भटक रहे हैं। और अगर वे निकलना चाहते तो जरूर वे इसका कुछ सामान कर लेते। मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद न किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो। (43-46)

मुनाफिक वह है जो इस्लाम के नफ़रबाज़ या बेज़र (अहानिकारक) पहलुओं में आगे आगे रहे मगर जब उसके मफ़दात पर ज़द पड़ती नज़र आए तो वह पीछे हट जाए। ऐसे

मैत्री पर इस किस्म के कमज़ोर लोग जिस चीज़ का सहारा लेते हैं वह उज़्र है। वे अपनी बेअमली को ख़ूबसूरत तौजीहात (तर्कों) में छुपाने की कोशिश करते हैं। मुसलमानों का सरबराह अगर इज्तिमाई मसालेह (जनहित) के पेशेनज़र उनके उज़्र को कुबूल कर ले तो वे खुश होते हैं कि उन्होंने अपने अल्फ़ाज़ के पर्दे में निहायत कामयाबी के साथ अपनी बेअमली को छुपा लिया। मगर वे भूल जाते हैं कि अस्ल मामला इंसान से नहीं बल्कि खुदा से है। और वह हर आदमी की हकीकत को अच्छी तरह जानता है। खुदा ऐसे लोगों का राज़ कभी दुनिया में खोल देता है और आखिरत में तो बहरहाल हर एक का राज़ खोला जाने वाला है।

किसी का लड़का बीमार हो या किसी की लड़की की शादी हो तो उस वक़्त वह अपने आपको और अपने माल को उससे बचाकर नहीं रखता। उसकी जिंदगी और उसका माल तो इसीलिए है कि ऐसा कोई मौक़ा आए तो वह अपना सब कुछ निसार करके उनके काम आ सके। ऐसा कोई वक़्त उसके लिए बढ़कर कुर्बानी देने का होता है न कि उजरात की आड़ तलाश करने का। यही मामला दीन का भी है। जो शख्स अपने दीन में संजीदा हो वह दीन के लिए कुर्बानी का मौक़ा आने पर कभी उज़्र (विवशता) तलाश नहीं करेगा। उसके सीने में जो ईमानी ज़बात बेकरार थे वे तो गोया उसी दिन के इतिज़ार में थे कि जब कोई मौक़ा आए तो वह अपने आपको निसार करके खुदा की नज़र में अपने को वफ़ादार साबित कर सके। फिर ऐसा मौक़ा पेश आने पर वह उज़्र का सहारा क्यों ढूँढ़ेगा।

मोमिन खुदा से डरने वाला होता है और डर का ज़ब्बा आदमी के अंदर सबसे ज़्यादा क़वी (सशक्त) ज़ब्बा है। डर का ज़ब्बा दूसरे तमाम ज़बात पर ग़ालिब आ जाता है। जिस चीज़ से आदमी को डर और अंदेशे का तअल्लुक हो उसके बारे में वह आखिरी हद तक संजीदा और हकीकतपसंद हो जाता है। यही वजह है कि जब कोई शख्स डर की सतह पर खुदा का मोमिन बन जाए तो उसे यह समझने में देर नहीं लगती कि किस मौक़े पर उसे किस किस्म का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश करना चाहिए।

आखिरत का नफ़ा सामने न होने की वजह से आदमी उसके लिए कुर्बानी देने में शक में पड़ जाता है। मगर इस शक के पर्दे को फाड़ना ही इस दुनिया में आदमी का अस्ल इम्तेहान है।

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَا أُضْعِفُوا خِلْلَكُمْ يَبْغُونَكُمْ الْفِتْنَةَ
وَفِيكُمْ سَمْعُونَ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۝ لَقَدْ ابْتَغُوا الْفِتْنَةَ
مِنْ قَبْلُ وَقَلَبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ۝

अगर ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दर्मियान फितनापरदाजी (उपद्रव) के लिए दौड़पूष करते और तुम में उनकी सुनने वाले हैं और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाकिफ़ है। ये पहले भी फितने (उपद्रव) की कोशिश कर चुके हैं और वे तुम्हारे लिए कामों का उलट फेर करते रहे हैं।

यहां तक कि हक आ गया और अल्लाह का हुक्म जाहिर हो गया और वे नखुश ही रहे। (47-48)

दीन को इस्तिथार करना एक मुश्किल काम होता है और दूसरा मुनाफिकाना। मुश्किल काम तौर पर दीन को इस्तिथार करना यह है कि दीन के मसले को आदमी अपना मसला बनाए, अपनी जिंदगी और अपने माल पर वह सबसे ज्यादा दीन का हक समझे। इसके बरअक्स मुनाफिकाना तौर पर दीन को इस्तिथार करना यह है कि दीन से बस रस्मी और जाहिरी तअल्लुक रखा जाए। दीन को आदमी अपनी जिंदगी में यह मक़ाम न दे कि उसके लिए वह बर्क हो जाए और हर क्रिम के नुस्खान का ख़तरा मोल लेकर उसकी राह में आगे बढ़े।

अपनी ग़लती को मानना अपने को दूसरे के मुकाबले में कमतर तस्तीम करना है और इस क्रिम का एतराफ किसी आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है। यही वजह है कि आदमी हमेशा इस कोशिश में रहता है कि किसी न किसी तरह अपने मौक़िफ को सही साबित कर दे। चुनावे मुनाफिकाना तौर पर इस्लाम को इस्तिथार करने वाले हमेशा इस तलाश में रहते हैं कि कोई मौका मिले तो मुश्किल मोमिनों को मत्ज़न करें और उनके मुकाबले में अपने आपको ज्यादा दुरुस्त साबित कर सकें।

मदीने के मुनाफिकीन मुसलसल इस कोशिश में रहते थे। मसलन उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को शिकस्त हुई तो मदीना में बैठे रहने वाले मुनाफिकीन (पाखंडियों) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ यह प्रोपेगंडा शुरू कर दिया कि इन्हें मामलाते जंग का तजर्बा नहीं है। इन्होंने जोश के तहत इक्दाम किया और हमारी क़ौम के जवानों को ग़लत मक़ाम पर ले जाकर ख़ामख़ाह कटवा दिया।

इंसानों में कम लोग ऐसे होते हैं जो मसाइल का गहरा तज़्ज़िया (विश्लेषण) कर सकें और उस हकीकत को जानें कि किसी बात का क़ाइदे ज़मान के एतबार से सही अल्फ़ज में ढल जाना इसका काफी सुबूत नहीं है कि वह बात मअना के एतबार से भी सही होगी। बेशतर लोग सादा फ़िक्र के होते हैं और कोई बात ख़ूबसूरत अल्फ़ज में कही जाए तो बहुत जल्द उससे मुतअस्सिर हो जाते हैं। इस बिना पर किसी मुस्लिम गिरोह में मुनाफिक क्रिम के अफराद की मौजूदगी हमेशा उस गिरोह की कमजोरी का बाइस होती है। ये लोग अपने को दुरुस्त साबित करने की कोशिश में अक्सर ऐसा करते हैं कि बातों को ग़लत रुख़ देकर उन्हें अपने मुफ़्तिदे मतलब रंग में बयान करते हैं। इससे सादा फ़िक्र (सोच) के लोग मुतअस्सिर हो जाते हैं और उनके अंदर ग़ैर ज़रूरी तौर पर शुबह और बेयकीनी की कैफ़ियत पैदा होने लगती है।

मुनाफिकीन की मुख़लिफ़ना कोशिशों के बावजूद जब बद्र की फ़तह हुई तो अबुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों ने कहा : 'यह चीज़ तो अब चल निकली' इस्लाम का ग़लबा जाहिर होने के बाद उन्हें इस्लाम की सदाक़त (सच्चाई) पर यकीन करना चाहिए था मगर उस वक्त भी उन्होंने उससे हसद की गिज़ा ली।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ اِذْنَنِي وَلَا تَقْرَبْنِي الْاِلٰفِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنْ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ اِنْ تَصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَ اِنْ تُصِيبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ اَخَذْنَا اَمْرًا مِنْ قَبْلُ وَ يَتَوَلَّوْا وَ هُمْ فَرِحُوْنَ ۝ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلَانَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا اِلَّا اَحَدَى الْحُسْنَيْنِ ۚ وَ نَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُصِيبَكُمْ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖ اَوْ يَأْتِيَنَا قُرْءَانٌ مَّرْكُومٌ ۝

और उनमें वे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे रुख़सत दे दीजिए और मुझे फितने में न डालिए। सुन लो, वे तो फितने में पड़ चुके। और बेशक जहन्नम मुक़िनों को घेरे हुए है। अगर तुम्हें कोई अच्छाई पेश आती है तो उन्हें दुख होता है और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे खुश होकर लौटते हैं। कहे, हमें सिर्फ वही चीज़ पहुंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है। वह हमारा कारसाज (कार्य साधक) है और अहले इमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। कहे तुम हमारे लिए सिर्फ दो भलाइयों में से एक भलाई के मुंजिर हो। मगर हम तुम्हारे हक़ में इसके मुंजिर हैं कि अल्लाह तुम पर अजब भेजे अपनी तरफ से या हमारे हाथों से। पस तुम इंतज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में हैं। (49-52)

मदीने में एक शख्स जुद बिन कैस था। तबूक के ग़जवे में निकलने के लिए आम एलान हुआ तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर कहा कि मुझे इस ग़जवे से माफ़ रखिए। यह रूमी इलाका है। वहां रूमी औरतों को देखकर मैं फितने में पड़ जाऊंगा, मगर ऐसे मौकों पर उज़ (विवशता) पेश करना बजाए खुद फितने में पड़ना है। क्योंकि नाज़ुक मौकों पर आदमी के अंदर दीन के ख़ातिर फ़िदा हो जाने का ज़बा भड़कना चाहिए न कि उज़रात (विवशताएं) तलाश करके पीछे रह जाने का। फिर ऐसे किसी उज़ को दीनी और अज़लाकी रंग देना और भी ज्यादा बुरा है। क्योंकि यह बेअमली पर फ़रेबकारी का इजाफ़ा है।

इस क्रिम का मिजाज हकीकत में आदमी के अंदर इसलिए पैदा होता है कि वह अपनी दुनिया को आख़िरत के मुकाबले में अजीज़तर रखता है। ख़तरात के मौके पर ऐसे लोग दीन की राह में आगे बढ़ने से रुके रहते हैं। फिर जब सच्चे हक़परस्तों को उनकी ग़ैर मस्लेहत अदेशाना (निस्वाध) दीनदारी की वजह से कभी कोई नुस्खान पहुंच जाता है तो ये लोग खुश होते हैं कि बहुत अच्छा हुआ कि हमने अपने लिए हिफ़ाजती पहलू इस्तिथार कर लिया था। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि सच्चे हक़परस्त ख़तरात का मुकाबला करें और उसमें उन्हें

कामयाबी हो तो इन लोगों के दिल तंग होते हैं। क्योंकि ऐसा कोई वाकया यह साबित करता है कि उन्होंने जो पॉलिसी इस्तिथार की वह दुरुस्त न थी।

सच्चे अहले ईमान के लिए इस दुनिया में नाकामी का सवाल नहीं। उनकी कामयाबी यह है कि खुदा उनसे राजी हो और यह हर हाल में उन्हें हासिल होता है। मोमिन पर अगर कोई मुसीबत आती है तो वह उसके दिल की इनाबत (खुदा की तरफ झुकाव) को बढ़ाती है। अगर उसे कोई सुख मिलता है तो उसके अंदर एहसानमंदी का जज्बा उभरता है और वह शुक्र करके खुदा की मजीद इनायतों का मुस्तहिक बनता है।

‘तुम इतिज्जर करो हम भी इतिज्जर कर रहे हैं बजाहिर मोमिनीन का कलमा है। मगर हकीकत यह खुदा की तरफ से है। खुदा उन लोगों से तबीही अंदाज में कह रहा है कि तुम लोग अहले हक की बर्बादी के मुंजिर हो, हालांकि खुदा के तक्दीरी निजम के मुनाबिक उन्हें अबदी कामयाबी मिलने वाली है। और तुम्हारे साथ जो होना है वह यह कि तुम्हारे जुर्म को आखिरी हद तक साबित करके तुम्हें दाइमी (स्थायी) तौर पर रुस्वाई और अजाब के हवाले कर दिया जाए।

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ إِتْكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿١﴾
وَمَا مَنَعَكُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كَسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿٢﴾
فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٣﴾ وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ أَنَّهُمْ
لَيْسَ لَهُمْ وَمَا لَهُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ﴿٤﴾ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً
أَوْ مَغْرَبًا أَوْ مُدَّخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْحَدُونَ ﴿٥﴾

कहो तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुमसे हरगिज न कुबूल किया जाएगा।
बेशक तुम नाफरमान लोग हो। और वे अपने खर्च की कुबूलियत से सिर्फ इसलिए
महसूस हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और ये लोग नमाज
के लिए आते हैं तो गरानी (बेदिली) के साथ आते हैं और खर्च करते हैं तो नागवारी
के साथ। तुम उनके माल और औलाद को कुछ वकअत (महत्व) न दो। अल्लाह तो
यह चाहता है कि उनके जरिए से उन्हें दुनिया की जिंदगी में अजाब दे और उनकी जानें
इस हालत में निकलें कि वे मुंकिर हों। वे खुदा की कसम खाकर कहते हैं कि वे तुम
में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं। बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं। अगर
वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई खोह या घुस बैठने की जगह तो वे भाग कर
उसमें जा छुपें। (53-57)

मदीने में यह सूरत पेश आई कि उमूमी तौर पर लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया। उनमें
अक्सरियत मुस्लिम अहले ईमान की थी ताहम एक तादाद वह थी जिसने वक्त की फजा का
साथ देते हुए अगरचे इस्लाम कुबूल कर लिया था लेकिन उसके अंदर वह सुपुर्दगी पैदा नहीं
हुई थी जो हकीमी ईमान और अल्लाह से सच्चे तअल्लुक का तक्काज है। यही वे लोग हैं
जिन्हें मुनाफिक्कीन (पाखंडी) कहा जाता है।

ये मुनाफिक्कीन ज्यादातर मदीने के मालदार लोग थे और यही मालदारी उनके निफक
(पाखंड) का अस्त सबब थी। जिसके पास खोने के लिए कुछ न हो वह ज्यादा आसानी के
साथ उस इस्लाम को इस्तिथार करने के लिए तैयार हो जाता है जिसमें अपना सब कुछ खो
देना पड़े। मगर जिन लोगों के पास खोने के लिए हो वे आम तौर पर मस्तेहतअंदेशी में
मुक्तिला हो जाते हैं। इस्लाम के बेजरर (अहानिकारक) अहकाम की तामील तो वे किसी न
किसी तरह कर लेते हैं। मगर इस्लाम के जिन तक्काजों को इस्तिथार करने में जान व माल
की महरूम दिखाई दे रही हो, जिसमें कुर्बानी की सतह पर मोमिन बनने का सवाल हो उनकी
तरफ बढ़ने के लिए वे अपने को आमादा नहीं कर पाते।

मगर कुर्बानी वाले इस्लाम से पीछे रहना उनके ‘नमाज रोजा’ को भी बेक्रीमत कर देता
है। मस्जिद की इबादत का बहुत गहरा तअल्लुक मस्जिद के बाहर की इबादत से है। अगर
मस्जिद से बाहर आदमी की जिंदगी हकीकी दीन से खाली हो तो मस्जिद के अंदर भी उसकी
जिंदगी हकीकी दीन से खाली होगी और जहिर है कि बेरुह अमल की खुदा के नजदीक कोई
क्रीमत नहीं। खुदा सच्चे अमल को कुबूल करता है न कि झूठे अमल को।

किसी आदमी के पास दौलत की रौनकें हों और आदमियों का जल्था उसके गिर्द व पेश
दिखाई देता हो तो आम लोग उसे रश्क (यश) की नजर से देखने लगते हैं। मगर हकीकत
यह है कि ऐसे लोग सबसे ज्यादा बदकिस्मत लोग हैं। आम तौर पर उनका जो हाल होता है
वह यह कि माल व जाह (सम्पन्नता) उनके लिए ऐसे बंधन बन जाते हैं कि वे खुदा के दीन
की तरफ भरपूर तौर पर न बढ़ सकें, वे खुदा को भूल कर उनमें मशगूल रहें यहां तक कि
मौत आ जाए और बेरहमी के साथ उन्हें उनके माल व जाह से जुदा कर दे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ
يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٦﴾ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ﴿٧﴾
إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ
وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةٌ مِّنْ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾

और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सदकात के बारे में ऐब लगाते हैं। अगर उसमें से उन्हें दे दिया जाए तो राजी रहते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज हो जाते हैं। क्या अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उस पर वे राजी रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफी है। अल्लाह अपने फ़ज़ से हमें और भी देगा और उसका रसूल भी, हमें तो अल्लाह ही चाहिए। सदकात (जकात) तो दरअसल फक्कीरों और मित्कीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदकात के काम पर मुकर्र हैं। और उनके लिए जिनकी तालीफे कल्ब (दिल भराई) मत्तूब है। और गर्दनों के छुड़ाने में और जो तावान भरें और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफिर की इम्दाद में। यह एक फरीजा है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (58-60)

यहां जकात के मसारिफ (खर्च की मद्दे) बताए गए हैं। ये मसारिफ कुरआन की तसरीह के मुताबिक आठ हैं:

खुफ़	:	जिनके पास कुछ न हो
मसाकीन	:	जिन्हें बक्दर हाजत (ज़रूरत भर) मयस्सर न हो
आमिलीन	:	जो इस्लामी हुक्मत की तरफ से सदकात की वसूली और उसके हिसाब किताब पर मामूर हों
तीम्न	:	जिन्हें इस्लाम की तरफ राग़िब करना मकसूद हो या जो इस्लाम में कमजोर हों
ख़ि	:	गुलामों को आजादी दिलाने के लिए या कैदियों का फ़िदया देकर उन्हें रिहा करने के लिए
ग़ारिमीन	:	जो क़र्ज़दार हो गए हों या जिनके ऊपर ज़मानत का भार हो
सबीलिल्लाह	:	दीन की दावत और अल्लाह की राह में जिहाद की मद में
मुसाफ़िर	:	मुसाफ़िर जो सफ़र की हालत में ज़रूरतमंद हो जाए चाहे अपने मकान पर ग़नी हो

इत्तिमाई नम (सामूहिक) के तहत जब जकात व सदकात की तक्सीम की जाए तो हमेशा ऐसा होता है कि कुछ लोगों को हक़तल्फ़ी या ग़ैर मुसिफ़ना तक्सीम की शिकायत हो जाती है। मगर ऐसी शिकायत अक्सर खुद शिकायत करने वाले की कमजोरी को जाहिर करती है। तक्सीम का जिम्मेदार चाहे कितना ही पाकबाज हो, लोगों की हिर्स और उनका महदूद तर्जेफ़िक़ बहरहाल इस विस्म की शिकायतें निकाल लेगा।

मज़ेद यह कि इस विस्म की शिकायत सबसे ज्यादा आदमी के अपने ख़िलाफ़ पड़ती है, वह आदमी के फ़िक़्री (वैचारिक) इम्कानात को बरूएफ़ार लाने में रुकावट बन जाती है। आदमी अगर शिकायती मिजाज को छोड़कर ऐसा करे कि उसे जो कुछ मिला है उस पर वह राजी हो जाए और वह अपनी सोच का रुख़ अल्लाह की तरफ़ कर ले तो इसके बाद यह होगा कि उसके अंदर नई हिम्मत पैदा होगी। उसके अंदर छुपी हुई ईजाबी (सकारात्मक) सलाहियतें जाग उठेंगी। वह मिली हुई रक़म को ज्यादा कारआमद मसरफ़ में लगाएगा। अतियात पर इइसारा

करने के बजाए उसके अंदर अपने आप पर एतमाद करने का जेहन उभरेगा। वह खुदा के भरोसा पर नए इक्तेसादी (आर्थिक) मौकों की तलाश करने लगेगा। दूसरों से बेजारी के बजाए दूसरों को साथी बनाकर काम करने का जज्बा उसके अंदर पैदा होगा, वगैरह।

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ قُلْ أَذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضُوهُ إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدُ اللَّهَ وَاللَّهُ فَاقٌ لَهُ نَارُ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝

और उनमें वे लोग भी हैं जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख्स तो कान है। कहो कि वह तुम्हारी भलाई के लिए कान है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले ईमान पर एतमाद करता है और वह रहमत है उनके लिए जो तुम में अहले ईमान हैं। और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सजा है। वे तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाते हैं ताकि तुम्हें राजी करें। हालांकि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा हक़दार हैं कि वे उसे राजी करें अगर वे मोमिन हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करे उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह बहुत बड़ी रुस्वाई है। (61-63)

मदीना के मुनाफ़िक़ीन अपनी निजी मज़्लिसों में इस्लामी शख्सियतों का मज़ाक उड़ते।

मगर जब वे मुसलमानों के सामने आते तो कसम खाकर यकीन दिलाते कि वे इस्लाम के वफ़ादार हैं। इसकी वजह यह थी कि मुसलमान मदीना में ताक़तवर थे। वे मुनाफ़िक़ीन को नुक़सान पहुंचाने की हैसियत में थे। इसलिए मुनाफ़िक़ीन मुसलमानों से डरते थे।

इससे मुनाफ़िक़ (पाखंडी) के किरदार का अस्त पहलू सामने आता है। मुनाफ़िक़ की दीनदारी इंसान के डर से होती है न कि खुदा के डर से। वह ऐसे मौकों पर अख़्ताक व इंसफ़ वाला बन जाता है जहां इंसान का दबाव हो या अवाम की तरफ़ से अदिश लाहिक़ हो। मगर जहां इस विस्म का ख़तरा न हो और सिर्फ़ खुदा का डर ही वह चीज़ हो जो आदमी की ज़बान को बंद करे और उसके हाथ पांव को रोके तो वहां वह बिल्कुल दूसरा इंसान होता है। अब वह एक ऐसा शख्स होता है जिसे न बाअख़्ताक बनने से कोई दिलचस्पी हो और न इंसफ़ का रवैया इज़्तिआर करने की कोई ज़रूरत।

जो लोग मस्लेहतों में गिरफ़्तार होते हैं और इस बिना पर तहफ़ुज़ात (संरक्षणों) से ऊपर उठकर खुदा के दीन का साथ नहीं दे पाते वे आम तौर पर समाज के साहिबे हैसियत लोग

होते हैं। अपनी हैसियत को बाकी रखने के लिए वे उन लोगों की तस्वीर बिगाड़ने की कोशिश करते हैं जो सच्चे इस्लाम को लेकर उठे हैं। वे उनके खिलाफ झूठे प्रोपेगण्डे की मुहिम चलाते हैं। उन्हें तरह-तरह से बदनाम करने की तदबीरें करते हैं। उनकी बातों में बेबुनियाद किस्म के एतराजात निकालते हैं।

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह बेहद संगीन बात है। यह अहले ईमान की मुखालिफ्त (विरोध) नहीं बल्कि खुद खुदा की मुखालिफ्त है। यह खुदा का हरीफ बनकर खड़ा होना है। ऐसे लोग अगर अपनी मासूमियत साबित करने के बजाए अपनी गलती का इकरार करते और कम से कम दिल से इस्लाम के दावियों के खैरख्वाह होते तो शायद वे माफी के काबिल ठहरते। मगर ज़िद और मुखालिफ्त का तरीका इख्तियार करके उन्हें अपने को खुदा के दुश्मनों की फेहरिस्त में शामिल कर लिया। अब रुस्वाई और अजाब के सिवा उनका कोई ठिकाना नहीं।

अल्लाह का डर आदमी के दिल को नर्म कर देता है। वह लोगों की बेबुनियाद बातों को भी खामोशी के साथ सुन लेता है, यहां तक कि नादान लोग कहने लगे कि ये तो सादालोह हैं, बातों की गहराइयों को समझते ही नहीं।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَنْ تُنْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ
قُلِ اسْتَهِزُّوْا إِنَّا اللَّهُ مُخْرِجُ مَا تَحْذَرُونَ ❶
إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ❷
لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنَّ نَعْفَ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ
نُعَذِّبُ طَائِفَةً يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُجْرِمُونَ ❸

मुनाफिकीन (पाखंडी) डरते हैं कि कहीं मुसलमानों पर ऐसी सूरह नाज़िल न हो जाए जो उन्हें उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे। कहो कि तुम मजाक उड़ा लो, अल्लाह यकीनन उसे जाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो। और अगर तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो हंसी और दिल्लगी कर रहे थे। कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हंसी दिल्लगी कर रहे थे। बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है। अगर हम तुम में से एक गिरोह को माफ कर दें तो दूसरे गिरोह को तो जरूर सजा देंगे क्योंकि वे मुजरिम हैं। (64-66)

तबूक की लड़ाई के मौके पर मदीने में यह फजा थी कि जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ निकले वे अरबाबे अजीमत (पराक्रमी) शूमार हो रहे थे और जो लोग अपने घरों में बैठ रहे थे वे मुनाफिक और पस्तहिम्मत समझे जाते थे। बैठे रहने वाले मुनाफिकीन ने रसूल और असहाबे रसूल के अमल को कमतर जाहिर करने के लिए उनका मजाक उड़ाना शुरू किया। किसी ने कहा : ये कुरआन पढ़ने वाले हमें तो इसके सिवा कुछ

और नजर नहीं आते कि वे हम में सबसे ज्यादा भूखे हैं, हम में सबसे ज्यादा झूठे हैं और हम में सबसे ज्यादा बुजदिल हैं। किसी ने कहा : क्या तुम समझते हो कि रूमियों से लड़ना भी वैसा ही है जैसा अरबों का आपस में लड़ना। खुदा की कसम कल ये सब लोग रस्सियों में बंधे हुए नजर आएंगे। किसी ने कहा : ये साहब समझते हैं कि वे रूम के महल और उनके किले फतह करने जा रहे हैं, इनकी हालत पर अफसोस है। (तफसीर इब्ने कसीर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ तो आपने उन लोगों को बुला कर पूछा। वे कहने लगे : हम तो सिर्फ हंसी खेल की बातें कर रहे थे। इसके जवाब में अल्लाह तआला ने फरमाया : क्या अल्लाह और उसके अहकाम और उसके रसूल के मामले में तुम हंसी खेल कर रहे थे।

अल्लाह और रसूल की बात हमेशा किसी आदमी की जबान से बुलन्द होती है। यह आदमी अगर देखने वालों की नजर में बजाहिर मामूली हो तो वे उसका मजाक उड़ाने लगते हैं। मगर यह मजाक उड़ाना उस आदमी का नहीं है खुद खुदा का है। जो लोग ऐसा करें वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि वे खुदा के दीन के बारे में संजीदा नहीं हैं। ऐसे लोग खुदा की नजर में सख्त मुजरिम हैं, उनकी झूठी तावीलों उनकी हकीकत को छुपाने में कभी कामयाब नहीं हो सकती।

निफाक और इरतिदाद दोनों एक ही हकीकत की दो सूतें हैं। आदमी अगर इस्लाम इख्तियार करने के बाद खुल्लम खुल्ला मुकिर हो जाए तो यह इरतिदाद है। और अगर ऐसा हो कि जेहन और कलब (दिल) के एतबार से वह इस्लाम से दूर हो मगर लोगों के सामने वह अपने को मुसलमान जाहिर करे तो यह निफाक (पाखंड) है, ऐसे मुनाफिकीन का अंजाम खुदा के यहां वही है जो मुरतदीन (इस्लाम त्यागने वालों) का है, इल्ला यह कि वे मरने से पहले अपनी गलतियों का इकरार करके अपनी इस्लाह कर लें।

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ سُوا الله فَنَسِيهِمْ إِن
الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ❶ وَعَدَ اللهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ
خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعْنَهُمُ اللهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ❷ كَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَآكَثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ
بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِينَ خَاضُوا أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ❸ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ

قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُونٌ وَعَادٌ وَثَمُودٌ وَقَوْمٌ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ
وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٥﴾

मुनाफिक (पाखंडी) मर्द और मुनाफिक औरतें सब एक ही तरह के हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं। और अपने हाथों को बंद रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। बेशक मुनाफिकीन बहुत नाफरमान हैं। मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों और मुंकिरों से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही उनके लिए बस है। उन पर अल्लाह की लानत है और उनके लिए कायम रहने वाला अजाब है। जिस तरह तुमसे अगले लोग, वे तुमसे जोर में ज्यादा थे और माल व औलाद की कसरत में तुमसे बड़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से फायदा उठाया, जैसा कि तुम्हारे अगलों ने अपने हिस्से से फायदा उठाया था। और तुमने भी वही बहस की जैसी बहस उन्होंने की थी। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आखिरत में जाया हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन्हें उन लोगों की खबर नहीं पड़ती जो इनसे पहले गुजरे। कौमे नूह और आद और समूद और कौमे इब्राहीम और असहाबे मदयन और उल्टी हुई बस्तियों की। उनके पास उनके रसूल दलीलों के साथ आए। तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर जुल्म करता मगर वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे। (67-70)

पहले लोगों को खुदा ने जाह व माल दिया तो उन्होंने उससे फख्र और घमंड और बेहिस्ती की गिजा ली। ताहम वाद वालों ने उनके अंजाम से कोई सबक नहीं सीखा। उन्होंने भी दुनिया के साजोसामान से अपने लिए वही हिस्सा पसंद किया जिसे उनके पिछलों ने पसंद किया था। यही हर दौर में आम आदमियों का हाल रहा है। वे हक के तकाजों को कोई अहमियत नहीं देता। माल व औलाद के तकाजे ही उसके नजदीक सबसे बड़ी चीज होते हैं।

मुनाफिक का हाल भी ब-एतबार हकीकत यही होता है। वह जहिरी तौर पर तो मुसलमानों जैसा नजर आता है। मगर उसके जीने की सतह वही होती है जो आम दुनियादारों की सतह होती है। इसका नतीजा यह होता है कि कुछ नुमाइशी आमाल को छोड़कर हकीकी जिंदगी में वह वैसा ही होता है जैसे आम दुनियादार होते हैं। मुनाफिक की कल्बी दिलचस्पियां दीनदार के मुन्नबले में दुनियादारों से ज्यादा वाबस्ता होती हैं। आखिरत की मद में खर्च करने से उसका दिल तंग होता है मगर बेफायदा दुनियावी मशगलों में खर्च करना हो तो वह बड़ चढ़कर उसमें हिस्सा लेता है। हक का फरोग उसे पसंद नहीं आता अलबत्ता नाहक का फरोग हो तो उसे वह शौक से गवारा करता है। जाहिरी दीनदारी के बावजूद वह खुदा और आखिरत को इस तरह भूला रहता है जैसे उसके नजदीक खुदा और आखिरत की कोई हकीकत नहीं।

ऐसे लोग अपने जाहिरी इस्लाम की बिना पर खुदा की पकड़ से बच नहीं सकते। दुनिया में उनके लिए लानत है और आखिरत में उनके लिए अजाब। दुनिया में भी वे खुदा की रहमतों से महरूम रहेंगे और आखिरत में भी।

खुदा के साथ कामिल वाबस्तगी ही वह चीज है जो आदमी के अमल में कीमत पैदा करती है। कामिल वाबस्तगी के बगैर जो अमल किया जाए, चाहे वह बजाहिर दीनी अमल क्यों न हो, वह आखिरत में उसी तरह बेकीमत करार पाएगा जैसे रूह के बगैर कोई जिस्म, जो जिस्म से जाहिरी मुशाबिहत के बावजूद अमलन बेकीमत होता है।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦﴾ وَعَدَ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَمَسْكِنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ وَرِضْوَانٍ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧﴾

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के मददगार हैं। वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है बागों का कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। और वादा है, सुथरे मकानों का हमेशगी के बागों में, और अल्लाह की रिजामंदी जो सबसे बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है। (71-72)

मुनाफिकाना तौर पर इस्लाम से वाबस्ता रहने वाले लोगों में जो खुसूसियात होती हैं वे हैं आखिरत से गफलत, दुनियावी जरूरतों से दिलचस्पी, भलाई के साथ तआवुन से दूरी और नुमाइशी कामों की तरफ रगबत। इन मुश्तरक (साझी) खुसूसियात की वजह से वे एक दूसरे से खूब मिले जुले रहते हैं। ये चीजें उन्हें मुश्तरक (साझी) दिलचस्पी की बातचीत का विषय देती हैं। इससे उन्हें एक दूसरे की मदद करने का मैदान हासिल होता है। यह उनके लिए बाहमी तअल्लुकात का जरिया बनता है।

यही मामला एक और शक्ल में सच्चे अहले ईमान का होता है, उनके दिल में खुदा की लगन लगी हुई होती है। उन्हें सबसे ज्यादा आखिरत की फिक्र होती है। वे दुनिया की चीजों से बतौर जरूरत तअल्लुक रखते हैं न कि बतौर मकसद। खुदा की पसंद का काम हो रहा हो तो उनका दिल फौरन उसकी तरफ खिंच उठता है। बुराई का काम हो तो इससे उनकी तबीअत इबा (इंकार) जाती है। उनकी जिंदगी और उनका असासा सबसे ज्यादा खुदा के लिए होता है न कि

الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ
مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اَسْتَغْفِرُ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرُ
لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرُ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۝ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

और उनमें वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमें अपने फल से अता किया तो हम जरूर सदाक करेंगे और हम सालेह (नेक) बनकर रहेंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फल से अता किया तो वे बुरा करने लगे और बेपरवाह होकर मुंह फेर लिया। पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफाक (पाखंड) बिठा दिया उस दिन तक के लिए जबकि वे उससे मिलेंगे इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह के किए हुए वादे की खिलाफवर्ती की और इस सबब से कि वे झूठ बोलते रहे। क्या उन्हें खबर नहीं कि अल्लाह उनके राज और उनकी सरगोशी (गुप्त वाती) को जानता है और अल्लाह तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है। वे लोग जो तअन (कटाक्ष) करते हैं उन मुसलमानों पर जो दिल खेल कर सदाकत देते हैं और जो सिर्फ अपनी मेहनत मजदूरी में से देते हैं उनका मजक उड़ते हैं। अल्लाह इन मजक उड़ने वालों का मजक उड़ता है और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। तुम उनके लिए माफी की दरखास्त करो या न करो, अगर तुम सत्तर मर्तबा उन्हें माफ करने की दरखास्त करोगे तो अल्लाह उन्हें माफ करने वाला नहीं। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और रसूल का इंकार किया और अल्लाह नाफरमानों को राह नहीं दिखाता। (75-80)

सालबा बिन हातिब अंसारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मेरे लिए दुआ कीजिए कि खुदा मुझे माल दे दे। आप ने फरमाया : थोड़े माल पर शुक्रगुजार होना इससे बेहतर है कि तुम्हें ज्यादा माल मिले और तुम शुक्र अदा न कर सको। मगर सालबा ने बार-बार दरखास्त की चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई कि खुदाया सालबा को माल दे दे। इसके बाद सालबा ने बकरी पाली। उसकी नस्ल इतनी बढ़ी कि मदीने की जमीन उनकी बकरियों के लिए तंग हो गई। सालबा ने मदीने के बाहर एक वादी में रहना शुरू किया। अब सालबा के इस्लाम में कमजोरी आना शुरू हो गई। पहले उनकी जमाअत की नमाज छूटी। फिर जुमा छूट गया। यहां तक कि यह नौबत आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आमिल सालबा के पास जकात लेने के लिए गया तो सालबा ने जकात नहीं दी और कहा कि जकात तो जिज्या (सुरक्षा-प्रभार) की बहिन मालूम होती है।

वह शख्स खुदा की नजर में मुनाफिक है जिसका हाल यह हो कि वह माल के लिए खुदा से दुआएं करे और जब खुदा उसे माल वाला बना दे तो वह अपने माल में खुदा का हक निकालना भूल जाए। आदमी के पास माल नहीं होता तो वह माल वालों को बुरा कहता है कि

ये लोग माल को गलत कामों में बर्बाद करते हैं। अगर खुदा मुझे माल दे तो मैं उसे खैर के कामों में खर्च करूँ। मगर जब उसके पास माल आता है तो उसकी नपिसयात बदल जाती है। वह भूल जाता है कि पहले उसने क्या कहा था और किन जज्बात का इज्हार किया था। अब वह माल को अपनी मेहनत और लियाकत (योग्यता) का नतीजा समझ कर तंहा उसका मालिक बन जाता है। खुदा का हक अदा करना उसे याद नहीं रहता।

इस किस्म के लोग अपनी कमजोरियों को छुपाने के लिए मजीद सरकशी यह करते हैं कि वे उन लोगों का मजाक उड़ाते हैं जो खुदा की राह में अपना माल खर्च करते हैं। किसी ने ज्यादा दिया तो उसे रियाकार कह कर गिराते हैं। और किसी ने अपनी हैसियत की बिना पर कम दिया तो कहते हैं कि खुदा को इस आदमी के सदाके की क्या जरूरत थी। जो लोग इतना ज्यादा अपने आप में गुम हों उन्हें अपने आप से बाहर की आलातर हकीकतें कभी दिखाई नहीं देती।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ
أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝ فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُواكَ
لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ
رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَائِفِينَ ۝ وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ
مِنْهُمْ مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَمَا تَوْأَاهُم مِّنْ شَيْءٍ ۝

पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर बहुत खुश हुए और उन्हें गिरां (भारी) गुजरा कि वे अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें। और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। कह दो कि दोज्ख की आग इससे ज्यादा गर्म है, काश उन्हें समझ होती। पस वे हंसें कम और रोएं ज्यादा, इसके बदले में जो वे करते थे। पस अगर अल्लाह तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ वापस लाए और वे तुमसे जिहाद के लिए निकलने की इजाजत मांगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था पस पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। और उनमें से जो कोई मर जाए उस पर तुम कभी नमाज न पढ़ो और न उसकी कब्र पर खड़े हो। बेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफरमान थे। (81-84)

गजवए तबूक सख्त गर्मी के मौसम में हुआ। मदीना से चल कर शाम की सरहद तक तीन सौ मील जाना था। मुनाफिक मुसलमानों ने कहा कि ऐसी तेज गर्मी में इतना लम्बा सफर न करो। यह कहते हुए वे भूल गए कि खुदा की पुकार सुनने के बाद किसी खतरे की बिना पर न निकलना अपने आपको शदीदतर खतरे में मुब्तिला करना है। यह ऐसा ही है जैसे धूप से भाग कर आग के शोलों की पनाह ली जाए।

जो लोग खुदा के मुकाबले में अपने को और अपने माल को ज्यादा महबूब रखते हैं वे जब अपनी खूबसूरत तदबीरों से उसमें कामयाब हो जाते हैं कि वे मुसलमान भी बने रहें और इसी के साथ उनकी जिंदगी और उनके माल को कोई खतरा लाहिक न हो तो वे बहुत खुश होते हैं। वे अपने को अक्लमंद समझते हैं और उन लोगों को बेवकूफ कहते हैं जिन्होंने खुदा की रिजा के खातिर अपने को हल्कान (कष्टमय) कर रखा हो।

मगर यह सरासर नादानी है। यह ऐसा हंसना है जिसका अंजाम रोने पर खत्म होने वाला है। क्योंकि मौत के बाद आने वाली दुनिया में इस किस्म की 'होशियारी' सबसे बड़ी नादानी साबित होगी। उस वक्त आदमी अफसोस करेगा कि वह जन्नत का तलबगार था मगर उसने अपने असासे की वही चीज उसके लिए न दी जो दरअसल जन्नत की वाहिद कीमत थी।

इस किस्म के मुनाफिक हमेशा वे लोग होते हैं जो अपनी तहम्मुजती (संरक्षण) पॉलिसी की वजह से अपने गिर्द माल व जाह (सम्पन्नता) के असबाब जमा कर लेते हैं इस बिना पर आम मुसलमान उनसे मरऊब हो जाते हैं। उनकी शानदार जिंदगियां और उनकी खूबसूरत बातें लोगों की नजर में उन्हें अजीम बना देती हैं। यह किसी इस्लामी मआशरे के लिए एक सख्त इम्तेहान होता है। क्योंकि एक हकीकी इस्लामी मआशरे (समाज) में ऐसे लोगों को नजरअंदाज किया जाना चाहिए, न यह कि उन्हें इज्जत का मकम दिया जाने लगे।

जिन लोगों के बारे में पूरी तरह मालूम हो जाए कि वे बजाहिर मुसलमान बने हुए हैं मगर हकीकतन वे अपने मफ़दत और अपनी दुनियावी मस्तेहतों के वफ़दार हैं उन्हें हकीकी इस्लामी मआशरा (समाज) कभी इज्जत के मकम पर बिठाने के लिए राजी नहीं हो सकता। ऐसे लोगों का अंजाम यह है कि वे इस्लामी तकरीबात (समारोहों) में सिर्फ पीछे की सफ़ों में जगह पाएं। मुसलमानों के इज्तिमाई मामलात में उनका कोई दख़ल न हो। दीनी मनासिब (पदों) के लिए वे नाअहल करार पाएं। जिस मआशरे में ऐसे लोगों को इज्जत का मकम मिला हुआ हो वह कभी खुदा का पसंदीदा मआशरा नहीं हो सकता।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَإِذَا أَنْزَلْتُ سُورَةً أَنْ أَمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا لَنَكُنَّ مَعَ الْقَوِيدِينَ ۝ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ

وَأَنْفُسِهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْحَيَرَةُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَذَبٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें ताज्जुब में न डालें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इनके जरिए से उन्हें दुनिया में अजाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे मुंकिर हों। और जब कोई सूरह उतरती है कि अल्लाह पर इमान लाओ और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो उनके मकदूर वाले (सामर्थ्यवान) तुमसे रुख़सत मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम यहां ठहरने वालों के साथ रह जाएं। उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं। और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई पस वे कुछ नहीं समझते। लेकिन रसूल और जो लोग उसके साथ इमान लाए हैं उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियां और वही फलाह (कल्याण) पाने वाले हैं। उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (85-89)

मुनाफिक अपने दुनियापरस्ताना तरीकों की वजह से अपने आस पास दुनिया का साजेसामान जमा कर लेता है। उसके साथ मददगारों की भीड़ दिखाई देती है। ये चीजें सतही किस्म के लोगों के लिए मरऊबकुन बन जाती हैं। लेकिन गहरी नजर से देखने वालों के लिए उसकी जाहिरी चमक दमक काबिले रश्क नहीं बल्कि काबिले इबरत है। क्योंकि ये चीजें जिन लोगों के पास जमा हों वे उनके लिए खुदा की तरफ बढ़ने में रुकावट बन जाती हैं। खुदा का महबूब बंदा वह है जो किसी तहम्मुज और किसी मस्तेहत के बग़ैर खुदा की तरफ बढ़े। मगर जो लोग दुनिया की रैमकों में घिरे हों वे इनसे ऊपर नहीं उठ पाते। जब भी वे खुदा की तरफ बढ़ना चाहते हैं उन्हें ऐसा नजर आता है कि वे अपना सब कुछ खो देंगे। वे इस कुर्बानी की हिम्मत नहीं कर पाते, इसलिए वे खुदा के वफ़दार भी नहीं होते। उनकी दुनियावी तरकियायां उन्हें इस बर्बादी की कीमत पर मिलती हैं कि आखिरत में वे बिल्कुल महरूम होकर हाजिर हों।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जब खुदा का दीन कहता है कि अपनी अना (अहंकार) को दफन करके खुदा को पकड़ो तो वे अपनी बढ़ी हुई अना को दफन नहीं कर पाते। जब खुदा का दीन उनसे शोहरत और मकबूलियत से खाली रास्तों पर चलने के लिए कहता है तो वे अपनी शोहरत व मकबूलियत को संभालने की फिक्र में पीछे रह जाते हैं। जब खुदा के दीन की जद्दोजहद ज़िंगी और माल की कुर्बानी मांगती है तो उन्हें अपनी ज़िंगी और माल इतने कीमती नजर आते हैं कि वे उसे ग़ैर दुनियावी मकसद के लिए कुर्बान न कर सकें।

यह कैफियत बढ़ते-बढ़ते यहां तक पहुंच जाती है कि उनके दिल की हस्सासियत (संवेदनशीलता) ख़त्म हो जाती है। वे बेहिंसी का शिकार होकर उस तड़प को खो देते हैं जो आदमी को खुदा की तरफ खींचे और ग़ैर खुदा पर राजी न होने दे।

इसके बरअक्स जो सच्चे अहले ईमान हैं वे सबसे बड़ा मकाम खुदा को दिए होते हैं इसलिए दूसरी हर चीज उन्हें खुदा के मुन्नबले में हेंव नजर आती है। वे हर कुर्बानी देकर खुदा की तरफ बढ़ने के लिए तैयार रहते हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए खुदा की रहमतें व नेमतें हैं। उनके और खुदा की अबदी जन्नत के दर्मियान मौत के सिवा कोई चीज हायल नहीं।

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضَّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا انْصَحُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا اتَّوَكَّلُوا لَتَحْمِلَهُمْ قُلْتُ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَكَّلُوا وَأَعِينُوا ثُمَّ تَقِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ۝ إِنَّهَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ ۝ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

देहाती अरबों में से भी बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाजत मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वह बैठा रहे। उनमें से जिन्होंने इंकार किया उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ेगा। कोई गुनाह कमजोरों पर नहीं है और न बीमारों पर और न उन पर जो खर्च करने को कुछ नहीं पाते जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के साथ खैरखाही करें। नेककारों पर कोई इल्जाम नहीं और अल्लाह बख्शने वाला महारबान है। और न उन लोगों पर कोई इल्जाम है कि जब तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो। तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज नहीं कि तुम्हें उस पर सवार कर दूं तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे खर्च करें। इल्जाम तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे इजाजत मांगते हैं हालांकि वे मालदार हैं। वे इस पर राजी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी, पस वे नहीं जानते। (90-93)

दीन की दावत की जद्दोजहद जब लोगों से उनकी जिंदगी और उनके माल का तक्काज कर रही हो उस वक़्त साहिबे इस्तेताअत (क्षमतावान) होने के बावजूद उज़्र करके बैठे रहना बदतरीन जुर्म है। यह दीनी पुकार के मामले में बेहिंसी का सुबूत है। एक मुसलमान के लिए इस किस्म का रवैया खुदा व रसूल से गद्दारी करने के हममअना है। ऐसे लोग खुदा की रहमतों में कोई हिस्सा पाने के हकदार नहीं हैं। उनके पास जो कुछ था उसे जब उन्होंने खुदा के लिए पेश नहीं किया तो खुदा के पास जो कुछ है वह किस लिए उन्हें दे देगा। कीमत अदा किए बग़ैर कोई चीज किसी को नहीं मिल सकती।

ताहम माजूरिन के लिए खुदा के यहां माफ़ी है। जो शख्स बीमार हो, जिसके पास खर्च करने के लिए कुछ न हो, जो असबाबे सफर न रखता हो, ऐसे लोगों से खुदा दरगुजर फरमाएगा। यही नहीं बल्कि यह भी मुमकिन है कि कुछ न करने के बावजूद सब कुछ उनके ख़ाने में लिख दिया जाए जैसा कि हदीस में आया है कि ग़जवए तबूक से वापस होते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों से फरमाया : मदीने में कुछ ऐसे लोग हैं कि तुम कोई रास्ता नहीं चले और तुमने कोई वादी तै नहीं की मगर वे बराबर तुम्हारे साथ रहे।

ये खुशकिस्मत लोग कौन हैं जो न करने के बावजूद करने का इनाम पाते हैं। ये वे लोग हैं जो माजूर (अक्षम) होने के साथ तीन बातों का सुबूत दें। नुस्ह, यानी अमली शिरकत न करते हुए भी कब्बी (दिली) शिरकत। एहसान, यानी शरीक न होने के बावजूद कम से कम जबान से उनके बस में जो कुछ है उसे पूरी तरह करते रहना। हुज़्म, यानी अपनी कोताही पर इतना शदीद रंज जो आंसुओं की सूरत में बह पड़े।

कोई आदमी जब अपनी अमली जिंदगी में एक चीज को ग़ैर अहम दर्जे में रखे और बार-बार ऐसा करता रहे तो इसके बाद ऐसा होता है कि उस चीज की अहमियत का एहसास उसके दिल से निकल जाता है। उस चीज के तक्काजे उसके सामने आते हैं मगर दिल के अंदर उसके बारे में तड़प न होने की वजह से वह उसकी तरफ बढ़ नहीं पाता। यह वही चीज है जिसे बेहिंसी कहा जाता है और इसी को कुरआन में दिलों पर मुहर करने से ताबीर किया गया है।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْنَا إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُونَ لَنَا نُؤْمِنُ بِكُمْ قَدْ نَبَأْنَا اللَّهَ مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ تُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۝ إِنَّهُمْ رَجَسٌ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝

तुम जब उनकी तरफ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र (विवशताए) पेश करेंगे। कह दो कि बहाने न बनाओ। हम हरगिज तुम्हारी बात न मानेंगे। बेशक अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं। अब अल्लाह और रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे। फिर तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुजर करो। पस तुम उनसे दरगुजर करो बेशक वे नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है बदले में उसके जो वे करते रहे। वे तुम्हारे सामने कसमें खाएंगे कि तुम उनसे राजी हो जाओ। अगर तुम उनसे राजी भी हो जाओ तो अल्लाह नाफरमान लोगों से राजी होने वाला नहीं। (94-96)

‘तुम्हारे हालात हमें अल्लाह ने बता दिए हैं’ का जुमला जाहिर कर रहा है कि यहाँ जिन मुनाफिकीन का जिक्र है इससे मुद्द जमान-नुस्ते कुआन के मुनाफिकीन हैं क्योंकि बराहेरास्त खुदाई ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) के जरिए आगाह होने का मामला सिर्फ रिसालत के जमाने में हुआ या हो सकता था। बाद के जमाने में ऐसा होना मुमकिन नहीं। तबक़ात इन्हे साद की रियायत के मुताबिक ये कुल 82 अफ़्फ़ाद थे जिनके निफ़क (पाखंड) के बारे में अल्लाह ने बज़रिए ‘वही’ मुतलअ (सूचित) फ़रमाया था।

ताहम इस इल्म के बावजूद सहाबा किराम को उनके साथ जिस सुलूक की इजाजत दी गई वह तग़ाफ़ुल और ऐराज (उपेक्षा) था न कि उन्हें हलाक करना। उन्हें सज़ा या अज़ाब देने का मामला फिर भी खुदा ने अपने हाथ में रखा। मदीने के मुनाफिकीन के साथ अगरचे इतनी सख़्ती की गई कि उन्होंने उजरात (विवशताएँ) पेश किए तो उनके उजरात कुबूल नहीं किए गए। यहाँ तक कि सालबा बिन हातिब अंसारी ने मुनाफिकाना रविश इख़्तियार करने के बाद जकात पेश की तो उनकी जकात लेने से इंकार कर दिया गया। ताहम उनमें से किसी को भी आप ने क़त्ल नहीं कराया। अब्दुल्लाह बिन उबई के लड़के अब्दुल्लाह ने अपने बाप की मुनाफिक़ाना हरकत पर सख़्त कार्रवाई करनी चाही तो आप ने रोक दिया और फ़रमाया : उन्हें छोड़ दो, बख़ुदा जब तक वे हमारे दर्मियान हैं हम उनके साथ अच्छा ही सुलूक करेंगे।

बाद के जमाने के मुनाफिकीन के बारे में भी यही हुक्म है। ताहम दोनों के दर्मियान एक फ़र्क है। दौरे अब्ल के मुनाफिकीन से उनकी हालते क़त्बी की बुनियाद पर मामला किया गया, मगर बाद के मुनाफिकीन से उनकी हालते जाहिरी की बुनियाद पर मामला किया जाएगा। उनसे ऐराज व तग़ाफ़ुल (उपेक्षा) का सुलूक सिर्फ़ उस वक़्त जाइज होगा जबकि उनके अमल से उनकी मुनाफिक़त का ख़ारजी सुबूत मिल रहा हो। उनकी नियत या उनकी क़त्बी हालत की बिना पर उनके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। बाद के लोग उज़ (विवशता) पेश करें तो उनका उज़ भी कुबूल किया जाएगा और इसके साथ उनके सदक़ात वग़ैरह भी। उनके अंजाम को अल्लाह के हवाले करते हुए उनके साथ वही मामला किया जाएगा जो जाहिरी क़ानून के मुताबिक किसी के साथ किया जाना चाहिए।

जन्नत किसी को जाती अमल की बुनियाद पर मिलती है न कि मुसलमानों की जमाअत या ग़िरोह में शामिल होने की बुनियाद पर। मुनाफिकीन सबके सब मुसलमानों की जमाअत में शामिल थे वे उनके साथ नमाज़ रोज़ा करते थे मगर इसके बावजूद उनके जहन्नमी होने का ए़लान किया गया।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ الْأَيْعِلُوهَا وَدَمًا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَيَكْرِضُ بِكُمُ الدَّوَارِ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبًا عِنْدَ اللَّهِ

وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ ۚ أَلَا إِنَّهَا قُرْبٌ لَهُمْ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

देहत वाले कुफ़ व निफ़क में ज्यादा सख़्त हैं और इसी लायक हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है उसके हुद्द से बेख़बर रहें। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला हिक्मत वाला है। और देहातियों में ऐसे भी हैं जो खुदा की राह में ख़र्च को एक तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए जमाने की गर्दिशों के मुंतज़िर हैं। बुरी गर्दिश खुद उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। और देहातियों में वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहाँ कुर्ब का और रसूल के लिए दुआएं लेने का जरिया बनाते हैं। हां बेशक वह उनके लिए कुर्ब (समीपता) का जरिया है। अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला महरवान है। (97-99)

हदीस में आया है कि जिसने देहात में सुकूनत (वास) इख़्तियार की वह सख़्त मिजाज हो जाएगा। शहर के अंदर इल्मी माहौल होता है, तालीमी इदारे कायम होते हैं। वहाँ इल्म व फन का चर्चा रहता है। जबकि देहात में लोगों को इसके मोके हासिल नहीं होते। इसी के साथ देहात के लोगों के रहन-सहन के तरीके और उनके मआशी जरिये भी निस्वतन मामूली होते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि देहात के लोगों के अंदर ज्यादा गहरा शुऊर पैदा नहीं होता। उनकी तबीअत में सख़्ती और उनके सोचने के अंदाज में सतहियत पाई जाती है। उनके लिए मुश्किल होता है कि वे दीन की नजाकतों को समझें और उन्हें अपने अंदर उतारें।

अल्लाह हर बात को जानता है और इसी के साथ वह हकीम और रहीम भी है। वह देहात के लोगों, बअल्फ़ाजे दीगर अवाम, की इस कमजोरी से बाख़बर है और अपनी हिक्मत (तत्वदर्शिता) व रहमत की बिना पर उन्हें इसकी पूरी रिआयत देता है। चुनांचे ऐसे लोगों से खुदा का मुतालबा यह नहीं है कि वे गहरी मअरफ़त और आला दीनदारी का सुबूत दें। वे अगर नेक नीयत हों तो खुदा उनसे सादा दीनदारी पर राजी हो जाएगा।

अवाम की दीनदारी यह है कि वे सच्चे दिल से खुदा का इकरार करें। अपने अंदर इस एहसास को ताजा रखें कि आख़िरत का एक दिन आने वाला है। वे अपनी कमाई का एक हिस्सा खुदा की राह में दें और यह समझें कि इसके जरिए से उन्हें खुदा की क़ुरबत (समीपता) और बरक़त हासिल होगी। वे खुदा की नुमाइंदगी करने वाले पैग़म्बर को खुश करके उसकी दुआएं लेने के तालिब हों। यह दीनदारी की अवामी सतह है, और अगर आदमी की नीयत में बिगाड़ न हो तो उसका खुदा उससे इसी सादा दीनदारी को कुबूल कर लेगा।

लेकिन अगर अवाम ऐसा करें कि वे खुदा और उसके अहक़ाम से बिल्कुल गाफ़िल हो जाएं। उनकी दीन से इतनी बेतअल्लुकी हो कि दीन की राह में कुछ ख़र्च करना उन्हें जुर्माना मालूम होने लगे। इस्लाम की तरक्की से उन्हें वहशत होती हो, तो विलाशुबह वे नाकाबिले

माफी हैं। अवाम की कमफहमी (अबोधता) की बिना पर उन्हें यह रियायत तो जरूरी दी जा सकती है कि उनसे गहरी दीनदारी का मुतालबा न किया जाए। लेकिन उनकी कमफहमी अगर सरकशी और इस्लाम के साथ बेवफाई की सूरत इख्तियार कर ले तो वे किसी हाल में बख्शी नहीं जा सकते।

وَالسَّيْقُونِ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَذَبَاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ اذْكَرَ الْفَوْزَ الْعَظِيمَ ۖ وَمَنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنْفِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُّوا عَلَى الرَّفَاقِ ۖ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُمْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ

और मुहाजिरीन व अंसार में जो लोग साबिक और मुकद्दम हैं और जिन्होंने खूबी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे उससे राजी हुए। और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और तुम्हारे गिर्द व पेश जो देहाती हैं उनमें मुनाफिक (पाखंडी) हैं और मदीना वालों में भी मुनाफिक हैं। वे निफक (पाखंड) पर जम गए हैं। तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दोहरा अजाब देंगे। फिर वे एक अजाबे अजीम (मह-यातना) की तरफ भेजे जाएंगे। (100-101)

खुदा के दीन की दावत जब भी शुरू की जाए तो दो में से कोई एक सूरत पेश आती है। या तो माहौल उसका दुश्मन हो जाता है। ऐसे माहौल में दीन के लिए पुकारने वाले अजनबी बन जाते हैं। वे अपनी जगह के अंदर बेजगह कर दिए जाते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें मुहाजिर (छोड़ने वाला) कहा जाता है। दूसरी सूरत वह है जबकि माहौल खुदा के दीन की दावत के लिए साजगार साबित हो। ऐसे माहौल में जो लोग दीन के दाजी बनते हैं उनके साथ यह हादसा पेश नहीं आता कि उनका सब कुछ उनसे छिन जाए। ये दूसरी किस्म के लोग अगर ऐसा करें कि वे पहले लोगों का सहारा बनकर खड़े हो जाएं तो यही अंसार (मदद करने वाले) करार पाते हैं। दौरे अव्वल में मक्का के हालात ने वहां के मुसलमानों को मुहाजिर बना दिया और मदीने के हालात ने वहां के मुसलमानों को अंसार की हैसियत दे दी।

खुदा की रिजामंदी और उसकी जन्नत किसी आदमी को या तो मुहाजिर बनने की कीमत पर मिलती है या अंसार बनने की कीमत पर। या तो वह खुदा के लिए इतना यकसू हो कि दुनिया के सिरे उससे छूट जाएं। या अगर वह अपने को साहिबे वसाइल (साधन-सम्पन्नता) पाता है तो अपने वसाइल (साधनों) के जरिए वह पहले गिरोह की महरूमी का बदल बन जाए। दौरे अव्वल के मुसलमान (सहाबा किराम) इस हिजरत व नुसरत का कामिल नमूना थे। बाद के मुसलमानों में जो लोग इस हिजरत व नुसरत के मामले में अपने पेशवरों

(पूर्ववर्तियों) की तकलीद (अनुसरण) करेंगे वे इससे इस मुकद्दस खुदाई गिरोह में शामिल होते चले जाएंगे। खुदा कुछ लोगों को महरूम करता है ताकि उनके अंदर इनाबत (खुदा की तरफ झुकने) का जज्बा उभरे इसी तरह खुदा कुछ लोगों को महरूमी से बचाता है ताकि वे महरूमों की मदद करके खुदा के लिए खर्च करने वाले बनें। यह खुदा का मंसूबा है। जो लोग इसका सुबूत न दें वे ऐसे लोग हैं जो खुदा के मंसूबे पर राजी न हुए इसलिए खुदा भी आखिरत के दिन उनसे राजी न होगा।

‘वे अल्लाह से राजी हो गए’ यानी जिसे अल्लाह ने ऐसे हालात में उठाया कि उसे सब कुछ छोड़ने की कीमत पर दीन को इख्तियार करना पड़ा तो वह उसमें साबितकदम रहा। इसी तरह जिसके हालात का तकाजा यह हुआ कि वह अपने असासे में ऐसे दीनी भाइयों को शरीक करे जिनसे उसका ताल्लुक सिर्फ मक्सद का है न कि रिश्तेदारी का तो वह भी उस पर राजी हो गया। यही वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की खुशी हासिल की और यही वे लोग हैं जो जन्नत के अबदी बागों में दाखिल किए जाएंगे।

मुनाफिक वह है जो मुसलमान होने का दावा करे मगर जब हिजरत व नुसरत की कीमत पर दीनदार बनने का सवाल हो तो उसके लिए अपने को राजी न कर सके।

وَاخْرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ النَّاتِبُ الرَّحِيمُ ۖ وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۖ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ وَآخِرُونَ مُرْجُونَ لَأَمْرُ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ

कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने कुसूरों का एतराफ कर लिया है। उन्होंने मिले जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे। उम्मीद है कि अल्लाह उन पर तवज्जोह करे। बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। तुम उनके मालों में से सद्का लो, इससे तुम उन्हें पाक करोगे और उनका तज्किया (पवित्रीकरण) करोगे। और तुम उनके लिए दुआ करो। बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तस्कीन (शांति) का ज़रिया होगी। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा कुल्ल करता है। और वही सद्कों को कुल्ल करता है। और अल्लाह तौबा कुल्ल करने वाला महरबान है। कहो कि अमल करो, अल्लाह और उसका रसूल और अहले ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे जो तमाम खुले

और छुपे को जानता है। वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी खुदा का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वह उन्हें सजा देगा या उनकी तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (102-106)

कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी तबीअतों में अगरचे शर नहीं होता। वे मअमूल (आम प्रचलन) वाले दीनी आमाल भी करते रहते हैं। मगर जब दीन का कोई ऐसा तकाजा सामने आता है जिसमें अपने बने हुए नक्शे को तोड़ कर दीनदार बनने की जरूरत हो तो वे अपनी जिंदगी और माल को इस तरह दीन के लिए नहीं दे पाते जिस तरह उन्हें देना चाहिए। कुव्वते फैसला की कमजोरी या दुनिया में उनकी मशगुलियत उनके लिए दीन की राह में अपना हिस्सा अदा करने में रुकावट बन जाती हैं। ऐसे लोग अगरचे कुसूरवार होते हैं। ताहम उनका कुसूर उस वक्त माफ कर दिया जाता है जबकि याददिहानी के बाद वे अपनी गलती का एतराफ कर लें और शर्मिन्दगी के एहसास के साथ दुबारा दीन की तरफ लौट आएँ।

एतराफ और शर्मिन्दगी का सुबूत यह है कि उनके अंदर नए सिरे से दीनी खिदमत का जज्बा पैदा हो। वे अपने एहसासे गुनाह को धोने के लिए अपने महबूब माल का एक हिस्सा खुदा की राह में पेश करें। जब उनकी तरफ से ऐसा रद्देअमल (प्रतिक्रिया) जाहिर हो तो पैगम्बर को तल्कीनी की गई कि अब उन्हें मलामत न करो बल्कि उन्हें नपिसयाती सहारा देने की कोशिश करो। उन्हें दुआएं दो ताकि उनके दिल का बोझ दुबारा ईमानी अज्म व एतमाद में तब्दील हो जाए।

खुदा के नजदीक असल बुराई गलती करना नहीं है बल्कि गलती पर कायम रहना है। जो आदमी गलती करने के बाद उसकी तावीलें (हीले) ढूँढ़ने लगे वह बर्बाद हो गया और जो शख्स गलती का एतराफ करके अपनी इस्लाह कर ले वह खुदा के नजदीक काबिले माफी ठहरा।

गलती करने के बाद आदमी हमेशा दो इम्कानात के दरमियान होता है। एक यह कि वह अपनी गलती का एतराफ कर ले। दूसरा यह कि वह ढिठाई करने लगे, जो शख्स अपनी गलती का एतराफ कर ले उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) पैदा होती है। वह दुबारा खुदा की रहमतों का मुस्तिहक बन जाता है। इसके बरअक्स जो शख्स ढिठाई का तरीका इस्त्रियार करे वह गोया खुदा के गजब के रास्ते पर चल पड़ा। वह अपने को बेखता साबित करने के लिए झूठी तावीलें करेगा। एक गलती को निभाने के लिए वह दूसरी बहुत सी गलतियां करता चला जाएगा। पहले शख्स के लिए खुदा की रहमत है और दूसरे शख्स के लिए खुदा की सजा।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا وَتَقْرِيفًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيُخْلِفَنَّ لِي أَزْدَانُ الْإِحْسَانِ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لِّلْمَسْجِدِ أُسُسٌ عَلَى الثَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فَمِرَّجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَّطَهَّرُوا ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ

الْمُطَهَّرِينَ ﴿١٠٣﴾ أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارٍ ۖ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٤﴾ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٠٥﴾

और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई जुम्हाने के लिए और कुफ्र के लिए और अहले ईमान में फूट डालने के लिए और इसलिए ताकि कमीनगाह (शरण-स्थल) फराहम करें उस शख्स के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहा है। और ये लोग कसमें खाएंगे कि हमने तो सिर्फ भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं। तुम उस इमारत में कभी खड़े न होना। अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अब्बल दिन से तकवे (ईश-परायणता) पर पड़ी है वह इस लायक है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है। क्या वह शख्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद खुदा से डर पर और खुदा की खुशनूदी पर रखी या वह शख्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है। फिर वह इमारत उसे लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। और यह इमारत जो उन्होंने बनाई हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जाएँ। और अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (107-110)

जिंदगी की तामीर की दो बुनियादें हैं। एक तकवा, दूसरे जुम्ह। पहली सूरत यह है कि खुदा के डर की बुनियाद पर जिंदगी की इमारत उठाई जाए। आदमी की तमाम सरगर्मियां जिस फिफ्र के मातहत चल रही हों वह फिफ्र यह हो कि उसे अपने तमाम कैल व फेअल का हिसाब एक ऐसी हस्ती को देना है जो खुले और छुपे से बाखबर है और हर एक को उसके हकीमी कारनामों के मुताबिक जज या सज्ज देने वाला है। ऐसा शख्स गोया मजबूत चट्टान पर अपनी इमारत खड़ी कर रहा है। दूसरी सूरत यह है कि आदमी इस किस्म के अदेशे से खाली हो। वह दुनिया में बिल्कुल बेक़ेद जिंदगी गुजारे। वह किसी पाबंदी को कुबूल किए बिना जो चाहे बोले और जो चाहे करे। ऐसे शख्स की जिंदगी की मिसाल उस इमारत की सी है जो ऐसी खाई के किनारे उठा दी गई हो जो बस गिरने ही वाली हो और अचानक एक रोज उसका मकान अपने मकीनों सहित गहरे खड में गिर पड़े।

जो लोग जुम्ह की बुनियाद पर अपनी जिंदगी की इमारत उठाते हैं उनके जराइम में सबसे ज्यादा सज़ा जुर्म वह है जिसकी मिसाल मदीने में मस्जिदे जिरार की सूरत में सामने आई। उस वक्त मदीने में दो मस्जिदें थीं। एक आबादी के अंदर मस्जिद नबवी। दूसरी मुजाफ़त (निकट क्षेत्र) में मस्जिदे कुबा। मुनाफ़िक मुसलमानों ने उसके तोड़ पर एक तीसरी

मस्जिद तामीर कर ली। इस किस्म की कार्रवाई बजाहिर अगरचे दीन के नाम पर होती है मगर हकीकत में इसका मकसद होता है अपनी कयामत और फ़ैदाई को कयम रखने के ख़तिर हक की दावत का मुखालिफ़ (विरोधी) बन जाना। जो लोग अपनी खुदपरस्ती की वजह से हक की दावत को कुबूल नहीं कर पाते वे उसके खिलाफ़ महाज बनाते हैं उसके खिलाफ़ तख़ीबी (विध्वंसक) कार्रवाइयां करते हैं। उनकी मंफ़ी (सकारात्मक) सरगर्मियां मुसलमानों को दो गिरोहों में बांट देती हैं। ऐसे लोग अपने तख़ीबी अमल को दीन के नाम पर करते हैं। यहां तक कि वे मुसलमाना दीनी शख़्सियतों को अपने स्टेज पर लाने की कोशिश करते हैं ताकि लोगों की नजर में उन्हें एतमाद हासिल हो जाए।

ये लोग अपनी अंधी दुश्मनी में भूल जाते हैं कि हक की मुखालिफ़त (विरोध) दरअसल खुदा की मुखालिफ़त है जो खुदा की दुनिया में कभी कामयाब नहीं हो सकती। ऐसे लोगों के लिए जो चीज मुक़द्दर है वह सिर्फ़ यह कि वे हसरत व अफ़सोस के साथ मरे और अल्लाह की रहमतों से हमेशा के लिए महरूम हो जाएं।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقٌّ فِي التَّوْرَةِ ۚ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ الثَّائِبُونَ الْعُمِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّاجِدُونَ لِلرَّكُوعِ السَّاجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

बिलाशुबह अल्लाह ने मोमिनों से उनके जान और उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले। वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। फिर मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह के जिम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है। पस तुम खुशियां करो उस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है। और यही है सबसे बड़ी कामयाबी। वे तौबा करने वाले हैं। इबादत करने वाले हैं। हम्द (ईश-प्रशंसा) करने वाले हैं। खुदा की राह में फिरने वाले हैं। रुकूअ करने वाले हैं। सज्दा करने वाले हैं। भलाई का हुम्म देने वाले हैं। बुराई से रोकने वाले हैं। अल्लाह की हदों का ख़्याल रखने वाले हैं। और मोमिनों को खुशख़बरी दे दो। (111-112)

अल्लाह का मोमिन बनना अल्लाह के हाथ अपने आपको बेच देना है। बंदा अपना माल और अपनी जिंदगी अल्लाह को देता है ताकि अल्लाह इसके बदले में अपनी जन्नत उसे दे दे।

यह दरअसल हवाली और सुपुर्दगी की ताबीर है। किसी भी चीज से हकीकती तअल्लुक हमेशा हवाली और सुपुर्दगी की सतह पर होता है। तअल्लुक का यही दर्जा अल्लाह के मामले में भी मल्लूब है। जन्नत की अबदी नेमतें किसी को कामिल हवाली के बग़ैर नहीं मिल सकतीं।

जब आदमी अल्लाह के दीन को इस तरह इख़्तियार करता है तो दीन का मामला उसके लिए कोई अलग मामला नहीं होता। बल्कि वह उसका जाती मामला बन जाता है। अब वही उसकी दिलचस्पियों और उसके अदेशों का मर्कज होता है। दीन अगर माल का तकाजा करे तो वह अपना माल उसके लिए हाजिर कर देता है। दीन के लिए अपने वक्त और अपनी सलाहियत को बर्क़ करना पड़े तो वह अपने वक्त और अपनी सलाहियत को उसके लिए पेश कर देता है। यहां तक कि अगर वह मरहला आ जाए जबकि अपने वजूद को मिटा कर या माल से बेमाल होने का ख़तरा मोल लेकर दीन में अपना हिस्सा अदा करना हो तो इससे भी वह दरेग नहीं करता।

जो लोग इस तरह अपने को अल्लाह के हवाले करें उनके अंदर किस किस्म के इफ़िदादी औसाफ़ पैदा होते हैं। उनकी हस्सासियत इतनी बेदार हो जाती है कि ग़लती होते ही वे उसे जान लेते हैं और फौरन अपनी ग़लती का एतराफ़ कर लेते हैं। वे अल्लाह के लिए बिछ जाने वाले होते हैं। वे खुदा की अज्मतों को इस तरह पा लेते हैं कि उनके क़ल्ब और जबान से बेइख़्तियार इसका इज्हार होने लगता है। वे साएह हो जाते हैं, यानी इंसानी दुनिया से निकल कर खुदाई दुनिया में जाना उनके लिए ज्यादा सुकून का बाइस होता है। खुदा के आगे झुकना उनके लिए महबूब चीज बन जाता है। जो भी उनके रब (सम्पर्क) में आता है उसे भलाई के रास्ते पर डालने की कोशिश करते हैं। अपने सामने किसी को बुराई करते देखते हैं तो उसे रोकने के लिए खड़े हो जाते हैं। वे खुदा की हदबंदियों के मामले में हद दर्जा चौकन्ना हो जाते हैं, वे अल्लाह की हदों के इस तरह निगहबान बन जाते हैं जिस तरह बाग़बान अपने बाग़ का। यही वे लोग हैं जिनके लिए खुदाई इनामात की खुशख़बरी है।

खुदा की जन्नत तमाम कीमती चीजों से ज्यादा कीमती है। मगर खुदा की जन्नत एक मोऊद (बाद का) इनाम है, वह नक़द इनाम नहीं। जन्नत की इसी मुवज्जल (बाद की) नौइयत का यह नतीजा है कि लोग जन्नत को छोड़कर हकीर फ़ायदों की तरफ़ भागे जा रहे हैं।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بُنِنَ لَهُمْ اللَّهُ أَنْ يَصْحَبُ الْحَيِيمُ ۚ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं रखा नहीं कि मुश्रिकों के लिए मफिरत (क्षमा) की दुआ करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही हों जबकि उन पर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले लोग हैं। और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मफिरत की दुआ मांगना सिर्फ इस वादे के सबब से था जो उसने उससे कर लिया था। फिर जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेतअल्लुक हो गया। वेशक इब्राहीम बड़ा नर्मदिल और बुरदवार (उदार) था। और अल्लाह किसी कौम को, उसे हिदायत देने के बाद गुमराह नहीं करता जब तक उन्हें साफ-साफ वे चीजें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है, वेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। अल्लाह ही की सल्लनत है आसमानों में और जमीन में, वह जिलाता है और वही मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (113-116)

एक शख्स मुंकिर व मुश्रिक हो और उसके सामने इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) की हद तक दीन की दावत आ जाए, इसके बावजूद वह ईमान न लाए तो खुदा के कानून के मुताबिक वह जहन्नमी हो जाता है। ऐसे शख्स के लिए इसके बाद नजात की दुआ करना गोया ईमान को बेवकअत बनाना और खुदाई इंसाफ की तरदीद करना है, यही वजह है कि ऐसी दुआ से मना कर दिया गया।

ताहम आयत में 'मिन बअदि मा तबथ्य-न' का लफ्ज बताता है कि इस हुक्म का तअल्लुक रिसालत के जमाने के मुश्रिकीन से है जिनके बारे में 'वही' के जरिए बता दिया गया था कि वे जहन्नमी हैं। इन आयतों का पसमंजर यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हुक्म दिया गया था कि आप मुनाफिकीन की नमाजे जनाज न पढ़ें और उनके हक में मफिरत की दुआ न करें (अत तौबा 84)। यह बात मदीना के मुनाफिकों को बहुत नागवार हुई। उन्होंने इसे लेकर आपके खिलाफ प्रोपेगंडा शुरू कर दिया। वे कहते कि यह नबी तो नबी रहमत हैं और अपने को इब्राहीम का पैरोकार बताते हैं। फिर क्या वजह है कि मुसलमानों को अपने भाइयों और अपने रिश्तेदारों के लिए इस्तगफार से रोकते हैं। हालांकि इब्राहीम का हाल यह था कि अपने मुश्रिक बाप के लिए भी उन्होंने मफिरत की दुआ की।

जवाब दिया गया कि इब्राहीम बड़े दर्दमंद और इंसानियत के गम में घुलने वाले थे। अपने इस जब्बे के तहत उन्होंने अहद कर लिया कि वह अपने मुश्रिक बाप के हक में खुदा से दुआ करेंगे। मगर जब 'वही' ने तंबीह की तो इसके बाद वह फौरन इससे बाज आ गए।

अल्लाह ने हर आदमी के अंदर बुराई की फितरी तमीज रखी है। जब आदमी के सामने एक ऐसा पैगाम आता है जो उसे बुराई से रोकता है तो उसका वजूद अंदर से उसकी तस्दीक करता है। उसके दिल के अंदर एक खामोश खटक पैदा होती है। आदमी अगर इस खटक को नजरअंदाज कर दे, वह फितरत की गवाही के बावजूद बचने वाली चीज से न बचे तो उसकी फितरी हस्सासियत (संवेदनशीलता) कमजोर पड़ जाती है, यहां तक कि धीरे-धीरे बिल्कुल मुर्दा हो जाती है। यही वह चीज है जिसे गुमराह करने से ताबीर किया गया है। 'हिदायत देने के बाद गुमराह करना' के अल्फाज बता रहे हैं कि इसका खतरा मुसलमानों के लिए भी उसी तरह है जिस तरह ग़ैर मुसलमानों के लिए।

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ ۖ وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝

अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर तवज्जोह फरमाई जिन्होंने तंगी के वक्त में नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की तरफ मायल हो चुके थे। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह फरमाई। वेशक अल्लाह उन पर महरबान है रहम करने वाला है। और उन तीनों पर भी उसने तवज्जोह फरमाई जिनका मामला उठा रखा गया था। यहां तक कि जब जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे खुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए खुदा अल्लाह के सिवा कोई जाएपनाह (शरण-स्थल) नहीं। फिर अल्लाह उनकी तरफ पलटा ताकि वे उसकी तरफ पलट आएँ। वेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (117-118)

तबूक की लड़ाई के मौके पर एक गिरोह वह निकला जिसने अपना बेहतरीन असासा इस्लाम के हवाले कर दिया। उनकी फस्त कटने के लिए तैयार थी मगर वह उसे छोड़कर एक ऐसे सफर पर रवाना हो गए जिसमें सख्त गर्मी के तीन सौ मील तै करके वक्त की सबसे बड़ी ताकत व सल्लनत का मुकाबला करना था। सामान की कमी का यह हाल था कि एक-एक ऊंट पर कई-कई आदमियों की बारी लगी हुई थी। खाने के लिए कभी-कभी सिर्फ एक खजूर एक आदमी के हिस्से में आती थी। ताहम यह इतिहाई सख्त मरहला सिर्फ इरादों के इस्तेहान के लिए सामने लाया गया था। जब इरादा करने वालों ने इरादे का सबूत दे दिया तो खुदा ने दुश्मन के ऊपर रोब तारी कर दिया। वे मुकाबले के मैदान से हट गए और मुसलमान खून बहाए बगैर कामयाब व कामरान होकर वापस आ गए।

दूसरा तबका मोतरिफीन (अत तौबा 102) का था। ये लोग अपने दुनियावी मशागिल (व्यस्तताओं) की वजह से सफर पर रवाना न हो सके। ताहम फौरन ही बाद उन्हें महसूस हो गया कि उन्होंने गलती की है। उनके अंदर एतराफ और शर्मिन्दगी की आग भड़क उठी। उनके आंसुओं की कसरत ने उनके अमल की कमी की तलाफी कर दी। खुदा ने उन्हें भी अपनी रहमतों के साथे मे जगह दे दी। क्योंकि उन्होंने आजिजाना तौर पर अपनी गलती को मान लिया था।

तीसरा गिरोह मुखल्लफीन (अत-तौबह 118) का था। ये तीन नौजवान काब बिन मालिक, मुरारा बिन रबीअ, हिलाल बिन उमैया थे। वे अगरचे सफर पर न निकलने को अपनी कोताही

समझत थे मगर उनके अंदर तौबा व इनाबत (अल्लाह की तरफ विनय-भाव से झुकना) का इतना शदीद एहसास पहले मरहले में नहीं उभरा था जो मल्लूबा मेयार के मुताबिक हो। चुनचि उनके साथ समाजी बायकॉट का मामला किया गया। ये लोग इस बायकॉट के बावजूद मुतमइन रह सकते थे। वे अपने घर और अपने बागों में मशगूल हो जाते। वे बरहमी (खिन्नता) और नावफादारी के रास्तों पर चलना शुरू कर देते। वे नाराज अनासिर (तत्वों) के साथ मिलकर अपनी अलग जमीयत बना लेते। वे आम मुसलमानों से अलग अपना एक जजीरा बनाकर उसके अंदर अपनी खुशियों की दुनिया बसा सकते थे। मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। खुदा व रसूल से दूरी के एहसास ने उन्हें इस कदर परेशान कर दिया कि न बाहर उनके लिए सुकून की कोई जगह नजर आई और न अपने दिल के अंदर उनके लिए सुकून का कोई गोष्ठा बाकी रहा। बअत्फजे दीगर उनकी परेशानी इख्तियाराना थी न कि मजबूराना। उनकी इस रविश का नतीजा यह हुआ कि उनका दिल पिघल उठा। 50 दिन में वे तौबा व इनाबत के मल्लूबा मेयार पर पहुंच गए। इसके बाद उन्हें भी माफ कर दिया गया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ⑩ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا عَمَلَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطُونُ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوِّ نِيْلًا إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ⑪ وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًّا إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑫

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। मदीना वालों और अतराफ (आसपास) के देहातियों के लिए जेबा न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे बैठे रहें और न यह कि अपनी जान को उसकी जान से अजीज रखें। यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख भी उन्हें खुदा की राह में लाहिक होती है और जो कदम भी वे मुंकिरों को रज पहुंचाने वाला उठाते हैं और जो चीज भी वे दुश्मन से छीनते हैं इनके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है। अल्लाह नेकी करने वालों का अज्र (प्रतिफल) जाया नहीं करता। और जो छोटा या बड़ा खर्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तै किए वे सब उनके लिए लिखा गया ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे। (119-121)

इंसानी जिंदगी इज्तिमाई जिंदगी है। यही वजह है कि हर आदमी का अपने जौक और

रूझान के एतबार से एक हलका बन जाता है जिसमें वह अपने रोज व शब गुजारता है। जो लोग अल्लाह से डरने वाले हों और ईमान के रास्ते पर चलना चाहें उनके लिए लाजिम है कि वे अपनी सोहबतों और मुलाकातों के लिए उन लोगों को चुनें जो सच्चे लोग हों। यानी जिनके दिल का खूँफे खुदा उनकी जिंदगी की रविश बन गया हो। जिनके कौल व अमल के दर्मियान मुताबिकत पाई जाती हो। सच्चों के साथ रहकर आदमी सच्चा बन जाता है। इसके बरअक्स अगर वह झूठों का साथ पकड़े तो बिलआखिर वह खुद भी झूठा बन जाएगा।

आदमी के सामने ऐसे मौके आते हैं जबकि जान को खतरे में डाल कर इस्लाम की खिदमत करने का सवाल हो। जब भूख प्यास का मुकाबला करके इस्लाम के लिए अपना हिस्सा अदा करना हो। जब अपने को थका कर खुदा की राह में आगे बढ़ना हो। जब दुश्मनों का खतरा मोल लेकर अपने को इस्लाम की सफ में शामिल करना हो। जब अपनी पुरसुकून जिंदगी को बरहम करके खुदा व रसूल का साथ देना हो। ऐसे मौकों पर आदमी एहतियात और बचाव का तरीका इख्तियार करके पीछे बैठ जाने को पसंद करता है। वह भूल जाता है कि यही तो वे मौके हैं जबकि वह खुदा के साथ अपने तअल्लुक का अमली सुबूत पेश कर सकता है। जबकि वह जन्नत के लिए अपनी उम्मीदवारी को खुदा की नजर में काबिले कुबूल साबित कर सकता है।

गजवए तबूक के मौके पर पीछे रहने वालो में एक अबू खैसमा अंसारी भी थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी के बाद वह अपने बाग में गए। वहां खुशगवार साया था, बीबी ने पानी छिड़क कर जमीन को ठंडा किया, चटाई का फर्श बिछाया, ताजा खजूर के खोशे लाकर सामने रखे और ठंडा पानी पीने के लिए पेश किया। अबू खैसमा दुनियावी आसानियों ही की खातिर तबूक के सफर पर न जा सके थे। मगर जब जाने वाले और रहने वाले के दर्मियान फर्क इस इतिहाई नौबत को पहुंच गया जो अब उनके सामने था तो अबू खैसमा उसे बर्दाश्त न कर सके। उन्होंने कहा 'मैं यहां बाग में साये में हूं और खुदा के बंदे लू और गर्मी में कोह व बयाबान तै कर रहे हैं' उन्होंने तलवार संभाली और तेज रफ्तार ऊंटनी पर सवार होकर उसी वक्त रवाना हो गए। यहां तक कि गर्द व गुबार में अटे हुए तबूक के कफिले से जा मिले।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَآفَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ فَرِيقَةٌ ۚ فَهُم طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ ۚ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ⑬

और यह मुमकिन न था कि अहले ईमान सबके सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता ताकि वह दीन में समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी कौम के लोगों को आगाह (दीक्षित) करता ताकि वे भी परहेज करने वाले बनते। (122)

कुरआन की यह आयत एक एतबार से ज़ेबहस सूरतेहाल से मुतअल्लिक है और दूसरे एतबार से वह एक कुल्ली हुक्म को बता रही है। एक तरफ वह बताती है कि मदीने के अतराफ में बसने वाले देहातियों की तालीम व तर्बियत किस तरह की जाए। दूसरी तरफ इससे मालूम होता है कि इस्लाम का तालीमी निजाम और नई नस्लों के लिए उसका तर्बियती ढांचा किन उसूली बुनियादों पर कायम होना चाहिए।

तालीम एक ऐसा काम है जिसमें आदमी को दूसरी मशगूलियतों से फारिग होकर शामिल होना पड़ता है। अब अगर सारे लोग बयकवक्त तालीमी काम में लग जाएं तो जिंदगी की दूसरी सरगर्मियां, मसलन हुसूले मआश (जीविका) की कोशिशें, मुतअस्सिर हो जाएंगी। इस्लाम का यह तरीका नहीं कि एक काम को बिगाड़ कर दूसरा काम अंजाम दिया जाए, इसलिए हुक्म दिया गया कि बारी-बारी का उसूल मुकरर करो। कुछ लोग तालीम के मर्कज में आएंगे तो कुछ और लोग दूसरी सरगर्मियों को अंजाम देने में लगे रहें। इस तरह दोनों काम बयकवक्त अंजाम पाते रहेंगे।

इस आयत में इस्लामी तालीम के लिए तफर्रूह फिद्दीन का लफ्ज आया है। इससे **मुद मरफ़िद्दी** (प्रचलित आचार-शास्त्र संबंधी) तालीम नहीं है जो दीन की शकल (बमुकाबला रुहे दीन) के तफसीली इल्म का नाम है और जिसके नतीजे में दीन का इल्म मसाइल के इल्म के हममअना (समान) बन गया है। यहाँ तफर्रूह फिद्दीन का मतलब खुदा के उतारे हुए असासी (मौलिक) दीन को जानना और उसमें समझ हासिल करना है। इससे मुराद वह इल्म है जो हक शनासी (सत्य का ज्ञान) पैदा करे जो बुनियादी हकीकतों से आदमी को बाखबर करे और आखिरत की बुनियादों पर जिंदगी की तामीर करना सिखाए।

आयत में तफर्रूह फिद्दीन (तालीम दीन) मरसद यह बताया गया है कि आदमी कैम के ऊपर इंजार का काम करने के काबिल हो सके। इंजार के मअना हैं डराना। कुरआन में यह लफ्ज आखिरत के मसले से डराने और होशियार करने के लिए आया है। इससे मालूम हुआ कि इस्लामी तालीम से ऐसे अपराध तैयार हों जो कौमों के ऊपर खुदा की तरफ से मुंजिर (डरानेवाला) बनकर खड़े हो सकें। ताकि लोग खुदा से डरें और दुनिया की जिंदगी में उस रविश से बचें जो उन्हें आखिरत के अबदी अजाब की तरफ ले जाने वाली हो। इस्लामी तालीम दावत इल्लाह की तालीम का नाम है न कि मारुफ मअनों में सिर्फ मसाइले फिद्दीन या जुजयाते शरअ (शरीअत के विभिन्न अंगों) की तालीम का।

इस एतबार से इस्लामी तालीम का निसाब दो ख़ास चीजों पर मुशतमिल होना चाहिए :

1. कुरआन व सुन्नत
2. वे उलूम जो मदऊ (संबोधित वग) की निस्वत से जरूरी हों। मसलन मुखातब की ज़बान, उसके तर्जिफ़ और उसकी नफ़ियात, वगैरह।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۖ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ
زَادَهُ هَذِهِ إِنِبَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فزَادَتْهُمْ إِينَابًا وَهُمْ
يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَى
رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ
مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ
قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, उन मुंकिरों से जंग करो जो तुम्हारे आस-पास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख्ती पाएं और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है। और जब कोई सूरह उतरती है तो उनमें से कुछ कहते हैं कि इसने तुम में से किस का ईमान ज्यादा कर दिया। पस जो ईमान वाले हैं उनका इसने ईमान ज्यादा कर दिया और वे खुश हो रहे हैं। और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर गंदगी। और वे मरने तक मुंकिर ही रहे। क्या ये लोग देखते नहीं कि वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं और न सबक हासिल करते हैं। और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो ये लोग एक दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस वजह से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं। (123-127)

‘करीब के मुंकिरों से जंग करो’ के अल्फ़ाज़ बताते हैं कि इस्लामी जद्दोज़हद कोई बेमसूबा जद्दोज़हद नहीं है बल्कि इसमें तर्तीब को मल्हूज रखना जरूरी है। पहले करीब की रुकावटों को काबू पाने की कोशिश की जाएगी और इसके बाद दूर की रुकावटों से निपटा जाएगा। इसी से यह बात भी निकली कि सबसे पहले मुजाहिदा (संघर्ष) खुद अपने नपस (अंतःकरण) से किया जाना चाहिए। क्योंकि आदमी के सबसे करीब खुद उसका अपना नपस होता है। बाहर के दुश्मनों की बारी इसके बाद आती है। फिर इस्लाम दुश्मनों से भी अव्वलन जो चीज मल्हूब है वह सख्ती (ग़िल्जह) है यानी वह मजबूती जो दुश्मनों के लिए रौब का बाइस बन जाए।

इसी के साथ जरूरी है कि दुश्मनों के मुकाबले की सारी कार्रवाई तकवे की बुनियाद पर की जाए। तकवा (खुदा का ख़ौफ) की रविश ही मुसलमानों के लिए नुसरते खुदावंदी की जामिन है। तकवा से हटते ही वे खुदा की मदद से महरूम हो जाएंगे। वे खुदा से दूर हो जाएंगे और खुदा उनसे।

तकवा गोया बंदे और खुदा के दर्मियान नुकता-ए-मुलाकात है। जब आदमी खुदा से डरता है तो वह अपने आपको उस मकाम पर लाता है जहां खुदा उसे देखना चाहता था जहां खुदा ने उसे बुला रखा था। ऐसी हालत में तकवा ही आदमी को खुदा के करीब करने वाला बन सकता है न कि कोई दूसरी चीज। जब खुदा अपने बंदे को मुत्तकी के रूप में देखना चाहता है तो वह उस बंदे की तरफ कैसे मुत्तवज्जह होगा जो ग़ैर मुत्तकी के रूप में उसके सामने आए।

कुरआन ने अपनी यह खुसूसियत बयान की है कि उसकी आयतों को सुनकर मोमिनीन के ईमान में इजाफा होता है। मगर ईमान के इजाफे का तअल्लुक आदमी की अपनी कच्ची सलाहियत पर है न कि सिर्फ आयतों के सुन लेने पर। डेढ़ हजार साल पहले जब कुरआन उतरा तो उसके अल्फज अभी सिर्फ अल्फज थे वे तारीखी वाक्या नहीं बने थे। उस वक्त कुरआन की अहमियत को सिर्फ वही लोग समझ सकते थे जो हकीकत को उसकी मुजरद (मूल भावना) सूरत में देखने की सलाहियत रखते हों। जाहिरपरस्त मुनाफिकीन के अंदर यह सलाहियत न थी। उन्हें कुरआन के अल्फज सिर्फ अल्फज मालूम होते थे। उनकी समझ में नहीं आता था कि चन्द अल्फज का मज्मूआ किसी के यकीन व एतमाद में इजाफे का सबब कैसे बन जाएगा। चुनौति जब कोई नई आयत उतरती तो वे यह कह कर मजाक उड़ते कि अरबी के इन अल्फज ने तुम में से किसके ईमान में इजाफा किया।

इस बात को आदमी उस वक्त तक नहीं समझ सकता जब तक वह तारीख को हटा कर कुरआन को उसके मुजरद रूप में देखने की नजर न पैदा करे। आज 'कुरआन' के लफज के साथ वे तमाम तारीखी अज्मतें शामिल हो चुकी हैं जो नुज़ूले कुरआन के वक्त मौजूद न थीं और बाद को हजार साल से ज्यादा अर्से में उसके गिर्द जमा हुईं।

मगर नुज़ूल के जमाने में कुरआन की वसियत सिर्फ एक किताब की थी। उस वक्त जाहिरबी ईमान उसे सिर्फ एक 'किताब' के रूप में देखता था न कि तारीखसाज सहीफे (इतिहासनिर्माता ग्रंथ) के रूप में। वे लोग जो कुरआन को उसकी छुपी हुई अज्मत के साथ देख रहे थे जब वे कुरआन से ग़ैर मामूली तास्सुर कुबूल करते तो जाहिरबीनों की समझ में न आता। वे कहते कि आखिर यह एक किताब ही तो है। फिर एक लफजी मज्मूए में वह कौन सी खास बात है कि लोग उससे इस कद्र मुत्तअस्सिर हो रहे हैं।

खुदा ऐसे लोगों को बार-बार मुखलिफ किस्म के झटके देता है ताकि उनके दिल की हस्सासियत बढ़े और वे बातों को ज्यादा गहराई के साथ पकड़ने के काबिल हो जाएं। मगर जब आदमी खुद नसीहत न लेना चाहे तो कोई खारजी (वाहय) चीज उसकी नसीहत के लिए काफी नहीं हो सकती। नसीहत लेने वाली कोई बात सामने आए और आदमी उसे नजरअंदाज कर दे तो उसका यह अमल उसे नसीहत के मामले में बेहिस बना देता है।

'वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं मगर वे न तौबा करते हैं न सबक हासिल करते हैं।' यहां आजमाइश से मुराद कहत, मर्ज, भूख वगैरह में मुब्तिला किया जाना है। इस किस्म की आपत्तें आदमी की जिंदगी में बार-बार पेश आती हैं मगर वह उनसे तौबा और इबरत (सीख) की गिजा नहीं लेता। तौबा हकीकतन तजक्कुर (साधना) के नतीजे का दूसरा नाम है।

हर आदमी के साथ ऐसा होता है कि साल में एक दो बार जरूर कुछ ग़ैर मामूली वाकियात पेश आते हैं। ये वाकियात खुदाई हकीकतों की तरफ इशारा करने वाले होते हैं। कभी वे खुदा के मुकाबले में ईमान की बेचारीगी को याद दिलाते हैं। कभी वे आखिरत के मुकाबले में मौजूदा दुनिया की बेवकअती को जाहिर करते हैं। ऐसे मौके आदमी के लिए एक बात का इस्तेहान होते हैं कि वह उन्हें अपने लिए सबक बनाए, वह मादूदी वाकियात (भौतिक घटनाओं) में ग़ैर मादूदी हक्कइक (दिव्य यथाथी) को देख ले।

सबक वाली चीज से आदमी सबक क्यों नहीं ले पाता। इसकी वजह यह है कि वह एक चीज को दूसरी चीज से मरबूत नहीं कर पाता। दुनिया के वाकियात से सबक लेने के लिए यह सलाहियत दरकार है कि आदमी एक बात को दूसरी बात से जोड़कर देखना जानता हो। वह जाहिर वाक्यो को छुपी हुई हकीकत से मिला कर देख सके। वह पेश आने वाली चीज के आइने में उस चीज को पढ़ सके जो अभी पेश नहीं आई।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۖ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ٩٤

तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो खुद तुम में से है। तुम्हारा नुक्सान में पड़ना उस पर शाक (असह्य) है। वह तुम्हारी भलाई का हरीस (लालसा रखने वाला) है। ईमान वालों पर निहायत शफीक (करुणामय) और महरबान है। फिर भी अगर वे मुंह फेंकें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया। और वही मालिक है अर्शे अजीम का। (128-129)

इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह तस्वीर बताई गई है कि इस्लाम की जद्दोजहद में उनका सारा एतमाद सिर्फ एक अल्लाह पर है। वे लोगों को जिस खुदा की तरफ बुलाने के लिए उठे हैं वह ऐसा खुदा है जो सारे इक्तेदार (संप्रभुत्व) का मालिक है। तमाम खजानों की कुजियां उसके पास हैं। रसूल इसी ईमान व यकीन की जमीन पर खड़ा हुआ है। इसलिए बिल्कुल फितरी है कि उसका सारा भरोसा सिर्फ एक खुदा पर हो। वह हर किस्म की मस्लेहतों और अदेशों से बेपरवाह होकर हक की खिदमत में लगा रहे।

फिर यह बताया कि खुदा का रसूल लोगों के हक में हद दर्जा शफीक और महरबान है। वह दूसरों की तकलीफों पर इस तरह कुदृता है जैसे कि वह तकलीफ खुद उसके ऊपर पड़ी हो। वह हिर्स की हद तक लोगों की हिदायत का तालिब है। हक की दावत (आह्वान) की जद्दोजहद के लिए उसे जिस चीज ने मुत्तहरिक किया है वह सरासर खैरइब्बाही का जब्बा है न कि कोई शख्सी हौसला या कौमी मसला। वह खुद लोगों की भलाई के लिए उठा है न कि अपनी जाती भलाई के लिए।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फरमाया : लोग परवानों की